शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

प्रथम सत्र : बीजपत्र ME3

विशेष रचनाकार : भगवानदास मोरवाल

द्वितीय सत्र : बीजपत्र ME7

विशेष रचनाकार : कमलेश्वर

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2023-24 से)

एम. ए. भाग–1 : हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
एम. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 500

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-89345-17-9

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी–
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) डी. के. मोरे (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचूळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रो. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रागडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

भूमिका

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत एम्.ए. हिंदी भाग-ख के छात्रों के लिए बनायी गयी अध्ययन सामग्री नियमित रूप से प्रवेश न ले सकनेवाले छात्रों की असुविधा को दूर करने की योजना का अच्छा फल है। इसमें विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता तथा शिक्षा से वंचित छात्रों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता दिखायी देती है।

प्रस्तुत पुस्तक में सत्र I बीजपत्र ME3 'विशेष रचनाकार : भगवानदास मोरवाल' तथा सत्र II बीजपत्र ME7 'विशेष रचनाकार : कमलेश्वर' का लेखन संपन्न किया है। प्रस्तुत पुस्तक की इकाइयों के लेखक हैं- डॉ. जितेंद्र बनसोडे, डॉ. भारत उपाध्य, श्री. अशोक उघडे, डॉ. कैलास पाटील, डॉ. विजय गाडे, प्रो. (डॉ.) सुनिल बनसोडे, डॉ. प्रकाश मुंज।

प्रत्येक इकाई लेखक ने अपना अध्ययन तथा अध्यापन अनुभव, लेखन शैली के आधार पर लेखन किया है। दूर शिक्षा के छात्रों की क्षमता ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की है। प्रत्येक इकाई लेखक उनके लेखन के प्रति जिम्मेदार हैं।

दूरशिक्षा केंद्र के छात्रों का प्रत्यक्ष रूप में अध्यापकों से कोई संबंध तथा संपर्क नहीं आता। पुस्तक लेखन कार्य के दरमियान निर्धारित पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरूप, अंक विभाजन जैसे महत्त्वपूर्ण मद्‌दों को ध्यान में रखकर लेखन कार्य संपन्न किया है।

बीजपत्र ME3 के अंतर्गत काला पहाड- भगवानदास मोरवाल, 'वंचना' - भगवानदास मोरवाल, 'शकुन्तिका' - भगवानदास मोरवाल और 'दस प्रतिनिधि कहांनिया' - भगवानदास मोरवाल इन साहित्य कृतियों का अध्ययन करना है।

बीजपत्र ME7 के अंतर्गत 'तीसरा आदमी' - कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान' - कमलेश्वर, 'अनबीता व्यतीत' - कमलेश्वर, 'दस प्रतिनिधि कहानियां' - कमलेश्वर इन साहित्य कृतियों का अध्ययन करना है।

उपरोक्त साहित्यकारोंने अपनी रचनाओं का सृजन क्यों किया? अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति क्यों की? उनके समसामायिक परिवेश कैसे रहे? इन लेखकों ने अभिव्यक्ति के लिए किस भाषा का प्रयोग किया। आदि प्रमुख मद्‌दों के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों का सरल भाषा द्‌वारा स्पष्टीकरण तथा विवेचन किया है। इसके आधार पर निश्चित रूप से एम्. ए. हिंदी के लिए प्रवेशित छात्र अपना अध्ययन कार्य सफलता से पूर्ण कर सकेंगे। स्नातकोत्तर उपाधि के अध्ययन के लिए छात्रों को विषय की संपूर्ण जानकारी प्राप्त होना आवश्यक होता है। इस बात को इकाई लेखकों ने लेखन कार्य के दरमियान ध्यान में रखा। संपादक तथा इकाई लेखक के रूप में जिन्होंने काम संपन्न किया है, उन सभी ने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है।

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री की सफलता सामूहिक प्रयास का फल है। उसी तरह इकाई लेखकों ने अपनी-अपनी इकाइयों का लेखन समय पर पूरा कर इसकी पूर्णता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर के मा. कुलगुरु हिंदी विषय समन्वयक, दूर शिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहकारियों, संबंधित कर्मचारियों का हम अंतस्तल से आभार प्रकट करते हैं।

- संपादक

दूरशिक्षण और ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्‌यालय,
कोल्हापुर

सत्र–1 : विशेष रचनाकार : भगवानदास मोरवाल
सत्र–2 : विशेष रचनाकार : कमलेश्वर
एम. ए. भाग–1

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र–1	सत्र–2
★ **डॉ. जितेंद्र बनसोडे** श्रीमंत भैय्यासाहेब राजेमाने कॉलेज, म्हसवड, ता. माण, जि. सातारा	1, 2	-
★ **डॉ. भारत उपाध्य** वारणा महाविद्यालय ऐतवडे खुर्द, ता. वाळवा, जि. सांगली	3, 4	-
★ **श्री. अशोक उघडे** आदर्श कॉलेज, विटा, ता. खानापुर, जि. सांगली	-	1
★ **डॉ. कैलास पाटील** सांगली	-	2
★ **डॉ. विजय गाडे** बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली	-	2
★ **प्रो. (डॉ.) सुनील बनसोडे** जयसिंगपूर कॉलेज, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	-	3
★ **डॉ. प्रकाश मुंज** हिंदी अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर	-	4

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) उत्तम थोरात
आदर्श कॉलेज, विटा,
ता. खानापुर, जि. सांगली

प्रो. (डॉ.) सातापा शामराव सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर तथा
विलिंग्डन कॉलेज सांगली,
जि. सांगली

अनुक्रम

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–1 बीजपत्र–ME3 : विशेष रचनाकार : भगवानदास मोरवाल	
1.	'काला पहाड़' (उपन्यास) भगवानदास मोरवाल	1
2.	'वंचना' (उपन्यास) भगवानदास मोरवाल	19
3.	'शकुन्तिका' उपन्यास का समीक्षात्मक विवेचन	32
4.	'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' : समीक्षात्मक विवेचन	53
	सत्र–2 बीजपत्र–ME7 : विशेष रचनाकार : कमलेश्वर	
1.	तीसरा आदमी (उपन्यास) – कमलेश्वर	87
2.	'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) कमलेश्वर	111
3.	अनबीता व्यतीत (उपन्यास) – कमलेश्वर	137
4.	दस प्रतिनिधि कहानियाँ – कमलेश्वर	201

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई–1

‘काला पहाड़’ – भगवानदास मोरवाल

अनुक्रम–

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 विषय विवरण

  1.2.1 भगवानदास मोरवाल का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

  1.2.2 ‘काला पहाड़’ उपन्यास की समीक्षा

1.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.4 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.5 सारांश

1.6 स्वाध्याय

1.7 क्षेत्रीय कार्य

1.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.0 उद्देश्य :

- भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व से परिचित कराना।
- भगवानदास मोरवाल के साहित्यिक प्रदेश एवम सामाजिक दायित्त्व से परिचित कराना।
- भगवानदास मोरवाल की रचनाओं के आस्वादन अध्ययन तथा मूल्यांकन से अवगत कराना।
- भगवानदास मोरवाल तथा उनकी निर्धारित रचनाओं का विशेष अध्ययन कराना।
- रचनाकार तथा उनकी रचनाओं का वर्तमानकालीन महत्त्व एवं प्रासंगिकता से अवगत कराना।

1.1 प्रस्तावना :

हरियाना के मेवात प्रांत को समर्पित ‘काला पहाड़’ उपन्यास का प्रकाशन सन् 1999 ई. में हुआ। 466 पृष्ठों का यह बृहद् उपन्यास भगवानदास मोरवाल का प्रथम उपन्यास है, जो राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। ‘काला पहाड़’ उपन्यास की कथा भगवानदास मोरवाल के जीवनानुभवों से उपजी कथा है। उपन्यास में वर्णित घटनाओं को लेखक मात्र एक दृष्टा के रूप में ही नहीं देखता बल्कि उन घटनाओं के यथार्थ को स्वयं लेखक ने जिया भी है। साझा संस्कृति के बीच सांप्रदायिक तनाव जनित विघटन इस उपन्यास के कथ्य का आधार है।

1.2 विषय विवेचन :

1.2.1 भगवानदास मोरवाल का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व –

व्यक्तित्व –

आधुनिक हिंदी साहित्य में अपने विशिष्ट पहचान बनाने वाले साहित्यकारों में भगवानदास मोरवाल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्य निर्माण में भगवानदास की सक्रिय उपस्थिति गुण और परिणाम दोनों ही दृष्टि से उल्लेखनीय है। मोरवाल जी का संपूर्ण समय लेखन उनके – व्यक्तित्त्व को स्पष्ट करता है जीवन जीते हुए और उसी से प्राप्त अनुभव और सामाजिक यथार्थ को ज्यों का त्यों लेखनी में बांध लेना उनकी स्वभावगत विशेषता है। एक जीवंत योद्धा. उदार व्यक्तित्त्व, प्रगतिशील विचारक, लेखों, कहानियों, उपन्यासों, कविताओं व अन्य विधाओं के सृजन उन सब को मिलाकर जो व्यक्तित्त्व बनता है उसका नाम है भगवानदास मोरवाल। प्रत्येक साहित्यकार अपनी साहित्यिक रचनाओं में अपने आप को अभिव्यक्त करता है अर्थात् संपूर्ण लेखन कार्य उनके जीवन को स्पष्ट करता है।

हिंदी साहित्य के महान लेखक भगवानदास मोरवाल मूर्धन्य कथाकार व बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। मोरवाल जी का जन्म दि. 23 जनवरी सन् 1960 ई. को हरियाणा प्रांत के काला पानी, मिनी पाकिस्तान कहे जाने वाले मेवात जिले के छोटे से कसबे नगीना में हुआ। इनका जन्म निम्न वर्गीय अत्यंत पिछड़े परिवार में हुआ। हालांकि इन्हें खुद अपनी जन्मतिथि की प्रामाणिकता पर संदेह है। शैक्षिक और आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़े हुए जिस परिवार में दो वक्त की रोटी की चिंता लगी रहती है यहां बच्चों की जन्मतिथि की चिंता करने की फुर्सत ही कहां इस देश के अधिकतर बच्चों की भांति मोरवाल जी की जन्मतिथि अनपढ़ मां-बाप के अनोखे गणित पर आधारित है। अर्थात् अनुमान से विद्यालय में प्रवेश के समय लिखी गई एक तारीख है दि. 23 जनवरी सन् 1960 ई.

माता– पिता –

भगवानदास मोरवाल के पिता का नाम श्री मुंगतराम तथा माता का नाम श्रीमती कलावती देवी है। इनकी माताजी संस्कार युक्त स्त्री थी जो भारतीय संस्कृति और परंपराओं को विशिष्ट महत्त्व देती थी। इनके पिता श्री मुंगतराम जी बहुत ही मस्तमौला फक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। इनकी माता का निधन सन् 1995 ई. में ही हो चुका था। अभाव से जूझते परिवार को संभालने वाली माताजी और पिताजी के मस्तमौला स्वभाव को ही मोरवाल जी जीवन संघर्ष में वृद्धि का कारण मानते हैं।

पारिवारिक स्थिति –

भगवानदास मोरवाल के परिवार में पहले पाँच सदस्य माता-पिता और तीन भाई थे जिनमें बड़े भाई मनोहर लाल की मस्ती के चलते पांच सदस्यों के परिवार का गुजारा करना काफी मुश्किल था। इस कारण से बड़े भाई मनोहर लाल की पढ़ाई सातवीं कक्षा तक ही हो सकी। मोरवाल जी के छोटे भाई सुभाषचंद्र हैं जिन्होंने मैट्रिक तक पढ़ाई की। आर्थिक तंगहाली से जूझते परिवार और पिताजी का फक्कड़ स्वभाव 'कंगाली

में आटा गीला' कहावत को चरितार्थ करता है। पिता के मस्तमौला स्वभाव, बड़े भाई मनोहर लाल के घर फूंक मस्ती और बचपन में शादी हो जाना मोरवाल जी के जीवन संघर्ष में वृद्धि का कारण बना।

शिक्षा –

भगवानदास मोरवाल ने तमाम विपरीत परिवेश और अभावों से जूझते हुए अपनी प्रारंभिक शिक्षा मेवात जिले के कस्बा नगीना में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नगीना में हुई। मोरवाल जी बचपन से ही पढ़ाई में बहुत होशियार थे। इसके बाद स्नातक की उपाधि मेवात के राजनीतिक केंद्र कहे जाने वाले तथा एक प्रमुख विधानसभा क्षेत्र जो आज जिला नूंह के यासीन मेव डिग्री कॉलेज से प्राप्त की। तत्पश्चात् गुलाबी नगरी कहे जाने वाले शहर राजस्थान की राजधानी जयपुर चले गए। वहां राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से जैसे-जैसे भागते दौड़ते स्नातकोत्तर अर्थात् एम.ए. हिंदी और पत्रकारिता में डिप्लोमा किया।

विद्यार्थी जीवन –

भगवानदास मोरवाल को अपने विद्यार्थी जीवन में उन सभी परेशानियों का सामना करना पड़ा जो प्रायः दलित के घर में जन्म लेने वाले बच्चों को करना पड़ता है। मोरवाल के गांव में राजकीय उच्च विद्यालय होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में इतनी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा जितना महाविद्यालय के दिनों में करना पड़ा। हर माह फीस और बस पास के रुपयों के लिए मोरवाल के सामने बहुत परेशानियां आई। परिवार से रुपए मांगने के लिए भी मशक्कत करनी पड़ती थी। भगवानदास मोरवाल जी खुद कहते हैं कि मां का सहयोग नहीं मिल पाता तो स्नातक की शिक्षा पूरी करना कठिन था। मोरवाल के पिताजी को पढ़ाई-लिखाई से कोई लेना-देना नहीं था। विद्यार्थी जीवन में मोरवाल जी की आर्थिक कठिनाइयों का आलम यह था कि स्नातक कला अंतिम वर्ष में हिंदी की सात आठ - रुपए की किताब भी नहीं थी।

वैवाहिक जीवन –

भगवानदास मोरवाल का विवाह सुनीता देवी से हुआ। मोरवाल की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता देवी धार्मिक विचारों वाली एक साधारण गृहिणी है। मोरवाल जी की दो संतान एक पुत्री व एक पुत्र है इनकी पुत्री का नाम डॉक्टर नैया मोरवाल है जिन्होंने हिंदी विषय से पीएच.डी. की है। इनके पुत्र का नाम प्रवेश पुष्प मोरवाल है। भगवानदास मोरवाल अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता देवी, पुत्री डॉक्टर नैया मोरवाल और पुत्र पुष्प प्रवेश मोरवाल के साथ देश की राजधानी दिल्ली में खुशहाल वैवाहिक जीवन यापन कर रहे हैं।

नौकरी एवं व्यवसाय –

भगवानदास मोरवाल ने अपने साक्षात्कार में बताया है कि जब वह स्नातक कला की पढ़ाई कर रहे थे अर्थात् जब उन्होंने स्नातक कला की डिग्री प्राप्त की तब वह एक बच्चे के बाप बन चुके थे। मोरवाल जी बताते हैं कि जब खेलने की उम्र होती है उस उम्र में तो उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हो चुकी थी। उसके पश्चात् मोरवाल जी को उनके घर वालों ने यह कह दिया था कि अब वह अपना खर्चा खुद चलाएं यह सब सुनकर मोरवाल अपने गांव के लाला जी की फैक्ट्री में दिल्ली चले जाते हैं। लगभग वर्ष 1981 में मोरवाल

जी दिल्ली आए थे। फैक्ट्री में लोहे की चद्दर का तपाने का काम होता था और स्टील का फर्नीचर बनता था इस फैक्ट्री में मोरवाल जी को 500 रुपए प्रतिमाह मिलते थे इन 500 रुपए में खुद का खर्चा चलाने के साथ-साथ भगवानदास के बीवी-बच्चे जो कभी गांव तथा कभी अपने मायके रहती थी उनके लिए भी रुपए भेजते थे।

मोरवाल ने इसी समय एक **'कहानी सिला हुआ आदमी'** लिखी जो शोषण पर आधारित थी कुछ समय बाद लगभग सात वर्ष का संघर्ष करने के पश्चात् मोरवाल गांव चले गए और वहां उनकी माता और पत्नी जो किसान के यहां काम करती थी मोरवाल ने एक दिन तो वहां काम किया और दूसरे दिन काम के डर से फिर दिल्ली भाग गए। शाम को जब पत्नी को पता चला कि वह दिल्ली गए फिर मोरवाल को उनकी ससुराल वालों ने बुलाया और चुपचाप बिना बताए मोरवाल के साथ उनके बीवी बच्चों को भी बस में चढ़ा दिया। भारत देश की राजधानी दिल्ली में सात वर्ष की लंबी अवधि के बाद इनको स्थायित्त्व प्राप्त हुआ। अन्य लेखकों की भांति मोरवाल ने लेखन कार्य की शुरुआत स्वतंत्र पत्रकारिता से की तथा वैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से कई पत्रिकाओं में काम किया। वर्ष 1987 के अगस्त माह में मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की मासिक पत्रिका समाज कल्याण में प्रस्तुति सहायक के पद पर आसीन हुए तदुपरांत वहां उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

खानपान एवं वेशभूषा –

भगवानदास मोरवाल ग्रामीण परिवेश से आते हैं इसलिए उनका खानपान देशी है मोरवाल तवे पर बनी हुई मैसी रोटी (चने का आटा) तथा लहसुन और लाल मिर्च की चटनी खाना ज्यादा पसंद करते हैं। भगवानदास मोरवाल एक साधारण परिवेश के होने के कारण उनकी एक विशिष्ट पहचान है। ये पजामा कुर्ता पहनते हैं तथा हमेशा उनके गले में मफलर देखा जा सकता है।

रहन-सहन –

घर में मोरवाल कुर्ता-पाजामा पहने होते हैं, परंतु घर के बाहर साधारण साफ-सुथरी शर्ट-पैंट धारण करते हैं। विशेष अवसरों पर ब्लेझर आदि विदेशी पहराव भी वे पहनते हैं। मोरवाल एक आकर्षक व्यक्तित्त्व के धनी हैं। पहले-पहल उन्हें देखकर आशंका होती है कि यह कोई उच्चभ्रू व्यक्ति है, परंतु उनकी बातचीत में निहित सादगी एवं संवेदनशीलता से उनके लेखकीय व्यक्तित्त्व वाले आयाम के स्पष्ट दर्शन होते हैं। मोरवाल का व्यक्तित्त्व प्रभावोत्पादक है।

वातावरण का असर –

भगवानदास मोरवाल खुद स्वीकारते हैं कि मेरे घर की स्थिति और आस-पड़ोस के माहौल ने मेरे लेखक के व्यक्तित्त्व को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है। मेवात में हिंदुओं और मेवों के लगभग 20-21 जातियों के बीच रहते हुए इनकी विभिन्न प्रकार की संस्कृति एवं परंपराएं मोरवाल के धर्मनिरपेक्ष और कुंठा मुक्त लेखन में सहायक रही और विस्तार से जन सरोकारों को जीवित बनाए रखा।

मेवात का छोटा सा कस्बा नगीना जहां हिंदू और मुसलमानों के लगभग 15000 आबादी आधी हिंदू और आधी मुसलमानों की भारत के दूसरे गांव कस्बों की भाँति प्राय वे सभी जन–जातियां हैं जिनके बलबूते भारतीय समाज का सामंजस्य आज तक कायम है।

सेवाकार्य –

भगवानदास मोरवाल समाज कल्याण पत्रिका में प्रस्तुति सहायक के पद पर आसीन होने से पूर्व 'मजुली दर्पण' मासिक पत्रिका में सह संपादक के पद पर कार्य किया। इसके बाद 'सुलभ इंडिया' मासिक पत्रिका में उप संपादक के रूप में काम किया और साथ ही 'सारंग' अनियतकालिक पत्रिका से जुड़े रहे मोरवाल ने लगभग सात वर्षों तक वर्ष 1981 से 1987 तक स्वतंत्र पत्रकारिता की अब तक मोरवाल के विभिन्न विषय जैसे–सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पर 250 से अधिक आलेख, रिपोर्ताज, आलोचनात्मक लेख तथा रचनाएं हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। यह केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की मासिक पत्रिका समाज कल्याण 1987 से 1994 तक संपादकीय विभाग से संबंधित रहे हैं।

सम्मान और पुरस्कार –

भगवानदास मोरवाल को अपने विशिष्ट लेखन के परिणाम स्वरूप ही अनेक सम्मानों से नवाजा गया है। अपनी स्वतंत्र पत्रकारिता के दौरान इन्हें पत्रकारिता के लिए वर्ष 1985 में प्रथम 'प्रभादत्ता' स्मारक पुरस्कार, 1994 में हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा 'साहित्यिक कृति सम्मान', सन् 1995 भारतीय दलित साहित्य अकादमी से 'डॉ. अम्बेडकर सम्मान', सन् 1995 में पूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण द्वारा 'राजाजी सम्मान', सन् 1999 में साहित्य के लिए 'शोभना' पुरस्कार, सन् 1994 तथा सन् 1995 हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा 'साहित्यिक कृति सम्मान' प्रदान किया गया। वर्ष 2004 में मोरवाल जी को दिल्ली अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा 'साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया। वर्ष 2006 लखनऊ में भगवानदास मोरवाल को 'कथाक्रम सम्मान', जनवरी 2008 में मोरवाल जी ट्यूरिन (इटली) में आयोजित भारतीय लेखक सम्मेलन में भारतीय लेखकों के प्रतिनिधि के रूप में पहल की। सन् 2009 में शब्द 'साधक ज्यूरी सम्मान', सन् 2009 (यूके) लंदन में अंतराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान प्रदान किया गया। सन् 2010 हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा जनकवि मेहरसिंह सम्मान, 2012 में इन्हें 'श्रवण सहाय एवार्ड' से नवाजा जा चुका है।

व्यक्तित्व की विशेषताएं –

मिलनसार स्वभाव –

भगवानदास मोरवाल साहित्यकार होने के साथ–साथ बहुत अच्छे इंसान भी हैं। मोरवाल में सहजता, सरलता, उदारता, बड़प्पन, नम्रता, सादगी, विनय एवं मधुर भाषी व्यक्तित्त्व है। 'अतिथि देवो भव' का प्राचीन समय हिंदुस्तानी आदर्श इनके यहां आज भी उसी आत्मीयता के साथ जीवित है। अगर कोई भी

व्यक्ति मोरवाल जी के घर जाता है तो उनका बड़ा आदर्श सत्कार किया जाता है बिना खाना खाए इनके घर से वापस आना असंभव है। बहुत वर्षों से दिल्ली जैसे व्यक्तित्त्व विध्वंसक शहर में स्थाई रूप से रह रहे मोरवाल जी अपनी जड़ों को अभी भी हरा बनाए हुए हैं। मोरवाल बहुत अच्छे वक्ता हैं और उनके मुख पर वैचारिक स्पष्टता भी विभिन्न मुद्दों पर झलकती है।

भगवानदास मोरवाल के स्वभाव की चर्चा उनकी स्पष्टवादिता का उल्लेख किए बिना अधूरी है। मोरवाल जी उन व्यक्तियों में नहीं हैं जो खुद को असाधारण साबित करने के लिए कुछ तथ्यों को छिपा जाते हो वह तो खुली पुस्तक हैं। इसलिए वे खुद स्पष्ट कहते हैं कि बचपन में न तो लेखन कार्य का माहौल था और ना ही साहित्य की समझ।

स्पष्टवादिता –

मोरवाल अपनी लेखकीय त्रुटियों तथा कमजोरियों को स्वीकार करते हैं। वे अपनी बात को आग्रहपूर्वक प्रमाणित करने का प्रयास नहीं करते । बचपन में साहित्य के प्रति अथवा पत्र-पत्रिकाओं के प्रति किसी प्रकार की जानकारी न होने की बात को भी उन्होंने खुले हृदय से स्वीकार किया। एक लेखक के जीवन के बनावटीपन को लेकर भी मोरवाल ने स्पष्ट रूप से कहा कि, 'सच बोलने की हिम्मत कम से कम मुझमें तो नहीं है।' इतना ही नहीं तो लेखकीय दल अथवा गुटबाजी के विषय में भी उनका मत यही था कि-'यह आवश्यक नहीं कि लेखक किसी विचारधारा से जुड़ा हो या किसी पार्टी का कार्ड होल्डर सदस्य हो।' मोरवाल स्वयं को सर्वहारा, दलित-आदिवासी, पिछड़े, कमजोर एवं अल्पसंख्यक वर्ग का हिमायती मानते हैं। लेखक के व्यक्तित्त्व में निहित स्पष्टवादिता का यह आयाम उनके पत्रकारिता के क्षेत्र में किये गए कार्य का प्रभाव माना जा सकता है। इसी कारण जीवन एवं लेखन की चुनौतियों को मोरवाल ने स्पष्ट रूप से कथन किया। वे अपने लेखन को व्यक्ति के रूप में स्वयं भोगा हुआ कष्ट मानते हैं। मोरवाल उपन्यास लेखन में मौलिकता की चुनौति को भी स्वीकार करते हैं।

अध्ययन प्रियता –

मोरवाल के घर में एक स्वतंत्र कमरा है, जिसमें उनका छोटा-सा निजी ग्रंथालय हैं। जब भी समय मिलता है मोरवाल अपने ग्रंथालय में होते हैं। वे या तो लेखन कर रहे होते हैं, अथवा ग्रंथों को टटोलते हुए कुछ-न-कुछ पढ़ रहे होते हैं। वे अपने लेखन की पांडुलिपियों को निरंतर संशोधित करते रहते हैं। एक नौकरीपेशा व्यक्ति के पास सुबह दस बजे से शाम के पाँच बजे तक कार्यालयीन कामकाज में बिताए समय के उपरांत जो समय बचता है, निश्चित ही लेखन के लिए अपर्याप्त है। फिर भी मोरवाल अपने इस थोड़े से बचे हुए समय का सदुपयोग अध्ययन एवं लेखन के लिए करते हैं।

कुशल प्रशासक –

मोरवाल अपने कार्यालय में कुशल प्रशासक की भूमिका भली-भाँति निभाते हैं। वे केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। नौकरी के बदले अच्छा-खासा वेतन मिलता है, वर्तमान स्थिति में आर्थिक रूप से वह सबसे अधिक सुखी है। अपनी नौकरी को वे अपनी नेक-नियति एवं

सफलता का पैमाना मानते हैं। समय पर अपने कार्यालय में पहुँचना, पूरी तल्लीनता से कार्य करना और अपने कर्मचारियों से बिना उनपर किसी प्रकार का दबाव डालें कार्य साध्य करवा लेना मोरवाल को एक कुशल प्रशासक सिद्ध करता है।

कृतित्त्व –

उपन्यास –

1. काला पहाड़
2. बाबल तेरा देस में
3. रेत
4. नरक मसीहा
5. हलाला
6. सुर बंजारन
7. वंचना
8. शकुंतिका
9. ख़ानज़ादा
10. मोक्षवन

कहानी संग्रह –

1. सिला हुआ आदमी
2. सूर्यास्त से पहले
3. अस्सी मॉडल उर्फ़ सूबेदार
4. सीढियाँ, माँ और उसका देवता
5. लक्ष्मण–रेखा
6. दस प्रतिनिधि कहानियाँ
7. धूप से जले सूरजमुखी
8. महराब और अन्य कहानियाँ
9. कहानी अब तक

स्मृति–कथा –

1. पकी जेठ का गुलमोहर
2. यहाँ कौन है तेरा

कविता संग्रह –

1. दोपहरी चुप है

अन्य –

1. बच्चों के लिए कलयुगी पंचायत

1.2.1 'काला पहाड़' उपन्यास की समीक्षा :

हरियाणा के मेवात प्रांत को समर्पित 'काला पहाड़' इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1999 ई. में हुआ। 466 पृष्ठों का यह बृहद् उपन्यास मोरवाल का प्रथम उपन्यास है, जो राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। 'काला पहाड़' की कथा भगवानदास मोरवाल के जीवनानुभवों से उपजी कथा है। उपन्यास में वर्णित घटनाओं को लेखक मात्र एक दृष्टा के रूप में ही नहीं देखता अपितु उन घटनाओं के यथार्थ को स्वयं लेखक ने जिया भी है। साझा संस्कृति के बीच सांप्रदायिक तनाव जनित विघटन इस उपन्यास के कथ्य का आधार है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि में मेवात है। मेवात के निवासी मेव, जो धर्म परिवर्तित मुसलमान हैं। उपन्यास में बुजूर्ग एवं युवा पीढ़ी के बीच वैचारिक मत–मतांतरों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान युवा पीढ़ी को धार्मिक सांप्रदायिक संक्रमण की अवस्था में अपने अस्तित्त्व की तलाश करते हुए दिखाया गया है।

उपन्यास की कथा में सामान्य जन का राजनीति के ठेकेदार, प्रशासन एवं पुलिस द्वारा शोषण करने की चरम् परिणति यह होती है, कि हिंदू–मुस्लिम वैमनस्य बढ़ता जाता है। उपरी विश्वास की नींव चरमराकर ढह जाती है। मेवात के शांति एवं सौहादपूर्ण वातावरण पर अशांति एवं दुश्चिंताओं के बादल घिरने लगते हैं। तथाकथित फिरकापरस्त ताकदें इसी बीच अपना स्वार्थ साध्य करने को ललायित दिखाई देती हैं। मोरवाल ने 'काला पहाड़' में जगह–जगह पर प्रसंगवश इस ऐतिहासिक तथ्य का उल्लेख किया है कि मेवात आज जो अशांत है और यहाँ तक कि यह 'दूसरा पाकिस्तान' बनने की आशंका से त्रस्त है तो दरअसल इसके मूल में यह महत्त्वाकांक्षी मध्यवर्ग ही है। जो फिरका परस्त ताकतों का एजेंट बना अवसर का लाभ उठा रहा है।

मेवात की जनता अनपढ़ है। हिंदुओं की तुलना में मेव समुदाय रोजगार के अभाव में दरिद्रतापूर्ण जीवन यापन करने को विवश है। सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विकास की योजनाएँ मात्र फाईलों में धरी की धरी रह जाती हैं। जन–सामान्य को विकास की मुख्य धारा में समाविष्ट होने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान नहीं किया जाता। उनके जीवन में अभाव तथा समस्याओं ने ऐसा स्थान बना लिया है कि मेवात के सभी परिवारों की दशा एक–सी ही प्रतीत होती है। अपर्याप्त रोजगार के कारण ग्रामीण जन शहर की ओर

विस्थापित होता हुआ दिखाई देता है। अनान्य प्रयासों के उपरांत थके-हारे मेवाती नियति से समझौता कर लेते हैं। विकास एवं रोजगार के अभाव में पलायन यहाँ की एक बड़ी समस्या बन गयी है। कुल मिलाकर विकास के अभाव से जो एक प्रकार की कर्तव्यविमूढ़ता और शून्य जैसी स्थिति यहाँ पैदा हुई है, उसने फिरका परस्त ताकतों को यहाँ अपने पैर फैलाने का भारी स्पेस दिया है। इस शून्य को भरने के लिए वे एकदम तत्पर दिखाई देती है । दरिद्र्यता और तत्त्ववाद का सीधे-सीधे चाहे कोई संबंध न हो लेकिन धीरे-धीरे ये एक दूसरे को आगे बढ़ाने में मशगूल हो जाते हैं।

मेवाती समाज एवं संस्कृति हिंदुओं से अधिक निकट है। ये न पूरे मुसलमान हैं, और न पूरे हिंदू हैं। उपन्यास के पूर्वार्ध में लेखक ने मेव समुदाय की सांस्कृतिक संपन्नता, ऐतिहासिक विरासत, देश भक्ति एवं सादगी के प्रमाण देने वाले प्रसंगों का वर्णन किया है। कथा के उत्तरार्ध में यही साझा संस्कृति सांप्रदायिक तनाव के बीच संघर्षरत दिखाई देती है। उपन्यास का नायक सलेमी इस संघर्ष का प्रत्यक्ष दृष्टा है। बिगड़ती स्थितियों को सँभालने के सलेमी के सभी प्रयास सांप्रदायिक ताकदें पस्त कर देती हैं। सलेमी का संघर्ष मात्र साझा संस्कृति की रक्षा तक सीमित न होकर एक आदर्श नायक के रूप से धैर्य एवं साहस से परिपूर्ण बन पड़ा है। स्वार्थ एवं सुरक्षा के लिए मेवाती समाज में धार्मिक विद्वेष उत्पन्न होता है, जिसका लाभ चौधरी करीम हुसैन और अतर मोहम्मद जैसे कुटिल राजनेता उठाते हैं। वास्तविकता यह है कि मेवात की साझा संस्कृति में धार्मिक अलगाव के बीज बोने वाले ऐसे ही राजनेता हैं।

अपनी घूटन, तकलीफ एवं जान-माल की क्षति को बयाँ करता मेवाती समाज अपने अस्तित्त्व की तलाश करता प्रतीत होता है। धार्मिक कट्टरता एवं सांप्रदायिक उन्माद की अंध गलियों में मेवाती मजहब से मुँह चुराते और आधुनिकता की होड़ में लोक संस्कृति के परिवर्तित स्वरूप के कारण विलुप्त होती मेवाती संस्कृतिक विरासत अथवा तली में बैठते समाज की दास्तान को उकेरने का लेखक ने एक जागरूक प्रयास किया है। सत्ताधारी मेवातियों को धार्मिक संघर्ष की ज्वाला में झोंक देते हैं। मेवात में आधुनिक शिक्षा के स्थान पर धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे राजनेता अपना वोट बैंक सुरक्षित करने में लगे हुए हैं। जमात के प्रमुख मौलवी साहब का कथन दृष्टव्य है- ''चौधरी साहब, हम चाहते हैं कि मेवात के मुसलमानों को इस्लाम की तालीम दी जाए... हमने पूरे इलाके में घूम कर देखा है और यह गौर किया है कि यहाँ के मुसलमानों में मजहब में कोई खास दिलचस्पी नहीं है'' ध्यातव्य है कि, मुल्ला-मौलवी एवं नेताओं ने धर्म के नाम पर जन-सामान्य को अंधकार में रखा हैं और सांप्रदायिक शक्तियों को बढ़ावा देने का कार्य किया है। युवा पौड़ी बड़ी सरलता से इस बहकावे में आ जाती है। परंतु बुजुर्ग पीढ़ी अलगाववादी तंत्र की 'फूट डालो और राज करो की नीति से भली-भाँति परिचित है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वयं इस बात की साक्ष देते हैं कि संपूर्ण देश की तुलना में मेवात में शांति और सौहार्द का वातावरण है तो वह मात्र इसीकारण है कि मेवातियों में हिंदुओं के संस्कार हैं। मेवों में देश के प्रति प्रेम है मुझे यह देखकर बड़ी खुसी होती है कि जब आज पूरे देश में दंगे-फसाद हो रहे हैं तो इस इलाके में पूरी शांति है इसका मुख्य कारण मुझे यही लगता है कि आप में अभी तक हिंदुओं के संस्कार भरे

पड़े हैं जैसा कि चौधरी करीम हुसैन ने बताया है कि उनके मरहूम पिता चौधरी अमीन खाँ ने बँटवारे के समय हिंदूओं की रक्षा करते हुए कहा था कि पहले वे हिंदू हैं, बाद में ये सब उन्हीं संस्कारों की देन हैं।

मेवात के ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं को स्पर्श करता यह उपन्यास खाँटी मेवात की कहानी कहता है। यहाँ जनतंत्र केवल नाममात्र का है। चुनावी माहौल की गहमागहमी में मेवात प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों की ही तरह है, परंतु स्थानिक लोक संस्कृति एवं सौहार्द के विषय में मेवात समग्र भारत से सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है। मेवात का इतिहास साक्षी है कि यहाँ कभी भी अपनापन एवं आपसी सौहार्द बाधित नहीं हो सका है। हसन खाँ मेवाती से लेकर गाँधी तक ने मेवातियों के इसी सौहार्द की प्रशंसा की है। ऐतिहासिक पात्र हसन खाँ मेवाती ने बाहर से आए मुगल बादशाह बाबर के पक्ष में लड़ाई न लड़कर अपनी कौम और अपने भाईयों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। वहीं गाँधी भारत विभाजन के उपरांत पाकिस्तान जा रहे मेवातियों को रोकने के लिए उनके रास्ते में लेट गए थे।उपन्यास में सांस्कृतिक ऐक्य तथा सांप्रदायिक तनाव की पृष्ठभूमि पर लेखक ने मेवाती जन- जीवन का सजीव चित्रण किया है।

मेवाती समुदाय की जीवन-पद्धति तथा सांस्कृतिक विरासत को वर्तमान संदर्भ में परिवर्तित होते हुए दिखाने के लिए उपन्यासकार ने एक सशक्त कथा-संसार की रचना की है। भारत में विकास की आधारशीला धार्मिक सौहार्द पर टिकी हुई है, परंतु वर्तमान राजनीति तथा धार्मिक ताकदें जन साधारण की मानसिकता को प्रभावित करने में सफल होती दिखाई देती हैं। मोरवाल इस रचना में यह उपदेश देना चाहते है कि, यह ताकदें अपना कितना ही प्रभाव जमाने का प्रयास क्यों न करें मेवात में बसे भारतीयत्त्व को क्षति पहुँचाने में सफल नहीं हो सकतीं। भारतीय जनमानस इतनी सरलता से इन शक्तियों के आगे समर्पित नहीं हो सकता।

यह उपन्यास भारतीय समाज की सशक्त मानसिकता की ओर संकेत करते हुए भिन्न-धर्मीय जनता के आपसी रिश्तों की जटिलताओं को उद्घाटित करता है। एक तथ्य यह भी है कि मानवीय समाज धार्मिक तत्त्ववाद को पूर्णतः भले ही न समझ पाया हो, परंतु धर्म के नाम पर बड़ी सरलता से एकत्रित भी होता है और आक्रामक भी। बहुसंख्यक हिंदू तथा अल्पसंख्यक मुसलमानों की आक्रमकता के कारण सामाजिक उत्थान एवं उन्नति को बाधा अवश्य पहुँचती है। सलेमी अपने जीवन में हिंदू-मुस्लिम में सांस्कृतिक सौदार्ह प्रस्थापित करने का भरसक प्रयास करता हैं लेकिन दुर्भाग्य से अंत में वह अपने मकसद में कामयाब नहीं होता।

'काला पहाड़' उपन्यास में चित्रित समस्या :

शिक्षा की समस्या –

आस मोहम्मद के साथ यह बार-बार होता था कि विधायक हमेशा उसकी शिक्षा के बारे में अपनी बड़ी-बड़ी सभाओं के बीच में पूछ लेता। चौधरी करीम हुसैन ने युवक को इस अंदाज में आदेश दिया जैसे वहाँ उपस्थित लोगों को बता रहा हो कि देखो इसे कहते हैं- पढ़े फ़ारसी, बेचे तेल इस पर बेरोजगार आस मोहम्मद अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता था। आस मोहम्मद को रह-रहकर लगता था कि करीम हुसैन उसे यहाँ केवल लोगों को यह बताने के लिए लाया है कि पढ़े-लिखे युवा उसके यहाँ चिलम भरते हैं।

तब आस मोहम्मद को अपने शिक्षित होने पर शर्म महसूस होती। पर अपने मन को समझाते हुए लगने वाली सरकारी नौकरी के बारे में सोचता और अपने कार्यों में लग जाता। यह युवाओं की लाचारी को दर्शाता है, जहाँ उनकी डिगरी केवल कागज का एक पुर्जा बनकर रह जाती है। भारत दुनिया में पहला ऐसा देश है जहाँ पर शिक्षा राजनीति का शिकार है। विद्यालयों के नींव की पहली ईंट को भी राजनीतिक उद्देश्यों के तहत रखा जाता है। शिक्षा को जातिगत स्तर पर देना, आदिकाल से चला आ रहा है। शिक्षा एक ठोस आधार है, जो जीवन में एक बार सीखा और समझा जाता है उसे फिर गलत मानना असंभव हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में सही शिक्षा का मिलना बहुत आवश्यक है। शिक्षा के स्तर का गिरना देश के विकास के लिए घातक है। शिक्षा के पक्ष में सरकार द्वारा बनाई गई योजनाएँ केवल योजना बनकर रह गई हैं। शिक्षा ही ऐसा साधन है जो व्यक्ति में नेतृत्त्व के गुणों को विकसित करता है। इन सबके बावजूद शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता ही जा रहा है, जबकि इस ओर अधिक जागरुक होना चाहिए।

शिक्षा द्वारा ही धीरे-धीरे विद्यार्थियों में नैतिक, आर्थिक और सामाजिक गुणों का विकास किया जा सकता है। किंतु आज भ्रष्ट राजनीति का शिक्षा में प्रवेश करना एक अंत होते भविष्य को दर्शाता है। आज देश को युवा वर्ग की मांगों और प्रार्थनाओं पर गौर करने की आवश्यकता है। वरना एक दिन शिक्षा का अंत हो जाएगा। देश और विश्वविद्यालयों के तरह छोटे-छोटे विद्यालय भी राजनीति के अखाड़े बन कर रह जाएंगे।

उपन्यास 'काला पहाड़' में स्थानीय नेता स्वयं को मेवात का रहनुमा समझता था। जिसका सबसे बड़ा सबूत उसके पिता द्वारा मेवात में खोला गया विद्यालय था, जो बाद में महाविद्यालय बन गया। वहाँ से निकले बच्चे आज तक अपनी फटी और पुरानी डिग्री लिए बेरोजगार ही बैठे हैं। नौकरी दिलाने की आस में वह युवाओं का शोषण करता हैं स्थिति यह थी कि नौजवान नौकरी की आशा में इस नेता के निजी काम भी करने को तैयार थे, किंतु विधायक आने-जाने वाले अपने मेहमानों के सामने अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए, अपने घर के पढ़े-लिखे नौकरों से उनकी पढ़ाई और डिग्री के बारे में पूछता रहता था। साथ ही, वह लोगों में अपना दबदबा दिखाने के लिए अपने नौकरों से कहता ''जातो जातो या चिलम ए और भर जाफ़्र इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में समाज के ठेकेदारों से शिक्षित युवाओं का शोषण दिखाई देता हैं।''

सांप्रदायिकता की समस्या –

आज कई लोग राजनीति और साम्प्रदायिकता को आधार बना कर समाज में जहर घोल रहे हैं, भगवानदास मोरवाल ने अपने कथा- साहित्य में ऐसे राजनीतिक और साम्प्रदायिक मामलों को निर्भिक होकर उजागर करने का प्रयास किया है। 'काला पहाड़' साम्प्रदायिक दंगों के भिन्न-भिन्न पक्षों से भरा हुआ उपन्यास है। मेवात का स्थानीय राजनेता चौधरी अतर मोहम्मद अपने भाषणों को दमदार बनाने और अपने वोटों की बढ़ोतरी के लिए मेवात जैसे कस्बे के बारे में कहता है- 'और भायो हमें अपना या इलाका पे बहोत फखर है कि आज तलक में कोई फिरकाना फसाद ना हुआ है, सबसू बड़ी बात तो ई है के या इलाका में हिंदू और मेव एक कुणबा की तरह रहता आया हैं..... मजाल है कोई काई की बहन-बेटी पे आँख तो उठा जाए

पर धीरे-धीरे मेवात साम्प्रदायिकता का जमावड़ा बन गया । मेवात के छोटे से गाँव नूह में मुख्यमंत्री अपने भाषणों में मेवों और हिंदुओं की सौहार्द भावना का कारण वहाँ के नेताओं को बताते हैं। वे स्वर्गीय नेता की मिसाल देते हुए कहते हैं कि मरहूम चौधरी आमीन खाँ साहब ने अपने जीते-जी इस इलाके में थोड़ा-सा भी धार्मिक संघर्ष न होने दिया। इस तरह के भाषण देकर नेतागण स्वर्गीय नेताओं के नाम पर भी अपने फायदे तलाशते रहते हैं।

धार्मिकता की समस्या –

धर्म के नाम पर लोगों के बीच दरार पैदा करना कहाँ तक जायज है? किंतु राजनेता ऐसी कई राजनीतिक चालों से धार्मिकता को बढ़ावा देते हैं। आज जिस मेवात के लोग अपने शांतिपूर्ण व्यवहार से पूरे भारत में चर्चित थे, वहीं के कुछ लोगों के आचरण में अब साम्प्रदायिकता का जहर फूटता दिखाई दे रहा था। डॉक्टर नसीर की हवेली पर टँगे हरे और केसरी झंड़े के बीच में बना कमल का पैसा इस हवेली की दीवारों में लगे चूने-मसाले में इस तरह घुला हुआ था कि उसे साम्प्रदायिकता का एक चिह्न कहा जा सकता था। और वहीं डॉ शफीक, दिन में क्लिनिक में आने वाले भोले-भाले मेव मरीजों को इलाज के साथ-साथ इस देश और हिंदुओं के खिलाफ धार्मिकता का धीमा जहर घोलता रहता था। 30 नवंबर सन् 1992 के बाद मेवात के लोगों ने अयोध्या के बारे में जानना, समझना शुरू किया और तब मेवात भी राजनीति का आखाड़ा बन गया। आज सुरक्षा और शांति के नाम पर नगीना जैसे छोटे से गाँव में भी कई अन्य लोग राजनीतिक पहरा देने लगे थे। मेवात की सामाजिक स्थितियों में सद्भावना की कभी हरी-हरी दूब दिखाई देती थी, अब जगह-जगह उनमें कटीली झाड़ियों के अंकुर तेजी से फूटते नजर आने लगे। ऐसी क्यारियों में उग रही इन झाड़ियों को राजनेता खुले आम खाद तथा पानी डालते हैं।

पूरा मेवात केवल धर्म की विसाद पर टिका हुआ था। मेवात जैसा कस्बा धर्म पर राजनीति करने पर उतारू हो गया क्योंकि वहाँ धर्मों के संयोजक धर्म की रक्षा के लिए एक होने लगे थे। लेखक ने गाँव के हिंदू संयोजकों के बारे में बताते हुए लिखा है कि – 'इस तरह हिंदुओं की अस्मिता की सुरक्षा के लिए चारों ने अपने-अपने घोड़े की जीन कस ली कि इस बार भी नगीना की सरपंची रहेगी किसी हिंदू के ही पास कहा जाता है कि 'राजनीति में सब कुछ जायज है। यह बात चरितार्थ करते हुए लाला ज्ञानचंद, जगनी के पास वोटों की अरज लेकर जाते हैं। पर उसके ना करने पर वह उसे धमकाते हैं और डराते हुए कहते हैं कि यदि चुनाव हिंदू न जीत पाए तो इसका हरजाना उसे चुकाना पड़ेगा और धर्म के आधार पर सारा पाप भी उसी को लगेगा। अपने सेठ जी का रौद्र रूप देखकर जगनी सहम गया। उसकी हालत देखकर राजनीति का दूसरा अस्त्र छोड़ते हुए वह उसे देश के विकास में हाथ बढ़ाने की बात करते हैं। हिंदुत्त्व का पाठ पढ़ाकर उसे वोट देने के लिए मनाते हैं। इसी प्रकार हम आज की भ्रष्ट धार्मिकता के अनेक पक्षों को समझ सकते हैं।

राजनीतिक समस्या –

गोहरवाली को साम्प्रदायिकता से बचाने के लिए एक पुलिसकर्मी तक नहीं दिखाई दे रहा था। इस पर सलेमी सोचने लगा कि कहीं सरकारी पदों में बैठे सिपाही भी इसी राजनीति के शिकार तो नहीं हो गए ?

अपनी बात की पुष्टि के लिए उसने एक युवक से आस-पास के माहौल के बारे में पूछा जिससे उसे पुलिस की नाकामयाबी का सबूत मिल गया। पुलिस ने राजनीतिज्ञों के साथ मिलकर, मेवात में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया था। अपने राजनीतिक कुचक्र को विफल होता देख पुलिस वाले आपस में फुसफुसा रहे थे कि – ''इन बंदरों को इतनी छूट दी लेकिन इनसे हुआ कुछ नहीं... इन सुसरों को मंदिर में घुसने से क्या मिला होगा, दुकानों में तोड़फोड़ और लूटपाट करते तो कुछ बात भी बनती।'' समाज के रक्षक ही इस कदर दलदल में फँसे हुए हैं कि साम्प्रदायिकता के तूफान को बढ़ावा देने के लिए कई जुगात भिड़ते नजर आते हैं। नबी खाँ को मेवात में लगे कर्फ्यू में राजनीति के षड़यंत्रों के ताने-बाने समझ आ रहे थे, उसे समझ आने लगा था कि डॉ. शफ़ीक के प्रतिनिधित्त्व में जामा मस्जिद के इमाम के पास जाने वाले प्रतिनिधि मंडल की सार्थकता और औचित्य क्या था।

आज राजनेता अपने रुतबे और पेठ को बरकरार रखने के लिए अपनी जाति और धर्म को भी नहीं छोड़ते हैं। करीम हुसेन जमातियों के सामने भी राजनीतिक दांव-पेंच करते नहीं चूकता और विशुद्ध मेवाती होने का नाटक करते हुए अपने नौकर को कहता है कि वह खाने में केवल महेरी ही पिएगा। जो उस प्रदेश का पारंपरिक पेय है जिससे वहाँ बैठे लोग उसका जन्मभूमि के प्रति लगाव देख अचरज में पड़ गए। राजनेता अपने पद और वोट बैंक के लिए हर किसी के साथ साम्यता से चलना चाहते हैं। ''मुँह में राम-राम, बगल में छुरी'' जैसी कहावत को चरितार्थ करते हुए चौधरी करीम हुसेन अपना वोट बैंक भरने के लिए मेव जाति को हिंदू बना देता है। जिस पर प्रोफेसर उस्मानी साहब, डॉ. शफी को जमीन पर थूकते हुए कहते हैं कि कैसे कोई राजनेता, राजनीति में अपना धर्म तक बदल देने को तैयार हो जाता है। कुछ पढ़े-लिखे लोग इस बात को समझते हैं पर सीधी-साधी ग्रामीण जनता इसे केवल नेताओं का बड़प्पन ही मानती है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार की समस्या –

किसी भी देश व राज्य में एक स्वस्थ्य राजनीतिक माहौल के होने से पूरा राज्य भ्रष्टाचार से मुक्त हो सकता है । किंतु आज का राजनीतिक माहौल इसे झुठलाता जा रहा है। आज के भारत का लगभग प्रत्येक मंत्री किसी न किसी घोटाले में फँसा हुआ है और इसके बावजूद वह अपने आपको भ्रष्टाचार से मुक्त बताता है । यह उसकी राजनीतिक पकड़ ही है जिसकी बदौलत वह अपने आपको निर्दोष कहता फिरता है । आज राजनेता अपने फायदे के लिए कायदे और कानूनों को बनाते देखे जा सकते हैं। प्रत्येक सरकारी कार्य बिना किसी राजनीतिक हस्तक्षेप के संभव नहीं है। सरकारी हुकमरानों के चोंचले और आरामतलबी की व्याख्या करना एक सराहनीय कार्य होगा राजनेताओं का दबदबा उनके पदों के अनुसार निश्चित होता है । किस पदवी को कितना आदर और सम्मान देना है, वह भी उसकी पदवी पर निर्भर करता है। समारोह में आने वाले अतिथियों का स्वागत सभी तहेदिल से करते हैं, यदि अतिथि स्वयं कोई राजनेता हो तो उस समारोह को यादगार बनाने के लिए आयोजक हर संभव कोशिश करता है ।

राजनीति में इस तरह के दांव-पेंच दिखा कर हर कोई अपना पलड़ा भारी करना चाहता है। उपन्यास 'काला पहाड़' में नूह गाँव में प्रधानमंत्री के आने पर राजनेताओं का हाल विस्मय में डालने वाला था।

प्रधानमंत्री जी के आने की खुशी में पूरे इलाके की नसों में मानो बरसों से जमा खून एकाएक पूरे वेग के साथ दौड़ने लगा। ज्यादातर उन तथाकथित नेताओं और स्थानीय छुटभैया नेताओं के सिर सफेद फेटों से चमकते हुए दिखाई देने लगे, जो प्रायः बड़े नेताओं के लिए दलाली करते थे। आजादी के कई सालों बाद प्रधानमंत्री के मेवात में आने का प्रयोजन लोगों के मन में सवाल खड़े कर रहा था और उस पर राजनेताओं का सजग होना गाँव की जनता के मन में उनकी भ्रष्टता को इस प्रकार प्रदर्शित कर रहा था देश को आजाद हुए आधी सदी बीतने को आ रही है और प्रधानमंत्री जी को बहादुर मेवों की याद में शिलान्यास करने की सुध अब आई है? अठारह सौ सत्तावन की क्रांति को गुज़रे एक सदी से ऊपर हो गया और बहादुर मेवों की याद आ रही है अब? वाह क्या संगत बैठाई है प्रधानमंत्री जी ने।

नूह में सरपंच द्वारा माँग-पत्र की रूपरेखा सुनने के बाद प्रधानमंत्री का चेहरा खिंचता चला गया। मुख्यमंत्री की हालत तो और भी खस्ता थी। उन्होंने तय कर लिया कि वह अतर मोहम्मद खाँ जैसे नेताओं को अपना मंत्री नहीं बनाएंगे। वहीं के दूसरे स्थानीय नेता करीम हुसैन खाँ का हाल तो और भी बुरा था। वह सोच रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि इस भाषण के कारण महू की घाटी में उसके बड़े बेटे के नाम से मिला हुआ पत्थरों का ठेका उसके हाथ से न जाए। ऐसा विचार आते ही चौधरी करीम हुसैन के चेहरे पर पसीना छूटने लगा। सभा में किसी को यह पता न चले इसलिए वह पानी पीने के एवज में अपने चेहरे को छुपाने लगा।

सरपंच के माँग पत्र ने पूरे महकमे को हिला दिया था। इन सबके चलते स्थानीय नेता अतर मोहम्मद खाँ जो मंत्री पद की चाह में इस सभा का आयोजन करवा रहा था, उसकी स्थिति का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है उसने सोचा भी नहीं था कि भीड़ इकट्ठी करेगा वह और तालियाँ बजेगी इस मामूली से सरपंच के महज माँग-पत्र पढ़ने पर। चौधरी अतर मोहम्मद ने आज ही इस घटना से यह सबक ज़रूर ले लिया कि पहले तो वह किसी भी जनसभा में कोई माँग पत्र पढ़वाएगा नहीं और अगर ऐसी नौबत आई भी, तो वह खुद ही उसे पढ़ेगा। इस तरह से भ्रष्ट राजनीति के चलते पूरे मेवात में राजनेताओं की दशा सोचनीय हो गई। क्या कहें और क्या न कहें के बीच राजनेताओं की राजनीति फँस सी गई। इस आधार पर कह सकते हैं कि भ्रष्ट राजनीति नहीं बल्कि उसको चलाने वाले राजनेता होते हैं। अपनी आवश्यकता, सहूलियत, फायदे और उन्नति के बल पर वे राजनीतिक खेल खेलते हैं। भ्रष्ट राजनीति का एक उदाहरण मुख्यमंत्री चौधरी रामलाल भी है जिसने पूरे मेवात के सामने भाषण देते समय ऐसा मंजर तैयार किया कि सारा मेवात देखते ही रह गया।

भ्रष्ट राजनीति के अपने नए नीति और नियम होते हैं। सामान्य जनता के सामने नए नए अवतारों में आकर राजनेता उन्हें रिझाने का प्रयास करते हैं। उनका केवल यही मनोरथ होता है कि वह उनके वोट फिर बटोर लें। मेवात के नेताओं की चुनावों से पहले की रणनीति का वर्णन बड़े ही रोचक तरीके से किया है। मेवात डेवलपमेंट बोर्ड की घोषणा होते ही इलाके के गाँव- कस्बों की दीवारे रंग-बिरंगे इश्तहारों से छप गई। वहाँ कुछ इश्तहारों पर इंदिरा गाँधी की बड़ी-सी तस्वीर के नीचे मुख्यमंत्री, स्थानीय विधायक व आमीन डिग्री कॉलेज के चेयरमैन चौधरी करीम हुसैन की तस्वीर छपी हुई मिली। अर्थात् चुनाव आने से

पहले प्रचार के लिए गाँवों में राजनेताओं ने अपने हथियार डालने शुरु कर दिए। वही शिक्षामंत्री ने राजनीति का ऐसा षड्यंत्र रचा कि पूरा मेवात हक्का-बक्का रह गया। उसने रोजका मेवात में औद्योगिक इकाइयों स्थापित कर दीं। कारण यह था कि आने वाले समय में चौधरी मुर्शीद अहमद की बंजर जमीन सोने के भाव बिक जाए अर्थात् शिक्षामंत्री चौधरी मुर्शीद अहमद ने मेवात का नहीं, बल्कि मेवात के बजाय ऐसी जगह औद्योगिक विकास की योजना बनाई जिसकी पहुँच मेवात से बहुत दूर थी।

सारे नेता एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होते हैं। किंतु जहाँ लाभ कमाने की बात आती है, वह एक-दूसरे का गला काटते भी नहीं झिझकते। मेवात की जनता के साथ हो रहे अत्याचारों के खिलाफ स्थानीय नेता चौधरी करीम हुसैन लगा हुआ था। जबकि, उसकी राजनीतिक विशाद के बारे में पूरे मेवात को जानकारी थी। आज वह मुर्शीद अहमद का भांडा फोड़ने में लगा हुआ था जिसके बारे में लेखक कहते हैं करीम हुसैन जो कभी इसी मुख्यमंत्री का खास माना जाता था जितना आज मुर्शीद अहमद है। उसी करीम हुसैन ने जिसने इसी मुख्यमंत्री के कर कमलों से अपने मरहूम वालिद चौधरी आमीन खाँ साहब को बाबा-ए-कीम अर्थात् राष्ट्रपिता का ख़िताब दिलाया था। यह भी खुल्लमखुल्ला आरोप लगा दिया कि मेवात के साथ होने वाली ना-इंसाफी में मुख्यमंत्री पूरी तरह शामिल है, दूसरे अर्थों में यह कहना उचित होगा कि इस सौदेबाज़ी में मुख्यमंत्री भी लाखों का खेल खेल गया। अग्निकांड से ध्वस्त नगीना आज खण्डहर बना हुआ था। राजनेता केवल अपना फर्ज अदा करने के लिए मुआयना कर चले गए। स्थानीय नेताओं की राजनीतिक चालबाजियों पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने कई घटनाओं को शामिल किया है। यह सर्वविदित है कि नेता मुआवजे का रसगुल्ला दिखाकर और झूठे आश्वासनों को थोपकर अपना हाथ झाड़कर चले जाते हैं।

1.3 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) पर्यायवाची प्रश्न

1. भगवानदास मोरवाल का जन्म हरियाणा के .... गांव में हुआ।

   अ) नगीना　　ब) सगीना　　क) रामपुर　　ड) तामनी

2. भगवानदास मोरवाल का जन्म सन् ....ई में हुआ।

   अ) 23 जनवरी, 1960　　ब) 23 जनवरी, 1965

   क) 20 जनवरी, 1970　　ड) 23 फरवरी, 1960

3. भगवानदास मोरवाल के पिताजी का नाम .... हैं।

   अ) मुंगतराम　　ब) संगुतराम　　क) रामेश्वर　　ड) नारायणदास

4. भगवानदास मोरवाल के माताजी का नाम .... हैं।

   अ) कलावती देवी　　ब) सुलावती देवी　　क) मंगला देवी　　ड) रूपमती

5. भगवानदास मोरवाल प्रारंभिक शिक्षा मेवात जिले के .... गांव में हुई।

अ) नगीना ब) भारांपुर क) पुरैना ड) खंडावी

6. भगवानदास मोरवाल पत्नी का नाम .... हैं।

अ) सुनीता ब) वनिता क) शामली ड) सुरिना

ब) उचित मिलान प्रश्न

1. काला पहाड़ - भोपाल

2. सलेमी - हरियाणा

3. वनमाली सम्मान - बाबू खां

4. जनकवि सम्मान - प्रथम रचना

क) सही गलत प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित वाक्यों में से सही को पहचानें।

1. भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़' उपन्यास हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता को स्पष्ट करता हैं।

2. भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़' यह उनका प्रथम उपन्यास हैं।

3. भगवानदास मोरवाल को सन् 1985 ई. में डॉ. आंबेडकर सम्मान प्राप्त हुआ हैं।

4. उपरोक्त सभी

प्रश्न 2 सही वाक्य पहचाने

1. भगवानदास मोरवाल के लडके के नाम धीरज मोरवाल हैं।

2. भगवानदास मोरवाल की लडकी का नाम कामायनी मोरवाल हैं।

3. मोरवाल जी के उपन्यास का नाम 'काला पहाड' है।

4. मोरवाल जी ने कहानी विधा के अलावा सभी विधाओं में लेखन किया हैं।

मुहावरें :

जान में जान आना

हाँथ-पाँव फुल जाना

भैंस के आगे बिन बजाना

साँप सूंघ जाना

नऊ दो ग्यारह होना

मन मसोर कर रह जाना

कहावतें :

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुणबा जोड़ा

पढ़ें फ़ारसी बेचें तेल

भागते भूत की लंगोटी हाथ लगना

1.4 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) पर्यायवाची प्रश्न

1. नगीना 2. 23 जनवरी 1960 3. मुंगतराम 4. कलावती देवी

5. नगीना 6. सुनीता

ब) उचित मिलान प्रश्न

1. प्रथम रचना 2. बाबू खां 3. भोपाल 4. हरियाणा

क) सही गलत प्रश्न :-

1. ड. उपयोक्त सभी 2., 3.

1.5 सारांश :

1. 'काला पहाड' उपन्यास के द्वारा भगवानदास मोरवाल जी ने आदर्श समाज का मार्गदर्शन किया हैं।
2. रूढ़ियों से मुक्त समाज की कामना की हैं।
3. सांप्रदायिक भावना की अधिकता के दुष्परिणामों का प्रतिपादन किया हैं।
4. हिंदू - मुस्लिम समाज में एकता भाव निर्माण करने का प्रयास किया हैं।
5. धार्मिक भावना के आड़ में आम आदमी के हो रहे शोषण को वास्तविकता से चित्रित किया हैं।

1.6 स्वाध्याय :

1.6.1 लघुत्तरी प्रश्न –

1. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व का परिचय दीजिए।
2. भगवानदास मोरवाल के कृतित्त्व का परिचय दीजिए।
3. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ बताइए।

4. भगवानदास मोरवाल के शैक्षिक जीवन को स्पष्ट कीजिए।

5. भगवानदास मोरवाल के रहन – सहन की विशेषताएँ बताइए।

1.6.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. भगवानदास मोरवाल के 'काला पहाड़' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

2. भगवानदास मोरवाल के 'काला पहाड़' उपन्यास में चित्रित समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

3. भगवानदास मोरवाल के 'काला पहाड़' उपन्यास के मेवात परिवेश का परिचय दीजिए।

4. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व तथा कृतित्त्व का परिचय दीजिए।

1.7 क्षेत्रीय कार्य :

'काला पहाड़' उपन्यास तथा यशपाल का 'झूठा सच' उपन्यास की तुलना कीजिए।

1.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

टोपी शुक्ला – राही मासूम रजा

कर्मभूमि – प्रेमचंद

❑❑❑

इकाई–2
'वंचना' – भगवानदास मोरवाल

अनुक्रम–

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

2.3.1 'वंचना' उपन्यास की समीक्षा

2.3.2 'वंचना' उपन्यास में चित्रित समस्या

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

- भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व से परिचित कराना।
- भगवानदास मोरवाल के साहित्यिक प्रदेश एवम सामाजिक दायित्त्व से परिचित कराना।
- भगवानदास मोरवाल की रचनाओं के आस्वादन अध्ययन तथा मूल्यांकन से अवगत कराना।
- भगवानदास मोरवाल तथा उनकी निर्धारित रचनाओं का विशेष अध्ययन कराना।
- रचनाकार तथा उनकी रचनाओं का वर्तमानकालीन महत्त्व एवं प्रासंगिकता से अवगत कराना।

2.2 प्रस्तावना :

हिंदी के बहुमुखी रचनाकारों के रूप में भगवानदास मोरवाल का नाम लिया जाता है। जिन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जैसे विभिन्नत विधाओं पर अपनी कलम चलाई। अपने लेखन के माध्यम से कई सारे अनछए विषय को अपने लेखनी का विषय बनाया। ग्रामीण जीवन और वहाँ का परिवेश उनके लेखन से

सजीव हो उठता है। दलित वर्ग को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का कार्य उन्होंने अपने लेखनी के माध्यम से किया है। स्त्री जीवन, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था जैसे कई पहलू उनके चिन्तन के विषय रहे हैं। उन्होंने हिंदी उपन्यास विधा में कई नये संदर्भों को रेखांकित कर अपनी पहचान बनाई है। भगवानदास मोरवाल कृत 'वंचना' उपन्यास न्यायिक विफलताओं, क़ानूनी पेचीदगियों और सामाजिक, पारिवारिक विडम्बनाओं को बहुत स्पष्टता से हमारे सामने लाता है।

2.3 विषय विवेचन :

प्रस्तुत इकाई 'वंचना' उपन्यास (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित) की है। उनके सभी उपन्यासों की केन्द्रीय चिन्ता स्त्री है।स्त्री के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून हैं, लेकिन उन कानूनों के रहते हुए भी स्त्रियों के लिए समाज में समानता, सुरक्षा और सम्मान से जीना दुश्वार है। 'वंचना' उपन्यास हमारे वर्तमान समय का वह आख्यान है जिसमें पीछे लाशें हैं और आगे अँधेरा।उपन्यास पढ़ते हुए समझ में आता है कि भले ही वर्तमान भारतीय समाज का राजनीतिक नारा है 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', मगर सामाजिक-सांस्कृतिक आकांक्षा है 'आदर्श बहू'।

2.3.1 'वंचना' उपन्यास की समीक्षा –

भगवानदास मोरवाल का सन् 2019 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ 'वंचना' यह सातवा उपन्यास है। यह उपन्यास दुनिया की आधी आबादी का वह सच सामने लाता है, जिसे लोकतंत्र की न्यायवादी प्रक्रिया के पीछे अँधेरे की तरह वंचित करके रखा गया है। पितृसत्ता की चालाकियों ने बहुत व्यवस्थित ढंग से उसके शोषण की सारणियाँ तैयार की हैं। वर्तमान समाज के राजनीतिक एजेंडे में भले ही 'बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ' की मुहिम शामिल है, किंतु तमाम सत्ताएँ उसे बिस्तर पर खींच लेने को आमादा है। हाल ही में आई आदर्श बहु निर्माण की खबरें भले ही किसी दृश्यमान एजेंडे में शामिल न हों, किंतु वर्षों से समाज ऐसी ही स्त्री की कल्पना करता आया है। उसके लिए घर की चहारदीवारी दरअसल उसे महफूज रखने की एक तयशुदा साजिश है। स्त्री के चारों ओर की गई इस किलेबंदी में धर्म ने हमेशा ही एक मजबूत पहरेदार की भूमिका निभाई है। कभी भय का पहाड़ा पढ़ाकर, कभी परलोक की ज्यामिती सिखाकर, कभी पतिव्रता की त्यागमयी लोकोक्तियाँ रटवाकर। हालाँकि उसका मकसद हमेशा ही बराबरी के मोर्चे पर उसे फतह करना रहा है। मोरवाल ने अपने इस उपन्यास में लोकतंत्र के तीसरे स्तम्भ न्यायपालिका के सामने इंसाफ के लिए कुलबुलाती ऐसी स्त्रियों की कथा को चुना है, जिन्हें सामाजिक संरचना की जटिलताओं ने मौत के मुहाने पर ला खड़ा किया है और न्यायमूर्ति की आँखों से पर्दा हटाए नहीं हट रहा है।

इस उपन्यास का कथानक संपूर्ण भारतीय समाज की कथा बाँचता है। यहाँ जितनी मात्रा में हिन्दू जिन्दगियाँ हैं, उतनी ही मात्रा में मुस्लिम समाज भी मौजूद है। दोनों ही ओर अंधेरा स्त्री के हिस्से आता है। 'वंचना' उपन्यास स्त्रियों को दिए गए अधिकारों के साथ खिलवाड़, छल-कपट आदि पर आधारित है। उपन्यास में दो परिवारों को केंद्र में रखा गया है, एक सदानंद का परिवार और दूसरा बलविन्दर का। सदानंद का विवाह एक कमसीन उम्र की लड़की से कराया जाता है जो शादी की पहली रात को ही चल बसी हैं।

शारीरिक रूप से वह अभी देहिक संबंधों के लिए तैयार नहीं थी जिसके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। पुलिस के अनुसार सदानंद कातिल है साथ ही एक बलात्कारी भी क्योंकि अनुच्छेद ३७६ के अनुसार यदि अठारह वर्ष से कम उम्र की लड़की का विवाह कराया जाए और उसे शारीरिक संबंध बनाने के लिए विवश किया जाए तो वह बलात्कार की श्रेणी में आता है और इसी धारा के तहत सदानंद को अदालत दस साल की सजा सुनाती है। उसका पूरा परिवार उसे निर्दोष सिद्ध करने में दिन-रात लगे रहते हैं और अंत में उन्हें अदालत के निर्णय को ही मान लेने में भलाई दिखती हैं। वहीं दूसरी ओर बलविंदर है जिसे स्त्रियों की इज़्ज़त के साथ खेलना बहुत पसंद है। वह कभी घुमंतुओं की लड़की के साथ ज़बरदस्ती तो कभी रुवीना को अपनी हवस का शिकार बनाता है, उसपर हर बार अदालत में केस चलता परंतु हर बार अदालत अपराध मुक्त घोषित कर उसे रिहा करती है। उसे लगता है कि वह कोई भी संघीन अपराध क्यों न करे उसका वकील उसे छुड़ा ही लेगा और हर बार ऐसा ही होता है। अदालत में बलविंदर के अपेक्षा पीड़ितों पर ही आरोप लगाए जाते, उन्हें धंधा करने वाली, पेशेवर आदि नामों से अपमानित किया जाता है और बड़ी ही चालाकी से वह अपने पक्षकार को निर्दोष सिद्ध करके उसे रिहा करवाता है। जहाँ परिवार के बड़ों से उसको घृणा मिलनी चाहिए थी वहाँ अपराधी बेटे का स्वागत माँ आरती से करती हैं जैसे उसका बेटा कोई युद्ध जीत के आया हो।

यहीं से हिन्दू विवाह अधिनियम व बलात्कार अधिनियम को लेकर अनेक बहसे शुरु होती है। न्यायालयों की जटिल प्रणाली और बाल विवाह की तमाम गुत्थियाँ भी आगे पन्ना-दर-पन्ना खुलती चलती हैं। दूसरी ओर इसी परिवार के एक निकट संबंधी के लड़के बलविन्दर द्वारा किसी निम्न जाति की लड़की का बलात्कार कर दिया जाता और वह न्यायालय से बाइज्जत बरी हो जाता है। ऐसा एक बार नहीं, बल्कि दो बार होता है, जिसके चलते सदानंद के माता-पिता को अपने लड़के के कार्य में कोई जुर्म दिखाई नहीं देता। फिर यहीं से शुरु होता है. स्त्री के लिए सलीब के निर्माण का काला अध्याय।

कथा में दूसरी ओर मुस्लिम परिवार की समीना के निकाह की कथा आकार लेती है। वह विवाह के तीन वर्षों तक अपने पति आसिफ के लौटने का इंतजार करती है, किंतु उसका पति नहीं लौटता। इंतजार से आजिज आकर उसके माता-पिता उसका दूसरा निकाह कर देते हैं। किंतु निकाह के कुछ दिनों बाद ही पहला शौहर हाजिर हो जाता है और समीना पर अपना हक जताता है। समीना के लिए शरीअत और न्यायिक प्रक्रिया के अनुसार पहले पति के पास लौटने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं बचता। इस पूरी घटना में उसका होने वाला दैहिक और मानसिक शोषण किसी खाते दर्ज नहीं होता। वह केवल एक गोस्त भर बनकर रह जाती है, जिसे हक दिखाकर कोई भी नोच सकता है। यह घटना स्त्री के साथ उस सामाजिक वंचना का प्रमाण भी है जहाँ गरीब, कमजोर और दलित होने के कारण उस स्त्री को कोई गवाह नहीं मिलता। जज के फैसले का आधार भी मर्दवादी कानून की पोल खोलने वाला है। जज का मानना था कि इज्जतदार और बड़ा आदमी किसी का बलात्कार कर ही नहीं सकता। दूसरा.. कोई मर्द अपने किसी सगे-संबंधी के आगे ऐसा काम नहीं कर सकता। कोई बड़ी जाति का मरद किसी छोटी जाति की औरत के साथ

इसलिए ऐसा गलत काम नहीं कर सकता क्योंकि यह मेली होती है सबसे मजेदार बात तो उस जज ने यह कही कि मोहन लाल अपनी औरत की इज्जत लूटते हुए देख नहीं सकता।

इस पूरी कथा में विवाह संस्था, सहवास-संबंध, प्रेम-संबंध और ऑनर किलिंग के सवाल भी रंगमंच पर लगातार अपनी आवाजाही बनाए रखते हैं। दिसंबर 2012 में हुए दिल्ली के चर्चित निर्भया कांड के बाद से आकार लेकर यह कथा अपने वर्तमान तक के उन सभी प्रावधानों पर कड़ी नजर रखती है, जिन्हें अदालतों द्वारा बार-बार बदला गया है। ये प्रावधान चाहें विवाह को लेकर तय की गई न्यूनतम उम्र से संबंधित हो या फिर अपनी मर्जी से बनाए गए शारीरिक संबंधों को लेकर हो। यहाँ लेखक ने हिन्दू धर्म-ग्रंथों से लेकर मुस्लिम धर्म ग्रंथों तक को भी छाना है और ये पूरी ईमानदारी के साथ इन वंचनाओं की लड़ाई की अग्रिम पंक्ति में शामिल हो गए हैं। लेखक ने एक कानूनविद से खुलकर कहलवाया है, स्त्री से संबंधित हमारी इन सारी धाराओं और हिन्दू विवाह अधिनियम की पुनः समीक्षा होनी चाहिए।

यहाँ जो क़ानून सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं वह सब निरर्थक सिद्ध हो गये, क़ानून का रखवाला ही क़ानून की धज्जियां उड़ाने में मगन है। यही कारण है क़ि बलविन्दर जैसे अपराधी खुले में सांस लेते नज़र आते है और बेचारी पीड़िता को समाज में मुँह ढक कर रहना पड़ता है। हर बार क़ानून से बचने का परिणाम यह हुआ कि बलविंदर एक सात साल की मुन्नी को अपनी हवस का शिकार बनाता है। और बाद में उसे मार डालता है। ऐसे व्यक्ति को जहाँ चौराहे पर फांसी से लटकाना चाहिए था वहीं ठाकुर ब्रजनंदन जैसे वकील उसकी पैरवी करते नहीं थकते और फांसी की सजा को कम कर उम्रकैद में बदल देता है।

प्रस्तुत उपन्यास में नारी से संबंधित विभिन्न धाराओं के प्रति जहाँ समाज को सचेत किया गया है वहीं इन धाराओं को कोरी सुरक्षा के रूप में दर्शाया गया है। जहाँ यह धाराएँ स्त्री के हीत में होनी चाहिए थी वहाँ इन्हीं धाराओं को स्त्रियों के विरुद्ध उनकी इज्ज़त उतारने के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। सदानंद जो जाने-अनजाने में हुए अपराध की सज़ा भुगत रहा है, वह अपने परिवार से कोसों दूर चला जाता है जहाँ कोई उसका अपना नहीं हो।

2.3.2 'वंचना' उपन्यास में चित्रित समस्या –

बाल विवाह की समस्या –

'वंचना' उपन्यास में सदानंद की पत्नी की उम्र 12-13 वर्ष की बताई गई है जो शादी की अगली रात को ही प्राण त्याग देती है क्योंकि उसका शरीर इस संबंध के लिए तैयार भी नहीं हुआ था कि उसकी शादी कर दी गई, वह मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा से झूझ रही थी। कम उम्र में इस तरह का संबंध उसकी मृत्यु का कारण बनता हैं। इस उपन्यास में समीना का विवाह भी कम उम्र में ही हो जाता है, यह सोच कर कि खाता-पीता घर है तो बेटी सुखी रहेगी। समीना से अधिक उमर होने पर भी हमने यही सोचा कि कोई बात नहीं अच्छा-खाता-पीता घर है। कम-से-कम बेटी तो जिंदगीभर सुखी रहेगी। अतः देखा जा सकता है कि बाल-विवाह के दुष्परिणाम हमारे समक्ष इस तरह तांडव कर रहे हैं।

अनमेल विवाह की समस्या

भारत देश में विवाह को लेकर कई समस्याओं ने जन्म लिया है और यह समस्याएँ हम स्वयं ही उत्पन्न करते हैं जिसका परिणाम एक नारी को आजीवन भुगताना पड़ता है। इन समस्याओं में एक है अनमेल विवाह। जो एक सभ्य समाज के लिए हानिकारक तो है ही साथ ही विघटन का साधन भी बनती है। अनमेल विवाह कई प्रकार के होते हैं, 'वंचना' उपन्यास में भी समस्या से पीड़ित सदानंद की पत्नी शादी की पहली रात को ही प्राण त्याग देती है। यहाँ तो इन दोनों में धरती-आसमान का फरक है। कहाँ बाईस तेईस बरस का यह छह फूटा लम्बा-तडंग सदानंद, कहाँ बटुआ-सी छुईमुई बहू। इसके अतिरिक्त समीना और आसिफ का विवाह केवल इसलिए कर दिया जाता है कि लड़का कमाऊ है और बेटी को खुश रखेगा।

दहेज की समस्या

दहेज प्रथा दहेज लेना तथा दहेज देना प्राचीन काल से ही हमारे समाज में चली आ रही परम्परा है और आज आधुनिक युग में भी इस प्रथा को भलीभांति देखा जा सकता है 'वंचना' उपन्यास में उपन्यासकार ने दहेज प्रथा के दुष्परिणामों को भी यथासंभव प्रस्तुत किया है। नसीम को उसके ससुराल वालों के साथ-साथ उसका पति केवल एक मोटार साईकिल के लिए उसे जिंदा जला देते हैं उनका अंतर्मन उन्हें किस प्रकार यह सब करने के लिए तैयार होता है, एक बार भी उनके हाथ नहीं कांपते। उसे अब भी यकीन नहीं हो रहा है कि कोई लालच में इतना क्रूर और अंधा भी हो सकता है कि एक औरत जो माँ बननेवाली हो, दहेज के लोभी उसकी जाकर हत्या कर देंगे।

मोहभंग की समस्या –

माता-पिता अपने संतानों से काफी उम्मीद लागते हैं लेकिन यही संतानें जब कोई गलत काम करती है तब माता-पिता के साथ पूरे परिवार का मोहभंग हो जाता हैं। 'वंचना' में पुत्र सदानंद के जेल जाने पर पिता सज्जन सिंह पूरी तरह टूट जाता है वह स्वयं को अकेला महसूस करता है। जब कोर्ट सदानंद को सज़ा सुनाती है तो सज्जन सिंह की जान हलक में ही सूख जाती है। कोर्ट से बाहर आते-आते सज्जन सिंह की पिंडलियों की जैसे नसें खिंच गई। पाँवों की सारी ताकत किसी ने मानों सोख ली। उनके आगे-आगे जाते दो सिपाहियों के साथ लगभग घिसटकर चल रहे सदानंद ने निरीहता के साथ पलटकर देखा, और उसकी जैसे ही पिता से नज़रें मिलीं, सज्जन सिंह किसी खोखला दरख़्त-सा भरभराता ढह गया।

दांपत्य जीवन की समस्या –

'वंचना' उपन्यास में कई प्रसंगों को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। समीना और आसिफ़ के दाम्पत्य जीवन को एक ऐसी करवट लेते दिखाया गया है कि पाठक उत्सुकतावश उपन्यास को पढने में जुट जाता है। आसिफ द्वारा समीना को निकाह के बाद अचानक गायब हो जाना और तीन साल बाद वापस लौटना तब जब समीना की दूसरी शादी हो चुकी होती है परन्तु आसिफ का समीना के प्रति प्रेम उसे किसी और के साथ देखना स्वीकारता नहीं है और समीना का उसके दूसरे पति से तलाक करा कर अपने साथ ले जाता है।

भ्रष्टाचार की समस्या –

'वंचना' उपन्यास में जब जानकी बाल विवाह को रोकने के लिए रामकरन के घर पुलिस ले के जाती है तो वहाँ पहुँचकर जानकी की काया ही पलट जाती है, रामकरन द्वारा पुलिस को लड्डू खिलाए जाते हैं और साथ ही उनके हाथ में एक पचास का नोट थमा दिया जाता हैं। हमारे समाज में न्याय पालिका को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। कहा जाता है कि जिस देश की न्याय – पालिका स्वस्थ हो, न्याय पर आधारित हो वहाँ की जनता को अपने अधिकारों के साथ-साथ संतोष भी प्राप्त होता है कि कहीं कुछ भी गलत नहीं हो सकता परन्तु जिस राज्य की न्याय पालिका ही सुस्त हो वहाँ से जनता निराश तथा हथप्रभ होती नजर आती है। निर्भया काण्ड में दोषित आरोपियों को सज़ा देने में पूरे सात साल लग गए, इस से हमारे देश की न्याय व्यवस्था तथा पुलिस व्यवस्था को भलीभांति समझा जा सकता है।

बलात्कार की पीड़ा –

'वंचना' उपन्यास में जानकी जो कि एक समाज सुधारक के रूप में कार्यरत थी, बाल विवाह को रोकने का भरपूर प्रयास करती नज़र आती है परन्तु इस शुभकार्य से ही उसके जीवन में ग्रहण लग जाता है। जब वह रामकरन को समझाने उसके घर जाती हैं तो वह उसे अपना अपमान समझकर उससे बदला लेने की ठान लेता है और अंत में रामकरन अपने भाई के साथ मिलकर उसके घर जाते हैं और उसके पति को बुरी तरह मारते-पीटते हैं और उसे एक कोने में बाँध देते हैं और जानकी की इज्जत लूटते हैं, समाज में ऐसे भी व्यक्ति है जो अपनी गलती मानना तो दूर सुधरने का भी नाम नहीं लेते, वह अपनी शान इसी में समझते हैं। 'वंचना' उपन्यास में जानकी के साथ हुए बलात्कार के जुर्म में रामकरन को अदालत बरी कर देती है।

जातियता की समस्या

जानकी पर पति के सामने रामकरन द्वारा बलात्कार किया जाता हैं फिर भी अदालत द्वारा रामकरन को बा ईजत बरी किया जाता हैं। अदालत की राय थी ''इज्ज़तदार और बड़ा आदमी किसी का, वो क्या कहते हैं बलात्कार कर ही नहीं सकता। दूसरा, यह कहा कि कोई मरद अपने किसी सगे-सम्बन्धी के आगे ऐसा काम नहीं कर सकता। कोई अगड़ी जाति का मरद किसी छोटी जाति की औरत के साथ इसलिए ऐसा गलत काम नहीं कर सकता क्योंकि वह मैली होती है।

जब अपराजिता एक कुम्हार लड़के के साथ घर से भाग जाती है और उनके मिलने पर अदालत उन दोनों का विवाह करने की सहमति देती है तो अपराजिता की माँ कहती हैं– ''यानी अब हमें उस कुम्हटटे के संग अपनी अपरा की भाँवरे डालनी होंगी?'' उपन्यासकार ने ब्रजनंदन के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि इतने बड़े वकील होने के बावजूद उसकी जातिगत मानसिकता बदल नहीं गई। जब रहमत उसे कुछ ठण्डा या गरम लेने को कहते हैं तो वह मना करते हैं और रहमत उन्हें समाज की कड़वी सच्चाई से अवगत कराते हैं कि ठाकुर लोग मुसलमानों का नहीं खाते हैं।

न्याय व्यवस्था की समस्या –

इस देश की प्रशासन व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए भगवानदास मोरवाल यहाँ की सरकार तथा आम जनता को सचेत करते हुए, समय पर आँखें खोलने का सन्देश देते है कि कोर्ट के अंतिम फैसले की फाईल बिना पढ़े रिकॉर्ड रूम में भेज दी जाती है। अब बताओ ऐसे में मुजरिम आज़ाद नहीं घूमेंगे तो क्या जेल में होंगे। यानि जिस निचली अदालत की तरफ़ से कातिलों के खिलाफ वारंट जारी होना चाहिए था, वहाँ तक फ़ाइल पहुँची ही नहीं। यह छोटा सा प्रसंग परन्तु इसमें भारत की न्याय व्यवस्था का एक कटुसत्य हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है कि जिस देश की अधिकतम जनसंख्या निम्न वर्ग की है, वहाँ उन्हें न्याय मिलना तो दूर मुजरिम खुले में सांस लेने को आज़ाद है। यहाँ की न्याय- व्यवस्था उन्हें दूसरा जुर्म करने के लिए स्वतंत्र छोड़ देती है। वकील भी अपनी जेब भरने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाते हैं जैसे वकील ब्रजनंदन को अपने वरिष्ठ साथी का दिया हुआ गुरुमंत्र याद आता है– ‘‘मुवक्किल से अपनी फीस तभी ले लेना, जब उसकी आँखों में आँसू या हाथ में हथकड़ी पड़ी हो। आँसू सूखने और हथकड़ी खुलने के बाद कोई भला आदमी फीस नहीं देता।

मनोवैज्ञानिकता की समस्या –

प्रस्तुत ‘वंचना’ उपन्यास में बलविंदर ऐसा व्यक्ति है जिसे सहवास अर्थात् शारीरिक संबंध बनाने की लत लग चुकी है, वह मनोरोग से ग्रस्त हुआ सा प्रतीत होता है, जिसका परिणाम एक स्त्री को भुगतना पड़ता है। बलविंदर घुमन्तओं की लड़की को जबरन उठा कर ले जाकर उसके साथ बलात्कार करता है और जब वह न्याय मांगने अदालत का दरवाजा खटखटाती है तो वहां मुजरिम को सजा देने के अपेक्षा उसे ही धंधा करने वाली साबित किया जाता है। वकील साब, आप जो यह कह रहे हैं कि कोई औरत अपनी इज्ज़त को ताक पर रख झूठा और शर्मनाक बयान नहीं देगी, यह बात आत्म स्वाभिमानी, प्रतिष्ठित और इज्ज़तदार घरों की औरतों पर लागू होती है। ऐसी पर नहीं जिन्होंने अपनी देह को इनकम का जरिया बना लिया हो। अर्थात् बलविंदर को अदालत सम्मान के साथ भरी करती है और उसे ओर जुर्म करने की छूट प्रदान करता है जिसका परिणाम यह हुआ कि बलविन्दर रुबीना नाम की एक ओर लडकी को उठाकर उसका शोषण करने में सफल हो जाता है यह हमारी न्याय व्यवस्था है जिसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध दी है जिससे वो सच को नहीं देखना चाहती और मुजरिम को आज़ाद छोड़ दिया जाता है।

एक के बाद एक जुर्म करनेवाले पाशवी बलविन्दर को रिहा किया जाता हैं इतना ही नहीं बल्कि उसे बाइज्ज़त रिहा किया जाता। सहवास की लत के चलते बलविन्दर यह तक नहीं देखता-सोंचता कि वह क्या कर रहा है और किस लिए कर रहा हैं और यही कारण बनता है कि उसके हवस की शिकार सात-आठ साल की मुन्नी बन जाती है। मुन्नी की हालत देख कर वहाँ उपस्थित सभी लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सुदामा की मुन्नी नंग-धडंग जमीन पर पड़ी हुई है। सारी जांघ खून से सनी हुई है। पूरा प्राइवेट पार्ट ऐसे कुचला हुआ था, जैसे सिल पर किसी ने बट्टे से प्याज कुचल रक्खी हो। आसपास पांच-छह टॉफी और बिस्कुट के बिना खुले दो पैकट बिखरे पड़े थे। बिस्कुट का लालच दिखाकर बलविन्दर उर्फ बल्लू एक सात साल की लडकी की इज्जत लूटकर उसे मुंह दबाकर मार गीराता हैं।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.4.1 (अ) बहुविकल्पी प्रश्न।

1. वंचना उपन्यास के लेखक...................... है।

अ) कमलेश्वर ब) अज्ञेय क) निराला ड) भगवानदास मोरवाल

2. वंचना उपन्यास वर्ष .... में प्रकाशित हुआ्।

अ) 2019 ब) 2023 क) 2000 ड) 1960

3. वंचना उपन्यास .... पर आधारित है।

अ) न्यायिक विफलताओं ब) कानूनी पेचीदगियों

क) सामाजिक पारिवारिक विडम्बनाओं ड) यह सभी

4. वंचना उपन्यास की पूरी कथा में .... के सवाल भी उठाए गए हैं्।

अ) विवाह-संस्था ब) प्रेम-संबंध क) ऑनर किलिंग ड) यह सभी

5. ब्याहता की मृत्यु हुई तब उसकी उम्र .... थी।

अ) 19 वर्ष ब) 13 साल 11 महिने

क) 16 साल 11 महीने ड) दस साल

6. .... के जुर्म में आईपीसी धारा 376 और 302 लगाई जाती है।

अ) बलात्कार और हत्या ब) धोखाधडी और जानलेवा हमला

क) डकैती और सायबर अपराध ड) दहेज और प्रताडना

7. वंचना के पात्र सदानंद को .... साल की सजा सुनाई्।

अ) 20 अ) बलात्कार और हत्या

क) 30 ड) 3

2.4.2 (आ) उचित मिलान कीजिए्।

प्रश्न 1. निम्नांकित धारा के साथ जुर्म का सुमेलन कीजिए्।

सूची ।	सूची ।।
1. आईपीसी 302	अ) 18 साल से कम मासूम के साथ दुराचार
2. आईपीसी 375	ब) हत्या का मामला

3. आईपीसी 376	क) बलात्कार का मामला
4. पोक्सा एक्ट	ड) बलात्कार की परिभाषा
उत्तरः अ) 1- अ, 2- ब, 3- क, 4- ड	ब) 1- अ, 2- क, 3- ब, 4- ड
क) 1- ब, 2- ड, 3- क, 4- अ	ड) 1- क, 2- अ, 3- ड, 4- ब

प्रश्न 2. निम्नांकित पात्रों का सही मिलाप कीजिए।

सूची ।	सूची ।।
1. सदानंद	अ) पत्रकार
2. ब्रजनंदन ठाकुर	ब) दुराचारी
3. बलविंदर	क) आरोपी
4. लालकृष्ण प्रपंची	ड) वकील
उत्तरः अ) 1- अ, 2- ब, 3- क, 4- ड	ब) 1- अ, 2- क, 3- ब, 4- ड
क) 1- ब, 2- ड, 3- क, 4- अ	ड) 1- क, 2- ड, 3- ब, 4- अ

2.4.3. निम्नांकित तथ्यों एवं सिद्धांतों की सही-गलत की पहचान करें।

प्रश्न 1. सन 1889 में 10 साल के फूलमणि की शादी की पहली रात मौत हुई थी। इसके घटना के पक्ष में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी ने उसके पति के समर्थन में कहा था-

1. यह एक जघन्य पति के हवस का मामला नहीं है, यह उस रात से जुडा मामला है।
2. संभव्य है उसकी पत्नी बीमार रही हो, या कमजोरी ते पीडित रही हो।

उत्तर-अ) एक सही और दूसरा गलत

ब) एक गलत और दूसरा सही

क) एक और दूसरा सही

ड) एक और दूसरा गलत

प्रश्न 2. वंचना उपन्यास के सही विषय-वस्तु को पहचानें।

1. नारी जीवन की विवंचना
2. स्त्री अधिकारों के साथ खिलवाड
3. अदालत में इंसाफ मांगती स्त्रियों की कथा

उत्तर - अ) एक और दो सही और तीसरा गलत

ब) एक, दो गलत और तीसरा सही

क) एक, दो और तीसरा सही

ड) एक, दो और तीसरा गलत

2.5 पारिभाषिक शब्दार्थ

2.5.1 **कठिन शब्द**

हिदायत- रास्ता दिखाना, अनुदेश।

निढाल- अत्यंत थका हुआ, शिथिल, उत्साहहीन, पस्त।

मशविरा- परामर्श, सलाह।

मुलायमियत- मुलायम होने का भाव, नर्मी, नजाकत, कोमलता।

मुवक्किल- अपना वकील करनेवाला, काम के लिए नियुक्त करने वाला।

ग़नीमत- लूट का माल, मुफ़्त का माल।

क़वायद- नियमावली, कार्य विधि।

अवसाद- सुस्ती, थकावट, उदासी, खेद्।

शहादत- शहीद होने का भाव, गवाही, साक्ष्य।

हिक़ारत- घृणा, नफ़रत।

2.5.2 **मुहावरे-**

कोहराम मचाना- अशांति फैलाना।

नींद उड़ जाना- नींद न आना।

तार तार होना- पूरी तरह से फट जाना।

हुड़दंग मचाना- उछल कूद करना, शोर-ओ-गुल मचाना, शरारतें करना।

हक्का बक्का सा देखना - हैरत से ख़ामोश रह जाना, कुछ ना कह सकना, मुँह देखते रह जाना।

2.5.3 **कहावतें-**

आगे कुआँ पीछे खाई- हर तरफ से हानि का होना।

भगवान के घर देर है अंधेर नहीं- किसी ने कोई गलत काम किया है तो उसे सजा जरूर मिलती है चाहें वो थोडी देर से ही मिले!

जो भाग्य में बदा यह भुगतना पड़ा- जो भाग्य में लिखा है उसे भुगतना ही पडता है।

घिग्घी बँधना - भय से आतंकित हो जाने के कारण कंठ का अवरुद्ध हो जाना।

2.5.4 ऐतिहासिक संदर्भ

परशुराम की मुद्राः भगवान परशुराम ने प्रतिज्ञा ली थी कि अवैदिक अमर्यादित राजा उनके कुठार से बच नहीं सकते। इसीलिए उन्होंने तर्जनी और मध्यमा दो उंगलियों को प्रदर्शित कर अर्ध-पताका मुद्रा बनाई्। विशेष बात यह कि यह मुद्रा दुष्टों के संहार को परिलक्षित करती है, साथ ही सज्जनों के लिए अभयदान को दर्शाती है।

निर्भया कांडः दि. 6 दिसंबर सन् 2012 ई. की रात को दिल्लीर की सड़कों पर दौड़ती एक प्राइवेट बस में सामूहिक रेप कांड हुआ था। निर्भया के आरोपियों को फांसी दी।

2.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.6.1 बहुविकल्पीय प्रश्न।

उत्तर-

1. ड) भगवानदास मोरवाल
2. अ) 2019
3. ड) यह सभी
4. यह सभी
5. ब) 13 साल 11 महिने
6. अ) बलात्कार और हत्या
7. अ) बलात्कार और हत्या

2.6.2 (आ) उचित मिलान कीजिए्।

उत्तर-

1. क) 1- ब, 2- ड, 3- क, 4- अ
2. ड) 1- क, 2- ड, 3- ब, 4- अ

2.6.3 (इ) सही – गलत की पहचान करें।

उत्तर–

1. क) एक और दूसरा सही
2. क) एक, दो और तीसरा सही

2.7 सारांश :

1. 'वंचना' उपन्यास के द्वारा भगवानदास मोरवाल जी ने आदर्श समाज निर्माण की कामना की हैं।
2. परंपरागत पुरुषी मानसिकता की अभिव्यक्ति की हैं।
3. कामुक भावना की अधिकता के दुष्परिणामों का प्रतिपादन किया हैं।
4. नारी जाति के प्रति समाज में संवेदना निर्माण करने का प्रयास किया हैं।
5. नारी सहानुभूति के आड़ में पुरूषों द्वारा हो रहे नारी शोषण को वास्तविकता से चित्रित किया हैं।

2.8 स्वाध्याय :

लघुत्तरि प्रश्न –

1. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व का परिचय दीजिए।
2. भगवानदास मोरवाल के कृतित्त्व का परिचय दीजिए।
3. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ बताइए।
4. भगवानदास मोरवाल के शैक्षिक जीवन को स्पष्ट कीजिए।
5. भगवानदास मोरवाल के रहन – सहन की विशेषताएँ बताइए।

दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1. भगवानदास मोरवाल के 'वंचना' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।
2. भगवानदास मोरवाल के 'वंचना' उपन्यास में चित्रित समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
3. भगवानदास मोरवाल के 'वंचना' उपन्यास में चित्रित नारी शोषण को स्पष्ट कीजिए।
4. भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्त्व तथा कृतित्त्व का परिचय दीजिए।

ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

1. जिन स्त्रियों का आदर नहीं होता, वे जिन घरों को शाप देती हैं, वे कृत्या से मारे जाने के समान सब प्रकार से नष्ट हो जाते हैं।

2. धर्म सत्ता और राज सत्ता ये दोनों ऐसी व्यवस्था हैं जिनकी सबसे ज्यादा शिकार स्त्री हुई है।

3. स्त्री की दुनिया आखिर है कहाँ, क्योंकि मर्द की नजरों में आज भी औरत एक संपत्ति, एक वस्तु ही नहीं, उसकी काम पिपासा और उसका वंश बढानेवाली मादा है।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

'वंचना' उपन्यास तथा मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' उपन्यास की तुलना कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

मन्नु भंडारी - समय सरगम

प्रेमचंद - निर्मला

❑❑❑

इकाई–3
विशेष रचनाकार भगवानदास मोरवाल
'शकुन्तिका' उपन्यास का समीक्षात्मक विवेचन

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

- 3.3.1 'शकुन्तिका' उपन्यास का परिचय
- 3.3.2 'शकुन्तिका' उपन्यास का कथानक
- 3.3.3 'शकुन्तिका' उपन्यास के प्रमुख पात्र
- 3.3.4 'शकुन्तिका' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ
- 3.3.5 'शकुन्तिका' उपन्यास का उद्देश्य

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) हिंदी के समकालीन उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल से परिचित होंगे।
2) 'शकुन्तिका' उपन्यास के कथानक से परिचित होंगे।
3) 'शकुन्तिका' उपन्यास के प्रमुख पात्रों से परिचित होंगे।
4) 'शकुन्तिका' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं से परिचित होंगे।

5) भारत में व्याप्त पुरुषप्रधान मानसिकता, बेटा-बेटी भेद एवं बेटा वंश का दीपक की एकांगी विचारधारा की निरर्थकता, बेटा-बेटी समानता एवं सामाजिक स्वास्थ्य आदि बिंदुओं से अवगत होंगे।

6) 'शकुन्तिका' उपन्यास के उद्देश्य को समझाना।

3.2 प्रस्तावना:

हिंदी कथा-साहित्य में उपन्यास विधा एक लोकप्रिय साहित्य विधा बन चुकी है। प्रेमचंद पूर्व युग से लेकर वर्तमान समय तक उपन्यास साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी ने हिंदी उपन्यास साहित्य को भारतीय परिवेश में प्रौढ एवं प्रस्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हिंदी उपन्यास की इस विकास यात्रा के हर पडाव पर अनगिनत सृजनशील एवं प्रतिभाशाली उपन्यासकारों का योगदान मिला है। हिंदी उपन्यास साहित्य में ग्राम्य-जीवन पर लिखे उपन्यासों का एक विशेष स्थान रहा है। वर्तमान समय में आधुनिक ग्रामीण जीवन पर उपन्यास लेखन करनेवालों में भगवानदास मोरवाल जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। भगवानदास मोरवाल का जन्म दि. 23 जनवरी, सन् 1960 ई. को हरियाणा के छोटे से कस्बे नगीना में हुआ है। हिंदी एवं पत्रिकारिता में उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद उन्होंने पत्रकार और लेखन कार्य से जुड़े हुए हैं। हिंदी भाषी क्षेत्रों के ग्राम-जीवन एवं लोक संस्कृति यथार्थ अभिव्यक्ति मोरवाल जी के कथा-साहित्य की विशेषता रही है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, अनुवाद, बाल साहित्य आदि क्षेत्रों में अपनी रचनाशीलता का परिचय दिया है। भगवानदास मोरवाल जी ने 10 उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 1 कविता संग्रह, तीन बाल साहित्य ग्रंथ की रचना करके समकालीन हिंदी लेखकों में अपनी विशेष पहचान बनाई है। उनके अधिकांश उपन्यास और कहानियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ हैं और उत्कृष्ठ साहित्य-साधना के लिए उन्हें उल्लेखनीय पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

भगवानदास मोरवाल लिखित 'शकुन्तिका' रचनाक्रम की दृष्टि से आठवाँ उपन्यास है, जो सन् 2020 ई. में प्रकाशित हुआ है। 'शकुन्तिका' उपन्यास में लेखक ने भारत के पुरुषप्रधान मानसिकता एवं 'बेटे को वंश का दीपक' मानने के एकांगी दर्शन को यथार्थता के साथ स्पष्ट किया है। यह उपन्यास भारत के लिंगभेद के पुरुषी नजरिए पर करता है और स्वस्थ्य सामाजिक जीवन के लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' इस नारे के महत्त्व को भी स्पष्ट करता है। अतः इस इकाई के अंतर्गत हम भगवानदास मोरवाल के 'शकुन्तिका' उपन्यास का समीक्षात्मक दृष्टि से अध्ययन करेंगे।

1.3 विषय विवरण :

1.3.1 'शकुन्तिका' उपन्यास का परिचय:

हिंदी के आधुनिक ग्रामीण लोक-जीवन के कुशल चितेरे भगवानदास मोरवाल जी का 'शकुन्तिका' यह रचनाक्रम की दृष्टि से आठवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास वर्ष 2020 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। विवेच्य उपन्यास महज 121 पृष्ठों का लघु उपन्यास है जिसमें उपन्यासकार ने भारतीय समाज में बेटा-बेटी के जन्म एवं महत्त्व को कथानक का आधार बनाया है। भारत में मूलतः पुरुषप्रधान

मानसिकता के चलते बेटे को कुल का दीपक माना जाता है। वंश की वृद्धि और अपनी विरासत को आगे बढाने की एक संकुचित मानसिकता के चलते बेटे के जन्म को लेकर दो महिलाओं का भावनिक एवं वैचारिक द्वंद्व प्रस्तुत उपन्यास में देखने मिलता है। भारतीय समाज में एक ओर बेटियों को घर की लाड़ली, कुल की शान, गृह लक्ष्मी और देवी तक माना जाता हैं वही दूसरी ओर जब उसे समान दर्जा देने की बात आती है तो उसे पराया धन और पुरुष से कम आँका जाता है। भारतीय समाज के इसी अंतर्विरोध को भगवानदास मोरवाल ने उपन्यास की प्रमुख पात्र भगवती और दुर्गा के परिवार की कहानी के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है। पुरुष और स्त्री परिवार रूपी रथ के दो पहिए होने के बावजूद परिवार में पुत्र जन्म का ही मोह क्यों? पुत्र ही कुल का दीपक क्यों? क्या लड़की कुल की उद्धारक नहीं हो सकती? पुत्र कुल का दीपक है तो वृद्धाश्रमों की संख्या क्यों बढ रही है? जहाँ बेटियाँ हैं, उनके माता-पिता कभी वृद्धाश्रम क्यों नहीं जाते? इन बुनियादी और अहम सवालों के जवाब विवेच्य उपन्यास को पढने के बाद मिलते हैं।

1.3.2 'शकुन्तिका' उपन्यास का कथानक :

'शकुन्तिका' यह एक लघु-उपन्यास है, जो भारतीय परिवारों में बेटा-बेटी के जन्म एवं महत्त्व को उद्घाटित करता है। 'शकुन्तिका' का अर्थ एक नन्ही चिड़ियाँ होता है। भगवानदास ने 'शकुन्तिका' इस प्रतीकात्मक शीर्षक के द्वारा भारत में लड़कियों की घटती संख्या और उससे निर्माण समस्याओं को इस उपन्यास में दर्शाया है। बेटा-बेटी भेद की प्रमुख समस्या को उपन्यास के केंद्र में रखते हुए उपन्यासकार ने कथानक का ताना-बाना बुना है। शिक्षा एवं विज्ञान के विकास के दौर में भी भारतीय समाज की सोच में पितृसत्ताक विचारधाराएँ गहराई तक जमी हुई हैं। प्रस्तुत उपन्यास इस संकुचित सोच पर भी प्रहार करता है। उपन्यास की कथानक पुनवार्सित कॉलोनी में रहने वाले दो मध्यमवर्गीय परिवारों से जुड़ा है जो गत तीस-पैंतीस वर्षों से एक-दूसरे के पड़ोसी है। दोनों परिवार की प्रमुख महिलाएँ भगवती और दुर्गा के परिवार की उपन्यास की घटनाएँ जुड़ी है। यह दोनों महिलाएँ समाज के सामने एक नया आदर्श स्थापित करती है जो भविष्य में सभी के लिए पथदर्शक साबित होगा। उपन्यास की दुर्गा और भगवती भारत की उन महिला और पुरुषों के विचारों का प्रतिनिधित्त्व करती है, जो बेटे को ही कुल का दीपक मानती है, जबकि कुछ लड़कियों को कुल के दीपक से बढकर मानती है। उपन्यास में आई गार्गी, सीया, बूलबूल और पिहू यह बेटियाँ घर की रौनक एवं आदर्श बेटियों के उदाहरण पेश करती है। लेकिन आज भी भारत में बेटे की चाह में कन्या भ्रूण हत्या, बेटियों की परिवार में प्रताड़ना, पुत्र मोह के कारण परिवार में चिंता आदि को देखा जा सकता है।

विवेच्य उपन्यास का प्रारंभ भी इसी चिंता और भय के माहौल से होता है। पुत्र के अभाव में समाज एवं परिवार में एक अनायास असुरक्षा की भावना होती है जो बहुत ही खतरनाक है। उपन्यास के शुरुआत में दुर्गा अपने घर चौथे पोते के जन्म की खुशी मनाने के लिए भगवती के घर आती है। तब वह भगवती को आश्वस्त करते हुए कहती है- ''मुझे पक्का यकीन है कि इस बार तुम्हारे घर लड़के की ही किलकारियाँ गूँजेंगी।'' (पृ. 2) इस संवाद से स्पष्ट होता है कि भगवती के घर में बेटे के जन्म की प्रतीक्षा है। इसपर भगवती दुर्गा से कहती है- ''अगर इस बार भी वही हुआ न, हम तो जीते-जी मर जाएँगे। पहले से दो-दो

लड़कियों को देखकर मेरे हाथ-पाँव फूल जाते हैं।'' (पृ.3) अर्थात् भगवती के घर में पहले से ही दो-दो लड़कियाँ है और उसकी बहू अब फिर से गर्भवती है। भगवती का यह भय कमोबेश भारत के हर परिवार में हमें देखने मिलता है।

भगवती और दुर्गा एक-दूसरे की पड़ोसन है और अच्छी सहेलियाँ भी है। वे दोनों हर सुख-दुःख में एक-दूसरे की साथी भी रहती है। दोनों को भी दो-दो पुत्र थे और उनकी शादियाँ भी हो चुकी हैं। दोनों भी यह चाहती है कि उनके घर पोतों का ही जन्म हो। दुर्गा इस मामले में सौभाग्यशाली होती है कि उसके बेटे नागदत्त और अभय को भी दो-दो पुत्र ही होते हैं। लेकिन भगवती की किस्मत उसका साथ नहीं देती। उसके बड़े बेटे बलवंत को पहले से ही सिया और गार्गी दो बेटियाँ हैं और बलवंत की पत्नी अब तिसरी बार गर्भवती है। भगवती के दूसरे बेटे रूपेश को अभी तक कोई संतान नहीं थी। इसलिए भगवती का पुत्रमोह बिलकुल स्वाभाविक-सी बात थी। लेकिन भगवती की परेशानी उस समय बढ जाती है, जब बलवंत को तीसरी भी बेटी ही होती है। तीसरी भी बेटी होने के कारण भगवती और उसका परिवार बहुत ही उदास हो जाता है। वह इस बात से परेशान होती है कि 'अब उसका वंश आगे कैसे बढेगा?' पूरे परिवार में मातम-सा छा जाता है।

उपन्यास के प्रारंभ में ही उपन्यासकार ने दुर्गा और भगवती के परिवारों का वर्णन के द्वारा भारतीय समाज की बेटा-बेटी भेद की समस्या को दर्शाया है। भगवती जिस समस्या और भय से गुजरती है, उसका कोई हल नहीं है। हम केवल सकारात्मक सोच और शुद्ध विचारों से ही इस समस्या का हल निकाल सकते हैं। उपन्यासकार ने आधुनिक विवेकवादी दृष्टिकोन से इस समस्या को सुलझाने की पहल की है। दुर्गा और भगवती के परिवार की कहानी के जरिए लेखक भारत के पारंपरिक एवं आधुनिक सोच के बीच टकराव की स्थिति निर्माण करते हैं। इसी समस्या के समाधान हेतु उपन्यास में बहुत-सी घटनाएँ तेजी से होती रहती है।

उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल आगे कहानी को एक नया मोड़ देते हैं जिसमें दुर्गा के परिवार में दो बेटे और बड़े हुए चार-चार पोतों के बीच माता-पिता की संपत्ति को लेकर झगड़े शुरू हो जाते हैं। संपत्ति में ज्यादा अधिकार पाने के लिए यह सभी आपस में लड़ते-झगड़ते हुए अपनी-अपनी अलग गृहस्थी बना लेते हैं। दुर्गा का हँसता-खेलता संयुक्त परिवार उसके आँखों के सामने पत्तों के महल की तरह ढह जाता है। दुर्गा जिन्हें कुल का दीपक मानकर नाज करती थी उसने सोचा भी नहीं था कि यही कुलदीपक एक दिन परिवार को तोड़कर बिखर देंगे। दुर्गा के दोनों बेटे अपने अलग घर बनाकर पुश्तैनी संपत्ति के लिए कोर्ट में केस डाल देते हैं।

दूसरी ओर भगवती और दशरथ का घर बिखरने से बच जाता है। कालांतर में दुर्गा घर में बेटियों की मौजूदगी के महत्त्व को समझने लगती है। दुर्गा और उग्रसेन के बेटों ने धन तो बहुत कमाया था लेकिन अपने बच्चों को सही संस्कार देने में वे असफल रहे थे। तो भगवती और दशरथ के घर में धन की कमी तो है, बेटों का सुख भी नहीं है लेकिन अपनी तीनों पोतियों सिया, गार्गी और बुलबुल को सही परवरिश और अच्छी शिक्षा देने में वे सफल होते हैं। सबसे बड़ी बेटी सिया बारहवीं की परीक्षा में 92 प्रतिशत अंक

हासिल करके प्रथम स्थान प्राप्त करती है। बाद में वह एलएलबी की पढाई करके एक कामयाब वकील बनती है। तो मँझली बेटी गार्गी एमबीबीएस की पढाई करके डॉक्टर बनती है। इन संस्कारी बेटियों के कारण उन्हें जीवन में कभी-भी एक बेटे की कमी महसूस ही नहीं होती।

उपन्यास के दसवें अध्याय में कथानक का विकास होता है। इस अध्याय में अस्पताल, डॉक्टर, अनाथालय और गोद लेने की प्रक्रिया, उसके लिए की जानेवाली भागदौड़, डॉक्टर द्वारा भगवती की प्रशंसा करना, रूपेश और जयंती की नि:संतानता, उन्हें बच्चा गोद लेने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना, सिया, गार्गी, बुलबुल में उत्साह आदि प्रसंग कथानक के विकास में सहायक बनते हैं। उपन्यास में कुँआ पूजा का प्रसंग, समाज का भय, फिर एक प्रचलित पंरपरा को तोड़ने का आतंक, समाचार-पत्रों में छपी खबरें, सिया का विवाह, गार्गी का विवाह, समाचार-पत्रों में अनाथ पिहू को गोद लेने की बात छपना, उससे उत्पन्न चिंता, शहर में भगवती के परिवार की चर्चा, बुलबुल का विवाह, बुलबुल को ससुराल में प्रताड़ना आदि के कथानक के महत्त्वपूर्ण प्रसंग है।

भगवती अपने नि:संतान बेटे रूपेश के लिए अनाथालय से बेटा नहीं बल्कि एक बेटी को ही गोद लेती है जो कथानक का उत्कर्ष है। भगवती के परिवार में और एक मासूम बेटी का प्रवेश कथानक का एकदम भावुक क्षण है जिसे लेखक ने बहुत ही आत्मीयता के साथ साकार किया है-''प्रतिनिधि ने पालने में कपड़े में लिपटी एकमद शांत और सुखद गहरी नींद में सोती बच्ची को उठाया और उसे जयंती की गोद में डाल दिया। दोनों हाथों से बने पालने और जिस्म की गर्मी पाकर अबोध मासूम जयंती की सीने से चिपक गई, बच्ची के सीने से चिपकते ही जयंती फफककर रो पड़ी। उसके हाथ काँपने लगे, रूपेश ने पहले जयंती के हाथों के पालने की तरफ देखा। उसके बाद उसकी जैसे ही पत्नी से नजर मिली। उसकी भी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। जयंती ने बच्ची को अब रूपेश की गोद में डाल दिया। बच्ची के स्पर्श से रुपेश के पूरे बदन में जैसे ठंडी लहर दौड़ गई। मुश्किल से दोनों होठों को दाँतों तले भींचकर वह अपने आपको रोक पाया।'' (पृ.93)

उसके बाद इस मासुम-सी बच्ची को जब भगवती की ओर बढाया जाता है तो भगवती के हाथ बीच में ही ठहर जाते हैं। भगवती के इस रवैये को देखकर सभी सहम जाते हैं। तब भगवती हँसते हुए जयंती से कहती है, ''बहू इसे गोद में लेने का पहला हक दुर्गा को है। असली दादी इसकी, मैं नहीं यह दुर्गा है। जिसने इस बच्ची को दूसरा और असली जनम दिलाया है।'' (पृ.97) अर्थात् भगवती जब दुर्गा को रूपेश और जयंती के लिए बच्चा गोद लेने की बात कहती है तब दुर्गा ने ही भगवती को बेटा नहीं, बल्कि एक बेटी को ही गोद लेने की सलाह दी थी। बच्ची जैसे ही दुर्गा की गोद में आती है, दुर्गा की हिचकियाँ बंद हो जाती है। जीवन के आखरी पड़ाव पर दुर्गा के मन में बेटियों के लिए उमड़ा प्रेम उसके जीवन में बेटियों के अभाव को पलभर में नष्ट कर देता है। दुर्गा-उग्रसेन और भगवती-दशरथ अब दुनिया में नहीं रहे हैं। लेकिन भगवती के बेटे बलवंत-रेवती, रूपेश-जयंती को अपने माँ और बेटियों पर गर्व है। अनाथालय से गोद ली पीहू भी ऑस्ट्रेलिया से उच्च पढाई प्राप्त करती है। बाद में वह वहाँ की एक बड़ी मल्टीनैशनल कंपनी में सालाना 36 लाख रुपए की नौकरी प्राप्त करके वहीं सेटल होती है। सिया बंगाली लड़के तपन से, गार्गी

पंजाबी लड़के और पीहू भी अंतरजातीय विवाह करके अपना घर बसाते हुए खुशहाल जीवन जीती है। गार्गी, सिया, बुलबुल और पीहू रूपी 'शकुन्तिका' आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान के खुले आसमान में हमेशा खुशी से चहकती रहती है। उपन्यास का यह सार्थक समापन एवं उपन्यासकार की सकारात्मक दृष्टि उपन्यास को एक नई ऊंचाई पर ले जाने में सफल होता है। कुल मिलाकर कहे तो 'शकुन्तिका' उपन्यास का कथानक महिलाओं को जन्म सिद्ध अधिकारों और उनके जीवन की स्वतंत्रता से जुड़ा है। महिलाओं को उचित मान-सम्मान और अधिकारों की प्राप्ति की यह कहानी है और घर-आँगन से विलुप्त होती 'शकुंतिका' अर्थात् गौरेया को बचाने का संदेश भी देती है।

3.3.3 'शकुन्तिका' उपन्यास के प्रमुख पात्र :

भगवानदास मोरवाल लिखित 'शकुन्तिका' भारत की 'पुत्रमोह' की समस्या को केंद्र में रखकर लिखा हुआ सामाजिक उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दुगा-उग्रसेन और भगवती-दशरथ इन दो परिवारों को आधार बनाकर उपन्यास की कहानी का ताना-बाना बुना है। उपन्यास के पात्रों को हम मुख्य-पात्र और गौण पात्रों में विभाजित करके समझ सकते हैं। मुख्य पात्रों में दुर्गा, उग्रसेन, भगवती, दशरथ, सिया, गार्गी, पीहू आदि उल्लेखनीय हैं जबकि गौण पात्रों में बलवंत-रवेती, रूपेश-जयंती, नागदत्त-कौशल्या, अभय-कुसुम, बुलबुल, विजय, विभोर, रोहन, अमित, अख्तरी आदि पात्रों के नाम आते हैं। अतः उपन्यास के प्रमुख पात्रों का विवेचन इसप्रकार है-

3.3.3.1 दुर्गा :

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गा एक प्रमुख पात्र है। वह उग्रसेन की पत्नी है। उसके दो बेटे हैं, एक नागदत्त और दूसरा अभय। दुर्गा एक सुखी और संपन्न संयुक्त परिवार की महिला है। उनके परिवार को समाज में बहुत मान-सम्मान है। दोनों बेटों की शादियाँ हुई हैं और दोनों बेटों को दो-दो पुत्र होने के कारण दुर्गा का परिवार भरापूरा है। वंश की वृद्धि के लिए बेटों के जन्म जरूरी है, इस परंपरावादी पितृसत्तात्मक सोच को दुर्गा भी मानती है। वह एक संघर्षशील एवं दृढ निश्चयी महिला होने के कारण परिवार के हर फैसले में उसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। उसके व्यक्तित्त्व में काफी उदारता भी दृष्टिगत होती है। वह अपनी पड़ोसी भगवती की अच्छी सहेली भी है और उके हर सुख-दुःख में उसका साथ निभाती है। भगवती के घर बेटियों के जन्म के बाद आई मायुसी को दूर करने के लिए दुर्गा हमेशा भगवती को सकारात्मकता समझाने की कोशिश करती रहती है।

कालांतर में नागदत्त और अभय के बेटे बड़े होने के बाद उनके परिवार में कलह शुरू हो जाता है। संपत्ति और व्यापार के बँटवारे को लेकर उनमें कलह शुरू हो जाता है। तब दुर्गा खुद को एक बदनसीब माँ करार देती है जो बच्चों को ठीक से संस्कार नहीं दे सकी। उसके बेटे और पोते आवारा निकलते हैं। वे आपस में झगड़ा करके अपनी-अपनी गृहस्थी अलग बसाते हैं और दुर्गा का एक खुशहाल संयुक्त परिवार उसके आँखों के सामने पत्ते के महल की तरह बिखर जाता है लेकिन वह कुछ भी कर नहीं पाती। वह जल्द ही अपनी बेटे कुल के दीपक होते हैं इस पारंपरिक सोच से बाहर आती है और पहली बार महसूस करती है

कि घर में बेटों के साथ-साथ बेटियों का होना भी अनिवार्य हैं। वह पड़ोस की सहेली भगवती के परिवार से अपनी तुलना करते हुए अफसोस जताती है कि काश! मेरे भी परिवार में भी बेटी होती तो मेरा परिवार यूँ बिखर नहीं जाता।

दुर्गा एक तटस्थ व्यक्तित्त्व की जुझारू महिला थी। सही-गलत का फैसला करते समय वह कभी-भी अपना-पराए का भेद नहीं करती। इसकारण सिया,गार्गी, बुलबुल और पीहू के लिए उसके हृदय में वही प्रेम था जो अपने पोतों के लिए था। इन चारों बेटियों के पढने-लिखने और कामयाब होने पर वह बहुत खुश होती है और उन्हें आगे और तरक्की करने के लिए प्रोत्साहन देती है। वह एक अच्छी सोच रखने वाली सद्गुणी महिला थी। इसलिए वह भगवती जब अपने बेटे रूपेश-जयंती के लिए बच्चा गोद लेना चाहती थी तब दुर्गा उसे अनाथालय से बच्चा और वही भी लड़की को गोद लेने को कहती है। वह परिवार के सदस्यों की गलतियों पर उनकी आलोचना करने से नहीं डरती। वह अपने बेटों और बहुओं के मूल्यहीन आचरण को बर्दाश्त नहीं करती।

दुर्गा खुले विचारों की महिला है। भगवती और दशरथ के आदर्श परिवार की प्रशंसा करती है। भगवती की पोतियों की विवाह को लेकर उठी समस्या पर वह अंतरजातीय विवाह तक का समर्थन करती है। वह रूढीवादी मानसिकता में जकड़ने के बजाए आधुनिक विचारों को स्वीकारने में विश्वास रखती है।

3.3.3.2 उग्रसेन :

उग्रसेन एक मध्यवर्ग का रूढीवादी सोच रखनेवाला व्यक्ति है। वह दुर्गा का पति है। उग्रसेन ने जीवन में कई मुसीबतों का सामना करके अपना व्यापार जमाकर सफलता प्राप्त की है। अपने मेहनत और निरंतर संघर्ष के बल पर एक छोटे से व्यवसाय को एक बहुत बड़े बिझनेस में बदल दिया है। लेकिन उग्रसेन में पितृसत्तात्मक सोच और मध्यवर्ग की रूढीवादी मानसिकता भरी हुई है। उग्रसेन आधुनिक विचारों की कद्र करता है लेकिन परंपरा एवं रूढियों को तोड़ने के लिए जो साहस चाहिए वह उसमें नहीं है। इसकारण वह दुर्गा के नए खयालों, विचारों का सामाजिक डर के कारण हमेशा विरोध करता रहता है। वह भी अन्य लोगों की तरह वंशवृद्धि के लिए बेटों के जन्म को प्रसाद और बेटियों के जन्म को अभिशाप मानता था। अपने दो बेटों और चार पोतों के जन्म पर उग्रसेन खुशियाँ मनाता है लेकिन उन्हें अच्छे संस्कार देने में वह कम पड़ जाता है। पोते किशोरावस्था तक पहुँचते-पहुँचते कुसंगत में पड़ने के कारण उग्रसेन को अफसोस करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उसके पोते न पढाई में अच्छे थे और न संस्कार सीखने में। हमेशा मारपीट करना, सिगरेट पीना, लड़कियों को छेड़ना आदि के कारण मोहल्ले के लोग उन्हें अच्छी नज़र नहीं देखते थे। इससे उग्रसेन को शर्मिंदा होना पड़ता था। तब उग्रसेन पछतावा होता है कि उसका पुत्रमोह कितना निरर्थक था। वह अपनी इस भावना को अपने पड़ोसी से व्यक्त करते हुए कहता है कि जिस घर में लड़कियों के हँसी-किलकारियों की गूँज होती है, उन्हें खुशनसीब परिवार क्यों कहा जाता है। उग्रसेन का पश्चाताप उसे अंदर से खोखला बनाता हैं।

वह अप ने पड़ोसी दशरथ जी को हमेशा अपने भाई के समान समझता था। उनके परिवार के हर सुख-दु:ख में वह शामिल होता था। उग्रसेन के लड़कियों को लेकर रूढिवादी विचारों में कालांतर में परिवर्तन आ जाता है। जब दशरथ की पोती सिया के अंतरजातीय विवाह की बात आती है तब वह दशरथ जी को सकारात्मक रूप से समझाता है कि अब समय बदल रहा है। बिरादरी में की जाने वाली रिश्ते की क्या गारंटी है कि वह हमारी बेटियों को खुश रखे। उग्रसेन के चरित्र में आया यह सकारात्मक परिवर्तन उनके प्रगतिशील विचारों को स्पष्ट करता है।

3.3.3.3 भगवती :

विवेच्य उपन्यास में भगवती यह एक प्रमुख स्त्री चरित्र है। भगवती और दशरथ एक मध्यमवर्गीय परिवार के हैं। इस परिवार में भगवती का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था और उसकी बातों को भी सभी मानते थे। दशरथ भी अपनी पत्नी भगवती के हर फैसले का साथ देते थे। उन्हें दो बेटे थे बलवंत और रूपेश। दोनों की भी शादियाँ हुई थी। बड़ी बहू का नाम रेवती था जबकि छोटी बहू का नाम जयंती था। भगवती को घर में बेटे के पैदा होने की चाह थी लेकिन उसकी तीन पोतियाँ थी-सिया, गार्गी और बुलबुल। बाद में रूपेश और जयंति अनाथालय से पीहू को गोद लेते हैं। भगवती का परिवार आर्थिक रूप से ज्यादा उन्नत नहीं था लेकिन उसने अपने बेटों और पोतियों को अच्छे संस्कार दिए थे। अपने घर का वंश आगे बढाने के लिए उसे पुत्र की चाह थी लेकिन इस चाह में भगवती ने कभी-भी अपने पोतियों का छल नहीं किया। वह घर में एक बेटे की कमी को जरूर महसूस करती है, वंशवृद्धि को लेकर हमेशा डरी-सहमी रहती है लेकिन कभी अपनी पोतियों का छल नहीं करती। बेटियों को लेकर उसकी सकारात्मक एवं प्रगतिशील सोच भगवती के चरित्र को सबसे ऊपर उठाती हैं। उसका चरित्र बहुत ही लचीला है। वह समय के साथ अपने रूढीवादी विचारों को त्यागती है और आधुनिक प्रगतिशील विचारों को अपनाकर जीवन में आगे बढती है। वह कुल में पुत्र न होने के वियोग को मन में पालने के बजाए वह अपनी पोतियों को दिल से स्वीकारते हुए उन्हें अच्छे संस्कार देती है। उनकी शिक्षा और विवाह को लेकर आती समस्याओं से जुझती हुई पोतियों के सुनहले भविष्य के लिए हर सार्थक विचार का समर्थन करती है। विवाह को लेकर कभी-कभी रूढीवादी विचार उसपर हावी होते हैं लेकिन वह समय के साथ उनपर काबू पा लेती है। अपनी संस्कारी पोतियों को देखकर वह नि:संतान रूपेश और जयंति को बेटी को ही गोद लेने की सलाह देती है। उसकी इस सलाह में प्रगतिवादी सोच दिखाई देती हैं।

वह अपनी पड़ोसन और अच्छी सहेली दुर्गा से घर-परिवार से जुड़ी हार बात कहती है। कोई फैसला करना हो तो वह उसकी राय जरूरी लेती है। अपने इस सहेली के प्रति उसे मन में अपार सम्मान था। दुर्गा और उग्रसेन के परिवार से उसके पैंतीस-चालीस वर्षो से संबंध थे। उसके परिवार के कलह और बिखरने का उसे बेहद दु:ख होता है। अपनी सहेली के बेटों और पोतों से घर-परिवार की हुई बर्बादी से वह सीख पाती हैं और उसके द्वारा बेटी को ही गोद लेने की बात को स्वीकारती है। सिया और गार्गी के शादी के समय समाज की ओर से उठाए गए सवालों की स्थिति में भगवती बहुत संयम और समझदारी से काम लेती है। अपनी पोतियों के अंतरजातीय और प्रेम विवाह जैसी आधुनिक सोच में वह साथ देती है। इन शादियों के

अच्छे परिणामों को देखकर वह बेहद खुश हो जाती है। इसतरह भगवती के चरित्र में हमें एक दृढ निश्चयी महिला, सहनशील, समझदार, अच्छी दोस्त, संवेदनशील पड़ोसन, अच्छी पत्नी, अच्छी माँ, अच्छी दादी और प्रगतिशील विचारों की समर्थक महिला के गुण दिखाई देते हैं।

3.3.3.4 दशरथ :

प्रस्तुत उपन्यास में दशरथ का चरित्र एक मध्यवर्गीय परिवार के व्यक्ति एवं प्रमुख पात्र भगवती के पति के रूप में सामने आता है। दशरथ एक बहुत सुलझे हुए व्यक्ति है। खुले दिमाग और खुले विचारों का वे समर्थन करते हैं। उन्हें अपने परिवार के प्रति बहुत स्नेह था और वे अपनी पत्नी भगवती की बहुत इज्जत करते थे। घर के हर बातों में वे पत्नी भगवती के साथ सलाह-मशवरा करके निर्णय करते थे। अपनी पोतियों को अच्छी परवरीश और संस्कार देते हैं। बाद में जब उनकी पोतियाँ अंतरजातीय प्रेम विवाह करने की बात उनके सामने रखती है तो वे उनके इस फैसले का सम्मान करते हुए विवाह के लिए अनुमति देते हैं। उनकी पोतियों की शादी हो या पीहू को गोद लेने को लेकर समाज से मिली उलाहनों को नजर अंदाज करके वे अपने परिवार का पूरी मजबूती के साथ खड़े होते हैं। अपने परिवार की नींव को मजबूत रखने में वह समझदारी और सकारात्मक विचारों से हमेशा साथ देते हैं।

उनके व्यक्तित्त्व में उदारता दिखाई देती है। वे घर का मुखिया होने का कभी अहंकार नहीं करते न ही रूढिवादी मानसिकता से अपने पोतियों का विरोध करते हैं। सिया और गार्गी के विवाह के प्रसंग में उनकी द्वारा दी गई सकारात्मक टिप्पणियों से उनकी प्रगतिवादी विचारों का परिचय मिलता है। उनके इस उदारता के कारण घर-परिवार और समाज में भी उनकी बहुत इज्जत की जाती है। वे एक अच्छे दोस्त और पड़ोसी भी थे। उनके पड़ोस के दुर्गा-उग्रसेन जी के परिवार के साथ उनके घरेलू संबंध थे। उग्रसेन जी के परिवार के हर सुख-दु:ख में वे उनका साथ देते थे। वे उग्रसेन के परिवार की संपन्नता को लेकर कभी भी द्वेषभाव नहीं रखते। बेटों के झगड़ों से बिखरते परिवार को देखक दशरथ और भगवती बहुत ही दु:खी हो जाते हैं। जहाँ मोहल्ले के बाकी लोग उनके बेटे और परिवार के प्रति घृणा व्यक्त करते थे, लेकिन दशरथ उनकी मजबूरी को समझते हुए हर पल उन्हें साथ देते हैं। इसतरह दशरथ जी के चरित्र में हमें एक खुले विचारों का परिवार मुखिया, एक आदर्श पति, आदर्श पिता, आदर्श दादा, आदर्श पड़ोसी, प्रगतिवादी विचारों के समर्थक आदि गुण दिखाई देते हैं।

3.3.3.5 सिया, गार्गी, बुलबुल और पीहू :

विवेच्य उपन्यास में प्रमुख पात्र भगवती और दशरथ के परिवार में सिया, गार्गी और बुलबुल इन पोतियों का जन्म होता है। तो उनके नि:संतान बेटे रूपेश-जयंति पीहू को अनाथालय से गोद लेते हैं। ये चारो बेटियाँ बड़ी ही आज्ञाकारी और संस्कारी थी। वह अपने दादा-दीदी और माता-पिता के अच्छे संस्कारों पलकर बड़ी होती है। वह अच्छी तरह शिक्षा पाकर डॉक्टर और वकील बनती है। अपने-अपने क्षेत्रों में सफल हो जाती है। इन सब में छोटी पीहू विदेश में जाकर उच्च शिक्षा हासिल करती है और एक बहुत बड़ी मल्टीनैशनल कंपनी में अधिकारी का पद प्राप्त करके ऑस्ट्रेलिया में जाकर बसती है।

बेटियों के अधिक पढाई करने के कारण उनके अनुकूल स्वजाति बिरादरी में लड़का मिलना मुश्किल हो जाता है। लेकिन यह बेटियाँ अपने जीवनसाथी को अपने शिक्षा की योग्यता के अनुकूल चुनती है। यह विश्वास उनमें आत्मनिर्भरता और उच्च शिक्षा के कारण आया है। वह समाज की पंरपरावादी विचारों की अंधी राही नहीं बनती बल्कि अपनी योग्यता के अनुसार अपने जीवन का उज्ज्वल मार्ग खुद तलाशती है। सबसे बड़ी बेटी सिया अपने सहपाठी को ही जीवनसाथी बनाने का निश्चय करती है। तो छोटी गार्गी भी विजातीय विवाह करने का साहसी फैसला करती है। इन दोनों को परिवार का साथ मिलता है। बुलबुल का विवाह एक सजातीय परिवार में एकलौते लड़के साथ कराया जाता है लेकिन वहाँ की रूढीवादी मानसिकता के कारण यह शादी टूटने के कगार पर आती है। लेकिन सिया समय रहते बुलबुल और उसके ससुरालवालों के बीच अच्छे से मध्यस्तता करके इस शादी को टूटने से बचाती है।

सिया अच्छी तरीके से पढाई करके वकील बनती है तो गार्गी अपनी एमबीबीएस की पढाई करके एक काबिल डॉक्टर बनती है। उच्च पढाई करके आत्मनिर्भर बनने के बाद दोनों भी बहने अपने जीवन को लेकर सही फैसले करने में सक्षम होती है। वह दोनों भी विजातीय लेकिन संस्कारी युवकों से प्रेम और बाद में उनसे शादी करती है। कालांतर में इसका अच्छा परिणाम निकलता है। बुलबुल की सजातीय परिवार में शादी की जाती है लेकिन उसके ससुराल वाले दहेज की लालच में उसकी मानसिक प्रताड़ना करते हैं। सिया हिम्मत और समझदारी से बुलबुल के ससुराल वालों को सबक सिखाकर सही रास्ते पर लाती है। यहाँ सिया बुलबुल की तरह हार मानने की बजाए दहेज जैसी कुप्रथा के खिलाफ विद्रोह करके न्याय की माँग करती है।

सिया और गार्गी की तरह पीहू का चरित्र भी प्रभावकारी बना है। पीहू एक अनाथ लड़की थी, जिसे नि:संतान रूपेश और जयंति ने गोद लिया था। वह उम्र में अन्य बहनों से बहुत छोटी है लेकिन उपन्यासकार ने उसे अपने उम्र से बहुत समझदार और प्रेरणादायी चत्रित किया है। पीहू बहुत ही होशियार और प्रतिभाशाली लड़की है। पढाई में वह इतनी चमक दिखाती है कि उसे ऑस्ट्रेलिया में उच्च पढाई का मौका मिलता है। लेकिन वह बहुत ही संवेदनशील और भावुक भी है। पढाई के लिए अपने परिवार से बिछड़ने की बात से वह दु:खी होती है। वह अपने कैरियर से अधिक अपने परिवार को महत्त्व देती है। इसकारण वह पढाई पूरी करने के बाद भारत वापस आ जाती है। लेकिन ऑस्ट्रेलिया के एक बहुत बड़ी कंपनी में नौकरी का उसे ऑफर आता है। तब उसकी बहनें सिया और गार्गी उसे भावुकता को त्यागकर नौकरी स्वीकारने को कहती है। वह अपने जीवन के लिए परिवार के समर्पण को हमेशा याद रखती है। उसे अपने दादा-दादी भगवती-दशरथ के प्रति अपार श्रद्धा थी। वह अपने परिवार से ही संस्कार पाकर अनाथ बच्चों के कल्याण के लिए काम करने का फैसला करती है। वह अपने दादा-दादी की याद में भगवती-दशरथ नाम से एक ट्रस्ट की निर्मिति करके अनाथ बच्चों के विकास के लिए सालाना बहुत बड़ी आर्थिक रूप से सहायता करती है। इसतरह उपन्यास की उपरोक्त चारों लड़कियों के चरित्र में हमें संस्कारी, आज्ञाकारी, शिक्षा एवं करियर में रूचि रखने वाली, साहसी, विद्रोही, आत्मनिर्भर, सामाजिक दायित्त्व को मानने वाली, प्रगतिवादी सोच रखने वाली, संवेदनशील, सहनशील आदि गुण दिखाई देते हैं।

3.3.3.6 उपन्यास के गौण पात्र :

विवेच्य उपन्यास में बलवंत-रवेती, रूपेश-जयंती, नागदत्त-कौशल्या, अभय-कुसुम, बुलबुल, विजय, विभोर, रोहन, अमित, अख्तरी आदि गौण पात्र आए हैं। गौण पात्रों के माध्यम से भगवानदास मोरवाल जी ने विभिन्न सामाजिक मुद्दों एवं विसंगतियों को स्पष्ट किया है। बलवंत-रेवती, रूपेश-जयंती संयुक्त परिवार में एक आदर्शवादी दम्पति की भूमिका निभाते हैं। तो दूसरे परिवार में नागदत्त-कौशल्या और अभय-कुसुम यह दम्पति संयुक्त परिवार के बिखराव का कारण बनती है। दोनों भाई स्वार्थी और लालची होते हैं। वह अपने बच्चों को अच्छे संस्कार न देने के कारण उनके बच्चे कुसंगत में पड़कर आवारा हो जाते हैं। साथ ही सामाजिक विषय, महाविद्यालयीन परिवेश आदि के अनुकूल कुछ गौण पात्रों की सृष्टि लेखक ने की है।

3.3.4 'शकुन्तिका' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ :

'शकुन्तिका' इस नाटक में भगवानदास मोरवाल ने विभिन्न सामाजिक विषयों एवं विसंगतियों को दर्शाया है। मूलत: उपन्यास के केंद्र में लैंगिक भेदभाव की समस्या संचालित हुई हैं लेकिन इस प्रमुख समस्या से निर्माण अन्य समस्याओं को भी भगवानदास मोरवाल बड़ी ही सूझ-बूझ के साथ उजागर किया है। भगवानदास मोरवाल की रचनाओं की यह खासियत रही है कि उनकी रचनाओं में समाज की दुखती रग पर हाथ रखा जाता है और उसका इलाज भी किया जाता है। अधिकांश समस्याएँ स्त्री जीवन से जुड़ी हुई होती है। प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में भी स्त्री-जीवन और उनसे जुड़ी लैंगिक भेदभाव की समस्या प्रमुख है। फिर भी प्रस्तुत उपन्यास में संयुक्त परिवारों का बिखराव, विवाह से लेकर रूढिवादी मानसिकता, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा, जातिवाद-वर्णवाद की मानसिकता, बुढापा और अकेलापन, विलासिता के कारण दिशाहीन युवा पीढी आदि समस्याएॅं देखी जा सकती है।

3.3.4.1 लैंगिक भेदभाव की समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में बेटा-बेटी भेद अर्थात् लैंगिक भेद की समस्या रही है। पितृसत्ताक परिवार पद्धति के कारण सदियों से भारत में लैंगिक भेदभाव की समस्या एक अभिशाप बनी हुई है। आज २१ वीं सदी में शिक्षा एवं विज्ञान-तकनीक के क्रांतिकारी विकास के दौर में भी हम बेटा-बेटी भेद से चिपक से गए हैं। आज भी पुत्र मोह के कारण बेटियों के जन्म को अभिशाप माना जाता है। बेटियों को पेट में ही कुचल देने की मानसिकता न केवल देहात बल्कि बड़े-बड़े महानगरों में भी देखी जा सकती है। प्रस्तुत उपन्यास में भी भगवती-दशरथ के परिवार में वंश की वृद्धि के लिए एक बेट के जन्म की प्रतीक्षा होती है। उनके बड़े बेटे बलवंत-रेवती को पहले से दो बेटियाँ थी और अब तिसरी बार रेवती माँ बनने वाली थी। लेकिन तिसरी बार भी बेटी का ही जन्म होता है। भगवती-दशरथ तिसरी बेटी पैदा होने से नाराज तो जरूर होते हैं लेकिन वे पुत्र मोह में इन तीन बेटियों से नफरत नहीं करते। वे उन्हें अच्छे संस्कार एवं शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाते हैं। तो दूसरी ओर दुर्गा-उग्रसेन के घर में दो बेटों को दो-दो बेटे होते हैं। वहाँ कोई बेटी नहीं होती। लेकिन कालांतर में यह संयुक्त परिवार आपसी वैमनस्य और स्वार्थ के कारण बिखर जाता है। दूर्गा के बेटे संपत्ति और व्यापार का बँटवारा करके उन दोनों को बुढापे में अकेला छोड़ जाते हैं। पोते भी कुसंगत में

पड़कर आवारागर्दी करते हैं। एक परिवार बेटों के कारण बिखर जाता हैं तो दूसरा परिवार बेटियों के कारण सँवर जाता है। उपन्यासकार ने लैंगिक भेदभाव की समस्या को दो परिवारों के उदाहरण द्वारा सकारात्मकता से दिखाया है। इसमें न बेटियों के जन्म को अभिशाप माना गया है न उनकी कोई प्रताड़ना होती है। बल्कि उन्हें प्रताड़ना की जगह प्रोत्साहन देने पर बेटियाँ भी कुल की उद्धारक बन सकती है, इसे लेखक ने स्पष्ट किया है।

3.3.4.2 संयुक्त परिवार में बिखराव की समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास की दूसरी प्रमुख समस्या है, संयुक्त परिवार का बिखराव। उपन्यास में दुर्गा-उग्रसेन का संयुक्त परिवार बिखर जाता है। दुर्गा-उग्रसेन का दो बेटों और चार पोतों का भरापूरा परिवार था। उनके परिवार में पैसों की कोइ कमी नहीं थी। उग्रसेन ने बड़े संघर्ष से अपने छोटे से व्यवसाय को एक बड़े बिझनेस में बदल दिया था। लेकिन वे अपने बेटों और पोतों को अच्छे संस्कार दे नहीं पाए। बेटों की शादी होने के बाद उनके परिवार में बिझनेस और संपत्ति के बँटवारे को लेकर कलह शुरू होता है। चारों पोते भी कुसंगत में पड़कर आवारागर्दी करते हैं। इससे पूरी कॉलोनी में उनके परिवार से नफरत की जाती है। बेटे लालची मानसिकता के कारण सभी अपनी-अपनी अलग गृहस्थी बनाते हैं। इसकारण दुर्गा-उग्रसेन घर में अकेले रह जाते हैं। जिन बच्चों के लिए हाड़तोड़ मेहनत करके कमाया था वहीं बच्चे उन्हें असहाय, निरीह छोड़कर चले जाते हैं। इसतरह संयुक्त परिवार में आई स्वार्थी मानसिकता के कारण टूटते परिवार का वर्णन इस उपन्यास में आया है।

3.3.4.3 विवाह की समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास में भगवती-दशरथ की पोतियाँ सिया, गार्गी, बुलबुल और पीहू की शादियों को लेकर विवाह की समस्या का वर्णन भगवानदास मोरवाल जी ने किया है। भगवती-दशरथ मध्यवर्ग एवं रूढीवादी विचारों के थे। लेकिन उन्होंने कभी अपनी इस रूढीवादितों को अपने परिवार पर थोपा नहीं गया। भारत में विवाह को लेकर आज भी कई रूढिवादी विचार पाए जाते हैं। 21 वीं सदी में भी विवाह सजातीय अर्थात् अपने ही बिरादरी करने का एक अलिखित नियम हैं। रीतिरिवाज के नाम पर आज भी हम इसे निभा रहे हैं। यदि कोई लड़का-लड़की बिरादरी से बाहर जाकर विवाह करते हैं तो उस परिवार को बिरादरी से बाहर निकाला जाता है। उपन्यास में भगवती की पोती सिया, गार्गी और पीहू अंतरजातीय विवाह करती है। तब उनके बिरादरी के लोगों द्वारा भगवती-दशरथ के परिवार की निंदा की जाती है। सिया एक बंगाली लड़के तपन से शादी करती है तो गार्गी अपने सहपाठी पंजाबी लड़के से शादी करती है। पीहू भी अंतरजातीय विवाह करके ऑस्ट्रेलिया में सेटल हो जाती है। इन तीनों ने भी विवाह को लेकर रूढीवादी विचारों को त्यागकर अपनी मर्जी और शैक्षिक काबिलियत के अनुसार अपना जीवन साथी चुना और कालांतर में उनका यह फैसला सही साबित होता है। क्योंकि तीनों भी खुशहाल जीवन जीती है। जबकि बुलबुल की शादी भगवती-दशरथ के विचारानुसार उनके ही बिरादरी के एक लड़के साथ की जाती है। लेकिन बुलबुल के ससुराल वाले उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करते हैं। इस तरह भगवानदास मोरवाल ने पढी-लिखी लड़कियों

को उनकी शिक्षा के अनुसार उनकी बिरादरी में लड़के न मिलने की समस्या को उजागर किया है। इस समस्या के लिए उन्होंने विजातीय या अंतरजातीय विवाह का उपाय बताया है।

3.3.4.4 दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा की समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास में भगवती-दशरथ के बड़े बेटे बलवंत की बेटी बुलबुल के संदर्भ में दहेज और घरेलू हिंसा की समस्या दिखाई देती है। बुलबुल की शादी उसके दादा-दादी की मर्जी से सजातीय अर्थात् बिरादरी के लड़के के साथ की जाती है। लेकिन बुलबुल के ससुराल वाले लालची निकलते हैं। वे शादी के बाद बुलबुल को दहेज लाने के लिए मानसिक एवं शारीरिक रूप से छल करते हैं। बुलबुल उनकी यातनाओं से तंग आकर मायके चली आती है। उसकी शादी टूटने की कगार पर आती है। लेकिन सिया और गार्गी उसे हिम्मत देती है। सिया एक वकील होने के कारण उसे कानून की अच्छी समझ थी। वह बुलबुल के पति को बुलाकर कानून अच्छी तरह समझाती है। बुलबुल का पति उनसे माफी माँगता है और वह उसे अपने घर ले जाता है। इसतरह प्रस्तुत उपन्यास में बुलबुल के ससुराल के संदर्भ में दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा की समस्या दिखाई देती है।

3.3.4.5 बुढापा और अकेलापन की समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास में दुर्गा-उग्रसेन के रूप में बुढापा और अकेलापन की समस्या को उजागर किया गया है। दुर्गा-उग्रसेन एक संपन्न मध्यवर्ग परिवार के है। उन्हें नागदत्त और अभय नाम के दो बेटे थे। उग्रसेन जी ने बड़े ही संघर्ष और मेहनत से अपने छोटे से व्यवसाय को एक बड़े बिझनेस में बदल दिया था। दोनों बेटों की शादी होती है और बहुए घर आती है। कालांतर में दोनों को दो-दो बेटे होते हैं। लेकिन दुर्गा और उग्रसेन के दोनों बेटे-बहुए बहुत ही स्वार्थी और लालची थे। संपत्ति और बिझनेस के बँटवारे को लेकर उनमें कलह शुरू होता है। पोतों को अच्छी इंग्लिश स्कूल में डाला जाता है। लेकिन वह आवारा निकलते हैं। घर में किसी की इज्जत नहीं करते हैं। बार-बार झगड़े होने के बाद दोनों बेटे अपनी-अपनी गृहस्थी अलग बनाकर रहने लगते हैं। बूढे दूर्गा और उग्रसेन दो बेटों और चार-चार पोते होने के बावजूद अकेले रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं। बेटे महीने में कभी-कभार अपने बूढे माँ-बाप से मिलने की औपचारिकता निभाते हैं। जिन बेटों की परवरीश और गृहस्थी बसाने के लिए दूर्गा-उग्रसेन ने अथक मेहनत की थी वे बेटे ही उन्हें बुढापे में अकेला छोड़ देते हैं।

3.3.4.6 विलासिता में डूबे युवक :

प्रस्तुत उपन्यास में दूर्गा-उग्रसेन के चार-चार पोतों के संदर्भ में यह समस्या देखने मिलती है। उग्रसेन ने बड़े संघर्ष के साथ अपना कारोबार स्थापित किया था। लेकिन इस आपाधापी में वे अपने बेटों और पोतों पर अच्छे संस्कार नहीं कर पाए। उन्होंने अपने बेटे और पोतों को खुशहाल जीवन देने का हर संभव प्रयास किया था। इसकारण उनके बेटों और पोतों को कभी अच्छे जीवन के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा था। सारे सुख और ऐशोआराम उन्हें अनायास ही मिले थे। इसकारण उनमें विलासिता बढ गई थी। उनके बेटों में स्वार्थी और लालची प्रवृत्ति बढी थी। उनके चारों पोतों को अच्छी स्कूलों में डाला गया था लेकिन उनकी

शिक्षा के प्रति कोई रूचि नहीं थी। हमेशा खेल-कूद और आवारागर्दी करते रहते थे। जैसे-जैसे वे बड़े होते है वैसे कुसंगत में फँस जाते हैं। लड़कियों की छेड़खानी करना, सिगरेट पीना, मोटरसायकिलें दौड़ाकर मुहल्लेवालों को परेशान करना आदि कामों में व्यस्त रहते थे। इसतरह अत्यधिक विलासिता और ऐशोआराम के कारण बर्बाद और दिशाहीन होती युवापीढी का वर्णन लेखक भगवानदास मोरवाल ने किया है।

3.3.5 'शकुन्तिका' उपन्यास का उद्देश्य :

भगवानदास मोरवाल का 'शकुन्तिका' उपन्यास अपने साथ विविध उद्देश्य को लेकर चलता है। उपन्यासकार ने इसमें दो परिवारों के माध्यम से एक तगड़ा सामाजिक संदेश देने का प्रयास किया है। बेटियों को घर में उचित सम्मान और शिक्षा देकर उन्हें जीवन में आत्मनिर्भर बनाना ताकि कभी हमें बेटा न होने की कमी महसूस ही नहीं होगी। पड़ोसी धर्म का निर्वाहन करना, रूढिवादी मानसिकता से ऊपर उठना, अंतरजातीय विवाह को अपनाना, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा का विरोध करना और समय पड़ने पर कानून की मदद् लेना, अपने बच्चों पर अच्छे संस्कार करना, संयुक्त परिवारों को बचाने के लिए घर के सभी सदस्यों में प्रेम, सम्मान की भावना को बढाना, बुढापे में माता-पिता की सेवा करना आदि उद्देश्य 'शंकुतिका' उपन्यास में दिखाई देते हैं। उनका विवेचन इसप्रकार है-

3.3.5.1 बेटा-बेटी समानता :

'शकुंतिका' यह उपन्यास भारतीय जनमानस में व्याप्त लैंगिक भेदभाव को केंद्र में रखकर लिखा उपन्यास है। लेखक ने वंशवृद्धि के लिए पुत्र मोह, बेटा ही कुल का दीपक इन संकुचित मानसिकता को त्यागने का संदेश दिया है। बेटियों के जन्म का स्वागत करना, उन्हें परिवार में सम्मान देना, अच्छे संस्कार एवं अच्छी शिक्षा देने पर वह भी कुल की उद्धारक बन सकती है, इस नई प्रगतिवादी सोच को सामने लाना उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है। दूर्गा-उग्रसेन और भगवती-दशरथ के परिवारों के वर्णन द्वारा उन्होंने बेटियाँ भी कुल का दीपक होती है और पुत्र मोह कितना निरर्थक है इसको स्पष्ट किया है। उपन्यास में सिया, गार्गी, पीहू ये बेटियाँ उस नए समाज का प्रतीक है जहाँ पर लैंगिक भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है। दो बेटे और चार पोतों होने के बावजूद दूर्गा-उग्रसेन बुढापे में एकाकी जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। तब दूर्गा भी अपने घर में एक बेटी होने की कामना करते हुए भगवती को अनाथालय से एक लड़की को ही गोद लेने की सलाह देती है, यही इस उपन्यास का उद्देश्य है। सदियों से समाज में 'पुत्रमोह' के पितृसत्ताक एवं पुरुषप्रधान रूढिवादी विचार को त्यागकर बेटा-बेटी को समान दर्जा देना यह मुख्य उद्देश्य है।

3.3.5.2 पड़ोसी धर्म का निर्वाहन करना :

'शकुंतिका' उपन्यास में दूर्गा और भगवती के परिवार के जरिए लेखक ने पड़ोसी धर्म कैसा होना चाहिए? इसकी ओर भी संकेत दिए हैं। आधुनिक विकास और भौतिकवादी जीवन के कारण हमारा जीवन दिन-ब-दिन आत्ममुग्ध और एकाकी बनता जा रहा है। पुराने जमाने में पड़ोसी भी रिश्तेदारों की तरह सुख-दु:ख में साथ-साथ रहते थे। लेकिन समय के साथ पड़ोस धर्म निभाने में शिथिलता आ हुई है। बड़े-बड़े महानगरों की फ्लैट संस्कृति में तो अपने पड़ोस में कौन रहता है? इसकी जानकारी नहीं होती। पड़ोसी की

मृत्यु होने की खबर भी नहीं होती। कई लाशें सडने के बाद उनकी दुर्गंधि से पड़ोस में कोई मरने की बात पता चलती है। मानवीय संवेदना इतनी मर चुकी है। इस परिप्रेक्ष्य में भगवानदास मोरवाल ने दूर्गा और भगवती के परिवार से एक आदर्श पड़ोसी का दर्शाया है। दोनों परिवार मध्यमवर्ग के हैं लेकिन दूर्गा का परिवार भगवति के परिवार की तुलना में अमीर है। लेकिन यह बात उनके रिश्ते में कभी रूकावट नहीं बनी। दूर्गा और भगवती जिसतरह अच्छी सहेलियाँ थी वैसे ही उन दोनों की पति उग्रसेन और दशरथ एक अच्छे मित्र थे। यह परिवार गत 35 वर्षों से एक-दूसरे के सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ देता था। घर के फैसले करते समय एक-दसूरे की सलाह लेना, सही राह दिखाना आदि बातें वे हमेशा करते थे। दूर्गा की सलाह और मार्गदर्शन पर भगवती के परिवार में हर बार हित होता है। दूर्गा अपने निजी अनुभवों पर भगवती को रूपेश के लिए लड़की पीहू को ही गोद लेने की सलाह देना, भी एक अच्छा सलाह सिद्ध होती है। इस तरह लेखक ने पड़ोसी धर्म को निभाने का संदेश दिया है।

3.3.5.3 रूढीवादी मानसिकता से ऊपर उठना :

'शकुंतिका' उपन्यास में भगवानदास मोरवाल जी ने अनेक जगहों पर रूढिवादी संकीर्ण मानिसकता पर प्रहार किया है। लेखक ने पुत्रमोह की संकीर्ण मानसिकता पर तो चोट की ही है साथ ही बेटे का जन्म होने पर ही कुँआ पूजन करने की रूढीवादी सोच का खंडन किया है। भगवती पीहू को गोद लेने के बाद समाज का विचार किए बिना घर में कुँआ पूजन का कार्यक्रम करती है। शहर में इस कार्यक्रम की बहुत चर्चा होती है और लोग भी इसे सकारात्मक रूप में अपनाते हुए भगवती और दशरथ के परिवार की जमकर तारीफ करते हैं। पुत्र के जन्म और उनके जन्मदिवस पर जोर-जोर से डीजे लगाकर पूरे कॉलोनी के लोगों को परेशान करने का प्रचलन बढ रहा है। लेकिन भगवती-दशरथ के परिवार में जब पीहू का पहला जन्मदिन आता है तो केवल शांति से पूजापाठ की जाती है। इससे पड़ोसियों को कोई परेशानी नहीं होती, तब सारे पड़ोसी उनके परिवार की तारीफ करते हैं। इसतरह रूढिवादी परंपरा से लोगों को ऊपर उठना भी उपन्यास का उद्देश्य है।

3.3.5.4 विजातीय/ अंतरजातीय विवाह को अपनाना :

भारतीय परिवेश में मनुष्य का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक पारंपरिक रीति-रिवाजों से जकड़ा हुआ है। भारत में विवाह को एक संस्कार के रूप में देखा जाता है और विवाह अपने ही जाति-बिरादरी में करने का अलिखित कानून बना है। हम सदियों से विवाह को लेकर इसी रूढिवादी मानसिकता को निभाते आ रहे हैं। लेकिन समय के साथ-साथ लड़कियों की घटती संख्या, लड़कियों में शिक्षा का बढता प्रचलन के कारण सजातीय विवाह को लेकर दिक्कतें बढ रही हैं। पढी-लिखी लड़की को उसके अनुरूप लड़का मिलने में कठिनाई आ रही है। इसकारण लेखक ने सजातीय विवाह की रूढिवादी सोच से ऊपर उठकर अंतरजातीय विवाह करने की प्रगतिशील विचारधारा को स्वीकारने की अपील की है। उन्होने सिया, गार्गी और पीहू के अंतरजातीय विवाह की सफलता दिखाकर इस समस्या का समाधान दिखाने की कोशिश दिखाई है। साथ ही

बुलबुल से सजातीय विवाह करने के बावजूद आई समस्याओं की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए अंतरजातीय विवाह को स्वीकारने का संदेश दिया है।

3.3.5.5 दहेज ओर घरेलू हिंसा का विरोध करना :

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक भगवानदास मोरवाल ने बुलबुल की शादी, शादी के बाद ससुराल से उसे मिली प्रताड़ना, बुलबुल को मायके लाकर छोड़कर दहेज की मांग करना आदि घटनाओं का उल्लेख किया है। भगवती-दशरथ अपनी पोतियों की शादी सजातीय परिवारों में करना चाहते थे लेकिन सिया, गार्गी और पीहू उच्च शिक्षा पाकर अपने अनुरूप अपना जीवन साथी तलाश करके अंतरजातीय विवाह करते हैं। लेकिन बुलबुल की शादी दादा-दादी की मर्जी के अनुसार सजातीय लड़के से की जाती है। लेकिन कालांतर में यह परिवार लालची निकलता है। ससुराल में बुलबुल को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है। वह घरेलू हिंसा की शिकार होती है। तब उसकी वकील बनी बड़ी बहन सिया बुलबुल के पति को बुलाकर कानून का खौफ दिखाती है। जिससे उसकी आँखें खुल जाती है और वह बुलबुल को अपने साथ ले जाता है। अत: हमें लड़कीवालों का पक्ष होने के कारण चूप रहने के बजाए कानून की मदद् लेकर दहेज और घरेलू हिंसा का विरोध करने का संदेश लेखक देता है।

3.3.5.6 अन्य उद्देश्य:

प्रस्तुत उपन्यास बहुत लघु है लेकिन आशय एवं उद्देश्य की दृष्टि से गहरा है। भगवानदास मोरवाल जी ने 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया है, ऐसा कहे तो यह अतिशयोक्ति न होगी। उपरोक्त उद्देश्यों के साथ ही इस उपन्यास में पितृसत्तात्मक सोच को त्यागकर प्रगतिवादी सोच को अपनाना, संयुक्त परिवारों में लालच-स्वार्थ को दूर रखकर एक-दूसरे का सम्मान रखना, केवल भौतिक सुविधा के पीछे लगने के बजाए परिवार के बच्चों को संस्कारित करने के लिए विशेष प्रयास करना, बुढापे में माता-पिता को असहाय या अकेला न छोड़ना, किशोरवयीन बच्चों पर अच्छे संस्कार करके उन्हें सद्मार्ग पर लाने की कोशिश करना, बच्चों में सामाजिक दायित्त्व एवं समाज सेवा का बोध निर्माण करना, बच्चों की नई सोच एवं उनके प्रगतिवादी विचारों का साथ देना, किसी अनाथ को गोद लेकर उसका जीवन सँवारना, बच्चों को अपने करियर के समय भावनात्मक बनने के बजाए प्रैक्टिकल बनाने के लिए प्रेरणा देना आदि कई उद्देश्य इस उपन्यास में निहित हैं।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न:

3.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न :

1) 'शकुंतिका' उपन्यास के लेखक .... है।

अ) प्रेमचंद   ब) भगवानदास मोरवाल

क) कमलेश्वर   ड) यशपाल

2) 'शकुंतिका' उपन्यास का प्रकाशन .... ई. को हुआ है।

अ) सन 2020 ब) सन 2021 क) सन 2022 ड) 2023

3) 'शकुंतिका' उपन्यास में........... की समस्या को केंद्र में रखा गया है।

अ) बालविवाह ब) लैंगिक भेदभाव क) दहशतवाद ड) बेरोजगारी

4) 'शकुंतिका' उपन्यास ....के दो परिवारों की कहानी है।

अ) कमला-विमला ब) सीता-गीता क) दूर्गा-भगवती ड) सपना-नयना

5) 'शकुंतिका' यह शीर्षक .... का प्रतीक है।

अ) गौरया (चिड़िया) ब) हंस क) कोयल ड) बुलबुल

3.4.2 उचित मिलान कीजिए।

खंड I	खंड II
1) भगवती के पति	अ) तपन (बंगाली लड़का)
2) दूर्गा के पति	ब) दशरथ
3) 'शकुंतिका' की समस्या	क) पीहू
4) गोद ली गई बच्ची	ड) उग्रसेन
5) सिया का मंगेत्तर	ई) लैंगिक भेदभाव

3.4.3 सही या गलत बताए।

प्र. 1 निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्य को पहचानें।

1) भगवती और दशरथ के घर में पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा थी।

2) बुलबुल प्रेम विवाह करती है।

3) दुर्गा और उग्रसेन के पोते बड़े संस्कारी थे।

4) 'शकुंतिका' उपन्यास किसान जीवन पर आधारित है।

प्र. 2 शकुन्तिका के निम्नलिखित उद्देश्यों में से गलत उद्देश्य पहचानें।

1) बेटा–बेटी समानता

2) घरेलु हिंसा का विरोध

3) रुढिवादी मानसिकता से अपर उठना

4) युद्ध की समस्या

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

शकुंतिका = गौरय्या, चिड़ियाँ

कूँआ पूजन = उत्तर भारत की एक परंपरा है बेटे का जन्म के बाद निभाई जाती है।

कथानक = उपन्यास की कहानी, कथा

सजातीय = खुद की जाति या बिरादरी में

विजातीय = दूसरी जाति या बिरादरी में, अंतरजातीय

गर्भ जल चिकित्सा = गर्भ की जाँच करना।

डी.बी फाऊंडेशन = दशरथ-भगवती फाऊंडेशन ट्रस्ट का नाम

संयुक्त परिवार = दादा-दादी, बेटे-बहुएँ, पोते-पोतियों का एकत्रित परिवार।

मुहावरें : हाथ-पॉव फूल जाना = भयभीत होना, डर जाना ।, हवाइयाँ उड़ना = आश्चर्यचकित होना, कलेजा मुँह को आना = भयभीत होना, कूक गुंजना = आवाज गूँजना।, मूल से ज्यादा ब्याज प्यारा होना = स्थायी लाभ से अधिक अस्थायी लाभ से प्रेम होना।

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.4.1 पर्यायवाची प्रश्नों के उत्तर :

1) भगवानदास मोरवाल 2) सन 2020 3) लैंगिक भेदभाव

4) दूर्गा- भगवती 5) गौरय्या (चिड़िया)

3.4.2 उचित मिलान प्रश्न के उत्तर :

1) भगवती के पति = ब) दशरथ

2) दूर्गा के पति = ड) उग्रसेन

3) 'शकुंतिका' की समस्या = ई) लैंगिक भेदभाव

4) गोद ली गई बच्ची = क) पीहू

5) सिया का मंगेतर = अ) तपन (बंगाली लड़का)

3.4.3 सही-गलत प्रश्न के उत्तर :

1) 1 2) 4

3.7 सारांश:

1) समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल हिंदी भाषी क्षेत्रों के ग्राम-जीवन एवं लोक संस्कृति यथार्थ को स्पष्ट करने वाले उल्लेखनीय लेखक है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, अनुवाद, बाल साहित्य आदि क्षेत्रों में अपनी रचनाशीलता का परिचय दिया है। भगवानदास मोरवाल जी ने 10 उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 1 कविता संग्रह, तीन बाल साहित्य ग्रंथ की रचना करके समकालीन हिंदी लेखकों में अपनी विशेष पहचान बनाई है।

2) 'शकुंतिका' उपन्यास समकालीन बहुचर्चित उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल का सन 2020 ई. को प्रकाशित आठवाँ उपन्यास है। इसमें भगवती-दूर्गा इन मध्यम वर्ग परिवार की महिलाओं के दो परिवारों को केंद्र में रखते हुए 'लैंगिक भेदभाव' की समस्या का वर्णन किया गया है। 'शकुन्तिका' यह एक लघु-उपन्यास है, जो भारतीय परिवारों में बेटा-बेटी के जन्म एवं महत्त्व को उद्घाटित करता है। 'शकुन्तिका' का अर्थ एक नन्हीं चिड़ियाँ होता है। भगवानदास जी ने 'शकुन्तिका' यह प्रतीकात्मक शीर्षक के द्वारा भारत में लड़कियों की घटती संख्या और उससे निर्माण समस्या को इस उपन्यास में दर्शाया है।

3) 'शकुन्तिका' उपन्यास के पात्रों को हम मुख्य-पात्र और गौण पात्रों में विभाजित करके समझ सकते हैं। मुख्य पात्रों में दुर्गा, उग्रसेन, भगवती, दशरथ, सिया, गार्गी, पीहू आदि उल्लेखनीय हैं जबकि गौण पात्रों में बलवंत-रवेती, रूपेश-जयंती, नागदत्त-कौशल्या, अभय-कुसुम, बुलबुल, विजय, विभोर, रोहन, अमित, अख्तरी आदि पात्रों के नाम आते हैं।

4) 'शकुन्तिका' इस नाटक में भगवानदास मोरवाल ने विभिन्न सामाजिक विषयों एवं विसंगतियों को दर्शाया है। मूलत: उपन्यास के केंद्र में लैंगिक भेदभाव की समस्या संचालित हुई हैं लेकिन इस प्रमुख समस्या से निर्माण अन्य समस्याओं को भी भगवानदास मोरवाल बड़ी ही सूझ-बूझ के साथ उजागर किया है। इसमें संयुक्त परिवारों का बिखराव, विवाह से लेकर रूढीवादी मानसिकता, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा, जातिवाद-वर्णवाद की मानसिकता, बुढापा और अकेलापन, विलासिता के कारण दिशाहीन युवा पीढी आदि स्मस्याएँ देखी जा सकती है।

5) समाज में 'पुत्रमोह' के पितृसत्ताक एवं पुरुषप्रधान रूढिवादी विचार को त्यागकर बेटा-बेटी को समान दर्जा देना यह मुख्य उद्देश्य है। बेटियों को घर में उचित सम्मान और शिक्षा देकर उन्हें जीवन में आत्मनिर्भर बनाना ताकि कभी हमें बेटा न होने की कमी महसूस ही नहीं होगी। सजातीय विवाह की रूढीवादी सोच से ऊपर उठकर अंतरजातीय विवाह करने की प्रगतिशील विचारधारा को स्वीकारना। जातिवादी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठना, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा का विरोध करना और समय पड़ने पर कानून की मदद लेना, अपने बच्चों पर अच्छे संस्कार करना, संयुक्त परिवारों को बचाने के लिए घर के सभी सदस्यों में प्रेम, सम्मान की भावना को बढाना, बुढापे में माता-पिता की सेवा करना आदि उद्देश्य 'शंकुतिका' उपन्यास में दिखाई देते हैं।

3.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न:

1) भगवानदास मोरवाल जी का संक्षिप्त परिचय देकर उनके 'शकुंतिका' उपन्यास का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

2) भगवानदास मोरवाल लिखित 'शकुंतिका' उपन्यास के आधार पर भगवती और दूर्गा की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

3) भगवानदास मोरवाल लिखित 'शकुंतिका' उपन्यास के आधार पर दशरथ और उग्रसेन की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

4) 'शकुंतिका' उपन्यास में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

5) 'शंकुतिका' उपन्यास का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न:

1) 'शकुंतिका' उपन्यास की सिया और गार्गी।

2) 'शकुंतिका' उपन्यास में दुर्गा–उग्रसेना परिवार।

3) 'शकुंतिका' उपन्यास में चित्रित लैंगिक भेदभाव की समस्या।

4) 'शकुंतिका' में चित्रित बुलबुल और पीहू।

5) 'शकुंतिका' बुढापा और एकाकी जीवन की समस्या।

6) 'शकुंतिका' उपन्यास के प्रमुख उद्देश्य।

7) 'शकुंतिका' उपन्यास में विवाह एवं दहेज प्रथा की समस्या।

3.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) हिंदी में स्त्री विमर्श पर आधारित समकालीन उपन्यासकारों की जानकारी इकट्ठा कीजिए।

2) आपके क्षेत्र में पाई जाने वाली महिला समस्याओं की सूची बनाकर उसपर प्रबोधन कीजिए।

3) कन्या भ्रूण हत्या विरोध के संदर्भ में नुक्कड़ नाटक के जरिए लोगों का प्रबोधन कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) सम्पा. डॉ. अनिल सिंह, 'शकुंतिका' सृजन और दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज-211001, प्रथम संस्करण- 2020।

2) संपा. डॉ. मधु खराटे, उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल, विद्या प्रकाशन, कानपुर।

3) संपा. डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता, लोकमन का सिरजनहार : भगवानदास मोरवाल, समीक्षा पब्लिकेशन (शिल्यायन), गांधीनगर, दिल्ली।

❑❑❑

इकाई–4
'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' : समीक्षात्मक विवेचन

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवरण

4.3.1 दस प्रतिनिधि कहानियों का सामान्य परिचय

4.3.2 दस प्रतिनिधि कहानियों का कथानक

4.3.3 दस प्रतिनिधि कहानियों के प्रमुख पात्र

4.3.4 दस प्रतिनिधि कहानियों में चित्रित समस्याएँ

4.3.5 दस प्रतिनिधि कहानियों का उद्देश्य

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) हिंदी के समकालीन कहानीकार भगवानदास मोरवाल से परिचित होंगे।

2) दस प्रतिनिधि कहानियों के कथानक से परिचित होंगे।

3) दस प्रतिनिधि कहानियों के प्रमुख पात्रों से परिचित होंगे।

4) दस प्रतिनिधि कहानियों की प्रमुख समस्याओं से परिचित होंगे।

5) दस प्रतिनिधि कहानियों के उद्देश्य को समझाना।

4.2 प्रस्तावना:

हिंदी के आधुनिक कहानी-साहित्य में भगवानदास मोरवाल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनकी कहानियाँ हरियाणा और राजस्थान के आँचल को बड़ी सूक्ष्मता के साथ रेखांकित करता है। यहाँ के लोकजीवन, लोकपंरपरा और लोक संस्कृति की सूक्ष्मातिसूक्ष्म झलक उनकी हर कहानियों में दिखाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर युग में ग्रामीण आँचलों में आए परिवर्तन और उससे निर्माण हुई विकृतियों का यथार्थ रूप में उनके कहानी-साहित्य में दृष्टिगत होता है। भगवानदास जी के अब तक पाँच कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'सिला हुआ आदमी' (1986), 'सूर्यास्त से पहले' (1990 ई.), 'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार' (1993 ई.), सीढियाँ, माँ और उसका देवताफ (2008), 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' (2014 ई.), 'धूप से जले सूरजमुखी' (2021 ई.), 'महराब और अन्य कहानियाँ' (2021 ई.) 'कहानी अब तक' (दो खंड- पहला खंड- 2016 ई. दूसरा खंड- 2016 ई) आदि। इस इकाई में हम भगवानदास मोरवाल कृत 'दस प्रतिनिधि कहानियां' का अध्ययन करने वाले हैं।

4.3 विषय विवरण :

4.3.1 'दस प्रतिनिधि कहानी-संग्रह' का सामान्य परिचय:

भगवानदास मोरवाल के 'दस प्रतिनिधि कहानी-संग्रह' का वर्ष 2014 ई. को किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें 'महराब', 'बस, तुम न होते पिताजी', 'दु:स्वप्न की मौत', 'बियाबान', 'सौदा', 'चोट', 'रंग-अबीर', 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता', 'वे तीन' और 'छल' यह दस कहानियाँ शामिल है। कथ्य एवं आशय की दृष्टि से ये 10 कहानियाँ बिलकुल अलग है। इसमें नौ कहानियाँ उनके पूर्व कहानी-संग्रहों में संकलित है जबकि 'वे तीन' यह इस संग्रह में नए रूप से शामिल की गई है। प्रस्तुत कहानियों में हरियाणा और राजस्थान के आँचलिक परिवेश, लोकधर्मिता एवं लोकजीवन की झाँकी दिखाई देती है। सभी कहानियाँ उक्त परिवेश के सामाजिक विसंगतियों एवं विडंबनाओं को प्रस्तुत करते हुए मानवीयता का पक्ष उजागर करती है। 'महराब', 'बियाबान', 'सौदा' और 'रंग-अबीर' कहानियाँ स्थानीय लोकजीवन का प्रतिनिधित्त्व करती है। 'वे दिन' इस कहानी में सांप्रदायिकता इस सामाजिक समस्या को लेखक ने पत्तो-रेशोसहित विश्लेषित किया है। 'छल' कहानी शिक्षा-व्यवस्था में पनप रही विकृतियों को उजागर करती है तो 'चोट' कहानी सामाजिक न्याय उपजी कुंठा, दोष को अभिव्यक्त करती है। 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी वर्तमान दलित जीवन के मर्म को व्यक्त करते हुए दलित-विमर्श की चौखट पर दस्तक देती है। 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी पारिवारिक संबंधों में आई निर्ममता को स्पष्ट करती है तो 'दु:स्वप्न की मौत' संग्रह की एक सामान्य कहानी लगती है लेकिन समाज के प्रश्न जरूर खड़ी करती है। अत: इन कहानियों का समीक्षात्मक विवेचन निम्नांकित मुद्दों पर समझते हैं-

4.3.2 दस प्रतिनिधि कहानियों के कथानक :

'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' इस कहानी-संग्रह में संकलित सभी कहानियों के विषय अलग-अलग सामाजिक प्रश्नों से जुड़े हैं। उनके संक्षिप्त कथानकों का विवेचन इस प्रकार किया है-

4.3.2.1 'महराब' कहानी का कथानक:

'महाराब' यह कहानी-संग्रह की पहली कहानी है जो मेवात के लोक-जीवन और परिवेश से जुड़ी है। मेवात के ग्रामांचलिक जीवन में आते परिवर्तनों यह कहानी बयां करती है। कहानी में मेव (कन्व्हरटेड मुस्लिम) और हिंदुओं की एकता में आ रही दूरी को लेखक ने स्पष्ट किया है। यह कहानी कलबत्ती और अशरूफी इन प्रमुख पात्रों को केंद्र में रखकर बुनी गई है। कलबत्ती और अशरूफी दोनों भी दुल्हन बनकर मेवात में आई थी तब से दोनों में गहरी दोस्ती थी। आज वे दोनों उम्र की आखिरी पड़ाव पर पहुँच गई है। दोनों अपने सुख-दुःख एक-दूसरे को बताती है। तीज-त्योहार हो या ईद-बकरीद दोनों कभी एक-दूसरे को पकवान-मिठाई देना नहीं भूलती। घर के शादी-ब्याह के फैसले भी वह एक-दूसरे से विचार-विमर्श करके ही करती थी। लेकिन अशरूफी पोते की सगाई को लेकर उठी अफवाहों से वह परेशान होती है। तो कलबत्ती सच जानने के लिए उसके घर जाती है। तो सचमुच अशरूफी के घर में उसी दिन उसके पोते की सगाई उसी के मामा की बेटी से हो रही होती है। तब कलबत्ती बहुत गुस्सा हो जाती है और उसे हैरानी भी होती है कि आखिर अशरूफी ने यह बात उससे क्यों छिपाई। वह गुस्से से वहाँ से निकल रही होती है लेकिन अशरूफी उसे कसम देकर रूकने के लिए कहती है और उसके हिस्से का नेग भी उसे देती है। अशरूफी बताती है कि उसकी बहू इस्लाम को बहुत मानती है और खुद को एक सच्चा मुसलमान बताती है। इस्लाम में इस तरह के रिश्ते को जायज माना जाता है। लेकिन कलबत्ती के मन में प्रश्नों का द्वंद्व चलता रहता है कि, 'कल तक जो बच्चे भाई-बहन के रिश्ते निभा रहे थे आज उनकी सगाई करा दी गई, फिर एक दिन वे पति-पत्नी भी बन जाएंगे।'

अशरूफी के पोते की शादी के दिन नजदीक आते हैं। इधर कलबत्ती अपने घर में चाक पूजने की रस्म को निभाने की तैयारी में लगी रहती है। अशरूफी से मिलकर वह चाक पूजने का दिन तय करने उसे घर जाती है। लेकिन अशरूफी का बेटा-बहू साफ मना कर देते हैं। फिर भी, अशरूफी नाराज हुई कलबत्ती को आशा देती है कि हम चाक पूजने की रस्म जरूर करेंगे। लेकिन शाम होने तक भी अशरूफी नहीं आती तो वह कलबत्ती नाराज होती है। लेकिन रात होने के बाद अशरुफी कलबत्ती के घर जाती है। अशरूफी को देख कलबत्ती को लगता है कि वह चाक पूजन के लिए बर्तन लेने आई होगी लेकिन अशरूफी बहुत ही दुःखी हो कर कहती है कि ''कलबत्ती तू समझ रही है कि मैं चाक पूजन आई हूँमेरी बाहण मैं तो भात को बुलावा देने आई हूँ।'' यह कहते हुए वह कलबत्ती को अपने घर खिंचते हुए ले जाती है। नेग लेते हुए कलबत्ती बहुत खामोश रहती है तो अशरूफी उसे बड़े प्रेम और अपनेपन से कहती है, ''तेरे पोते का बिहाहै बावली।'' संवेदना से भरी इस स्थिति में दोनों सहेलियाँ एक-दूसरी की आँखों से सब कुछ समझ जाती है।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से मेव और हिंदु परिवारों की पुरानी पीढी का भाईचारा नई पीढी के कारण विभाजित होने की बात को स्पष्ट किया है।

4.3.2.2 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का कथानक :

'बस, तुम न होते पिताजी' यह कहानी प्रमुख पात्र जगन के द्वारा अपने पिता के व्यवहार की बताई दास्तान है। कहानी का पिताजी के दो बेटे हैं। उनका छोटा बेटा जगन कहानी के शुरुआत में ही अपने पिताजी का परिचय कराता है–''पिता को लेकर गढे गए तरह–तरह के किस्सों ने भईया को असमय ही प्रौढ बना दिया गया था। इसीलिए भईया से लेकर यह छोटा सा परिवार इस 'पिता' नाम के संबोधन को लेकर महज अपने संबंधों को निभाने की लकीर–सा पीट रहा था।'' जगन को जब भी अपने पिता की करतूतों की जानकारी मिलती वह आग–बबूला हो जाता था। जगन ने अपने पिताजी को कभी उस सम्मान के पात्र समझा नहीं। उसके पिताजी गाँव में एक शराबी और स्त्री–लंपट व्याभिचारी के रूप में कुख्यात थे। इस शराबी पिता ने अब अपने ही बहू पर बूरी नज़र डालाना शुरू किया था। जब जगन को यह बात समझ गई तो उसके बड़े भाई ने उसे समझाने की कोशिश कि शायद शराब की नशे में पिताजी से यह हरकत हुई होगी। लेकिन उस दिन से जगन ने अपने पिताजी को प्रणाम करना छोड़ दिया। उस दिन से वह अपने पिताजी को लेकर यही सोचता कि ''बस, तुम ना होते पिताजी''। इसके पीछे जगन का पिताजी को लेकर गुस्सा था कि उसके शराबी और चरित्रहीन पिताजी के कारण उनके खुशहाल जीवन में तकलीफें बढी है। लेकिन कुछ दिनों बाद यह सच हो जाता है । पिताजी के बीमार होने की खबर मिलती और कुछ ही दिनों में उनका देहांत हो जाता है। जगन की पत्नी पिता के अंतिम संस्कार के बाद उनकी तस्वीर शहर लाती है। वह अपने घर में एक दीवार पर यह तस्वीर लगाकर उसे फूलमाला पहनाती है। जगन दीवार पर टंगी अपने पिताजी की तस्वीर देखता तो उसे लगता कि पिताजी आज तक अपने आचरण और गैर कृत्यों से हमें पीड़ा पहुँचाते रहे और आज भी उसपर हँस रहे हैं। मूलत: यह कहानी जगन के मन की अधेड़बुन को पेश करती है। पिता को लेकर उसके मन के संकुचन को व्यक्त करती है। पिता के व्यवहार से आहत जगन का मन उनके मृत्यु के बाद भी उनक

4.3.2.3 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी का कथानक :

'दु:स्वप्न की मौत' कहानी जाति एवं वर्ण व्यवस्था के शोषण तंत्र को उजागर करने वाली कहानी है। इसमें लालचंद जो एक निम्न जाति का व्यक्ति है जो सदियों से चले आ रहे बंधुवा मजदूर पद्धति को तोड़ता है। सवर्ण जाति कुछ एहसानों के बदले निम्न जाति को जीवन भर अपना बंधुवा मजदूर बनाकर उसका शोषण करती है। लेकिन मुख्य पात्र लालचंद महतर सरकारी की योजनाओं का लाभ उठाते हुए एक सम्मानजनक जीवन जीने लगता है। लालचंद सवर्णों की धूर्त शोषण तंत्र को समझता है। वह हमेशा सम्मानजनक जीवन जीने के सपने देखता रहता है। सरकारी की कुछ नई नीतियों के कारण उनके गाँव के सरपंच की सीट निम्न जाति के लिए आरक्षित की जाती है। इसकारण सरपंच दीनानाथ को यह डर सतानें लगता है कि उसकी सरपंच की कुर्सी छिन जाएगी। क्योंकि इसी कुर्सी और सत्ता को उसने आमदनी का

जरिया बनाया था। निम्न जाति का आरक्षण होने के कारण दीनानाथ की कुछ नहीं चलती लेकिन वह लालचंद महतर के स्वभाव और व्यवहार के अनुकूल कार्य करने लगता है। उसे बहला-फुसलाकर सरपंच का चुनाव लड़वाता और उसे जीताता भी है। बाद में वह योजनाओं के लिए आने वाले अनुदान का पैसा लालचंद और अन्य पंचों के साथ मिलकर हड़प लेता है।

कुछ ही दिनों में लालचंद गाँव के संपन्न और ईज्जतदार लोगों में गिना जाने लगता है। वह अपनी पत्नी को गाँव की साफ-सफाई का काम छोड़ने के लिए कहता है। इसकी जानकारी जब दीनानाथ को चलती है तो लालचंद द्वारा खुद ही फैसले लेने की बात उन्हें पसंद नहीं आती। वे एक दिन लालचंद को घर बुलाते हैं और उसपर किए एहसानों को गिनाते हैं। गुस्से में दीनानाथ लालचंद को उसकी जाति याद दिलाते है जिससे लालचंद बहुत ही दुःखी हो जाता है। वह बड़ी विनम्रता के साथ दीनानाथ को कहता है कि, ''लालाजी, जो अहसान करे हैं, वे उन्ने गाए ना हैं और फिर पिछले दो बरस से आपके अहसान तो चुकाता आ रा हूँ। अपनी रकम में आपने जो आग लगाई है, ऊ तो पिछले बरस ही वसूल ली और फिर लालाजी, मैंने कोई उमर भर को ठेका तो ना ले लिया है।'' और वह गुस्से से चला जाता है। लेकिन उसके मन में एक अजीब द्वंद्व चलता रहता है कि क्या उसने लाला से इसतरह बात करके ठीक किया है? क्या उसे आजीवन लाला दीनानाथ के दबाव में नीचे झुककर काम करना चाहिए? आखिर क्यों उसे ही नीचे बैठना होता है? सरकार की विविध योजनाओं, संविधान के कानून से निम्न जातियों को अपने अधिकार तो मिले है, लेकिन सवर्णों की मानसिक प्रताड़ना से उन्हें अब तक मुक्ति नहीं मिली है। लालचंद को यही एक दुःखद स्वप्न लगता है, जिसकी मौत करने के लिए वह प्रयासरत है।

4.3.2.4 'बियाबान' कहानी का कथानक :

भगवानदास मोरवाल जी ने 'बियाबान' यह कहानी पूर्वदीप्ति शैली में लिखी है। इस कहानी के प्रमुख पात्र है, चाचा बिसनाथ। यह कहानी उनके जीवन से जुड़ी हुई है। चाचा बिसनाथ गाँव के ही एक परिवार के यहाँ काम करते थे। उनका पूरा जीवन गाँव और वहाँ के रहन-सहन में गुजरा था। जीवन के आखिरी पड़ाव में वे उस परिवार के साथ गाँव छोड़कर शहर में तो रहने जाते हैं। लेकिन उनका मन, उनके विचार आज भी उनके गाँव के पूर्वज, उसका विकास आदि से ही जुड़े रहते हैं। चाचा बिसनाथ जिस परिवार के यहाँ काम करते थे वह परिवार भारत-पाक विभाजन के बाद भारत में आया था और धीरे-धीरे गाँव के अबोहवा में घुल-मिल गया था। गाँव के मंगल खाँ की जमीन पर उन्होंने थोड़ा-थोड़ा काम करके अपना जीवन आगे बढाते हैं और एक दिन एक संपन्न, रईस बनकर गाँव के ही सेठों में शामिल हो जाते हैं। चाचा बिसनाथ आज उसी परिवार के घर चौकीदार का काम कर रहे हैं।

आज कई वर्षों के बाद मंगल खाँ का पोता नौकरी माँगने के लिए उसी परिवार के पास आता है जहाँ चाचा बिसनाथ चौकीदारी करते हैं। चाचा बिसनाथ को लगता है कि यह परिवार जावेद को जरूरी नौकरी देगा क्योंकि मंगल खाँ ने शुरुआती दिनों में इस परिवार को बहुत मदद् की थी। इसलिए चाचा बिसनाथ को लगता है कि वे इस अहसान को याद रखकर जावेद को अपनी फैक्टरी में जरूर नौकरी देंगे लेकिन, ऐसा

नहीं होता। क्योंकि फैक्ट्री के मालिक को जावेद पर विश्वास नहीं था। स्वाधीनता आंदोलन में सिपाही रहे मंगल खाँ के पोते को लेकर ऐसे अविश्वास को देखकर चाचा बिसनाथ को बहुत ही दुःख होता है। उसकी जाति के चंद लोगों की वजह से जावेद को भी संदेह की निगाहों से देखा जाता है। चाचा बिसनाथ अपनी जिम्मेदारी पर उसे फैक्ट्री में काम दिलाने को कहते हैं। चाचा बिसनाथ अंत में यह सोचते हैं कि जिस परिवार को शुरुआती दिनों में बसाने के लिए जावेद के दादाजी ने मदद की थी, वही परिवार आज सांप्रदायिकता के कारण उसे नौकरी पर रखने के लिए तैयार नहीं। सांप्रदायिकता ने हिंदू-मुस्लिमों के सदियों से चले आ रहे भाईचारे के रिश्ते में, प्रेम में जहर घोलकर एक-दूसरे की बीच नफरत की खाईयाँ बना दी है।

4.3.2.5 'सौदा' कहानी का कथानक :

'सौदा' कहानी सांप्रदायिकता जैसे असामाजिक तत्त्व और उससे बिगड़ती स्थितियों को उजागर करने वाली कहानी है। साथ ही इसमें हमारी खोखली हुई न्याय व्यवस्था पर भी व्यंग्य किया गया है। इस कहानी के प्रमुख पात्र रामसिंह और हारूण है, जो रोजमर्रा के जीवन की कुछ आम बातों से एक-दूसरे से झगड़ा करते हैं। दोनों में बातों-बातों में हुआ झगड़ा हाथा-पाई तक पहुँच जाता है और इसके चलते पत्थर का एक टुकड़ा दूकान के शीशे में लग जाता है। इस कारण हारूण को उसकी रात को कुछ हिंदुओं द्वारा पीटा जाता है। दूकान के मालिक जुगल किशोर इस मामले को रफा-दफा करने के लिए पुलिस चौकी आता है लेकिन पुलिस वाले भी उसकी कुछ सुनते नहीं। तब वहाँ का एक कॉन्स्टेबल मामले की गंभीरता को समझाते हुए उन्हें गाँव के किसी बड़े व्यक्ति को लेकर आने को कहता है। तब हारूण के पिता जमाल खाँ को अपने बिरादरी के चौधरी हामिद नज़र आते हैं। चौधरी पुलिस स्टेशन में आकर हारूण के परिवार की माकी हालत कमजोर होने और वह निहायत गरीब परिवार का होने की बात थानेदार को बताते हैं। लेकिन रिश्वतखोर थानेदार जमाल खाँ से पाँच सौं और जुगल किशोर से एक हजार रुपए की माँग करता है और तब जाकर ही हारूण को रिहा करने की बात करता है। थानेदार द्वारा किए सौदेबाजी के द्वारा कहानीकार भगवानदास मोरवाल ने भारत की पुलिस, न्याय पालिका में हो रहे भ्रष्टाचार की समस्या को उजागर किया है। कहानीकार मोरवाल इस प्रश्न को उपस्थित करते हैं कि सुरक्षा और न्याय देने वाली व्यवस्था ही अगर भ्रष्ट हो जाए तो देश की स्थिति कैसे सुधर सकती है? अंत में हारूण की माँ चिंता करती है कि उसके बेटे हारूण को रिहा करने लिए थानेदार को जुर्माने के पाँच सौं रुपए कहाँ से लाए? और अगर यह रुपए उसे घर चलाने मिलते तो वह उन पैसों का क्या करती? हारूण की माँ यह चिंता और स्वप्नरंजन भारतीय समाज की चिंता का प्रतीक है।

4.3.2.6 'चोट' कहानी का कथानक :

'चोट' यह कहानी कार्यालयों में पनप रहे जातिवादी मानसिकता को उजागर करने वाली कहानी है। सरकारी दफ्तरों में जाति के नाम पर होने वाले भेदभाव को यह कहानी सजीवता से स्पष्ट करती है। सवर्ण वर्ग की मानसिकता न केवल गली-मोहल्ले, गाँव के चौपालों तक सीमित रही है बल्कि उसने सरकारी कार्यालयों में भी प्रवेश किया है। वे दलित वर्ग के लोगों को अपनी क्रूर जातिवादी मानसिकता के चलते

कुंठा का शिकार करते हैं। संविधान में किए गए कानूनों की धाक से सवर्ण खुले तौर पर तो दलितों को कुछ नहीं कहते लेकिन अपनी सीमा में रहकर उन्हें नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। यह कहानी सवर्णों के जातिवादी दंशों को सहने और छिपाने वाले दक्ष की है। यह कहानी रचनाकार भगवानदास मोरवाल की स्वानुभूति पर आधारित है। अपनी कमर दर्द के चलते दक्ष अपने ऑफिस में पहुँच जाता है लेकिन उसे कार्यालय में जानकारी मिलती है कि उसकी जगह मिसेज सक्सेना ने केसवानी को प्रमोशन दिया है।

मिसेज सक्सेना के इस पक्षपाती व्यवहार से दक्ष बहुत दु:खी हो जाता है। वह अपने दोस्त सतबीर यादव और समीर राघव को बताता है कि, ''मुझे लगता है सतबीर, यह सैकड़ों-हजारों वर्षों पुरानी उसी कुंठा और घृणा का परिणाम है जिसका हम आज तक शिकार होते आ रहे हैं। इन लोगों में हमारे प्रति आज भी उतनी ही नफरत है, श्रेष्ठता का दंभ भरा हुआ है जितनी सदियों पहले था। बदलाव आया है तो केवल इतना कि अब दक्ष प्रजापति जैसे निहत्थे इनके निशाने पर है।'' निराश होकर दक्ष जब घर पहुँचता है तो उसकी पत्नी को लगता है कि उसका कमर का दर्द बढ गया है। लेनिक दक्ष रातभर यही सोचता रहता है कि जो खुशी आज उसके घर पर मनाई जाने वाली थी, वह केसवानी के घर पर मनाई जा रही है। वह सुबह पत्नी को मंदिर जाता देख पूजा की सामग्री को बाहर फेंक देता है। वह पत्नी को यह सोचने के लिए मजबूर करता है कि आखिर सालों से भगवान की आराधना करके ऐसा क्या मिला है? जो आगे भी इनकी पूजा की जाए। वस्तुत: दक्ष का यह सवाल समाज की जातिवादी मानसिकता पर 'चोट' करती है।

4.3.2.7 'रंग-अबीर' कहानी का कथानक :

'रंग-अबीर' यह कहानी पहले 'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार' इस कहानी-संग्रह में संकलित कहानी है। इसके बाद लेखक ने इस दस प्रतिनिधि कहानियों में शामिल किया। 'रंग-अबीर' यह कहानी सांप्रदायिकता के कारण हिंदू-मुस्लिमों के बीच आई अमानवीयता एवं अमानुषता को उजागर करती है। धूर्त राजनेताओं के कारण धर्मों के बीच लड़ाई निर्माण करने का षड्:यंत्र किया जाता है। इसकारण हिंदू-मुस्लिम लोग सदियों के भाईचारे के भूलकर एक-दूसरे के जान के दुश्मन बन जाते हैं। झिकरा शहर में सनातन धर्मशाला की आखिरी दूकान लाला लालचंद जैन की थी। उन्होंने यह दुकान अपनी स्वर्गीय माता-पिता की याद में बनवाई थी। लेकिन यह दूकान केवल दूकान ही बन कर रह जाती है। इसलिए धर्मशाला के प्रबंध उसे गोदाम में तब्दील करने का फैसला करते हैं। इसी दौरान एक किरायेदार दुकान की तलाश में वहाँ आता है। तब प्रबंधक वह दूकान उसे किराए पर देते हैं। यह दूकान वहीद नाम का एक व्यक्ति महीना ढाई सौं रुपए के किराए में लेता है। वह इस दूकान का नाम 'बॉम्बे हेयर कटिंग सैलून' रखता है। दुकान खुलने की खुशी के कारण लाला जी मिठाई बाँटता है। देखते-ही-देखते तेरह नंबर की यह दुकान सनातन धर्मशाला की पहचान बन जाती है। दो महीनों में ही यह दुकान झिकरा शहर के चौपाल का काम करने लगी। हर कोई अपनी परेशानी और मसले लेकर वहीद भाई की दुकान पर आते और उनसे राय-मशवरा करते। उनकी हर बात को महत्त्वपूर्ण माना जाता था।

एक बार भारत-पाक विभाजन की बात सुनकर वहीद भाई बिगड़ते हुए कहने लगे- ''देखरे हो न, मियाँ जिन्ना हिंदुस्तान से हमें भगा के तो ऐसे ले गए थे जैसे हमारी ताजपोशी करेंगे लेकिन वहाँ मुजाहिरों के साथ हो क्या रहा है आए दिन हिंदुओं से भी बुरा सलूक हो रहा है। उनके साथ पाकिस्तान में।'' झिकरा शहर तो उनका दीवाना बन गया था। उनकी बोलचाल के शब्दों और ढंग को शौकिया तौर पर इस्तेमाल होने लगे थे। वहीद भाई भी दूकान में आने वाले हर शख्स का पूरा सम्मान करते थे। भारत-पाक मैचे की कॉमेंट्री ग्राहकों को सुनवाने के लिए वे हमेशा अपने रेडियो की बैटरी का पहले से ही इंतजाम करके रखवाते थे। भारत की जीत पर सभी खुश थे लेकिन वहीद भाई की बात सुनकर सब दुःखी हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि वह दुकान खोलने के लिए घर का सब कुछ बेचकर झिकरा आए है और घर पर अब्बा ने अपनी पोती का निकाह तय कर दिया। और वे अभी इतना धन जोड़ नहीं पाए है कि अपनी बेटी का निकाह कर सके। इस कारण वहीद भाई बहुत परेशान रहने लगे थे।

होली के दिन सभी ने वहीद भाई के साथ मिलकर होली खेली। रंगों की बौछार करते हुए गुजिया खाकर बाँबे हेयर कटिंग से निकल रहे गोपला और भोप्पू में झगड़ा हो जाता है। लेकिन वहीद भाई के कहने पर वे अपने-अपने घर जाते है। शाम को पता चलता है कि बाद में बात बिगडने के कारण पुलिस तक पहुँच गई थी। लेकिन पुलिस ने पंचों को बुलाकर फैसला करने को कहा था। साथ ही, वहीद भाई के बारे में भला-बुरा कहा कि, ''देखा मैम्बर साब, यह है किसी की सही सलाह देने का नतीजाअबे बेवकूफ, तुझे पता है यह कौम तो खाते-खाते दगा दे जाती है और तू कहता है यह छोरे की गवाही देगा।'' इसी के चलते झिकरा के पंच फैसला सुनाते हैं कि वहीद भाई को झिकरा शहर छोड़ना पड़ेगा। वहीद अपनी सभी परेशानियों और झिकरा में पाया हुआ विश्वास लेकर सुबह होने से ही पहले झिकरा छोड़ कर चला गया। होली के रंग-अबीर के रंगों ने वहीद भाई का जीवन काले रंग में बदल दिया। समाज में फैली भाईचारे की भावना थोड़े से बहकावे में कैसे बिखर जाती है? यह सवाल कहानीकार मोरवाल पाठकों को सोचने के लिए छोड़ते हैं।

4.3.2.8 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी का कथानक :

'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी मुख्य युवा पात्र मनोहर को केंद्र में रखकर लिखी हुई कहानी है। इस कहानी में भगवानदास ने युवाओं के प्रश्नों को खड़ा किया है। आज के युवाओं में प्रतिभा होने के कारण वे मेहनत और लगन से अपने जीवन में तरक्की करते हैं। लेकिन उन्हें आज भी सामाजिक प्रताड़नाओं को सहना पड़ता है जिसे उनके पूर्वजों ने सहा था। मनोहर बचपन में अपनी माँ के साथ काम में सहायता करने के लिए जाता था। उसकी माँ गाँव में मेहतर का काम करती थी। इसकारण उन्हें किसी के भी घर में आने-जाने पर पाबंदी थी। गाँव में एक उच्च जाति का घर था, वहाँ मनोहर की माँ मेहतर का काम करती थी। उस घर की लड़की कमला मनोहर की कक्षा में पढती थी। एक दिन मनोहर जब छुट्टी में गाँव आता है तो उसे पता चलता है कि कमला बहुत बीमार है। वह डॉक्टर बना था लेकिन गाँव की जातिवादी मानसिकता का और उनके रस्मों-रिवाजों के कारण उसका इलाज नहीं कर पा रहा था। इसलिए वह कमला को शहर के किसी अच्छे अस्पताल में ले जाने का सुझाव देता है। वहाँ पहुँचने के कुछ समय बाद कमला

ठीक हो जाती है। अब कमला को पता चलता है कि मनोहर जिस उच्च जाति की लड़की से शादी करने जा रहा है, उसका नाम डॉ. शालिनी है। कमला की संकुचित मानसिकता के लिए यह एक बहुत बड़ी बात थी। स्पष्ट है कि हमारा समाज आज भी जातिवादी मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाया है। दलित वर्ग के कई प्रतिभावान युवाओं ने अपने मेहनत के बल पर अच्छे-अच्छे मुकाम हासिल किए हैं, लेकिन समाज आज भी उन्हें उसी संकुचित मानसिकता के चश्मे से ही देखता है।

4.3.2.9 'वे तीन' कहानी का कथानक :

'वे तीन' इस कहानी-संग्रह की सर्वथा नवीन कहानी। इस कहानी में सांप्रदायिकता की समस्या को बड़े ही सूक्ष्मता के साथ विश्लेषित किया गया है। यह कहानी हम उम्र मित्रों के सांप्रदायिकता के कड़वाहट भरे अनुभवों को उजागर करती है। कहानी का प्रमुख पात्र अफजल मुसलमान युवक है जो खुद को अन्य दोस्तों की की तुलना में स्वयं को उपेक्षित महसूस करता है। अपने दोस्त जगदीश और अमर की तुलना में खुद को इस देश का निवासी नहीं मानता। उर्दू में लेखन करने के कारण अफजल को हिंदी बिरादरी से बाहर रखा जाता है। अफजल की स्थिति एक ऐसे व्यक्ति की तरह होती है, जो न किसी के साथ है और न किसी का विरोधी बन जाता है। इस तरह 'वे तीन' कहानी अफजल, जगदीश और अमर जैसे तीन युवाओं की है जो अपने भविष्य को लेकर संघर्षरत है। वे समानता और अस्मिता को लेकर आत्म चिंतन करते हैं। सांप्रदायिक विद्वेष के कारण हो रहे भेदभाव की समस्या पर यह कहानी सोचन के लिए मजबूर करती है।

4.3.2.10 'छल' कहानी का कथानक :

भगवानदास मोरवाल के तिसरे कहानी-संग्रह 'सीढियाँ, माँ और देवता' (2008 ई.) की पहली कहानी का नाम 'छल' है। इसमें एक व्यक्ति द्वारा अपने व्यवसाय में हमेशा लाभ की अभिलाषा से 'छल' करते दिखाया गया है। 'काला पानी' कहे जाने वाले भागपुर में मुख्यमंत्री आने से ठीक आठ दिन पहले ललवानी को नए मुख्याध्यापक के रूप में तबादला दिया गया था। ललवानी जी की यह विशेषता थी कि उन्होंने पहले जहाँ काम किया था वहाँ उन्हें काम में कोताही बरतने के कारण सजा के रूप में भागपुर भेजा गया था। उनपर विद्यालय के फंड का दुरुपयोग करने और प्रॉपर्टी डीलिंग जैसे धंधों को करने का आरोप है। भागपुर गाँव की दशा बहुत ही खराब थी। यहाँ अभी भी शौचालयों की व्यवस्था नहीं थी। पानी भी मीलों दूर जाकर ढोकर लाना पड़ता था। ऐसे उजाड़ गाँव में मुख्यमंत्री का दौरा होना तय हुआ था। इसकारण गाँव के मुख्याध्यापक, गाँव के सरपंच और सरकारी महकमे के अधिकारियों की जान सूख रही थी। सभी को अपने-अपने कामों को पूरा करना था।

मुख्यमंत्री के दौरे के खौफ से मुख्याध्यापक बड़ी लगन के साथ अपने काम में लगे रहते हैं। विद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन करके ललवानी विद्यालय का पूरा रूप ही बदल डालते हैं। शिक्षा मंत्री द्वारा जब विद्यालय का माहौल देखा जाता है तो उन्हें लालवानी को दी गई सजा पर कुछ संकोच होने लगा। लालवानी चुतराई करते हुए अम्बेडकर जी की फोटो को विशेष महत्त्व देते हैं क्योंकि मुख्य अतिथि इसी फोटो से आकर्षित हुए थे। सरपंच द्वारा लालवानी के कार्य की प्रशंसा की जाती है। भागपुर में हो रहे विकास

के लिए लालवानी को राज्य शिक्षा पुरस्कार मिलता है। इसकारण उनके काले पानी की सजा से पिछा छूट जाता है। युवा सरपंच ने जब लालवानी को बधाई दी तो लालवानी ने नाटकीय अंदाज में अपने तबादले की सूचना पूरे अध्यापक वर्ग को दे दी और एक नई दुनिया को 'छलने' के लिए निकल पड़ते हैं। यह कहानी उन सभी लोगों का प्रतिनिधित्त्व करती है, जो लोग अपने कर्तव्य को कम और अपने लाभों के प्रति अधिक उत्साहित होते हैं।

4.3.3 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में संकलित कहानियों के प्रमुख पात्र :

भगवानदास मोरवाल की कहानियाँ मूलत: हरियाणा और राजस्थान की परिवेश से जुड़ी हुई है। लेखक का पूरा जीवन भी इस परिवेश में बीतने के कारण उनकी कहानियों का यथार्थ पक्ष बहुत मार्मिक होता है। कहानियों में पात्र-संरचना को लेकर भगवानदास मोरवाल अपनी अनुभूति की सच्चाई का प्रमाण देते हैं। पात्रों के व्यवहारों से लेकर उनके मनोविज्ञान की उन्हें बहुत ही गहरी जानकारी है। उनके पात्र एवं उनके संवाद कहानी के कथ्य एवं उसके परिवेश को जीवंत करते हैं। अत: 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' संकलन में शामिल कहानियों के पात्रों की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

4.3.3.1 'महराब' कहानी के प्रमुख पात्र :

⁕ **अशरूफी :** 'महराब' यह मूलत: मेवात परिवेश से जुड़ी दो प्रमुख महिला चरित्रों की कहानी है। मेव जाति की अशरूफी और दूसरी हिंदू-कुम्हार जाति की कलबत्ती की है। अशरूफी मेव अर्थात् धर्मांतरीत मुस्लिम समाज से संबंधित है। उसका बेटा, बहू और पोतों का भरापूरा परिवार है। उसकी गाँव में रहने वाली हिंदू कुम्हार जाति की कलबत्ती से उसकी गहरी दोस्ती है। वे दोनों एक साथ ही इस गाँव में ब्याह कर आई थी। दोनों में बहुत ही घनिष्ठ मित्रता होती है। अशरूफी ने जब से कलबत्ती से परिचय हुआ है, तब से ईद-बकरीद का त्यौहार कलबत्ती के घर खीर भेजना नहीं भूला। वह अपने घर के सभी रस्म-रिवाजों, शादी-ब्याह में उसे बुलाकर उचित आदर सत्कार करती है। लेकिन बढती धार्मिकता के कारण अब घर में उसका बेटा और बहू की चलती है। मेव समाज में शादी-ब्याह में चाक पूजने की रस्म होती है, लेकिन उसका बेटा इस्लाम की ओर आकर्षित होने के कारण वह अशरूफी को हिंदू रीति-रिवाजों को करने से इंकार करता है। उसकी बहू भी सच्ची मुस्लिम होने की बात कहते हुए उसके बेटे की शादी उसके भाई की बेटी के साथ करती है। धीरे-धीरे अशरूफी बहू-बेटे के दबाव में आकर मेव जातियाँ जो चाक पूजने की रस्म करते थे उसे नहीं करती। लेकिन वह कलबत्ती को अपने पोते की शादी में बुलाकर उसका गुस्सा शांत करती है और उसके हिस्से की नेग भी उसे देती है। भले ही धार्मिकता के चलते वह कलबत्ती के घर जाकर चाक पूजने की रस्म को बंद करती है, लेकिन उसके साथ जुड़े स्नेह के खातिर वह बाद में कलबत्ती के घर खीर भेजती और इस स्नेह को बरकरार रखने का अपनी ओर से प्रयास करती है। अशरूफी के चरित्र में हमे एक मेव जाति की स्त्री, एक अच्छी सहेली, बेटे के दबाव में आने वाली माँ, बहू के फैसले के सामने चूप रहनेवाली सास, दबाव में अपने पुश्तैनी रस्मरिवाजों को बंद करने वाली श्रद्धालु, अपराधबोध से ग्रस्त महिला आदि विशेषता देखने मिलती है।

कलबत्ती : इस कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र कलबत्ती है। कलबत्ती उसी गाँव में रहने वाली एक हिंदू-कुम्हार जाति की महिला है। मेव जाति की अशरूफी उसकी घनिष्ठ सहेली है। दोनों भी अपने त्यीज-त्यौहार में एक-दूसरे को पकवान भेजना नहीं भूलती। कलबत्ती दीवाली को घर में बनी मिठाई अशरूफी को बिना भूले भेजती थी। घर के सुख-दु:ख को लेकर बातें करती थी। दोनों भी एक समय में ही शादी करके इस गाँव बहूएं बनकर आई थी। अशरूफी के पोते की शादी होने की बात से वह हैरानी होती है। क्योंकि अशरूफी ने इसके बारे में उसे कुछ भी बताया नहीं था। क्योंकि मेव जाति के लोग शादी-ब्याह में कुम्हार के घर चाक पूजने की रस्म निभाने आते हैं। अशरूफी के इस रवैये की जानकारी लेने उसके घर पहुँचती है तो सचमुच वहाँ पर उसके पोते की शादी की रस्म हो रही थी। कलबत्ती अपनी सहेली अशरूफी से रूठ जाती है। अशरूफी उसे कसम देकर उसके हिस्से की नेग देकर बहू के मुस्लिम धर्म के सिद्धांत की जानकारी देती है। फिर भी कलबत्ती इस रिश्ते को लेकर हैरान रह जाती है। कल तक जो लड़का-लड़की एक-दूसरे को बहन-भाई कहकर बुलाती थी वह आज पति-पत्नी बनने की तैयारी कर रहे हैं। फिर वह खुद को समझाती है। वह अशरूफी को चाक पूजने आने का न्यौता देती है। वह सारा दिन अशरूफी की प्रतीक्षा करती है लेकिन अशरूफी नहीं आती। तब वह बहुत निराश हो जाती है। अशरूफी के इस्लाम को कट्टरता से मानने वाले बेटे ने अब हिंदूओं के किसी रस्म-रिवाज को करने से अशरूफी को मना किया था। फिर भी अशरूफी देर रात कलबत्ती के घर आती है तब उसे लगता है कि वह चाक पूजने आई है। लेकिन अशरूफी शादी में बनाए पकवान और नेग देकर जाती है। कलबत्ती अशरूफी में आए इस बदलाव से हैरान एवं निराश होती है। दूसरे पात्रों में अशरूफी का इस्लाम सिद्धांतवादी बेटा, बहू, पोता, पोती आदि पात्र आए हैं।

4.3.3.2 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी पिता जैसे नाजुक और सम्मानीय रिश्ते के काले पक्ष को चित्रित करती है। इस कहानी में जगन यह प्रमुख पात्र है। इसकी मानसिक कुंठा को इसमें अभिव्यक्त किया है। इसमें जगन, उसकी पत्नी, पिताजी, बड़ा भाई आदि पात्र आते हैं।

※ जगन के पिताजी : इस कहानी में जगन के पिताजी एक शराबी और स्त्री लंपट व्यक्ति है। उनके इस स्वभाव के लिए गाँव में कोई इज्जत नहीं होती है। उन्हें दो लड़के हैं जिनकी शादियाँ हुई है। पिताजी शराब के नश में अपने आप पर काबू नहीं रख पाते। एक दिन वे अपनी छोटी बहू पर बुरी नजर डालते हैं। इससे उनका छोटा बेटा उनपर नाराज होता है। इसकी शिकायत बड़े भाई से करता है। लेकिन वह पिताजी के रिश्ते का मान रखते हुए उसे समझाता है। कुछ देर बाद वे शराब की लत के कारण बीमार होते हैं और उनका देहांत होता है। उनकी मौत के बाद उनके बेटे बड़ा सामाजिक भोज रखते हैं और खुद को पितृप्रेमी साबित करते हैं।

※ जगन: यह कहानी मूलत: रिश्तों के सामाजिक मूल्यों के मानसिक कुंठा में छटपटाते जगन की कहानी है। जगन एक संयुक्त परिवार में रहनेवाला युवक था। उसके परिवार में पिता, बड़ा भाई, भौजाई और पत्नी थे। जगन के पिताजी शराबी और स्त्री लंपट होने के कारण जगन को उनपर बहुत गुस्सा आता था। वह

पिताजी को हर बार समझाने की कोशिश करता था कि उनके कारण गाँव में उनकी इज्जत को बट्टा लग रहा है। वह अपने बड़े भाई को भी इसकी शिकायत करता रहता था। लेकिन हद तो तब होती है जब उसके पिताजी शराब की नशे में उसकी ही पत्नी पर बुरी नज़र डालते हैं। उसकी पत्नी जब पिताजी का यह कारनामा जगन को बताती है तो वह आगबबूला हो जाता है। वह अपने बड़े भैय्या-भाभी से इसकी शिकायत करता है। लेकिन उसका बड़ा भाई बहुत ही पिता जैसे रिश्ते का सम्मान करने वाला था। इस नाजुक रिश्ते की नजाकत और मूल्य को देखकर वह उनके अवगुणों को नजरअंदाज करता है। पिता के बार-बार की परेशानी से जगन को लगता है कि 'बस। तुम न होते पिताजी'। कुछ समय बाद पिताजी की मृत्यु होती है। तब वह और उसका भाई सामाजिक मान्यता के अनुसार बहुत बड़ा भोज का आयोजन करते हैं। उसकी पत्नी जिसने ससुर पर छेड़खानी का आरोप लगाया था वह भी उनकी तस्वीर को लेकर दीवार पर टाँगती है और फूलमाला पहनाकर प्रणाम करती है। जगन यह सब देखकर सोचने लगता है कि जिस पिता के करतूत के कारण हम उन्हें फटकारते थे और बुरा-भला कहते थे। आज उनकी मृत्यु के बाद उनकी ही तस्वीर लगाकर उन्हें प्रणाम कर रहे हैं। इस सामाजिक विरोधाभास को लेकर जगन एक मानसिक द्वंद्व में उलझता है। वह पिता के अवगुणों के बावजूद भी समाज के लिए एक लायक बेटा बनने का प्रयास करते हुए नज़र आता है। साथ ही इस कहानी में जगन के भैय्या-भाभी और पत्नी यह पात्र आए हैं।

4.3.3.3 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी दलित चेतना का प्रतिनिधत्त्व करने वाली कहानी है। इस कहानी में लालचंद मेहतर और सरपंच दीनानाथ ये दो प्रमुख पात्र है।

※ **लालचंद मेहतर** – कहानी का प्रमुख पात्र लालचंद जो एक निम्न जाति का व्यक्ति है। जो सदियों से चले आ रहे बंधुवा मजदूर पद्धति को तोड़ता है। वह हमेशा सम्मानजनक जीवन जीने के सपने देखता रहता है। उसकी पत्नी दूसरे के घरों में जाकर साफ-सफाई का काम करती थी। लालचंद महतर सरकारी की योजनाओं का लाभ उठाते हुए एक सम्मानजनक जीवन जीने लगता है। लालचंद सवर्णों की धूर्त शोषण तंत्र को समझता है। सरकारी नियमों के कारण गाँव में सरपंच का पद निम्न जाति के लिए आरक्षित हो जाता है। तब सवर्ण जाति को झटका लगता है। किसी भी हाल में सरपंच पद पर खुद का दबाव बनाए रखने के लिए दीनानाथ जी लालचंद मेहतर को कठपुतली की तरह इस्तेमाल करते हैं। वह सरपंच तो बनता है लेकिन दीनानाथ के इशारों पर काम करता है। वह सरपंच बनकर अपने समाज का भला करने के बजाए खुद को संप्पन करता है। वह दीनानाथ के काले कामों को अंजाम देकर सरकारी योजनाओं के रूपए हड़पता है। सरपंच बनने के कारण वह दीनानाथ को बिना पूछे एक दिन अपनी पत्नी को गाँव में जाकर गंदे काम करने के लिए मना करता है। लालचंद मेहतर के इस फैसले से दीनानाथ उसे बहुत फटकारता है। तब लालचंद मेहतर अपने अस्तित्व को लेकर सोचने लगता है। वह अपने अधिकारों को लेकर सचेत होता है। उसने अपनी सरपंच की एक दु:स्वप्न लगता है जिसकी मौत हो जाती है। वह चाहता था कि सरकार ने दिए अधिकारों का इस्तेमाल करके वह खुद फैसले कर सकता है लेकिन यह उसके लिए एक दु:स्वप्न लगता है। लालचंद मेहतर के चरित्र में हमें दलित वर्ग का प्रतिनिधि, अमीर होने के सपने देखने वाला, पत्नी को गंद

कामों से निजात दिलाने का प्रयास करनेवाला पति, कठपुतली की तरह सरपंच बना व्यक्ति, भ्रष्टाचार करनेवाला आत्मकेंद्रीत व्यक्ति, सवर्णों की ज्यादती से अधिकार की स्वतंत्रता पाने का मोहभंग हुए व्यक्ति की विशेषताएं नज़र आती है।

⁂ **सरपंच दीनानाथ** – इस कहानी का दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र सरपंच दीनानाथ है। वह सवर्ण जाति की पक्षपाती मानसिकता का प्रतीक पात्र है। सरपंच दीनानाथ एक भ्रष्टाचारी व्यक्ति है जिसने सरपंच के पद को समाजसेवा नहीं बल्कि खुद की आमदनी का जरिया बनाया है। उसने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए लालचंद मेहतर और निम्न जातियों के लोगों को अपना बंधुआ मजदूर बनाकर घर और खेतों के काम करवाने के लिए रखा है। जब सरकारी नियमों के अनुसार गाँव का सरपंच पद दलित समाज के लिए आरक्षित हो जाता है तो उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। अपने हाथ से सत्ता निकालने का खौफ से वह परेशान होता है। लेकिन वह इससे भी तरकीब निकालते हुए सपने देखने वाले लालचंद मेहतर को अपनी बातों में फास लेता है। वह उसे सरपंच के चुनाव में खड़ा करवाता है और उसे जीतवाता भी है। लालचंद बस नाम का सरपंच बनाता है और दीनानाथ ही अपने हाथ में सब सूत्र रखता है। दीनानाथ लालचंद समेत अन्य पंचों के हस्ताक्षर लेकर सरकारी योजनाओं के रुपए हड़प जाता है। मूल रूप से वह हीन जाति को घृणा की नज़र से देखता है। फिर भी अपने स्वार्थ के लिए उनसे प्रेम होने का दिखावा करता है। उसकी यह बात तब उजागर होती है जब बिना पूछे लालचंद अपनी पत्नी को गाँव के गंदे काम बंद करने के लिए कहता है। इससे दीनानाथ को बहुत गुस्सा आता है और वे लालचंद को उसकी बिरादरी और जाति याद दिलाते हुए उसपर किए उपकार को गिनाते हैं। इस प्रकार कहानी में सरपंच दीनानाथ के चरित्र में एक धूर्त राजनेता, जातिवादी मानसिकता रखनेवाला सवर्ण वर्ग का प्रतिनिधि, एक भ्रष्टाचारी सरपंच, सत्ता का भूखा, दलितों से घृणा करने वाला, निम्न जाति को बंधुवा मजदूर बनाने वाला शोषक आदि विशेषताएं देखने मिलती है।

4.3.3.4 'बियाबान' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद हुए शरणार्थियों की त्रासदी को बया करती है। इस कहानी का प्रमुख पात्र बिसनाथ चाचा है। बिसनाथ चाचा के जरिए ही कहानी फ्लैश बैक शैली में परत-दर-परत खुलती जाती है। इसमें बिसनाथ चाचा, मँगल खाँ, जावेद यह तीन प्रमुख पात्र है।

⁂ **बिसनाथ चाचा** – बिसनाथ चाचा एक गाँव के रईस और संपन्न परिवार में चौकीदारी का काम करते थे। यह परिवार मूल रूप से पाकिस्तान से भारत में शरणार्थी के रूप में आया था। प्रारंभ में गाँव में मंगल खाँ जो एक रईस मुस्लिम परिवार था उन्होंने इस परिवार को पनाह दी थी। उन्होंने अपनी कुछ जमीन इन्हें रोजी रोटी कमाने के लिए देकर मदद की थी। धीरे-धीरे इस परिवार ने अपने मेहनत से अपना खुद का कारोबार खड़ा किया और वे अमीर बने। चाचा बिसनाथ उनके गरीबी से लेकर अब तक के सफर के साक्षी थे। अब यह परिवार गाँव से शहर में जा बसने के कारण चाचा बिसनाथ भी उनके साथ चौकीदार बनकर वहाँ जाते हैं। लेकिन उनका मन शहर में नहीं लगता। उन्हें हमेशा अपने गाँव की याद सताती है। एक दिन

उनके सेठ के पास उसी मँगल खाँ का पोता जावेद आता है जिन्होंने उनके सेठ की शुरुआती दिनों में मदद् की थी। वह जावेद को लेकर अपने सेठ के पास जाकर उसे फैक्ट्री में नौकरी देने के लिए कहते हैं। तब सेठ जावेद मुस्लिम होने के कारण उस पर संदेह करते हैं। तब चाचा बिसनाथ को गहरा सदमा लगता है। जिनके बाप-दादाओं ने इनकी शुरुआती दिनों में मदद् करके उन्हें सहारा दिया। वे आज अमीर बनने के बाद अपना एहसान भूल गए। इस तरह प्रस्तुत कहानी में चाचा बिसनाथ के चरित्र में एक चौकीदार बूढा, गाँव से प्रेम रखने वाला, मदद्गार, सेठ के गरीबी-अमीरी का साक्षी, मानवता का पुजारी आदि विशेषता देखने मिलती है।

⁂ मंगल खाँ : प्रस्तुत कहानी में मंगल खाँ एक सहृदय एवं मानवतावादी मुस्लिम संपन्न परिवार के व्यक्ति का परिचय मिलता है। मंगल खाँ एक स्वतंत्रता सेनानी व्यक्ति थे और उन्होंने भारत की आजादी में अपना अमूल्य योगदान दिया था। पुश्तैनी जमीन होने के कारण गाँव में एक इज्जतदार व्यक्ति के रूप में पहचान थी। भारत-पाक विभाज के कारण भड़के दंगों के कारण वह बहुत ही दुःखी हुए थे। जब पाकिस्तान से शरणार्थी भारत आ रहे थे तब उन्होंने हरसंभव मदद् की। बहुत से परिवारों को अपने हिस्से की जमीनें देकर उन्हें प्रारंभ में घर बसाने के लिए सहायता की। लेकिन कालांतर में उनका संपन्नता चली जाती है और उनके पोतों पर जब दूसरों के यहाँ नौकरी करने की नोबत आती है तो वहीं लोग जिन्होंने कभी उनसे ही मदद लेकर अपना कारोबार बनाया था, वे नौकरी देते समय पोते जावेद पर शक करते हैं। स्पष्ट है कि मंगल खाँ के चरित्र में हमें एक संपन्न जमींदार, स्वतंत्रता सेनानी, मानवतावादी, दूसरों की मदद करने वाले आदि गुण दिखाई देते हैं।

⁂ जावेद : कहानी का तिसरा प्रमुख पात्र जावेद है। जावेद गाँव के विख्यात जमींदार और स्वतंत्रता सेनानी रहे मंगल खाँ का पोता था। उनके पुरखों ने भारत-पाक विभाजन के समय बहुत से शरणार्थियों को अपने हिस्से की जमीन देकर शुरुआत में घर बसाने के लिए मदद की थी। लेकिन कालांतर में उनकी संपन्नता विपन्नता में बदल जाती है। उन्हें दूसरों के यहाँ नौकरी करने की नौबत आती है। तब वह बिसनाथ चाचा की मदद से उस सेठ के पास जाते हैं जो शरणार्थी के रूप में गाँव में आए थे। उनके दादाजी मंगल खाँ ने उन्हें अपने हिस्से की जमीन देकर शुरुआती दिनों में मदद की थी। बाद वे वह परिवार अपनी मेहनत और लगन से बहुत बड़े व्यापारी बनते हैं और झकिरा में उनकी फैक्ट्री शुरू होती है। लेकिन जावेद जब उनके फैक्ट्री में नौकरी माँगने जाता है तब उसके मुस्लिम होने पर वे आशंका जताते हैं। तब बिसनाथ चाचा जो सब इतिहास जानते थे वे मालिक को गारंटी देते हैं। तब भी जावेद को नौकरी पर सिर्फ इसलिए रखा नहीं जाता कि वह मुस्लिम है। जावेद के दादाजी से मदद लेते समय तो उन्होंने मुस्लिम होने की बात नहीं देखी लेकिन जब अपना समय आया तो वे हिंदू-मुस्लिम भेद करते हैं, इसका जावेद को बड़ा सदमा लगता है। इस प्रकार जावेद के चरित्र में हमें स्वतंत्रता सेनानी और जमींदार परिवार का सदस्य, घर की विपन्नता के लिए नौकरी की तलाश करने वाला युवक, धर्मवादी मानसिकता का शिकार आदि गुण दिखाई देते हैं।

4.3.3.5 'सौदा' कहानी के प्रमुख पात्र :

'सौदा' कहानी भारत के प्रशासन तंत्र में पनप रहे भ्रष्टाचार और इंसान की स्वार्थवृत्ति को उजागर करने वाली कहानी है। इस कहानी के प्रमुख पात्र हारूण, राम सिंह और जुगल किशोर है जबकि थानेदार, कॉन्स्टेबल, चौधरी हामिद, हारूण के अब्बा, अम्मी, बीवी और बच्चे आदि गौण पात्र हैं।

⁕ **हारूण :** 'सौदा' इस कहानी का प्रमुख पात्र हारूण है जो एक गरीब मुस्लिम परिवार का व्यक्ति है। अपने परिवार की रोजी-रोटी के लिए वह रिक्शा चलाता है। एक दिन उसकी दूसरे रिक्शावाले रामसिंह को सिवारी को लेकर झगड़ा होता है। छोटे से कारण पर यह झगड़ा बाद में मार-पीट और पत्थरबाजी में तब्दील होता है। और गुस्से में हारूण अपना आपा खोकर रामसिंह की ओर एक पत्थर उछालता है। लेकिन रामसिंह अपना बचाव करता है और यह पत्थर वहाँ के सुनार के दूकान के शीशे पर जाकर लगता है। तब सुनार का बेटा हारूण से बहस करता है और पुलिस में मामला दर्ज करता है। पुलिस हारूण को गिरफ्तार करके जेल में डालती है। सर्राफा दुकान के मालिक जुगल किशोर बेटे को समझाते हुए पुलिस से केस वापस लेने की सोचते हैं। लेकिन भ्रष्टाचारी पुलिस अधिकारी मामले को रफा-दफा करने के लिए हारूण से पाँच सौ रुपए और जुगलकिशोर से डेढ हजार रुपए की रिश्वत माँगता है। हारूण के पिताजी अपने बेटे को छुड़ाने के लिए गिड़गिड़ाते हैं। तब वहाँ का कॉन्स्टेबल उन्हें उनके बिरादरी के बड़े आदमी को पैरवी करने के लिए लाने को कहता है। तब चौधरी हामिद और थानेदार मिलकर हारूण को छुड़ाने के लिए 'सौदा' करते हैं। जो हारूण रिक्शा चलाकर रोजाना 50 रुपए कमाता था उसे छुड़ाने के लिए स्वार्थी लोग 500 रुपए का सौदा करते हैं। इससे प्रमुख पात्र हारूण के चरित्र में एक गरीब रिक्शाचालक, गुस्सैल आदमी, पुलिस की यातनाओं से उत्पीड़ीत, अपने बिरादरी वालों से प्रताड़ित, अपराधबोध से ग्रस्त आदि विशेषताएं देखने मिलती है।

⁕ **रामसिंह :** इस कहानी का दूसरा पात्र रामसिंह है, जो एक रिक्शेवाला है। रामसिंह एक अनुशासन हीन रिक्शाचालक है। वह रिक्शा की सवारियों को ले जाने के नियमों को ताक पर रखता है। एक दिन रिक्शा अड्डे पर नियमानुसार हारूण रिक्शेवाले का नंबर था लेकिन रामसिंह बीच में ही अपनी रिक्शा ले जाकर सवारी को ले जाने लगता है। इससे हारूण और रामसिंह में झगड़ा होता है। दोनों मारपीट करते हैं। तब गुस्से में हारूण रामसिंह के ऊपर पत्थर उछालता है लेकिन रामसिंह बच निकलता है। यह पत्थर पास के ही सुनार के दूकान के शीशे पर जा लगती है। इसके बाद रामसिंह तो वहाँ से निकल भागता है लेकिन बेचारा हारूण इसमें बुरी तरह फँस जाता है। रामसिंह के चरित्र में एक अनुशासनहीन रिक्शाचालक, दबंगगिरी करने वाला, पुलिस का हमला होने पर वहाँ से भाग निकलने वाला आदि गुण दिखाई देते हैं।

⁕ **जुगल किशोर :** इस कहानी का तिसरा प्रमुख पात्र जुगल किशोर है। यह एक वयस्क व्यक्ति है जिनका गाँव के चौक में सुनार की दूकान है। उनका बेटा सुनार की दूकान में उनके साथ काम करता है। एक दिन रिक्शेवाले हारूण और रामसिंह के बीच सवारी को लेकर झगड़ा होता है। इसमें मामला पत्थरबाजी पर पहुँच जाता है। तब हारूण द्वारा फेंका गया एक पत्थर जुगल किशोर की दूकान के शीशे पर लग जाता है। तब उनका बेटा हारूण को पीटता है और उससे नुकसान का रुपए माँगता है। लेकिन गरीब रिक्शेवाले

हारूण के पास पैसे न होने के कारण उनका बेटा पुलिस में शिकायत करता है। जुगल किशोर एक समझदार व्यक्ति थे। वे अपने बेटे को समझाते हैं लेकिन उनका बेटा मुस्लिम हारूण से नफरत करता है। फिर भी जुगल किशोर इंसानियत की नज़र से हारूण की ओर देखते हुए पुलिस थाने में जाकर मामला रफा-दफा करना चाहते हैं। लेकिन वहाँ पर उन्हें पुलिस तंत्र की रिश्वतखोरी का सामना करना पड़ता है। थानेदार मामले को रफा-दफा करने के लिए उनसे ही 1500 रुपए की रिश्वत माँगता है। सरकारी व्यवस्था के शोषण के सामने उनका बस नहीं चलता। इसप्रकार जुगल किशोर के चरित्र में एक सुनार व्यापारी, एक समझदार पिता, एक समझदार नागरिक, व्यवहार कुशल, पुलिस के शोषण तंत्र के विरोधी, भ्रष्ट व्यवस्था के सामने असहाय आदि गुण दिखाई देते हैं।

साथ ही कहानी के अन्य पात्रों में चौधरी हामिद एक स्वार्थी व्यक्ति, अब्बू-अम्मी असहाय गरीब मुस्लिम परिवार के सदस्य, भ्रष्टाचारी पुलिस थानेदार आर कॉन्स्टेबल के रूप में दिखाई देते हैं।

4.3.3.6 'चोट' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी में दलित आरक्षण की घृणा करनेवाले सवर्णों की कपटी मानसिकता को उजागर किया गया है। इसके प्रमुखपात्र दक्ष प्रजापति और मिसेज सक्सेना है। तो गौण पात्रों में केशरवाणी, दक्ष के दोस्त सतबीर और समीर यादव है।

❊ दक्ष प्रजापति : कहानी का प्रमुख पात्र दक्ष प्रजापति एक दलित वर्ग का पढा-लिखा युवक है जो एक सरकारी नौकरी करता है। उसने अपने बुनियादी अधिकार से नौकरी प्राप्त की लेकिन कार्यालय की प्रमुख मिसेज सक्सेना एक सवर्ण मानसिकतावाली है। वह दक्ष प्रजापति से मन-ही-मन नफरत करती है। ऊपर से तो उसका बर्ताव ठीक होता है लेकिन अंदर ही अंदर वह दलितों से और उन्हें मिले आरक्षण के लाभों से नफरत करती है। दक्ष प्रजापति अपने दोस्तों को अक्सर अपनी काबलियत के अनुसार सम्मान न मिलने की बात करता रहता है। एक दिन जब वह कार्यालय में पहुँचता है तो उसे पता चलता है कि उसकी जगह केसरवाणी को मॅडम ने प्रमोशन दिया है। केसरवाणी दक्ष को मिठाई देकर खुशी का इजहार करता है। दक्ष को इस बात का बहुत दु:ख होता है। क्योंकि मध्यम वर्ग परिवार में नौकरी और नौकरी में भी तरक्की की बहुत बड़ी अहमियत होती है। वह प्रमोशन न मिलने से दु:खी होकर घर लौटता है। घर में निराश बैठकर सोचने लगता है कि आज केसरवाणी के घर में जो खुशी मनाई जा रही है वह असल में मेरे घर में मनानी जानी थी। लेकिन समाज की गंदी सोच के कारण मेरा प्रमोशन नहीं हो सका। जब उसकी पत्नी पूजी की थाली लेकर मंदिर जा रही होती है तब वह पूजा की थाली उछाल देता है। कहता है कि क्या मिला इतने दिनों तक भगवान की पूजा करके? आज से इस घर में भगवान की पूजा नहीं होगी? दक्ष का यह विद्रोह मूलत: सवर्ण समाज की जातिवादी मानसिकता के खिलाफ है। क्योंकि उसे स्वाभिमान पर आज 'चोट' लगी थी। इस तरह दक्ष प्रजापति के चरित्र में हमें एक दलित वर्ग का प्रतिभाशाली युवक, एक अच्छा पति, एक अच्छा दोस्त, प्रमोशन का अभिलाषी, मिसेज सक्सेना के पक्षपाती रवैये से परेशान, प्रमोशन न मिलने पर नाराज, भगवान की पूजा का विरोध करनेवाला विद्रोही पति आदि गुण दिखाई देते हैं।

※ **मिसेज सक्सेना :** कहानी में मिसेज सक्सेना एक सरकारी कार्यालय में मुख्य अधिकारी है। वह सवर्ण समाज की होने के कारण उसे दलित वर्ग एवं उनके आरक्षण को लेकर घृणा होती है। वे ऊपर से तो दलितों का विरोध नहीं करती लेकिन उसका व्यवहार दलित वर्ग के सहकारियों को लेकर पक्षपाती होता है। वह मन-ही-मन उनसे घृणा करती है। क्योंकि खुले रूप से अगर वह किसी का विरोध करेगी तो वह सरकारी कानून के चंगुल में फँस सकती है। इसलिए वह धूर्तता से अपना अप्रत्यक्ष विरोध जताती रहती है। दलित दक्ष प्रजापति के काबिलियत के कारण वह प्रमोशन का असली हकदार था। लेकिन मिसेज सक्सेना जातिवादी मानसिकता के तहत एक सवर्ण केसरवाणी को प्रमोशन देती है। इससे दक्ष प्रजापति बहुत नाराज हो जाता है। अत: मिसेज सक्सेना के चरित्र में हमें एक सवर्ण सरकारी अधिकारी, जातिवादी मानसिकता रखने वाली, पक्षपाती रवैय्या अपनाने वाली आदि गुण दिखाई देते हैं। अन्य पात्रों में केसरवाणी, समीर, सतबीर आते हैं।

4.3.3.7 'रंग-अबीर' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी हमारी समाजधर्मिता में घूंस रहे सांप्रदायिक तत्त्वों की ओर इशारा करती है। लेखक ने यह कहानी सन् 1992 ई. में लिखी है जब भारत में बाबरी ढाँचा ढहाने और उसके बाद हिंदू-मुस्लिमों में हुए सांप्रदायिक दंगों से दोनों समुदायों के बीच अलगाववादी भावना पनप रही थी। कहानी का प्रमुख पात्र एक मुस्लिम नाई वजीद और लालचंद जैन इन प्रमुख पात्रों की है।

※ **वजीद :** 'रंग-अबीर' कहानी का प्रमुख पात्र वजीद एक गरीब मुस्लिम परिवार का व्यक्ति है। उसके घर में अम्मी-अब्बू, बीवी और बेटा-बेटी है। वह छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा करता है। लेकिन अपने जवान होती बेटी की शादी की चिंता में वह कुछ उद्योग करने के लिए अपना गाँव छोड़ता है। वह अपने घर को गिरवी रखकर कुछ पैसे लेकर दूसरे गाँव जाता है और वहाँ लालचंद जैन की 13 नंबरवाली दूकान लेता है जो बहुत दिनों से बंद पड़ी थी। वजीद इस 13 नंबर दूकान में 'बॉम्बे हेयर कटिंग सैलून' नाम से नाई का धंधा शुरू करता है। वजीद बहुत ही व्यवहार कुशल और मितभाषी व्यक्ति था। इसकारण देखते ही देखते उसके इस 13 नंबर की दूकान में गाँववालों की रौनक लग जाती है। गाँव वाले हर मसले पर उसकी सलाह लेने के लिए उसके दूकान पहुँच जाते थे। इसकारण वह गाँव का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गया था। लेकिन एक दिन अनहोनी होती है। होली के दिन उसके दूकान के सामने गोपला और भोपू का मामूल बात पर झगड़ा होता है। दो समूहों में जोरदार हाथापाई होती है। वजीद दोनों गुट युवकों को समझाकर सुलह करना चाहता है। लेकिन मामला और अधिक पेचिदा बनता है और पंचायत के पास जाता है। पंचों में कुछ लोग वजीद के मजहब और गाँव में उसके बढते रूतबे को देखकर जलते थे। इसकारण वे इस मामले में वजीद को दोषी मानते हैं और उसे गाँव को छोड़ जाने का फैसला देते हैं। वजीद इस फैसले से हैरान हो जाता है। उधर उसके पिताजी ने उसकी बेटी की शादी तय कर दी थी। उन्हें रूपयों की जरूरत थी और इधर गाँव में वजीद बसी-बसाई रोजी-रोटी छिन गई थी। जो लोग कुछ दिनों पूर्व उसे इज्जत देते थे वहीं लोग वजीद को संदेह की नज़रों से देखने लगते हैं। इससे परेशान होकर वजीद गाँव छोड़ने के लिए मजबूर हो जाता है। अत: वजीद के चरित्र में हमें गरीब मुस्लिम परिवार का व्यक्ति, घुमकर विभिन्न छोटे-

मोठे काम करने वाला, बच्चों के भविष्य की चिंता करनेवाला पिता, व्यवहार कुशल और मितभाषी, नाई का व्यवसाय में तरक्की करने वाला, गाँव में सभी को अच्छी सलाह देने वाला, जातिवादी मानसिकता का शिकार आदि विशेषताएं देखने मिलती है।

⁂ **लालचंद जैन :** विवेच्य कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र लालचंद जैन है। झिकरा शहर में सनातन धर्मशाला की आखिरी दूकान लाला लालचंद जैन की थी। उन्होंने यह दुकान अपनी स्वर्गीय माता-पिता की याद में बनवाई थी। लेकिन यह दूकान केवल दूकान ही बन कर रह जाती है। इसलिए धर्मशाला के प्रबंध उसे गोदाम में तब्दील करने का फैसला करते हैं। इस दूकान को लेकर बहुत से लोगों की अलग-अलग तरीके की मान्यता होने के कारण यह 13 नंबर वाली दूकान खाली ही रहती थी। इसी दौरान एक किरायेदार दुकान की तालश में वहाँ आता है। तब प्रबंधक वह दूकान उसे किराए पर देते हैं। यह दूकान वहीद नाम का एक व्यक्ति महीना ढाई सौ रुपए के किराए में लेता है। वह इस दूकान का नाम 'बॉम्बे हेयर कटिंग सैलून' रखता है। दुकान खुलने की खुशी के कारण लाला जी मिठाई बाँटता है। लाला जी भी बहुत ही सहृदय व्यक्ति थे वह जीद से मिठाई लेकर उसे नए व्यवसाय करने के लिए शुभकामनाएं देते हैं। अत: लालचंद जैन के चरित्र में एक व्यवसायी, एक धार्मिक व्यक्ति, माता-पिता का सम्मान करने वाले, सहृदय, धर्म को लेकर सहिष्णु वृत्ति रखने वाले आदि विशेषताएं देखने मिलती है।

4.3.3.8 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी के प्रमुख पात्र:

प्रस्तुत कहानी माँ और बेटे के मुलायम रिश्ते की कहानी है। कहानी में प्रेम का रंग गहराई के साथ झलकता है। कहानी में प्रमुख पात्र डॉ. मनोहर और कमला है। जबकि मनोहर की माँ और डॉ. शालिनी गौण पात्र है।

⁂ **डॉ. मनोहर :** डॉ. मनोहर एक दलित वर्ग का लड़का है। वह अपने माँ से बहुत प्यार करता है। उसकी माँ गाँव के सवर्णों के घर गंदगी साफ करने का काम करती है। मनोहर को माँ का यह काम अच्छा नहीं लगता और वह खूब पढ-लिखकर डॉक्टर बनकर माँ को इस गंदे कामों से निजात दिलाना चाहता है। उसकी कक्षा में माँ जिस सवर्ण के घर काम करने जाती थी उसकी घर की लड़की कमला भी पढती है। कमला उससे बातें तो करती है लेकिन उसके घर पर उन्हें जाने में मनाई है। मनोहर शहर में पढ-लिखकर डॉक्टर बनता है। पढाई के दौरान कमला उसे माँ की तरह ही स्नेह करती है। एक दिन जब वह गाँव वापस आता है तो उसे पता चलता है कि कमला बहुत बीमार है। वह उसका इलाज करना चाहता था लेकिन सवर्णों की जातिवादी मानसिकता के सामने वह हार जाता है। तब वह कमला को शहर के अस्पताल में ले जाने की सलाह देता है। उसकी सलाह से कमला को समय पर इलाज मिलता है और वह अच्छी होती है। शहर में कमला को पता चलता है कि मनोहर के साथ किसी सवर्ण जाति की लड़की डॉ. शालिनी ने विवाह किया है। तब कमला को बड़ी हैरानी होती है कि वह सवर्ण होने के बावजूद भी मनोहर से शादी कैसे कर सकती है। तब मनोहर को कमला की सोच पर आश्चर्य होता है। अत: मनोहर के चरित्र में हमें एक दलित

वर्ग का प्रतिभाशाली युवक, मातृस्नेही, एक अच्छा दोस्त, एक अच्छा डॉक्टर, प्रेमी मनोहर आदि विशेषताएं देखने मिलती हैं।

※ **कमला :** कमला और मनोहर गाँव के एक ही स्कूल और एक ही कक्षा में पढते हैं। कमला गाँव के एक सवर्ण परिवार की लड़की है। मनोहर की माँ कमला के घर में गंदगी साफ करने का काम करती थी। मनोहर दलित मेहतर वर्ग का होने के बावजूद भी स्कूल में कमला उससे बातचीत करती थी। मनोहर को हमेशा लगता था कि माँ के बाद उससे अगर कोई स्नेहपूर्ण बातें करता है तो वह कमला ही है। कमला उसे माँ की तरह देवता लगती है। पढाई के दौरान कमला मनोहर को प्रेरणा देती है। लेकिन दोनों में दोस्ती के सिवाय अन्य कोई रिश्ता नहीं है। मनोहर जब शहर में जाकर डॉक्टर बनता है तो कमला को बहुत खुशी होती है। एक दिन कमला बीमार पड़ जाती है। गाँव के वैद्य का इलाज साथ नहीं देता। उसकी तबीयत बिगड़ जाती है। तब गाँव में छुट्टियों पर आया मनोहर उसे शहर के बड़े अस्पताल ले जाने को कहता है। सही समय पर कमला को अस्पताल ले जाने के कारण उसके प्राण बचते हैं। वहाँ पर जब उसे डॉ. मनोहर ने डॉ. शालिनी नाम की एक सवर्ण लड़की से शादी करने की बात समझती है तो वह हैरान हो जाती है। उसे लगता है कि डॉ. शालिनी सवर्ण होने के बाद भी एक दलित से कैसे शादी कर सकती है? तब डॉ. मनोहर को भी कमला की इस रूढीवादी सोच पर हैरानी होती है। अत: कमला के चरित्र में हमें एक सहृदय दोस्त, सवर्ण परिवार की लड़की और रूढीवादी सोच रखने वाली युवती की विशेषता दिखाई देती है।

4.3.3.9 'वे तीन' कहानी के प्रमुख पात्र :

'वे तीन' यह कहानी-संग्रह की नई कहानी जो तीन दोस्तों की है। इसमें अफजल, जगदीश और अमर की कहानी के माध्यम से दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते में भी धर्म, स्वार्थ आने की बात कहानीकार ने स्पष्ट की है।

※ **अफजल :** कहानी का प्रमुख पात्र अफजल एक मुसलमान युवक है। जगदीश और अमर उसके हमउम्र दोस्त है। लेकिन अफजल को मुस्लिम होने के कारण वह खुद को अन्य दोस्तों की तुलना में उपेक्षित महसूस करता है। वह खुद को इस देश का निवासी नहीं मानता। उर्दू में लेखन करने के कारण अफजल को हिंदी बिरादरी से बाहर रखा जाता है। अफजल की स्थिति एक ऐसे व्यक्ति की तरह होती है, जो न किसी के साथ है और न किसी का विरोधी बन जाता है।

जगदीश और अमर: 'वे तीन' कहानी में जगदीश और अमर अफजल के हिंदू दोस्त है। ये दोनों भी अपने भविष्य को लेकर संघर्षरत है। वे समानता और अस्मिता को लेकर आत्म चिंतन करते हैं। लेकिन अफजल को उर्दू में लेखन करने के कारण हिंदी बिरादरी के बाहर निकालने पर दोनों भी चुप्पी साध लेते हैं। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में तरक्की कर लेते हैं। जब अफजल का बुरा वक्त चल रहा होता है तब वह उसकी कोई मदद नहीं करते। अफजल को मदद करने के लिए अपने पैसे खर्च होंगे या हमें भी हिंदू समुदाय के कोप का भागी बनना पड़ेगा, ऐसा विचार करते हैं। दोनों भी अफजल को लेकर विक्टम कार्ड की नीति अपनाने के कारण उनके दोस्ती में संवेदना की जगह संदेह आ जाता है और दोस्ती टूट जाती है।

4.3.3.10 'छल' कहानी के प्रमुख पात्र :

प्रस्तुत कहानी भारत के ग्रामांचलों में अपनी सेवाएं देने से भागनेवाले सरकारी अधिकारियों पर व्यंग्य करती है। कहानी के प्रमुख पात्र मुख्याध्यापक ललवानी के इर्द-गिर्द ही पूरी कहानी का ताना-बाना बुना गया है। 'काला पानी' कहे जाने वाले भागपुर में मुख्यमंत्री आने से ठीक आठ दिन पहले ललवानी को नए मुख्याध्यापक के रूप में तबादला किया गया था। ललवानी एक कामचोर आदमी था और इसकारण सजा के रूप में उसका तबादला भागपुर में किया गया था। पुराने विद्यालय के फंड का दुरुपयोग करने और प्रॉपर्टी डीलिंग जैसे धंधों को करने का उनपर आरोप था। ललवानी इस असुविधा से भरे भागपुर से अपना जल्द से जल्द अच्छी जगह पर तबादला कराने के फिराक में था। तब उसे पता चलता है कि इस गाँव में मुख्यमंत्री का दौरा होने वाला है। वह इस अवसर को भुनाने के लिए मुख्याध्यापक ललवानी काम में जुट जाता है। वह दिखावे के लिए बड़ी लगन के साथ अपने काम में लगे रहते हैं। विद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन करके ललवानी विद्यालय का पूरा रूप ही बदल डालते हैं। शिक्षा मंत्री द्वारा जब विद्यालय का माहौल देखा जाता है तो उन्हें लालवानी को दी गई सजा पर कुछ संकोच होने लगा। लालवानी चुतराई करते हुए अम्बेडकर जी की फोटो को विशेष महत्त्व देते हैं क्योंकि मुख्य अतिथि इसी फोटो से आकर्षित हुए थे। सरपंच द्वारा लालवानी के कार्य की प्रशंसा की जाती है। भागपुर में हो रहे विकास के लिए लालवानी को राज्य शिक्षा पुरस्कार मिलता है। इसकारण उनके काले पानी की सजा से पिछा छूट जाता है। युवा सरपंच ने जब लालवानी को बधाई दी तो लालवानी ने नाटकीय अंदाज में अपने तबादले की सूचना पूरे अध्यापक वर्ग को दे दी और एक नई दुनिया को 'छलने' के लिए निकल पड़ते हैं। अत: स्पष्ट है कि मुख्याध्यापक ललवानी के चरित्र में हमें काम में कोताही बरतने वाला मुख्याध्यापक, भ्रष्टाचारी, सजा के रूप में तबादला से नाराज, सुविधाजनक जगह के तबादले के लिए प्रयास करने वाला, मुख्यमंत्री के दौरे के अवसर को भुनाकर राज्य शिक्षा पुरस्कार पाने वाला अवसरवादी मुख्याध्यापक आदि विशेषताएं दिखाई देती है। इस मुख्य पात्र के साथ गाँव का युवा सरपंच, मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री और अन्य शिक्षक गौण पात्र हैं।

4.3.4 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में संकलित कहानियों में प्रमुख समस्याएं:

भगवानदास मोरवाल जी के 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में संकलित सभी कहानियाँ किसी-न-किसी सामाजिक मुद्दों को लेकर रची गई है। लेखक मोरवाल जी ने हरियाणा एवं राजस्थान के सामाजिक परिवेश को कहानी में साकार किया है। हर कहानी अपने परिवेश की समस्याओं की ओर इशारा करती है। ग्रामीण जीवन में आ रही विकृतियों को लेखक ने उजागर करने का प्रयास किया है। उनकी कहानियों में चित्रित विभिन्न समस्याएं इसप्रकार है-

1. पहली कहानी 'महराब' में हरियाणा के ग्रामीण परिवेश में सांप्रदायिकता की विकृति ने प्रवेश करने की समस्या को ओर कहानीकार ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। धार्मिकता के कारण हमारे ग्रामीण-देहाती जीवन का सामाजिक परिवेश टूट रहा है। नई पीढी में धर्म की कट्टरता ने ग्रामीण समाज के रोटी-बेटी-व्यवहार को लेकर पुश्तैनी रीति-रिवाज, संस्कार, संस्कृति को बदलने के लिए मजबूर करा दिया

है। ग्रामीण जीवन का आधार होने वाली वस्तु विनिमय पद्धति का ढाँचा टूट रहा है और इससे कई जातियों पर भूखे मरने की नौबत आ रही है। धार्मिकता के चलते ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, संस्कृति, पंरपरा और सामाजिक ताना–बाना टूटता जा रहा है।

2. दूसरी कहानी 'बस! तुम न होते पिताजी' पिता और बेटे के नाजुक रिश्ते पर आघात करने वाली कहानी है। इसमें पारिवारिक रिश्ते की नाजुकता के कारण उस रिश्ते के अवगुणों को अनदेखा करने की समस्या है। इसमें परिवार के सदस्यों को एक मानसिक प्रताड़ना को भी सहना पड़ता है। इसमें घरेलू महिलाओं के साथ अपने ही रिश्ते दारों के यौन–उत्पीड़न होने और उसे चुपचाप सहने की भी समस्या दृष्टिगत होती है। पिता के अवगुणों बावजूद भी उसके बेटे मरने के बाद पिता का बड़ा भोज करके समाज को दिखाते हैं कि वे कितने पितृ स्नेही थे। रिश्तों के इस विरोधाभास को यह कहानी स्पष्ट करती है। और घर के मुखिया के शराबी और स्त्री लंपट होने के कारण परिवारों में आती समस्याओं को दिखाती है।

3. 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी दलित चेतना का प्रतिनिधित्त्व करती है। यह कहानी राजनीति में दलितों के शोषण को उजागर करती है। आरक्षण के कारण राजनीति में दलितों के मिली हिस्सेदारी से सत्ताधारी सवर्ण वर्ग की बौखलाहट और द्वेष की समस्या इसमें हैं। सवर्ण वर्ग के दबाव में निम्न जाति के लोगों का राजनीतिक संस्थाओं में काम करना पड़ता है। दबाव के चलते उनके भ्रष्टाचार में संलिप्त होकर सरकारी विकास अनुदान राशि को हड़पने की समस्या इसमें दिखाई देती है। दलित वर्ग की आत्मकेंद्रीत वृत्ति की समस्या इसमें है जो केवल आरक्षण का लाभ पाकर संपन्न बनना चाहता है। सत्ता पाने के बाद भी दलित को सवर्णों के अंतर्गत काम करना पड़ता है, जिससे वे आरक्षण के लक्ष्य से आज भी कोसों दूर है। इनके लिए यह एक दु:स्वप्न की मौत है।

4. 'बियाबान' कहानी मनुष्य की संवेदना खत्म होने की समस्या को उजागर किया गया है। बुरे वक्त में मदद करने वाले मंगल खाँ के परिवार को मुसीबत में कोई मदद् नहीं करता। उनकी मदद् से बड़ा हुआ परिवार के पास जब उनका पोता मदद माँगने जाता है तो उस पर मुस्लिम होने के कारण शक किया जाता है। मानवीय रिश्तों पर बाज़ारवादी वृत्ति और पूँजीवाद हावी होने की समस्या को लेखक ने बखूबी उजागर किया है। पूँजीवादी सभ्यता में मानवीय संवेदना खत्म हो रही है।

5. 'सौदा' कहानी में ग्रामीण परिवेश में प्रवेश कर चुकी सांप्रदायिकता की समस्या और पुलिस प्रशासन तंत्र की रिश्वतखोरी को उजागर किया गया है। हारूण को केवल इसलिए परेशान किया जाता है कि वह मुस्लिम है। एक छोटे से झगड़े को सांप्रदायिकता का रंग देकर पुलिस बड़ा बनाती है। मुस्लिम बिरादरी के बड़े चौधरी हमीद मसला हल करने के नाम पर पुलिस से मिलकर गरीब हारूण से रुपए एंटने का 'सौदा' करते हैं। गरीब परिवार को सौदे के रुपए जुटाने के लिए आई तकलीफें और हारूण की माँ का सौदे के पैसों से परिवार के लिए कपड़े सामान खरीदने सपने गरीब वर्ग की आर्थिक समस्याओं को उजागर करती है। जबकि गरीबों से भी रुपए हड़पने की पुलिस अधिकारी, समाज के बड़े बुजर्ग की स्वार्थी वृत्ति की समस्या इस कहानी में है।

6. 'चोट' कहानी में सवर्णों की जातिवादी मानसिकता और दलितों के शोषण के नए तंत्र की समस्या है। सवर्णों को दलितों के आरक्षण के प्रति घृणा है। लेकिन वे इसे खुले तौर पर प्रकट करने के बजाए अप्रत्यक्ष रूप से अपनी मन की भड़ास निकालते हैं। इसमें दलित वर्ग के प्रति कार्यालयों में सवर्ण अधिकारियों का पक्षपाती रवैया, उसका आर्थिक एवं सामाजिक शोषण, मानसिक प्रताड़ना आदि की समस्याओं को उजागर किया है।

7. 'रंग-अबीर'- इस कहानी में ग्रामीण सामाजिक परिवेश में धार्मिकता के प्रवेश करने की समस्या को उजागर किया गया है। भारम के ग्रामीण परिवेश का सांप्रदायिक धृवीकरण किया जा रहा है। कस्बों में सांप्रदायिकता के कारण एक-दूसरे के व्यवसाय को सांप्रदायिकता का शिकार बनाया जाता है। गाँव के जिन पंचों को निष्पक्ष न्याय करना जरूरी है वहाँ पर भी सांप्रदायिक तत्त्व घुँस गए हैं। इसकारण हिंदू-मुस्लिमों के फसाद बढ रहे हैं। सामाजिक संरचना में धार्मिकता ने तेजी से प्रवेश करने के कारण अनेक लोगों को अपना गाँव और रोजी-रोटी से निष्कासित करने की समस्या को इसमें उजागर किया है।

8. 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' इस कहानी में भगवानदास मोरवाल ने एक दलित लड़के, उसकी माँ और सवर्ण जाति के लड़की के नाजुक मानवीय रिश्तों की कहानी उद्घाटित की है। कहानी में लड़की बचपन से मनोहर के साथ अच्छा व्यवहार करती है लेकिन वह सवर्णों के जातिवादी मानसिकता की सीमा का विरोध करती है। दलित जाति का मनोहर डॉक्टर अर्थात् उच्च शिक्षित होने के बावजूद भी गाँव की हीन जातिवादी मानसिकता के कारण लोग उसे अपनाते नहीं। वह सवर्ण दोस्त कमला की बीमारी में इलाज करना चाहता हैं लेकिन गाँव की जातिवादी मानसिकता उसे ऐसा करने नहीं देती। उसकी सलाह पर कमला को जिला अस्पताल भेजा जाता है। समय पर इलाज मिलने से वह कभी होती है लेकिन जब उसे मनोहर की शादी एक सवर्ण जाति की डॉ. शालिनी से होने की बात पता चलती है तो वह हैरान हो जाती है। यह सवर्ण लड़की आखिर शादी के लिए तैयार कैसे होगी? का सवाल कमला के सभी मानवीय मूल्यों पर प्रश्न चिह्न अंकित करता है। अर्थात् आज भी सवर्ण लोगों के मन से जातिवादी मानसिकता पूरी तरीके से नष्ट नहीं हुई है।

9. 'वे तीन' यह तीन हम उम्र दोस्तों की कहानी है। इसमें लेखक ने दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते में धार्मिकता के घूँसने की समस्या को उजागर किया है। साथ ही युवाओं की स्वार्थ लिप्सा, आत्मविश्वास की कमी होना, विक्टम कार्ड के आड़ में मानवीय संवेदनाओं को तिलांजलि देना, अफजल को मुस्लिम होने के कारण और उर्दू भाषा में साहित्य लिखने के कारण हिंदी बिरादरी से बाहर निकालना आदि समस्याओं को लेखक ने इसमें उजागर किया है।

10. 'छल' कहानी में सरकारी अधिकारियों द्वारा ग्रामीण इलाकों में अपना तबादला टालने की समस्या को उजागर किया है। भारत देहातों का देश है लेकिन अधिकारी लोग भौतिक असुविधा के चलते गाँव देहातों में सेवा देने से इंकार करते हैं। अच्छे शहरों में पोस्टिंग के लिए सरकारी तंत्र को रिश्वत खिलाना या चापलूसी करने की प्रवृत्ति को लेखक ने इसमें मुख्याध्यापक ललवानी के जरिए प्रस्तुत किया है। यह कहानी

शिक्षा व्यवस्था में पनप रही रिश्वतखोरी, चापलूसी, दिखावा, अध्यापन में टाल-मटोल, अध्यापकों की विकृतियाँ, छात्रों के साथ छल आदि समस्याओं को उजागर करती है।

4.3.5 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' का उद्देश्य :

हर साहित्य रचना का अपना एक उद्देश्य होता है। रचनाकार समाज में अनुभूत सत्य को साहित्य के माध्यम से पाठकों को सामने लाता है। समाज की विसंगतियों को उजागर करके समाज को परिशुद्ध करने का कार्य साहित्यकार करता है। उद्देश्य की दृष्टि से हर रचना अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भगवानदास मोरवाल की चुनिंदा दस कहानियाँ भी अपने साथ एक सार्थक उद्देश्य को लेकर साकार हुई है। वह उद्देश्य इसप्रकार है-

1. 'महाराब' यह कहानी ग्रामीण परिवेश में धार्मिकता के प्रवेश के कारण वहाँ के पुश्तैनी चले आ रहे रीति-रिवाज, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक ताना-बाना टूटता जा रहा है। हमें अपनी परंपरा एवं संस्कृति को धार्मिक एवं सांप्रदायिक संकुचितता से ऊपर उठकर देखना होगा। गाँव जीवन का प्रेम, भाई-चारा एवं वस्तु-विनिमय पद्धति को बचाना चाहिए।

2. 'बस, तुम न होते पिताजी' यह कहानी परिवार के नाजुक रिश्तों के अवगुणों को दिखाती है। संयुक्त परिवारों में महिलाओं के यौन-उत्पीड़न की त्रासदी को उजागर करना। दुश्चरित्र पारिवारिक रिश्तों को केवल समाज के डर से निभाना और उससे मानसिक पीड़ा में झुलसते रिश्तों का विरोधाभास दिखाना।

3. 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी के जरिए राजनीति में सवर्णों के दबाव तंत्र को दिखाना। दलितों को सत्ता का पद मिलने के बावजूद भी सवर्णों के दबाव में रहने की पीड़ा को दिखाना। आत्मकेंद्रीत दलित वर्ग की स्वार्थी और लालची मानसिकता को उजागर करना।

4. 'बियाबान' कहानी के जरिए मनुष्य की स्वार्थी वृत्ति को दिखाना, बुरे वक्त में किए एहसानों को भूलकर दाता पर ही संशय करना, मानवीय संवेदनाओं का खत्म होना, धर्म को लेकर किसी व्यक्ति के चरित्र की पहचान कराने की संकुचित मनोवृत्ति को उजागर करना, मानवीय रिश्तों में बाजारवाद, पूँजीवाद के कारण आई विसंगतियों को दिखाना।

5. 'सौदा' कहानी के जरिए व्यावसायिक लाभ के लिए अनुशासनहीन और गुंडई बर्ताव करने की वृत्ति को दिखाना, छोटी-सी गलती को मजहबी रंग देकर गरीब-निरीह लोगों को कानून एवं पुलिस की जाल में फँसाने की घटिया मानसिकता को दिखाना, पुलिस तंत्र की भ्रष्टनीति को दिखाना, गरीब-निरीह को उसकी ही बिरादरी द्वारा स्वार्थवश लूटने की गिधड़ मानसिकता को दिखाना, गरीब लोगों की आर्थिक समस्याओं को दिखाना।

6. 'चोट' कहानी के जरिए सवर्णों की दलित को प्रति घृणास्पद मानसिकता को उजागार करना, सवर्णों के पक्षपाती रवैये को सामने लाना, सरकारी एवं निजी कार्यालयों में काबील दलितों पर हो रहे अप्रत्यक्ष रूप

से हो रहे जातिवादी शोषण का पर्दापाश करना, शिक्षा और प्रतिभा होने के बावजूद सवर्णों के पक्षपाती रवैये से दलितों के हो रहे मोहभंग की यथार्थता को दिखाना।

7. 'रंग-अबीर' कहानी के जरिए भारतीय ग्रामीण परिवेशों में सांप्रदायिकता का जहर फैलने की स्थितियों से अवगत कराना, सामाजिक संरचना में धार्मिकता के प्रवेश की गंभीरता से परिचित करना, गाँव के पंचों द्वारा न्याय व्यवस्था का भी सांप्रदायिकरण होने की गंभीरता से आगाह करना, गाँव जीवन के सद्भाव में सांप्रदायिकता का प्रवेश होने से भाईचारा और संवेदना का कम होने की बात को स्पष्ट करना, पक्षपाती रवैये से किसी निरीह, बेकसुर को सजा देकर उसकी रोजी-रोटी बंद करने की स्वार्थी मानसिकता का पर्दापाश करना।

8. 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी के जरिए ग्रामीण जीवन में आज भी सवर्णों की जातिवादी मानसिकता का जिंदा होने की ओर ध्यान आकर्षित करना, उच्च शिक्षा और ओहदा प्राप्त करने के बावजूद दलितों को प्रताड़ित करने की मानसिकता को दिखाना, कमला के जरिए शादी-ब्याह को लेकर पढे-लिखे युवकों के विचार आज भी जातिवादी होने की बात स्पष्ट करना।

9. 'वे तीन' कहानी के जरिए दोस्ती जैसे पवित्र रिश्तें में स्वार्थ की मानसिकता दिखाना, बूरे वक्त में अपने दोस्त को मदद न करने की वृत्ति को दिखाना, दोस्त के साथ विक्टम कार्ड खेलने की घृणित मानसिकता को दिखाना, साहित्य के क्षेत्र में घुँस रही सांप्रदायिकता को दिखाना, लालच के चलते दोस्ती एवं मानवीय संवेदना के खत्म होने की समस्या को दिखाना।

10. 'छल' कहानी के जरिए सरकारी स्कूलों के शिक्षक एवं अधिकारियों की स्वार्थवृत्ति को दिखाना, सरकारी स्कूलों के विकास हेतु आई निधियों को हड़पने की वृत्ति को दिखाना, ग्रामीण इलाकों में जाकर अपने सेवा देने से बचने की वृत्ति को दिखाना, अपना तबादला अच्छे जगह करने के लिए काम का दिखावा करने की प्रवृत्ति को उजागर करना, शिक्षा व्यवस्था में पनप रही विकृतियों का पर्दापाश करना।

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न:

4.4.1 पर्यायवाची प्रश्न :

1) भगवानदास मोरवाल के 'दस प्रतिनिधि कहानी-संग्रह' का सन् .... को किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है।

   अ) 2014 ई. ब) 2015 ई. क) 2016 ई. ड) 2017 ई.

2) 'महराब' कहानी स्थानीय .... का प्रतिनिधित्त्व करती है।

   अ) इतिहास ब) लोकजीवन क) परिवार ड) भूगोल

3) 'महराब' कहानी .... इन दो सहेलियों की है।

अ) कमला-बिमला ब) सीता-गीता क) अशरूफी-कलबत्ती ड) दिव्या-सरिता

4) 'महराब' कहानी में अशरूफी .... जाति की है।

अ) सिक्ख ब) मेव मुस्लिम क) कुम्हार ड) लुहार

5) कलबत्ती .... रस्म के लिए अशरूफी की प्रतिक्षा करती है लेकिन वह नहीं आती।

अ) बैल पूजने की ब) चाक पूजने की क) मिट्ठी पूजने की ड) नदी पूजने की

6) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का प्रमुख पात्र .... जो पिता से परेशान है।

अ) डॉ. मनोहर ब) अफजल क) जगन ड) सतबीर

7) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का पिताजी .... चरित्र का व्यक्ति है।

अ) सदुणी ब) शराबी और स्त्रीलंपट क) सुंदर ड) महान

8) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का पिताजी .... बहू की इज्जत पर हाथ डालता है।

अ) छोटी ब) बड़ी क) मँझली ड) कुँवारी

9) 'दु:स्वप्न की मौत' यह कहानी .... की है।

अ) अर्थ चेतना ब) नारी चेतना क) धर्म चेतना ड) राजनीतिक चेतना

10) 'दु:स्वप्न की मौत' इस कहानी.............. के सपने की मौत होती है।

अ) लालचंद मेहतर ब) बाबूराम क) रामलाल ड) दीनानाथ

11) 'दु:स्वप्न की मौत' यह कहानी सवर्ण वर्ग का सरपंच .... था।

अ) लालचंद मेहतर ब) दीनानाथ क) बाबूराम ड) श्रीपतिलाल

12) 'बियाबान' कहानी का प्रमुख पात्र .... है।

अ) चाचा बिसनाथ ब) जावेद क) रफीक ड) रामदास

13) 'बियाबान' कहानी में.............. शरणार्थी परिवार की मदद करते हैं।

अ) सुरेंद्र ललवानी ब) बाबूराम सक्सेना क) मँगल खाँ ड) चाचा बिसनाथ

14) 'बियाबान' कहानी के प्रारंभ में.............. त्रासदी का वर्णन आया है।

अ) भारत-पाक बँटवारा ब) बम विस्फोट क) बेरोजगारी ड) नारी शोषण

15) 'बियाबान' कहानी में मुस्लिम होने के कारण.............. नौकरी नहीं दी जाती।

अ) अशरफ ब) जावेद क) हारूण ड) शकिल

16) ‘सौदा’ कहानी के प्रमुख पात्र........... है।

अ) अशरफ और जावेद　　ब) जावेद और सलिम

क) हारूण और रामसिंह　　ड) शकिल और रियाज

17) ‘सौदा’ कहानी के प्रमुख पात्र हारूण .... का काम करता है।

अ) खेती का　　ब) बस चालक　　क) रिक्शाचालक　　ड) सुनार

18) ‘सौदा’ कहानी के में सुनार की दूकान के मालिक .... है।

अ) जुगल किशोर　　ब) कमल किशोर　　क) ललवानी　　ड) महाजनी

19) ‘सौदा’ कहानी में थानेदार.............. रुपए का सौदा करके हारूण को छोड़ता है।

अ) 600　　ब) 700　　क) 500　　ड) 1000

20) ‘सौदा’ कहानी के प्रमुख पात्र हारूण के बिरादरी से.............. थाने में पहुँचता है।

अ) शकिल खान　　ब) चौधरी हामिद　　क) अब्दुल करीम　　ड) रियाज सनदी

21) ‘चोट’ कहानी का प्रमुख पात्र.............. है।

अ) दक्ष प्रजापति　　ब) सतबीर　　क) समीर　　ड) केशरवाणी

22) ‘चोट’ कहानी में दक्ष प्रजापति .... के साथ पक्षपात करती है।

अ) मिसेज शर्मा　　ब) मिसेज सक्सेना　　क) मिसेज वर्मा　　ड) मिसेज द्विवेदी

23) ‘चोट’ कहानी में दक्ष प्रजापति की जगह .... को प्रमोशन मिलता है।

अ) अफजल　　ब) सतबीर　　क) समीर　　ड) केशरवाणी

24) ‘रंग-अबीर’ कहानी का प्रमुख पात्र .... है।

अ) वजीद　　ब) गोपाला　　क) भोपू　　ड) लालचंद जैन

25) ‘रंग-अबीर’ कहानी में .... अपने माता-पिता की याद में धर्मशाला बनाई है।

अ) वजीद　　ब) गोपाला　　क) भोपू　　ड) लालचंद जैन

26) ‘रंग-अबीर’ कहानी में वजीद तेरा नंबर की दूकान में .... व्यवसाय शुरू करता है।

अ) नाई का　　ब) चमार का　　क) दर्जी का　　ड) सायकल रिपेअरी का

27) ‘रंग-अबीर’ कहानी में वजीद के सैलून का नाम.............. है।

अ) सनी हेयर कटिंग सैलून　　ब) वजीद हेयर कटिंग सैलून

क) बॉम्बे हेयर कटिंग सैलून　　ड) झिकरा हेयर कटिंग सैलून

28) 'रंग-अबीर' कहानी में होली के दिन ....में झगड़ा होता है।

अ) वजीद और लालचंद   ब) गोपाला और भोपू

क) राम और शाम   ड) अफजल और श्यामलाल

29) 'रंग-अबीर' कहानी में .... को गाँव से निष्कासित किया जाता है।

अ) वजीद   ब) गोपाला   क) भोपू   ड) लालचंद जैन

30) 'सीढियाँ, माँ और देवता' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र .... है।

अ) वजीद   ब) डॉ. मनोहर   क) भोपू   ड) लालचंद जैन

31) 'सीढियाँ, माँ और देवता' कहानी में मनोहर और ....एक ही कक्षा में पढते थे।

अ) गीता   ब) कमला   क) शालिनी   ड) विमला

32) 'सीढियाँ, माँ और देवता' कहानी में दलित वर्ग का मनोहर पढकर .... बनता है।

अ) इंजीनियर   ब) डॉक्टर   क) प्राध्यापक   ड) वैज्ञानिक

33) 'सीढियाँ, माँ और देवता' कहानी में डॉ. मनोहर शहर में ....से शादी करता है।

अ) डॉ. कामिनी   ब) डॉ. शालिनी   क) डॉ. मानिनी   ड) डॉ. पद्मिनी

34) 'वे तीन' कहानी का प्रताड़ित .... मुस्लिम पात्र है।

अ) अफजल   ब) अशरूफी   क) जावेद   ड) वजीद

35) 'वे तीन' कहानी में अफजल .... भाषा में कविता करता है।

अ) हिंदी   ब) उर्दू   क) मराठी   ड) कन्नड

35) 'वे तीन' कहानी में अफजल .... भाषा में कविता करता है।

अ) हिंदी   ब) उर्दू   क) मराठी   ड) कन्नड

36) 'छल' कहानी में .... व्यवस्था की विसंगतियाँ दिखाई गई है।

अ) पुलिस   ब) शिक्षा   क) राज   ड) धर्म

37) 'छल' कहानी का प्रमुख पात्र ....है।

अ) ललवानी   ब) लालचंद जैन   क) लालाराम   ड) रामलाल

38) 'छल' कहानी के मुख्याध्यापक ललवानी का तबादला .... को किया जाता है।

अ) भागपुर   ब) रामपुर   क) उदयपुर   ड) जयपुर

39) 'छल' कहानी में मुख्याध्यापक ललवानी शिक्षा मंत्री को प्रभावित करने के लिए ....प्रतीमा दिखाता है।

अ) महात्मा गांधी   ब) डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर

क) पं. नेहरू		ड) नेताजी सुभाषचंद्र बोस

40) ‘छल’ कहानी में मुख्याध्यापक ललवानी .... का आरोप है।

अ) विद्यालय के फंड का गबन		ब) लैंगिक शोषण

क) जातिवादी उत्पीड़न		ड) बाल मजदूरी

4.4.2 उचित मिलान कीजिए।

	खंड I (कहानी)	खंड II (उनके प्रमुख पात्र)
1)	महाराब	i) अफजल, जगदीश और अमर
2)	बस, तुम न होते पिताजी	ii) मुख्याध्यापक ललवानी
3)	दु:स्वप्न की मौत	iii) डॉ. मनोहर और कमला
4)	बियाबान	iv) वहीद और लालचंद जैन
5)	सौदा	v) दक्ष प्रजापति और मिसेस सक्सेना
6)	चोट	vi) हारूण और रामसिंह
7)	रंग-अबीर	vii) चाचा बिसनाथ और मँगल खाँ
8)	सीढियाँ, माँ और उसका देवता	viii) लालचंद मेहतर और सरपंच दीनानाथ
9)	वे तीन	xi) जगदीश
10)	छल	x) अशरूफी और कलबत्ती

4.4.3 सही या गलत बताए।

1) अशरूफी अपने बेटे जावेद का विरोध करके कलबत्ती के यहाँ चाक पूजने के लिए जाती है।
2) जगदीश के पिताजी बहुत ही सद् चरित्र व्यक्ति थे।
3) सरपंच होने के बावजूद भी लालचंद मेहतर को दीनानाथ के दबाव में काम करना पड़ता है।
4) मुस्लिम होने के कारण जावेद को फैक्टरी में नौकरी नहीं दी जाती है।
5) हारूण को पुलिस हिरासत से छुडाने के लिए 1000 रुपए में सौदा तय होता है।
6) दक्ष प्रजापति को नौकरी में प्रमोशन मिलता है।
7) लालचंद जैन वहीद मुस्लिम होने के कारण अपनी दूकान उसे किराय पर नहीं देते।
8) होली के दिन गोपला और भोलू के बीच मारपीट होती है।
9) डॉ. मनोहर की शादी कमला से होती है।
10) अफजल को उसके दोस्त जगदी और अमर मदद करते हैं।

11) अफजल को उर्दू कविता लिखने के कारण हिंदी बिरादरी से बाहर निकाला जाता है।

12) मुख्याध्यापक ललवानी ने विद्यालय के फंड का गबन किया है।

13) मुख्याध्यापक ललवानी का तबादला भागपुर किया जाता है।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

मेव - मेवात के कन्व्हट्र मुस्लिम जाति,

चाक पूजन- मेवात में शादी-ब्याह के समय का रिवाज

नेग - शादी ब्याह के समय दिया जाने वाला उपहार

स्त्री लंपट - औरतों के पीछे रहने वाला

अकाल प्रौढ बनना - कम उम्र में ही समझदार होना।

दु:स्वप्न - बुरा सपना

काम का ठेका लेना - जिम्मेदारी लेना

बियाबान - परिवेश

शरणार्थी - शरण लेने वाले, भारत-पाक विभाजन के समय पाक से आए हुए लोग

जहर घोल देना - षड्यंत्र करना

सौदा - व्यवहार

बिरादरी - समाज, जाति

मामला रफा-दफा करना - मामले का निपटान करना, बरखास्त करना

निहत्था - जिसके पास कोई हथियार न हो

मंडल कमीशन - अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण देने के लिए गठित की समिति

रंग-अबीर - रंग और गुलाल

मुजाहिर - भारत से पाकिस्तान में जाकर शरण लिये मुस्लिम लोग

सीढियाँ - करियर को लेकर प्रतीकात्मक शब्द का प्रयोग, प्रगति

महतर का काम - भंगी का काम, गंदगी उठाने वाले

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

* पर्यायवाची प्रश्नों के उत्तर :

1) 2014 ई. 2) लोक जीवन 3) अशरूफी-कलबत्ती 4) मेव मुस्लिम

5) चाक पूजन	6) जगन	7) शराबी-स्त्री लंपट	8) छोटी	
9) राज नीतिक चेतना	10) लालचंद मेहतर	11) दीनानाथ	12) चाचा बिसनाथ	
13) मँगल खाँ	14) भारत-पाक बँटवारा	15) जावेद	16) हारूण और राम सिंह	
17) रिक्शा चालक	18) जुगल किशोर	19) 500	20) चौधरी हामिद	
21) दक्ष प्रजापति	22) मिसेज सक्सेना	23) केशरवाणी	24) वजीद	
25) लालचंद जैन	26) नाई का	27) बॉम्बे हेयर कटिंग सैलून		
28) गोपाला और भोपू	29) वजीद	30) डॉ. मनोहर	31) कमला	
32) डॉक्टर	33) डॉ. शालिनी	34) अफजल	35) उर्दू	36) शिक्षा
37) ललवानी	38) भागपुर	39) डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर		

40) विद्यालय के फंड का गबन

4.4.2 उचित मिलान प्रश्न के उत्तर :

1) महाराब	i) अशरूफी और कलबत्ती
2) बस, तुम न होते पिताजी	ii) जगदीश
3) दु:स्वप्न की मौत	iii) लालचंद मेहतर और सरपंच दीनानाथ
4) बियाबान	iv) चाचा बिसनाथ और मँगल खाँ
5) सौदा	v) हारूण और रामसिंह
6) चोट	vi) दक्ष प्रजापति और मिसेस सक्सेना
7) रंग-अबीर	vii) वहीद और लालचंद जैन
8) सीढियाँ, माँ और उसका देवता	viii) डॉ. मनोहर और कमला
9) वे तीन	xi) अफजल, जगदीश और अमर
10) छल	x) मुख्याध्यापक ललवानी

4.4.3 **सही–गलत प्रश्न के उत्तर :**

1) गलत 2) गलत	3) सही	4) सही	5) गलत	6) गलत
7) गलत 8) सही	9) गलत	10) गलत	11) सही	12) सही

13) सही

1.7 सारांश:

1) भगवानदास मोरवाल के 'दस प्रतिनिधि कहानी-संग्रह' का वर्ष 2014 ई. को किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें 'महराब', 'बस, तुम न होते पिताजी', 'दु:स्वप्न की मौत', 'बियाबान', 'सौदा', 'चोट', 'रंग-अबीर', 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता', 'वे तीन' और 'छल' यह दस कहानियाँ शामिल है। कथ्य एवं आशय की दृष्टि से ये 10 कहानियाँ बिलकुल अलग है।

2) 'महराब', 'बियाबान', 'सौदा' और 'रंग-अबीर' कहानियाँ स्थानीय लोकजीवन का प्रतिनिधित्त्व करती है। 'वे दिन' इस कहानी में सांप्रदायिकता इस सामाजिक समस्या को लेखक ने पत्तो-रेशो सहित विश्लेषित किया है। 'छल' कहानी शिक्षा-व्यवस्था में पनप रही विकृतियों को उजागर करती है तो 'चोट' कहानी सामाजिक न्याय उपजी कुंठा, द्वेष को अभिव्यक्त करती है। 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी वर्तमान दलित जीवन के मर्म को व्यक्त करते हुए दलित-विमर्श की चौखट पर दस्तक देती है। 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी पारिवारिक संबंधों में आई निर्ममता को स्पष्ट करती है तो 'दु:स्वप्न की मौत' संग्रह की एक सामान्य कहानी लगती है लेकिन समाज के प्रश्न जरूर खड़ी करती है।

3) भगवानदास मोरवाल की कहानियाँ मूलत: हरियाणा और राजस्थान की परिवेश से जुड़ी हुई है। लेखक का पूरा जीवन भी इस परिवेश में बीतने के कारण उनकी कहानियों का यथार्थ पक्ष बहुत मार्मिक होता है। कहानियों में पात्र-संरचना को लेकर भगवानदास मोरवाल अपनी अनुभूति की सच्चाई का प्रमाण देते हैं। पात्रों के व्यवहारों से लेकर उनके मनोविज्ञान की उन्हें बहुत ही गहरी जानकारी है। उनके पात्र एवं उनके संवाद कहानी के कथ्य एवं उसके परिवेश को जीवंत करते हैं। 'महराब' कहानी में अशरूफी और कलबत्ती, 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी में जगन, 'दु:स्वप्न की मौत्' कहानी में लालचंद मेहतर और सरपंच दीनानाथ, 'बियाबान' कहानी में चाचा बिसनाथ, मँगल खाँ, जावेद, 'सौदा' कहानी में रामसिंह, हारूण, जुगल किशोर, चौधरी हामिद, 'चोट' कहानी में दक्ष प्रजापति, मिसेज सक्सेना, केसरवानी, सतबीर यादव, समीर राघव, 'रंग-अबीर कहानी' में लालचंद जैन, वहीद, गोपला और भोपू, 'सीढिया, माँ और उसका देवता' में डॉ. मनोहर, कमला, माँ, डॉ. शालिनी, 'वे तीन' कहानी में अफजल, जगदीश, अमर, 'छल' कहानी में मुख्याध्यापक ललवानी आदि पात्र प्रमुख है।

4) भगवानदास मोरवाल जी के 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में संकलित सभी कहानियाँ किसी-न-किसी सामाजिक मुद्दों को लेकर रची गई है। लेखक मोरवाल जी ने हरियाण एवं राजस्थान के सामाजिक परिवेश को कहानी में साकार किया है। हर कहानी अपने परिवेश की समस्याओं की ओर इशारा करती है। ग्रामीण जीवन में आ रही विकृतियों को लेखक ने उजागर करने का प्रयास किया है। ग्रामीण परिवेश में धार्मिकता का प्रवेश, लोक जीवन में विकृतियाँ का कुप्रभाव, धार्मिकता के कारण मानवीय रिश्तों में तनाव, जातिवादी झगड़ो एवं मानसिकता में वृद्धि, आर्थिक समस्या, भ्रष्टाचार, हड़प नीति, दलितों का शोषण, नारी उत्पीड़न,

जातिगत दोष एवं भेदभाव, संकुचित मानसिकता, मानवीय संवेदनाओं का खत्म होना आदि समस्या चित्रित की गई है।

5) भगवानदास मोरवाल कृत 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' में लोकजीवन एवं लोक संस्कृति की रक्षा करना, सामाजिक सद्भाव को बनाए रखना, पारिवारिक रिश्तों में मान-सम्मान रखना, ग्रामीण परिवेश में दाखिल हो रही सामाजिक एवं धार्मिक विकृतियों के प्रति सजग करना, सरकारी व्यवस्था में पनप रहे भ्रष्टाचार, हड़प नीति का पर्दापाश करना, मानवीय रिश्तों में आ रही स्वार्थ लिप्सा को उजागर करना, ग्रामीण परिवेश की नई पीढी में आ रही धार्मिक कट्टरता की प्रवृत्ति एवं उसके खतरों से आगाह करना आदि कहानियों के उद्देश्य है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न:

1) 'ग्रामीण परिवशे में धार्मिकता के प्रवेश के कारण सामाजिक तानाबाना टूट रहा है' इस समस्या को 'महराब' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
2) 'महराब' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
3) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी के बेटे जगन के मानसिक द्वंद्व को कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
4) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
5) लालचंद मेहतर के दु:स्वप्न की मौत कैसे होती है, कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
6) 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
7) 'बियाबान' कहानी का समीक्षात्मक विचेचन कीजिए
8) 'बियाबान' कहानी की समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
9) 'भारत में प्रशासन की रिश्वतखोरी के कारण गरीब की मजबूरी का सौदा होता है' इस कथन को 'सौदा' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
10) 'सौदा' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
11) भारत के कार्यालयों में अप्रत्यक्ष रूप से जातिवादी उत्पीड़न होता है, इस कथन को 'चोट' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
12) 'चोट' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
13) 'रंग-अबीर' कहानी के माध्यम से ग्रामीण जीवन में धार्मिकता के प्रवेश से क्या परिणाम होता है?
14) 'रंग-अबीर' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।
15) 'सीढियॉ, माँ और उसकी देवता' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।

16) 'सीढियॉ, माँ और उसकी देवता' यह नाजुक रिश्तों की मुलायम कहानी है, इसे कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

17) 'वे तीन' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।

18) 'वे तीन' कहानी दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते में स्वार्थ का जहर घोलती है, इस कथन को कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

19) भारत में सरकारी अधिकारियों की ग्रामीण परिवेश में सेवा देने की मानसिकता शिथिल हो रही है, इस कथन को 'छल' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

20) 'छल' कहानी का समीक्षात्मक विवेचन कीजिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्नः

1) 'महराब' कहानी की अशरूफी और कलब्बती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) महराब में व्यक्त समस्याए स्पष्ट कीजिए।

3) 'महराब' कहानी का उद्देश्य को लिखिए।

4) बस। तुम न होते पिताजी कहानी का जगदीश का चरित्र चित्रण कीजिए।

5) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी की समस्याएं स्पष्ट कीजिए।

6) 'बस, तुम न होते पिताजी' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

7) 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी का लालचंद मेहतर का चरित्र चित्रण कीजिए।

8) 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी का सरपंच दीनानाथ का चरित्र चित्रण कीजिए।

9) 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

10) 'दु:स्वप्न की मौत' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

11) 'बियाबान' कहानी के चाचा बिसनाथ का चरित्र चित्रण कीजिए।

12) 'बियाबान' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

13) 'बियाबान' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

14) 'सौदा' कहानी के हारूण का चरित्र चित्रण कीजिए।

15) 'सौदा' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

16) 'सौद' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

17) 'चोट' कहानी के दक्ष प्रजापति का चरित्र चित्रण कीजिए।

18) 'चोट' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

19) 'चोट' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

20) 'रंग-अबीर' कहानी के वहीद का चरित्र चित्रण कीजिए।

21) 'रंग-अबीर' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

22) 'रंग-अबीर' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

23) 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी के डॉ. मनोहर का चरित्र चित्रण कीजिए।

24) 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

25) 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

26) 'वे तीन' कहानी के अफजल का चरित्र चित्रण कीजिए।

27) 'वे तीन' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

28) 'वे तीन' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

29) 'छल' कहानी के मुख्याध्यापक ललवानी का चरित्र चित्रण कीजिए।

30) 'छल' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।

31) 'छल' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) ग्रामीण लोकजीवन से संबंधित मराठी कहानियों को पढिए।

2) मराठी के शंकर पाटील के ग्रामीण कथाओं का हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास कीजिए।

3) भगवानदास मोरवाल के समकालीन मराठी ग्रामीण कहानीकारों की सूची बनाए।

4) भगवानदास मोरवाल की किसी एक कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) संपा. डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता – लोकमन का सिरजनहार : भगवानदास मोरवाल, समीक्षा पब्लिकेशन (शिल्पायन), गांधी नगर, दिल्ली।

2) डॉ. वरिन्दरजीत कौर, 'भगवानदास मोरवाल' का कथा साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022

❑❑❑

इकाई–1
तीसरा आदमी (उपन्यास) – कमलेश्वर

अनुक्रम

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 विषय विवेचन

1.3 'तीसरा आदमी' उपन्यास का तात्विक विवेचन

 1.3.1 'तीसरा आदमी' उपन्यास की कथावस्तु

 1.3.2 'तीसरा आदमी' उपन्यास पात्र तथा चरित्र चित्रण

 1.3.3 'तीसरा आदमी' उपन्यास की भाषाशैली तथा कथोपकथन

 1.3.4 'तीसरा आदमी' उपन्यास का शिल्प सौंदर्य

 1.3.5 'तीसरा आदमी' उपन्यास में लोकसंस्कृति

 1.3.6 'तीसरा आदमी' उपन्यास शीर्षक की सार्थकता

 1.3.7 'तीसरा आदमी' उपन्यास का उद्देश्य

1.4 तीसरा आदमी उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

1.5 ससंदर्भ स्पष्टीकरण

1.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.7 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.8 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर

1.9 सारांश

1.10 स्वाध्याय

1.11 क्षेत्रीय कार्य

1.12 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.0 उद्देश्य

- 'तीसरा आदमी' उपन्यास के माध्यम से चित्रा इस नारी पात्र की हमें जानकारी मिल जाएगी।
- सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति की जानकारी मिलेगी।
- महानगरो में उच्चवर्गीय पारिवारिक जीवन और समस्या, आर्थिक, संयुक्त परिवार का चित्रण, संस्कारशील व्यक्तित्त्व आदि प्राप्त हो जाएगी।
- पात्र चरित्र-चित्रण के माध्यम से उनकी विशेषताएँ समझने में सहायता होगी।
- कथावस्तु, शिल्प सौंदर्य, शीर्षक की सार्थकता, भाषा शैली, से छात्र परिचित हो जाएंगे।

1.1 प्रस्तावना

कमलेश्वर प्रगतिशील साहित्यकार के रूप में हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित है। इनके कथा साहित्य एवं उपन्यास हिंदी साहित्य में बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्वांतत्र्योत्तर साहित्यकारों में कमलेश्वर अपनी स्वतंत्र रूप से पहचान रखते हैं। उनकी लेखनी ने आम आदमी का यथार्थ जीवन तथा निम्न मध्यवर्ग का वास्तविक रूप जैसे कि रोजी रोटी, मजदूरी तथा आस्था अनास्था प्रेम कलह आदि सब प्रसंग सजीव रूप से चित्रित किया है। कमलेश्वर के उपन्यासों द्वारा कसाई जीवन का अत्यंत सटीक चित्रण पहली बार मिल जाता है। कमलेश्वर एक ख्याति प्राप्त सफल उपन्यासकार रहे हैं।

कमलेश्वर ने स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में अलग अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, पत्रकारिता, फिल्म आदि विविध विधा पर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने लगभग 10 उपन्यास लिखे हैं। उनके अनेक सारा कहानी संग्रह प्रसिध्द है। उन्होंने दूरदर्शन पर भी सेवा की है। कमलेश्वर अच्छे संपादक भी रह चुके हैं। फिल्म क्षेत्र में भी उनका अनन्य साधारण महत्त्व रहा है।

कमलेश्वर का प्रस्तुत उपन्यास 'तीसरा आदमी' उनके प्रसिध्द लघु उपन्यासों में से एक है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका चित्रा है जो उच्चशिक्षित है। वह होशियार कर्तव्य दक्ष भी है। चित्रा अपने देवर के प्रेम प्रसंग में फँस जाती है। लेकिन भारतीय संस्कृति के अनुरूप वह अपने पति से भी प्रेम करती है, उन्हे चाहती है। उपन्यास के तत्त्वों में चरित्र चित्रण, लोक संस्कृति, भाषा शैली, संवाद या उद्देश्य, काफी महत्त्वपूर्ण तत्त्व माने जाते हैं। जिसमें पात्र तथा चरित्र चित्रण प्रमुख तत्त्वों में एक माना जाता है। उपन्यास के पात्र उपन्यासकार के कल्पना की उपज होती है। इस तरह इस इकाई में कमलेश्वर का जीवन परिचय, उनका व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व कथावस्तु, चित्रा का चरित्र चित्रण, समीक्षा, उद्देश्य, समस्याएँ, भाषा शैली, शिल्प सौंदर्य आदि विभिन्न विषयों पर इस इकाई में अध्ययन किया गया है।

1.2 विषय विवेचन :

इस इकाई में 'तीसरा आदमी' उपन्यास की कथावस्तु, उसकी समीक्षा, 'तीसरा आदमी' उपन्यास का शिल्प सौंदर्य आदि बहुत सारे विभागों का इस इकाई में विवेचन किया है। साथ ही 'तीसरा आदमी' उपन्यास

के पात्रों का चरित्र-चित्रण, स्त्री एवं पुरूष पात्र की विशेषताएँ और स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'तीसरा आदमीं' उपन्यास का अवलोकन किया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र और गौण पात्रों की संवाद योजना को भी यहाँ दर्शाया गया है।

'तीसरा आदमी' उपन्यास की शीर्षक की सार्थकता को समझने की कोशिश की गई है। 'तीसरा आदमी' उपन्यास की भाषा शैली, भारतीय संस्कृति का वर्णन, कमलेश्वर का प्रगतिशिल दृष्टिकोण, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, शिल्प सौंदर्य, भाषिक संरचना आदि मुद्दों का विवेचन एवं विश्लेषण यहाँ किया गया है।

1.3 'तीसरा आदमी' उपन्यास का तात्त्विक विवेचन

1.3.1 'तीसरा आदमी' उपन्यास की कथावस्तु

पति-पत्नी के नाजूक और संवेदनशील संबंधों के धरातल पर लिखा 'तीसरा आदमी' उपन्यास अपनी अलग विशेषता स्थापित करता है। प्रेम और प्रति द्वंद्विंता में आदिकाल से 'तीसरा आदमी' आता रहा है। कमलेश्वर का तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की उपज है । पति-पत्नी के कोमल रिश्तों में किसी तीसरे की अंश मात्र छाया भी उनकी जिंदगी उखाडकर तल्ख कर देती है। ऐसी ही उनमें दरारें आ जाती है।

उपन्यास में आरंभ से अंत तक संदेह की छाया मँडराती है। विवाह के पहले दिन से सुमंत नरेश और चित्रा के बीच आ जाता है। सुमंत रिश्ते में नरेश का दूर का भाई है। नरेश ओर चित्रा की शादी होने के बाद दिल्ली में सुमंत के कमरे में तीनों एकसाथ रहते है। नरेश रेडिओ एनाउन्सर में काम करता है। वह अच्छी नौकरी तलाश करना चाहता था। उसे पहलें नौकरी में ही प्रमोशन मिलता है और उसका तबादला दिल्ली जैसे बडे महानगरों में हो जाता है। दिल्ली जैसे महानगर में सुमंत का कमरा बहुत छोटा था। यह तीनों इसमें एक साथ रहते हैं। सुमंत प्रेस में काम करता था बाद में वह चित्रा को भी काम सिखाता है। बार-बार संपर्क आने की वजह से दोनों भी एक दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं। चित्रा जितनी सुमंत के साथ खुश होती है उतनी उसका पति नरेश के साथ खुश नहीं होती। यह सब देखकर नरेश को उन दोनों के प्रति शक या संदेह पैदा हो जाता है। आकस्मिक नरेश को ऑफिस के काम के लिए कुछ दिनों के लिए बाहर जाना होता है। इसका ही फायदा उठाकर सुमंत और चित्रा एक दूसरे के निकट आ जाते हैं। जब नरेश वापस लौटता है तो दोनों भी उसे समझाने की बहुत कोशिश करते हैं। जिससे नरेश का शक और भी दृढ हो जाता है।

नरेश सारी स्थिति को अपनीं आँखों से देखता है। वह कुछ अलग ही था। एक दिन चित्रा और सुमंत घुमने के लिए बाहर चले जाते हैं। उसी समय नरेश भी घुमने के लिए रेल्वे स्टेशन चला जाता है। तब नरेश बहुत बुरा प्रसंग अपने आँखो से देखता है। सुमंत चित्रा के कंधें पर हाथ रखे हुए बडे मुक्त भाव से धीरे-धीरे चल रहा था और चित्रा हँसती हुई उनसे कुछ कह रही थी। उसके उपरांत दीवार का कोना आ गया या और वे दोनों दृष्टिपथ से परे हो गए थे। ऐसी स्थिति में दिल का बोझ हल्का करने के लिए नरेश भोपाल

चला जाता है। वहाँ पर भी उसका मन नहीं लगता है। जब ऑफिस से नोटिस मिलती है तो चुपचाप दिल्ली आ जाता है, और अपने दोस्त के घर ठहरता है। उसके बाद एक दिन ऑफिस में सुमंत का फोन आने की सूचना मिलती है। तब दोनों की मुलाकात कनाट प्लेस में कॉफी हाउस के बाहर होती है। उस समय नरेश अपनी सारी मन की बातें सुमंत के सामने व्यक्त करता है और उसे गालियाँ भी देता है। वह कहता है तुम्हे शरम आनी चाहिए थी यह सब करते हुए तुम मेरे भाई थे अगर चित्रा में कमजोरी पैदा हो ही गई थी तो तुम्हे उसका नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए था। तुमने मेरा विश्वास तोडा है मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि तुम मेरे लिए आस्तीन के साँप साबित होंगे। इसलिए नरेश अपमान की ज्वाला में बहुत दिनों तक झुलसता रहता है। विपरीत स्थिति में भी नरेश चित्रा को मनवा लेता है। दोनों की भी नई जिंदगी शुरू हो जाती है। उनको एक बेटा हुआ है, उसका नाम गुड्डू है। वह धीरे धीरे बढता है । पर सत्य यह है कि शक की छाया को नरेश कभी भूल नहीं पाता है। वह चित्रा को जितनी निकटता से पहचानने की कोशिश करता उतनी ही अधिक शक की हदे बढती जाती थी। उसे और किसी तीसरी छाया का आभास और भी अधिक होने लगा था।

कुछ दिनों के बाद सुमंत नरेश का बचा हुआ सामान लेने आता है। वह गुड्डू को खिलाता है। नरेश अपनी ग्लानि की आग को सह नहीं पाता पर उसके पास कोई चारा ही नहीं होता। गुड्डू बीमार पड जाता है। सुमंत ही उसे अस्पताल में दाखिल करता है। उससे अपना एकमात्र आधिकार भी छूटने लगता है। नरेश के लिए यह युध्द एकांगी नहीं था। घृणा ईर्ष्या, विद्वेष और हिकारत का था जिसके लिए उसे हर क्षण तैयार रहना पडता था।

आगे चलकर नरेश और चित्रा में दूसरे बच्चे को लेकर झगडा होता है। फिर एक बार दोनों में विघटन हो जाता है। चित्रा स्कूल में नौकरी करने लगती है। नरेश के सामने कोई भी रास्ता नहीं है। वह आर्थिक और मानसिक दोनों ओर से ग्रस्त था। नरेश अपना तबादला पटना करवा लेता है। उसके साथ पटना जाने के लिए चित्रा साफ इंकार करती है। आखिरकार नरेश अकेला ही पटना चला जाता है उसके बाद दूसरे बच्चे को चित्रा जन्म देती है। प्रसव का सारा इंतजाम सुमंत ही करता है। कुछ दिनों के बाद नरेश को पता चल जाता है कि सुमंत ने आत्महत्या कर ली है। अंत में नरेश को लगा कि शायद अब चित्रा मुझे याद करती होगी। उसके दिल में वह पुरानी भावनाएँ फिर उभरे और वह हारी हुई आकर मेरे पास खडी हो जाए। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ है। यह सिर्फ नरेश का सपना ही रह जाता है। वह चित्रा के साथ भी नहीं रह सकता था। उसे उस छाया ने मजबूर कर रखा था। अब मेरी दुनिया में मैं हूँ और वह एक छाया है जो मुझे अब भी चैन से नहीं बैठने देती।

'तीसरी आदमी' इस उपन्यास में केवल तीन ही पात्र है- नरेश चित्रा और सुमंत मानसिक संघर्ष इनकी प्रमुख विशेषता है। उपन्यास का प्रमुख पात्र नरेश है जो बहुत ही शक्की है। उसके मस्तिष्क में हमेशा तीसरी छाया मँडराती रहती है। वही निवेदक है जो अपनी बातों को परोक्ष रूप में कह देता है कमलेश्वर उनके आंतरिक और मानसिक युध्द को मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली द्वारा रेखांकित करते है। नरेश एक रेडिओ एनाउन्सर है। उसकी शादी चित्रा के साथ हो जाती है। शादी के पहले दिन से उसके मन में शक घर कर

लेता है। अखिर वह सच भी निकलता है चित्रा सुमंत के साथ संबध स्थापित करती है। इसीलिए नरेश को अब दुनिया में अकेला लगने लगता है वह पश्चाताप की आग में झुलसता रहता है । शक की छाया उसे चैन तक नही लेने देती। आखिर उसकी जिंदगी तहस नहस हो जाती है। चित्रा से भी उसका रिश्ता अलग हो जाता है। सुमंत नरेश का रिश्ते से भाई है। वह खूबसूरत युवक था। इसीलिए वह चित्रा की निगाहों का केंद्र बन जाता है। वैसे तो सुमंत एक मिलनसार युवक था। चित्रा के साथ उसके अनैतिक संबंध थे। उनकी पोल खुल जाती है। पर वह अपनी विवशता और गलती व्यक्त नहीं कर पाता आखिर एक दिन किसी होटल के कमरे में आत्महत्या कर देता है।

प्रस्तुत उपन्यास का काल आजादी के बाद का है। हमारे देश में आर्थिक विषमता की वजह से आ गए तणाव दृष्टव्य है। जिनकी वजह से पति-पत्नी जैसे कोमल रिश्ते बिखरे हुए दिखाई देते हैं। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि दिल्ली जैसे महानगरीय वातावरण की है। वहाँ के लोगों की आर्थिक दृष्टि से दारूण स्थिति, वहाँ की शोर भरी जिंदगी, मकान की स्थिति आदि का कमलेश्वर जीने यथार्थ वर्णन किया है। अगर कोई रास्ते से चला जाता है तो सोए हुए आदमी सहम जाते हैं। वहाँ गँदगी की बू चारों ओर फैल जाती है। उपन्यास में सारा वातावरण दिल्ली जैसे महानगरीय जीवन की दमघुट्टी स्थिति है। जिससे मनुष्य उबने लगता है।

लेखक बहुत ही प्रभावशाली ढंग से वर्णन करता है शाम होते ही हमारी गली में उदासी भरने लगती है। एक एक कमरों में रहनेवाली गृहस्थियाँ बाहर गली में निकल आती थी। पूरी गली में पत्थर के कोयलों की अंगीठियाँ सुलगने लगती थी। नाली के पास गली की जमीन साफ करके पानी छिडक लिया जाता था और खाटे बिछा ली जाती थी। उन पर बैठी बैठी महिलाए सब्जियाँ काटती रहती या और काई काम करती रहती। सामने की दीवारों पर लगे हुए नालियों के पाइप बडी-बडी छिपकलियों की तरह चिपके हुए लगते थे, और मेरा मन गिजगिजाहट से भर उठता। इन कुछ दिनों में हमारे सारे कपडों का रंग और बू एक खास किस्म की हो गई थी। तौलियों में अजीब सी महक समा गई थी और बिस्तर सडे हुए अनाज की तरह महकने लगे थे।

तीसरा आदमी शक या संदेह की दृष्टि से रोचक उपन्यास है। पति-पत्नी जैसे संबंधों के बीच किसी तीसरी छाया का थोडासा आभास भी होता है, तो शक की आँधी उनका जीवन तबाह कर देती है। उनका सांसरिक जीवन उध्वस्त हो जाता है। स्त्री-पुरूष या पनि-पत्नी के संबंध इतने कोमल होते हैं कि वे अपने बीच किसी भी प्रकार का अंतर सह नहीं पाते हैं। कभी भूल से भी यदि इन दोनों के बीच तीसरे ने प्रवेश किया तो उनका जीवन उध्वस्त हो जाता है। व्यक्ति जीवन की इसी उलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है।

1.3.2 'तीसरा आदमी' उपन्यास का पात्र तथा चरित्र चित्रण

चित्रा का चरित्र चित्रण

कमलेश्वर का 'तीसरा आदमी' उपन्यास एक मध्यमवर्गीय दाम्पत्य का चित्रण करता है। इस उपन्यास की नायिका चित्रा है जो उपन्यास के नायक नरेश की पत्नी है वह रेडिओ एनाउंसर पर कार्यरत है। नरेश की

शादी चित्रा से हो जाती है। नरेश का तबादला दिल्ली हो जाता है। दिल्ली में उसका भाई सुमंत रहता है, जिसकी शादी नहीं हुई है। नरेश अपनी पत्नी चित्रा के साथ आर्थिक अभाव एवं जगह की कमी के कारण सुमंत के घर में रहने का निर्णय लेता है। इसमें उसकीं मजबूरी रहती है। चित्रा सुमंत को खुलकर बातें करती है मगर पति नरेश के सामने वह दब जाती है। वह प्रसन्न नहीं रहती इसी वजह से नरेश को चित्रा पर संदेह या शक पैदा हो जाता है। इसके परिणाम स्वरूप दोनों में अनबन होकर परिवार विघटन हो जाता है। पति और पत्नी के बीच तीसरा आदमी आ जाने से जो संघर्ष निर्माण होता है उसी संघर्ष का चित्रण इसी उपन्यास में किया गया है।

1. संस्कारशील नारी :

तीसरा आदमी यह उपन्यास कमलेश्वर ने लिखा है। इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय लोगों की कहानी है। चित्रा उपन्यास की प्रमुख पात्र है। उसकी शादी नरेश के साथ होने पर यह सभी परिवार के लोग चित्रा दुल्हन को रेल से लेकर आते हैं मगर चित्रा डिब्बे में सीट पर अकेली बैठी है। वह नरेश की अपेक्षा नहीं करती बल्कि वह छोटा देवर सुमंत से बात करती है। घर में भी सभी परिवार का खयाल करती है। प्राचीन काल में पति को परमेश्वर का दर्जा दिया है। आज भी कुछ नारियाँ पति से खूलकर बाते नहीं करती। ठिक वैसे ही चित्रा भी अपने पति सामने आने पर उसे पसीना आ जाता है। पूरा शरीर गरम हो जाता है। मतलब यह है कि लोगों के सामने खुलकर वह बातें नहीं कर पाती परिवार की इज्जत करती है। पति का पटना तबादला होने पर दिल्ली में बच्चे की स्वयं हिफाजत करती है और अपने माता तथा पत्नी होने का कर्तव्य निभाती है।

2. पति से बेहद प्यार

चित्रा अपने पति से बेहद प्यार करती है वह पति से बार-बार आग्रह करती है कि वे दोनों अलग कमरा लेकर रहे क्योंकि वह एकांत चाहती है इसीलिए वह इलाहाबाद से दिल्ली जाने के लिए कहती है। उसका पति नरेश संशयी वृत्ति का है ऐसा जब उसे पता चलता है तो चित्रा अंदर ही अंदर घुटती चली जाती है। उसे यह समझ में नही आता कि मेरा पति मुझपर क्यों शक कर रहा है।

3. पति की उपेक्षा :

चित्रा और नरेश जब दिल्ली में सुमंत के साथ रहते हैं। सुमंत के साथ रहने से चित्रा उससे खुलकर बातें करती है उसके साथ खुश रहती है। इस बात का पता जब नरेश को चलता है तो वह उस पर शक करने लगता है। प्रारंभ की अवस्था में पति का ऐसा करना उसे कुछ भी नहीं समझता परंतु बाद में हर बात में उसका शक या संदेह बीच में आने लगता है। इसीलिए चित्रा एक तरह पति के प्रति लापरवाह हो जाती है। तभी से चित्रा अपने पति नरेश की उपेक्षा करने लगती है। सुमंत के साथ बातें करने से पति-पत्नी में अंतर पड जाता है। पत्नी पर का विश्वास उड जाता है इस तरह दोनों के संबध में एक दीवार खडी हो जाती है।

4. द्विधा मनस्थिति

इस उपन्यास की प्रमुख नायिका चित्रा है उसका मन हमेशा द्विधा में डोलता रहता है। नरेश के साथ शादी होने के बाद नरेश का भाई सुमंत के प्रति चित्रा आकर्षित हो गई है तो दूसरी ओर वह पति से भी

प्यार करती है। सुमंत से प्यार करके भी वह पति के आधिकार और कर्तव्य से नहीं भूलती। पति ऑफिस से आने पर पति को चाय बनाकर देना, खाना परोसना, प्यार भरी बातें करके लाल किले पर या दिल्ली में कही भी घुमने जाना यह सब चित्रा अपने पति नरेश के साथ करती है। इस प्रसंग में वह हमेशा फँसी रहती है। इस दोहरी स्थिति को लेकर नरेश ने स्पष्ट किया है, ''हम तीनों ही जैसे अपने संशय में डूब उतरा रहे थे। चित्रा को कुछ कहना ही नहीं था।'' वह जब सफाई पेश करती है तो उसका पति उसका उल्टा अर्थ लगा लेता है और उस पर अधिक शक करने लगता है।

5. दूसरे पुरूष के प्रति आकर्षण और प्यार:

चित्रा सुमंत के प्रति आकर्षित हो जाती है। यह जब उसके पति नरेश को समझता है तब उसे बहुत बुरा लगता है। चित्रा के प्रति उसे यह उम्मीद नहीं थी। जीस दिन से इन दोंनो का प्रेम पलने लगता है तभी से ही नरेश का चित्रा के प्रति शक और भी बढ जाता है। लेकीन शक बढने के कारण चित्रा सुमंत की ओर अधिक आकर्षित होने लगती है। इस उपन्यास में नरेश एक प्रसंग बताते हैं कि एक दिन उन्हें सुमंत और चित्रा नई दिल्ली के स्टेशन के पास घुमते नजर आते हैं। सुमंत चित्रा के कंधों पर हाथ रखते हुए मुक्त भाव से चल रहा है कि जैसे चित्रा उसकी पत्नी ही है। चित्रा ने भी परिवार की सभी सीमाए छोड दी। शारिरीक भूख मिटाने के लिए अपने छोटे भाई जैसे देवर के साथ संबध निर्माण करती है। सुमंत को बोलते समय चित्रा एकदम खुश नजर आती है। उसे हर बात हँसकर ही करती है। यह बात उसका पति बर्दाश्त नहीं कर पाता। उसी समय चित्रा की गर्भावस्था होती है। ऐसा देखकर नरेश का शक और भी बढ जाता है। इसीलिए नरेश चित्रा को स्वीकार नहीं करता बल्कि छोडकर चला जाता है।

6. अहंभाव

चित्रा में इतना अहंभाव है कि, जब नरेश उसे छोडकर निकल जाता है तो उस समय वह नहीं डरती, विचलित नहीं होती। घर से बाहर जाने के बाद यह भी नही पुछती कि वह कब वापस आएगा। इस संदर्भ में चित्रा का पति नरेश का कथन महत्त्वपूर्ण है वह कहता है की, ''बर्दाश्त करने की अद्भूत क्षमता थी। चित्रा में वह कुछ भी कहने या मानने में विश्वास नही करती। अजीब था उसका अहम। नरेश का तबादला जब पटना होता है तभी चित्रा उसके साथ पटना नहीं जाना चाहती बल्कि उसे दिल्ली में ही रहने के लिए कहती है। डिलीवरी के समय में भी चित्रा नरेश का सहारा नहीं लेती।

7. आधुनिक विचारों से प्रेरित :

कमलेश्वर ने लिखा हुआ 'तीसरा आदमी' इस उपन्यास में आधुनिकता का स्वीकार किया है। चित्रा और नरेश की शादी के बाद चित्रा इलाहाबाद के एक देहात में नहीं रहना चाहती बल्कि वह दिल्ली आना चाहती है। उसके पति की नौकरी देहात में होने से सभी पारिवारिक सदस्य इकठा रहते हैं यह बात भी चित्रा को पसंद नहीं है। वह अपना संसार अलग बिठाना चाहती है। जब दिल्ली में उनका तबादला होता है तब बाहर घुमना वह अधिक पसंद करती है। इतना ही नहीं तो वह भी पुरूषों के समान है इसीलिए नौकरी करना

चाहती है। नौकरी मिलने पर वह अच्छी तरह से निभाती है लेकिन नौकरी छोडकर पति के साथ वह जाना नहीं चाहती बल्कि पुरूषों जैसा स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है।

8. चारित्र्यहीन नारी :

चित्रा की शादी नरेश के साथ होती है। नरेश रेडिओ स्टेशन पर एनाउंसर का काम करता है नरेश का का तबादला इलाहाबाद से दिल्ली हो जाता है। आर्थिक अभाव होने की वजह से नरेश दिल्ली जैसे महानगरों में अपना गुजारा अच्छी तरह से नहीं कर सकता। तभी उसका ममेरा भाई सुमंत के कमरे में एवं सुमंत के साथ चित्रा और नरेश पति पत्नी एकसाथ रहते हैं। धीरे-धीरे सुमंत के प्रति चित्रा आकर्षित हो जाती है। भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर मान लिया है मगर चित्रा पति को छोडकर सुमंत के साथ संबंध रखती है। कुछ अधिक काम के लिए नरेश को कुछ दिन के लिए बाहर जाना पडता है। तब एक ही कमरे में सुमंत और चित्रा रहते हैं। यही से उनके संबंध ज्यादा बढते हैं। अपना छोटा देवर भाई के समान होकर भी चित्रा उसके प्रति आकर्षित हो जाती है। इतना ही नहीं तो जब पति को शक आता है तब यह दोनों भी अमान्य कर देते हैं। नरेश का संदेह बढ जाता है क्योंकि उसके पेट में बच्चा पल रहा है। कुछ बरस के बाद वह सुमंत को छोडकर अपने पति नरेश को अपनाती है मगर चित्रा को नौकरी लग जाती है उसी समय वह अपना अलग कमरा लेती है, मगर नरेश चित्रा का ऐसा व्यवहार देखकर अपना तबादला पटना करके वहाँ से निकल जाता है। तब चित्रा नौकरी छोडकर पति के साथ नहीं जाना चाहती। इस तरह चित्रा और सुमंत फिर से मिलकर एक ही कमरे में रहने लगते हैं। चित्रा रिश्ते को भूल जाती है अपने पति के साथ विश्वासघात करती है।

नरेश का चरित्र चित्रण

कमलेश्वर का 'तीसरा आदमी' उपन्यास आम-आदमी के जीवन को चित्रित करते हैं। इसमें निम्न मध्यवर्ग का वास्तविक रूप उभरा है। तीसरा आदमी इस उपन्यास का प्रमुख पात्र नरेश है जो चित्रा का पति है। वह नौकरी करता है वह रेडिओं स्टेशन में एनाउंसर का काम करता है। इलाहाबाद में उनका संयुक्त परिवार था नरेश का दिल्लीं में तबादला होने के बाद वहाँ पर रहने की समस्या थी। नरेश का ममेरा भाई सुमंत है। उसके कमरे में यह तीनों रहते है। उसी समय चित्रा और सुमंत में प्रेम संबध हो जाता है दोनों भी एक दूसरे को चाहते हैं। इसका संदेह नरेश को हो जाता है। पति-पत्नी में 'तीसरा आदमी' आने की वजह से दोनों में पारिवारिक विघटन हो जाता है उपन्यास का प्रधानपात्र नरेश का चित्रण निम्नलिखित है

1. आर्थिक अभाव से मजबूर पति :

'तीसरा आदमी' उपन्यास में नरेश प्रमुख पात्र है जो अपने परिवार के साथ इलाहाबाद में रहता है। उसका तबादला जब दिल्ली हो जाता है तब वह अधिक परेशान होता है क्योंकि दिल्ली जैसे महानगर में खाना पिना और रहना बहुत मुश्किल का काम होता है। लेकिन नरेश को सुमंत का सहारा मिल जाता है क्योंकि वह नरेश का दूर से ममेरा भाई होता है। उसी के कमरे में यह तीनों लोग रहते हैं। चित्रा और नरेश की अभी

शादी हुई थी मगर उनके पास दूसरा कमरा लेकर स्वतंत्र रूप से रहना असंभव था। तनखाह कम होने की वजह से नरेश दूसरा बच्चा गिराना चाहता है। नरेश आर्थिक अभाव से मजबूर पति के रूप में नजर आता है।

2. बेवफा पत्नी द्वारा परेशान

नरेश चित्रा के साथ शादी होने के बाद उससे बहुत प्यार करता है। संयुक्त परिवार होकर भी अपनी पत्नी की हिफाजत करता है। जब उसका तबादला दिल्ली महानगर में होता है। तभी यह पति-पत्नी सुमंत के साथ एक ही कमरे में रहते हैं। सुमंत चित्रा का देवर है। यह दोनों एक दूसरे के साथ खूलकर बाते करते हैं। चित्रा पति नरेश के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती, उसके नजदीक आने पर उसे पसीना आ जाता है। बल्कि सुमंत के साथ प्रसन्न रहती है। ऐसे ही एक दिन नरेश को नौकरी के काम के लिए लखनौ दौरा करना पडता है। वह दौरा सात दिन का होता है। नरेश दोहरी मानसिकता से ग्रस्त है। वह अपनी पत्नी से सुमंत के साथ कमरे में नहीं रख सकता और साथ में भी नहीं ले जा सकता, ऐसी हालत में आखिर वह चित्रा को सुमंत के पास रखता है। सुमंत और चित्रा का भाभी और देवर का पवित्र रिश्ता होकर भी दोनों आपस में शारिरीक संबंध रखते हैं। इतने अच्छे इमानदार, सुशील और नेक इन्सान नरेश के साथ चित्रा बेवफाई करती है। परिणामस्वरूप जब यह बात नरेश को पता चलती है, तो वह सुमंत और चित्रा को शक की दृष्टि से देखता है और अंत में उनका तलाक हो जाता है।

3) संयुक्त परिवार का पुरस्कर्ता :

नरेश शादी होने से पहले अपनी बहने, माता और पिता के साथ रहता है। उसे संयुक्त परिवार में रहना बहुत पसंद है। उसे तनखाह कम मिलती है। जब उसकी शादी चित्रा के साथ होती है, तो देहातों में सभी का गुजारा नहीं होता इसीलिए मजबुरी से वह अपना परिवार छोडकर दिल्ली जैसे महानगर में नौकरी करने के लिए जाता है।

4) मानसिक तणावग्रस्त :

नरेश जब अपना काम करके घरी आता है तो सुमंत और चित्रा के बातचीत और देखने जैसे व्यवहार से उसे संदेह होने लगता है। उसका यह शक जब सही निकलता है। तो वह तनावग्रस्त हो जाता है। चित्रा गर्भवती हो जाती है। नरेश अपना तबादला भोपाल कर देता है लेकिन वहाँ पर भी उसका मन नहीं लगता। उसका व्यवहार मनोरूग्ण जैसा हो जाता है। वह रात दिन उस प्रसंग के बारे में ही विचार करता है। सुमंत जैसे तीसरा आदमी आने से उनके रिश्ते में दरारें पड जाती है। वह मन ही मन कहता है कि, जब मैं चित्रा को अपनी बाँहो में लेता तो एक अजनबी गंध फूटती थी। जब मैं उसकी बाँहों पर हाथ रखता तो वहाँ दो हाथ पहले से ही मौजूद होते। वह छाया मुझे चित्रा के पास जाने से रोकती थी। जब मैं चित्रा की आँख में झाँकता था तो वहाँ चार आँखें झाँकती थी। वहाँ चार बाहे कस रही होती थी। चार ओठ उसे प्यार कर रहे होते। इस तरह नरेश को वही तीसरा आदमी बार-बार दिखाई देता है।

5) संतान के प्रति प्रेम करनेवाला :

नरेश और चित्रा के बीच सुमंत जब से तीसरा आदमी उनके जीवन में आता है, तो दोनों का परिवार विघटन हो जाता है। लेकिन उसके बाद चित्रा अपने बेटे को जन्म देती है। उसी समय नरेश का तबादला पटना हो जाता है। उसका जीवन वैफल्यग्रस्त हो जाता है। उसे चित्रा पर बहुत गुस्सा आता है। लेकिन वह बच्चे से बहुत चाहता है। यही पुत्र प्रेम उसे खामोश बैठने नहीं देता। बच्चे की खातिर नरेश सब भूलना चाहता है। इसीलिए वह चित्रा को फिर पटना बुलाता है और सब कुछ भूलकर सूखी संसार करना चाहता है।

6) नौकरी के प्रति निष्ठा :

नरेश इमानदार व्यक्ति है। आर्थिक तंगी की वजह से वह अपनी नौकरी के प्रति निष्ठा रखता है। कुछ काम के लिए जब उसे जाना होता है वह अपनी पत्नी को अकेले छोडकर नहीं जा पाता लेकिन उसकी मजबूरी होती है वह दौरे के लिए जाता है। इतना ही नहीं तो अपने पत्नी को सुमंत के साथ दिल्ली में छोडकर वह कभी लखनऊ तो कभी भोपाल या पटना जाता है। पत्नी और सुमंत का व्यवहार देखकर वैफल्यग्रस्त होता है मगर नौकरी नहीं छोडता।

7) संस्कारशील व्यक्तिमत्त्व :

चित्रा के साथ जब नरेश की शादी होती है, तब वे रेल से सफर करते हैं। रेल में परिवार मित्र, और बाराती होने की वजह से वह अपनी नई दूल्हन के पास नहीं बैठता बल्कि दोस्तों के पास जाता है। क्योंकि वह ग्रामीण संस्कृति को अपनाता है। उसके बदले में उसके पास सुमंत को बिठाता है। अंत में वही सुमंत उसके साथ विश्वासघात करता है। उसे संयुक्त परिवार में रहने की आदत है।

इस तरह नरेश ईमानदार, भावनाशील, संस्कारशील और नेक इन्सान है, वह कुटूंब वत्सल भी है। वह अपनी पत्नी और बेटे को बहुत चाहता है। सुमंत उसका सगा भाई नहीं है, बावजूद भी उसे सगे भाई जैसे व्यवहार करता है। अंत में वही सुमंत तीसरा आदमी बनकर उसका पारिवारिक जीवन उध्दवस्त कर देता है। इस तरह एक संस्कारी व्यक्तित्त्व बनकर वह सामने आता है।

1.3.3 'तीसरा आदमी' उपन्यास की भाषाशैली

कमलेश्वर दारा लिखा हुआ 'तीसरा आदमी' यह उपन्यास पति-पत्नी के नाजूक और संवेदनशील संबंधों के धरातल पर लिखा अपनी अलग विशेषता निर्माण करता है। तीसरा आदमी उपन्यास की भाषा प्रवाहपूर्ण है। उपन्यास में कलात्मक निखार, चित्रात्मकता आत्मिय बोध तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति आदि गुणों के दर्शन होते हैं। लेखक कम शब्दों में सभी प्रसंग पाठक के सामने लाने का प्रयास करते हैं। भाषा संप्रेषणीयता से युक्त है। सुमंत और चित्रा का एक दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर घूमने का प्रसंग चित्रात्मक लगता है। कही-कही भाषा में रूमानियतता दिखाई देती है। ''हवा में ताजगी थी महीनों बाद ऐसी मुक्ति का अहसास हो गया था। हम दोनों को जैसे पंख लगे थे। मैनें चित्रा की कमर में हाथ डाल दिया था और चलते चलते गुदगुदी घास पर पहूँच चुके थे। घास पर हम दोनों ही लेट गए थे और मैने उसकी कमर के गिर्द बाहे

डालकर अधलेटा सा हो गया था। चित्रा ने भरी-भरी आँखों से मुझे देखा था। उसकी आँखो में बल्वों की अक्स चिनगारिया की तरह फूट रहे थे। उसका शरीर हमेशा की तरह पसीज गया था। घास की भीगी महक के साथ उसके तन की महक चारों ओर भर गई थी। उसके ओठों से जैसे रस फूटने लगा था। और ओठों तथा कानों की किनारियों से लौ-सी निकल रही थी। मैने उसी मदहोशी में उसके होठों पर अपने होठ रख दिए थे कि किसी आहट ने हमें चौका दिया था।

'तीसरा आदमी' उपन्यास में संवाद काफी चुस्त गहरे और स्वाभाविक है। वे पात्रों की भाव विवशता और भावाभिव्यक्ति व्यक्त करते हैं। संवाद पात्रों के वार्तालाप द्वारा कथानक को विकसित करने में सक्षम है। कही-कही जगह पर संवाद स्वाभाविक लगते हैं। तो कही-कही नाटकीय भी। नरेश का वापस लौटने पर चित्रा और सुमंत व्दारा नरेश को मनाना नाटकीय लगता है। नरेश यह चित्रा का पति है। इस प्रसंग से नरेश का संदेह और भी पक्का हो जाता है। नरेश और चित्रा इस पति-पत्नी के कथन से संदेह की छाया स्पष्ट रूप से झलकती है। जैसे -''मैं यहाँ से ट्रान्सफर कर रहा हूँ।'' क्यों?

'यहाँ की जिंदगी मैरे वश की नहीं है।' 'क्या हुआ?' तुम्ही सोच लो

'अब हमारे तुम्हारे संबधों का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह तो तुम्ही सोच सकते हो।'

'मै ट्रान्सफर कर लुंगा और अकेला ही चला जाऊँगा। इसमें तो दोनों को आपत्ति नही होंगी।'

'तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही है। पता नहीं क्या अंट-शंट सोच लेते है खैर ठिक है ऐसे कुछ संवाद है। और नाटकीय लगते हैं।

'तुम तो नाराज हो कर भोपाल जा बैठे, यह भी नहीं सोचा कि मेरा क्या होगा? - क्यों?, घर पर क्या - क्या नहीं सुनना पडा मुझे लेकिन इस गुड्डु के खातिर सब बर्दाश्त कर लिया अगर यह पेट में न होता तो मै सचमूच कुछ कर लेती अपने लिए। लेखक ने उपन्यास का सृजन आत्मकथात्मक शैली मैं किया है। उसके जरीए पात्रों के मानसिक द्वंद्व का यथायोग्य वर्णन दृष्टव्य है। इस तरह भाषा में कुछ जगह पर संवाद नाटकीय लगते हैं। यह पात्रों की भावविवशता और भावाभिव्यक्ति व्यक्त करते हैं। इसमें प्रवाहपूर्ण कलात्मक निखार, चित्रात्मकता आत्मीय बोध तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति जैसे गुणों का दर्शन हो जाता है।

1.3.4 तीसरा आदमी उपन्यास में शिल्प सौंदर्य :-

आज का युग वैज्ञानिक युग है और परिवर्तनशील भी है। इस युग में उपन्यास का महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है। आजकल उपन्यासकार अपनी रचना का गठन करना अपना दायित्त्व समझ रहे हैं। हर एक की शिल्प विधि अलग-अलग ढंग की होती है। और उसी के अनुसार वह अपनी रचना का निर्माण भी करते हैं। शिल्प विधि वस्तुतः अंग्रेजी शब्द Technique का ही हिंदी रूप है। इसका तात्पर्य रचनाकार की रचना पद्धति है। भाषा शब्द कोश में शिल्प विधि का अर्थ इस प्रकार हैं। 'शिल्प का अर्थ है हाथ से कोई वस्तु बनाकर प्रस्तुत करना, कारीगरी, दस्तकारी कला संबंधी व्यवसाय या धंधा और विधि का अर्थ है - ढंग किसी कार्य

की रीति प्रणाली तरीका व्यवस्था युक्ति योजना। इस तरह शिल्प विधि का अर्थ इस प्रकार है कि कोई वस्तु बनाकर युक्ति युक्त रूप में प्रस्तुत करने की पध्दति या ढंग।

उपन्यास साहित्य में अनेक प्रकार की शिल्प विधियों का प्रयोग करना उपन्यासकार की एक कला ही होती है। इस पर अनेक विद्वानों के मत है इस संदर्भ में डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा लिखते है ''शिल्प विधि या शिल्प विधान का संबंध वस्तुत: उपन्यास के सृजन पक्ष से है। उपन्यासकार के मस्तिष्क में समाज की सच्चाईयाँ आदमी की हालत और परिवेश के यथार्थ संग्रहित होते रहते हैं। इसका वर्णन करने के लिए उसके मन में भावों का उव्देलन होता है। इसलिए उपन्यासकार जो कुछ कहना चाहता हैं या जो उसने कहा है, वह उपन्यास की भाववस्तु है और जिस ढंग से जिस ढाँचे में उसे प्रस्तुत किया जाता है वह उसका शिल्प विधान है। अत:उपन्यास के आंतरिक और बाह्य दो पक्ष होते हैं। शिल्प विधि उपन्यास का आंतरिक पक्ष होता है। दूसरें शब्दों मे कहे तो उपन्यास के सृजन की आंतरिक प्रक्रिया ही उपन्यास की शिल्प विधि होती है।

कमलेश्वर असाधारण, प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है। उनकी असाधारण जिद्द और जीवन के विस्तृत पट को बहुआयामी ढंग से प्रस्तुत करने की कलात्मक क्षमता। उनकी लेखन शैली का ही निखार है। सामान्य से सामान्य जीवन को कलात्मक और प्रभावशाली ढंग से उपस्थित करने में वे एक अनोखे साहित्यकार रहे हैं। कमलेश्वर के कलात्मक लेखन की विशेषता है- सांकेतिक निवेदन प्रणाली पैनापन, वर्णन शैली, मितव्ययिता, परम्पराओं से परे रहकर पात्रों और उसके प्रसंगों को प्रतिकात्मक बना देना और इन सबके माध्यम से कथावस्तु में विस्तृति लाने की पध्दति परिणामस्वरूप वें अपने लेखन को उच्च कोटि का आयाम एवं सामर्थ्य प्रदान करते है। कमलेश्वर के कलात्मक क्षमता को ध्यान में रखकर उनके लघु उपन्यासों की उनकी शिल्प विधि के आधारपर समीक्षा की जा सकती है।

'तीसरा आदमी', यह कमलेश्वर का लघु उपन्यास है। पति-पत्नी के संबंध बहुत ही कोमल आधारों पर टिके हुए होते हैं। उनके बीच में 'तीसरा आदमी' आने पर उन संबंधों को धूसर कर देती है। उपन्यास का सृजन आत्मकथात्मक शैली में हुआ है। संशयमात्र से संक्रमित मन के विदारक अनुभवों की यह एक कथा है। मध्यमवर्ग दाम्पत्य संबंधों मे स्थित संघर्ष को लेखक कलात्मक कौशल से अभिव्यक्त करता है। आत्मकथात्मक शैली में और सांकेतिक भाषा में लिखा हुआ यह लघु उपन्यास कस्बाई और महानगरीय जिंदगी की एक जुडती हुई कडी के रूप में सामने आता है। दिल्ली जैसे महानगर में जीवन टूटते और बिखरतें मूल्यों को कमलेश्वर ने बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर के लघु उपन्यासों में सांकेतिकता और संवेदन शीलता के कारण 'तीसरा आदमी' एक उत्कृष्ट लघु उपन्यास माना जाएगा। इसी में ही सृजनात्मकता स्पष्ट होती हैं।

'तीसरा आदमी' उपन्यास की कथा नरेंश का आत्मनिवेदन है। उपन्यास के प्रसंगों में उसका योगदान उल्लेखनीय है। नरेश अपनी सुशिक्षित और सुंदर पत्नी चित्रा को पाकर दिल्ली में तबादला हो जाता है। परंतु नरेश का मन मध्यवर्गीय और संयुक्त परिवार के संकटों और मर्यादाओं से प्रतिबध्द रहता है। महानगर में आने के बाद अपने आस्तित्त्व का बोध खत्म हो जाता है। आर्थिंक अभाव के कारण नरेश चित्रा को लेकर अपने

ममेरे भाई सुमंत के साथ एक छोटेसे कमरे में रहता है। दिल को तार-तार करनेवाली बात यह हैं कि चित्रा और सुमंत के बीच अनैतिक संबंध निर्माण होते हैं।

नरेश मानसिक व्दिविधा के जंजाल में फँस जाता है। नरेश समझ जाता है कि चित्रा सुमंत के प्रति खुश है। उसे वह खुलकर बातें करती है। इस संदर्भ में नरेश कहता है कि चित्रा के नस-नस में सुमंत का खून दौड रहा है। गर्भवती चित्रा बच्चे को जन्म देती है। बच्चे के प्रेम के खातिर नरेश चित्रा के साथ पुन:संबध स्थापित करता है क्योंकि तिसरा आदमी सुमंत दोनों के बीच आने की वजह से उनके संबध बिगडते हैं। इसीलिए नरेश अपना तबादला पटना करता है। संशयात्मक परिस्थितियों के तगडे दबाव के कारण नरेश असफल रह जाता है। तीसरी छाया उसे हमेंशा रोकती है। अंत में सुमंत को इस बात का पछतावा आना इसलिए वह आत्महत्या करता है। पर मन में गहराईयाँ वही रहती है। चित्रा और नरेश अंत तक नजदीक नहीं आते। अंत: मनुष्य का मन एक भयावह नर्क बन जाता है। जो उपन्यास में बार-बार नजर आता है। उपन्यास का प्रधान पात्र नरेश रेडिओ एनाउंसर है। उसके संस्कार मध्यवर्गीय है। वह शंका, संशय, पश्चाताप के पश्चात भी पत्नी चित्रा को बेगुनाह साबित करना चाहता है। नरेश उसके पावित्र्य पर विश्वास भी करता है पर मशिन की भाँति फिर संशय चक्र में फँस जाता है। तब उसका पति का अधिकार जागृत होता है। परिणाम स्वरूप दूबारा अपनी पत्नी के साथ वह संबंध नहीं बना पाता वह असफल हो जाता है।

चित्रा नरेश की पत्नी थी सारी बात जानकर भी वह तटस्थ थी। सच में उसकी प्रतिभा में सजीवता थी। चित्रा हमारे सामने आधुनिक नारी के रूप मे आती है। पति जब दिल्ली से पटना चला जाता है तभी वह दिल्ली में दूसरा कमरा लेकर हिंमत से बच्चे के साथ रहती है। सुमंत चित्रा से अनैतिक संबंध रखनेवाला एक सुंदर युवक था लेकिन नरेश के संसार में सुमंत आने से पारिवारिक विघटन हो जाता है। यह समझकर सुमंत भी एक दिन आत्महत्या कर लेता है। सचमूच वे मानसिक वैफल्य ग्रस्त हो गए है। नरेश मात्र हमेशा प्रयत्नशील रहता है। अपने जटिल और संश्लिष्ट संबंधों की गुत्थि को सुलझाने में। पर वह अंत तक कामयाब नहीं हो सकता। कमलेश्वर की संवाद दृष्टि बिल्कुल पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुरूप है। उसमे शक की काया ओतप्रोत भरी है।

महानगर की कंगालता खोखली बस्ती आदि की विशिष्टता उपन्यास को विशिष्ट आयाम प्रदान करते है। मनुष्य का मन तो पहले से ही नरक नहीं होता है। आसपास का परिवेश उसपर हावी हो जाता है। तब अनायास उसमें से दुर्गंध निकलती है। संडाध भरे वातावरण में न केवल कपडे या शरीर से दुर्गंध निकलती है बल्कि मनुष्य मन से भी निकलती है। सडते कूडे या मलबे की महक से दिमाग भन्नाटे मारने लगता है। भीगे कपडों की बदबू से माथा चकराने लगता था और गीले तौलियों से बदन पौछते-पौछते सभी से तनों से बदबू फूटने लगी थी। बदबू मारने के लिए अगर उपर से ढेर सा पावडर छिडक भी लिया। तब वह तेज महक और भी असहनीय हो जाती और कुछ देर में शरीर चिपचिपाने लगता यह बडी बुरी हालत थी। गली में लेटना मुमकीन नहीं था। इसलिए हम तींनो ही नीचे जमीन पर जैसे तैसे गुजारा कर लेते थे। इसलिए हमारे आसपास का परिवेश ही मनुष्य की विवशता का कारण होता है।

'तीसरे आदमी' उपन्यास की भाषा प्रतीकात्मक तथा चित्रात्मकता से युक्त है। नरेश जो कुछ कहना चाहता है विशेष रूप से अंतरंग प्रसंगों का वर्णन केवल संकेतों से कहलाता है। इस स्थिति की वजह से मन का संदेह आंतरिक द्वंद्व भीतरी घृणा तथा व्देष आदि भाव तीखे पैने होकर उभर आते हैं। शक की छाया एक प्रतीक मात्र है।

'तीसरा आदमी' मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन और समस्याओं का अंकन करता है। यह स्थिति केवल दो तीन पात्रों की न होकर समूचे मध्यवर्ग समाज की है। इसे कहना ही कमलेश्वर का उद्‌देश रहा है। इन समस्त प्रसंग और चरित्रों के अंकन मे तटस्थ लगनेवाले कमलेश्वर प्रसन्नता के साथ मध्यमवर्गीय नैतिक संस्कारों पर प्रहार करते हैं। इन संस्कारों में प्रगति की ओर उपर उठ पाने की क्षमता नही हैं। मर्यादाओं को लाँधकर परें पहुचने की शक्ति से ये हीन है। स्त्री देह की पवित्रता का बडा महत्त्व है। इन संस्कारों को नैतिकता में पुरूष प्रधान समाज में होनेवाली पुरूषों की तानाशाही हमारी चेतना पर हावी है, मज्जागत प्रभाव है। यह धमनियों में दौडती है। वह क्षणिक मोह है। खासतौर पर अगर यह नारी को मोहित करता है तो यह भुलावा हमारे लिए आज भी अक्षम्य है। लेखक इन सब बातों का परोक्ष रूप में अभिव्यक्त करता है। जिसे संवेदनशील मन अपने आप समझ लेता है। शीर्षक से पता चलता है कि तीसरा आदमी एक छाया मात्र है। चित्रा और नरेश के बीच सुमंत तीसरा आदमी है और चित्रा सुमंत के बीच नरेश तीसरा आदमी है। इसलिए कमलेश्वर को 'तीसरा आदमी' यह नाम उपन्यास को अच्छा लगा क्योंकि यह शीर्षक अपना औचित्य रखता है।

कमलेश्वरने 'तीसरा आदमी' में दिल्ली के निम्न मध्यमवर्गीय परिवेश में छोटे कमरों में सडती हुई जिंदगी के तस्वीर को पेश किया गया है। महानगरों में जीवन जीता हुआ मध्यवर्गीय परिवार दम घोट-घोट कर मानसिक त्रस्त होकर जीवन जी रहा है। उस जीवन में वह कितनी बार दम तोडता है और कितनी बार वापिस जीवित भी हो जाता है। शायद इसे ही जीवन माना गया है।

1.3.5 'तीसरा आदमी' उपन्यास में लोक संस्कृति :-

मानव समाज और संस्कृति का संबंध अन्योन्याश्रित है। मानव समाज की इकाई है और समाज संस्कृति का प्रमुख आधार है। लोकसंस्कृति के अंतर्गत जनजीवन से संबंधित सभी आचार विचार, विधि-निषेध, विश्वास मान्यताएँ, प्रथाएँ, परम्पराएँ, धर्म अनुष्ठान आदि का समावेश होता है। लोकतत्त्व में हमारी संस्कृति की पूरी झाँकी विद्‌यमान है। भारतीय संस्कृति का सचा स्वरूप ग्रामीण जीवन में प्रतिबिम्बित होता है। जनजीवन की कलाएँ, पर्व, त्यौहार, रूढियों, प्रथाएँ मनोरंजन आदि विभिन्न तत्त्वों का सहयोग संस्कृति में पाया जाता है। संस्कारों के नीव पर ही भारतीय संस्कृति सुरक्षित है। प्रत्येक समाज अपने मूल्यों और धारणाओं को सजीव एवं सुरक्षित रखने के लिए उनके प्रति निष्ठा और विश्वास रखता है। कमलेश्वर के उपन्यास अलग-अलग युगों की संस्कृति की व्याख्या करते हैं। उन युगों में प्रचलित लोकसंस्कृति एवं तत्त्वों का सहज रूप से चित्रन मिलता है। विभिन्न स्तरों के लोगो के खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार

वेशभूषा, दिशा-शिक्षा, संस्कार पर्व, उत्सव, लोकविश्वास, धार्मिक मान्यता आदि का उल्लेख मिलता है। कमलेश्वर के उपन्यास तीसरा आदमी उपन्यासों में लोकसंस्कृति का उल्लेख किया है।

भारतीय संस्कृति में विवाह परंपरा को बहुत महत्त्व होता है। विवाह संस्कार पति-पत्नी को आजीवन एक दूसरे का साथ देने का पवित्र बंधन है। हिंदू संस्कृति में अग्नि को साक्षी मानकर विवाह संपन्न होता है। जिस समारोह में सभी रिश्तेदार और मेहमान समिलित होते है। हिंदू धर्मशास्त्र में विवाह को इतना महत्त्व है कि पति-पत्नी के बिना कौन से भी धार्मिक कार्य नहीं कर सकते। किसी एक का न होना समाज को मान्य नहीं है। पति के घर दूल्हन का स्वागत लक्ष्मी समझकर किया जाता है। 'तिसरा आदमी' उपन्यास की चित्रा का नरेश के घर दुल्हन के रूप में सभी लोंगो ने सन्मान किया। विशेष रूप से अपने घर में परिवार के लोगों ने चित्रा का स्वागत किया। सभी ने उसे पसंद किया और उसके रूप की सभी ने तारीफ की। नरेंश के बहनों ने अपनी भाभी चित्रा को पसंद किया। नयी दुल्हन का परिवार के लोगों के व्दारा काफी सन्मान होता है। विवाह पद्धतियाँ जातिधर्म के अनुसार भिन्न होती है।

भारतीय संस्कृति में परंपरागत रूप में पति-पत्नी के अतिरिक्त परिवार में माता-पिता, पति-पत्नी, भ्राता-भगिनी, पुत्र-पुत्री, देवर-भाभी, बहु और अन्य नाते रिश्तेदार भी रहते हैं। परिवार के सदस्य एक दूसरे के सुख दु:ख में सम्मिलित होते हैं। परिवार के सभी सदस्य एक ही मकान में रहते हैं। एक ही रसोई में पका हुआ भोजन करते हैं। अपने संयुक्त परिवार के संस्कार हावी होने के कारण ही 'तीसरा आदमी' उपन्यास का नरेश कहता है परिवार मेरा भी अच्छा था कि उसमें रहते हुए मैंने कभी अपने अलग घर की कल्पना नहीं की थी इसलिए अपनी अलग पसंद की बात भी दिल में नहीं आई थी। तब तक घर में जो कुछ होता था वह सबकी पसंद से ही होता था कोई भी चीज आती भी तो घर के लिए आती थी किसी एक के नाम नहीं। संयुक्त परिवार में सभी सदस्यों की उन्नति के लिए सहयोग, सामाजिक गुणों के शिक्षा, श्रमविभाजन व्यक्तिवादी पध्दति पर नियंत्रण, एक दूसरे के प्रति आत्मियता, निष्ठा तथा प्रेमभाव के संस्कार परिवार के मुखिया के व्दारा किए जाते हैं।

'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का आदर्श एवं लोकमंगल की भावना कमलेश्वर के साहित्य की विशेषता है। सत्य अहिंसा, त्याग, सेवा, भारतीय संस्कृति के अभिन्न तत्त्वों के अनुसार उन्होंने सत्य तलाशने का प्रयास किया है। समाज में प्रचलित अन्याय अत्याचार पाखंड हिंसाचार तथा तमाम अमानवीय तत्त्वों को समाप्त करते हुए विभिन्न जाति धर्मो तथा विभिन्न देशों के बीच उन्होंने समन्वय का प्रयास किया है। संक्षेप में कह सकते हैं कि कमलेश्वर के उपन्यासों में जनजीवन से संबधित सभी आचार-विचार विधि प्रथाएँ रीति-रिवाज, परम्पराए धर्म अनुष्ठान का चित्रण हुआ है। जिसमें जन जीवन का रहन-सहन, खान-पान, शकून-अपशकुन विवाह अंधविश्वास तथा लोकमंगल की भावना यह सभी संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग है। भारतीय संस्कृति के अनुसार उदारता, सहिष्णूता, दया, क्षमा, त्याग, सेवा, कर्तव्य-निष्ठता, सत्यनिष्ठा, निर्भिकता अन्याय के प्रतिकार में निर्भयता समन्वय देशसेवा तथा राष्ट्रप्रेम की भावना अभिव्यक्ति लोकसंस्कृति की भावना से अभिभूत है।

1.3.6 'तीसरा आदमी' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता

कमलेश्वर जी नें 'तीसरा आदमी' उपन्यास लिखकर भारतीय समाज व्यवस्था पर प्रहार किया है। 'तीसरा आदमी' यह उपन्यास संशय की छाया में रोचक उपन्यास है। पती-पत्नी जैसे पवित्र सुखी एंव खुशहाल जीवन में किसी तीसरा आदमी आनेपर या दोंनो के बीच में तीसरी छाया का थोडा आभास भी होता है तो शक की आँधी से उनका जीवन तबाह हो जाता है। उन दोनों का भी वैवाहिक जीवन नष्ट हो जाता है। मतलब इनका तलाक भी हो सकता है। पति-पत्नी के संबंध इतने कोमल होते हैं कि वे अपने बीच किसी भी प्रकार का अंतर बर्दाश्त नहीं करते कभी भूल से भी इन दोंनो के बीच तीसरे आदमी ने प्रवेश किया तो उनका पूरा जीवन उध्द्वस्त हो जाता है। व्यक्ति जीवन के इसी उलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है।

लेखक प्रस्तुत रचना को अत्यंत विश्वसनीय ओर यथार्थ शैली में अंकित करता है। संकेतों द्वारा मध्यवर्गीय नैतिक संस्कारों पर प्रहार भी करता है। इन संस्कारों की नैतिकता में स्त्री देह की पवित्रता को अत्याधिक महत्त्व है। परिणाम स्वरूप पुरूष के भीतर का एक और पति जागृत होता है। पर नरेश जैसे पति के पास जीने के सिवाय कुछ रास्ता भी नहीं था। 'तीसरा आदमी' मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन और समस्याओं का अंकन करता है। यह स्थिति सिर्फ दो-तीन पात्रों की न होकर संसार के सभी मध्यवर्ग समाज की हैं। 'तीसरे आदमी' के रूप में कमलेश्वर जी का यह लघु उपन्यास वर्तमान, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधारपर व्यक्ति चेतना के परिवर्तनीय स्वरूप का चित्र खिंचा है। तीसरा आदमी आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति की उपज है। लेकिन कमलेश्वर ने इसे संदेह की समस्या के आधारपर प्रस्तुत किया है।

स्त्री देह की पवित्रता को बहुत बडा महत्त्व है। पुरूषप्रधान समाज में होनेवाली पुरूषों की तानाशाही हमारी चेतना पर हावी है। खाँसकर क्षणभर का मोह नारी को मोहित करता है यह भूलावा आज भी हमारे लिए अक्षम्य है। लेखक कमलेश्वर इन सब बातों को परोक्ष रूप में अभिव्यक्त करण हैं। जिस प्रसंग से संवेदनशील मन अपने आप को समझ लेता है। शीर्षक से ज्ञात होता है की 'तीसरा आदमी' एक छाया मात्र है। चित्रा और नरेश के बीच सुमंत तीसरा आदमी है और चित्रा सुमंत के बीच ये नरेश तीसरा आदमी है। अंत: शीर्षक अपना औचित्य रखता है और समन्वित स्थिति को स्पष्ट करने में भी सामर्थ्य रखता है। इसलिए 'तीसरा आदमी' यही शीर्षक सही लगता है।

1.3.7 'तीसरा आदमी' उपन्यास का उद्देश्य

हर साहित्यिक रचना का कोई-न कोई उद्देश्य होता है। रचनाकार एक निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर अपनी रचना का सृजन करता है। वह अपने उद्देश में कहाँ तक सफल हुआ है यह उनकी रचना या कृति पर ही निर्भर होता है। हर रचना का उद्देश अलग-अलग रूपों को लेकर उपस्थित होता है। कमलेश्वर जी अपने लघु उपन्यास के व्दारा लघु उपन्यास विधा को एक नया और सुनिश्चित आयाम प्रदान करते हैं। उनका हर उपन्यास जीवन के विशाल पट को सामने रखता है। उनकी प्रत्येक कृति सोद्देश्य है। इसी माध्यम

से वे संकेत भी देते हैं। यही उनकी खूबी रही है। साथ ही साथ इसी में उनकी सफलता और अलगता नजर आती है।

'तीसरा आदमी' इस उपन्यास में पत्नी जैसे कोमल रिश्तों में किसी तीसरे का प्रवेश और बाद में आनेवाली घातक परिणति अंकित करता है। दूसरी बात यह भी है कि महानगर में आकर कस्बे या छोटे शहर का आदमी टूटता बिखरता जाता है। नरेश और चित्रा के बीच सुमंत युवक आ जाता है। नरेश का मानसिक संघर्ष एक विकार के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत होता है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक नरेश सुमंत की ओर शक को दृष्टि से देखता है। स्त्री-पुरूष या पति-पत्नी के संबंध इतने कोमल आधारपर स्थिर होते हैं कि वे अपने बीच किसी भी प्रकार का अंतर सह नहीं पाते। कभी भूल से भी यह दोनों पति-पत्नी के बीच किसी ने प्रवेश किया तो दोंनो की भी जिंदगी उध्दवस्त हो जाती है। वे दोंनो भी मन से टूट जाते हैं। व्यक्ति जीवन की इसी उलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है। तीसरा आदमी के रूप में यह छोटा उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर व्यक्ति चेतना के बदलते हुए स्वरूप का एक चित्र है। वस्तुत: यह स्थिति किसी एक व्यक्ति या परिवार की नहीं है। अपितु संपूर्ण निम्न मध्यवर्गीय समाज की है। इसलिए यह स्थिति सामाजिक दृष्टि से व्यापक पट पर आधारित है। तीसरा आदमी मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन और समस्याओं का अंकन या परीक्षण करता है। यह स्थिति सिर्फ दो तीन पात्रों की न होकर पूरे मध्यवर्ग समाज की है। इसे ही संकेत रूप में कहना कमलेश्वर का उद्देश्य रहा है।

1.4 'तीसरा आदमी' उपन्यास की समस्याएँ :-

आजादी के बाद हिंदी साहित्य में जितने भी कथाकार आये हैं उनमें कमलेश्वर जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। अपनी प्रतिभा के बल पर एक सफल व्यक्ति और सफल साहित्यकार के रूप में उनकी अलग ख्याति प्रसिध्द है। उनके सभी उपन्यास लघु उपन्यास की कोटि में आते हैं। वे आकार में छोटे होकर भी उपन्यासों के समान जीवन के विविध आयामों को स्पर्श करते हैं। कमलेश्वर अपने लघु उपन्यासों में प्राय:निम्न एवं मध्यवर्ग के समाज को केंद्र में रखते हैं ओर उनके सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक, वैयक्तिक, तथा पारिवारिक पक्ष को अलग-अलग कोनों से रूपायित करते हैं।

'तीसरा आदमी' यह सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास का मूल विषय मध्यवर्गीय संस्कारों में पले कुष्ठाग्रस्त और आर्थिक दृष्टि से त्रस्त दाम्पत्य जीवन। पति-पत्नी के नाजूक कोमल रिश्तों में किसी तीसरे आदमी का प्रवेश उसका जीवन कैसे तहस-नहस कर देती है। यही इसका मूल विषय है। नरेश का तबादला दिल्ली हो जाता है। साथ में वह अपनी पत्नी चित्रा को लेकर जाता है। दिल्ली जैसे महानगर में नरेश को किसी से पहचान नहीं थी। असका एक ममेरा भाई दिल्ली में रहता है उसका नाम सुमंत है। सुमंत के साथ वे दोंनो पति-पत्नी एक कमरे में रहते हैं। कुछ दिन के बाद सुमंत और चित्रा में अनैतिक संबंध प्रस्थापित होते हैं। इस समय नरेश की बेचैनी और घूटन शुरू हो जाती है। उसके मन का संदेह और भी मजबूत हो जाता है। नरेश पारिवारिक स्नेह और आत्मियता के नाते चित्रा के साथ समझौता भी करता है। परंतु उसे बिखरने देर

नहीं लगती। नरेश और सुमंत में दूरी तो पड जाती है परंतु अंत में सुमंत आत्महत्या करता है। उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक शक की छाया मँडराती है संशय मात्र से संक्रमित मन के विदारक अनुभव यही इसका मूल है।

'तीसरा आदमी' उपन्यास की मूल समस्या आर्थिक समस्या है, जिसकी वजह से अनेक समस्याएँ उपन्यास में देखने को मिलती है। नरेश को पहली नौकरी थी फिर भी उसे अच्छी नौकरी चाहिए थी। दिल्ली जैसे महानगर में सुमंत के छोटे से मकान में रहना, अंत में चित्रा द्वारा स्कूल की नौकरी स्वीकार करना इन सभी का प्रमुख कारण आर्थिक अभाव ही था। चित्रा के पेट में दूसरा बच्चा पल रहा था, मगर उसको रखने के लिए चित्रा की इच्छा थी, मगर नरेश का विरोध था। इस संदर्भ में दोनों के झगडें होते थे। 'मेरी इच्छा थी कि उसे दुनिया में न लाया जाए, मेरी हालत ऐसी नहीं थी कि मैं एक और को पाल सकूँ यह वस्तुस्थिति थी। इस बात से स्पष्ट हैं कि उनमें आर्थिक अभाव विद्‌यमान था।

'तीसरा आदमी' इस उपन्यास में शक की छाया को कमलेश्वर जी मनोवैज्ञानिकता से अंकित करते हैं। जो की मनुष्य में स्थित एक समस्या के रूप में विद्‌यमान है। पति-पत्नी के बीच किसी तिसरी छाया उसका हरा-भरा जीवन उखाड देती है। उपन्यास में आरंभ से अंत तक शक की छाया मँडराती है। नरेश इस तुफान में छटपटाता रहता है। इसलिए शक के रूप में 'तीसरा आदमी' में मनोवैज्ञानिक समस्या बढती है। संक्षेप में कमलेश्वर जी अपने लघु उपन्यास द्वारा कोई न कोई महत्तपूर्ण समस्या को जन्म देते है। उनकें उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक आदि कई समस्या दृष्टव्य है। इन समस्याओं के जरिए वे उपन्यास में रोचकता और जीवंतता पैदा करते हैं। साथ ही साथ उसे सही दिशा भी प्रदान करते हैं। उनकी विशेषता आम लोंगो की रही है। वही उनके उपन्यासों का केंद्र भी बनती है।

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) अजीब - विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनुठा, अनदेखा
2) फबतियों - हास्य या व्यंग्य
3) लिहाज - व्यव्हार या बर्ताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्व ध्यान, लज्जा, शर्म
4) शोख - धृष्ट, नटखट, चंचल, पाजी, चुलबुला, गहरा और चमकदार
5) ठोढी - औठों के नीचे का गोलाई लिए हुए उभरा हुआ भाग, चिबूक दाढी
6) सराहा - भाव, प्रशंसा, तारिफ
7) ओछेपन - तुच्छ, क्षुद्र, छिछोरा, जो गहरा न हो, हलका
8) मजमून - किसी लेख आदि का विषय
9) नहर - सिंचाई यात्रा आदि के लिए छोटी नदी के रूप में तैयार किया हुआ कृत्रिम जलमार्ग

10) उफान – गरमी पाकर फेन के साथ उपर उठना, उबाल

11) गुसलखाना – नहाने का कमरा स्नानागार

12) इत्मीनान – संतोष

13) तश्तरी – छोटी छिछली थाली के आकार का छिछला, हलका बर्तन

14) मलाल – दु:ख, रंज

15) मसरफ – व्यवहार उपयोग

1.6 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :–

1.6.1 समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उचित विकल्प का चयन करें।

1) कमलेश्वर का जन्म उत्तर प्रदेश के .... में हूआ।

   अ) लमही   ब) हाथरस   क) मैनपुरी   ड) सीही

2) कमलेश्वर का पूरा नाम......है।

   अ) कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना   ब) कमलेश्वर मिश्र

   क) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना   ड) कमलेश सहारिया

3) कमलेश्वर का जन्म दि........को हुआ।

   अ) 6 जुलाई 1934   ब) 6 जनवरी 1932   क) 6 जनवरी 1943   ड) 29 नवंबर 1925

4) कमलेश्वर के पत्नी का नाम....था।

   अ) भाग्यश्री   ब) गंगोत्री   क) सावित्री   ड) गायत्री

5) कमलेश्वर के व्यक्तित्त्व का..... रूप हमारे साथ मे आता है।

   अ) यथार्थवादी   ब) आदर्शवादी   क) पुराणमतवादी   ड) आधुनिकवादी

6) कमलेश्वर ने ....मासिक के संपादन का काम किया

   अ) बहार   ब) सरस्वती   क) बयान   ड) गगनांचल

7) ....यह उपन्यास मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है।

   अ) लौटे हूए मुसाफिर   ब) तमस   क) तीसरा आदमी   ड) काली आँधी

8) कमलेश्वर का 'तीसरा आदमी' यह उपन्यास वर्ष .... में लिखा गया।

   अ) 1970   ब) 1964   क) 1977   ड) 1962

9) कमलेश्वर का प्रथम उपन्यास.......है।

अ) अक बंगला ब) तीसरा आदमी

क) एक सडक सत्तावन गलियाँ ड) आगामी अतित

10) 'तीसरा आदमी' उपन्यास का नायक....है।

अ) सुरेश ब) नरेश क) सुयश ड) गणेश

11) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की नायिका का नाम....है।

अ) चित्रा ब) सुमित्रा क) सावित्री ड) सुमन

12) 'तीसरा आदमी' उपन्यास में चित्रा के देवर का नाम .... था।

अ) हेमंत ब) बलवंत क) सुमंत ड) विशाल

13) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की भाषा....है।

अ) स्थिर ब) अस्थिर क) प्रवाहपूर्ण ड) कलात्मक

14) 'तीसरा आदमी' यह उपन्यास आर्थिक और......परिस्थिति की उपज है।

अ) सांस्कृतिक ब) धार्मिक क) राजनीतिक ड) सामाजिक

15) उपन्यास का नायक नरेश.....नौकरी करता था।

अ) प्रोफेसर ब) इंजिनिअर क) रेडिओ एनाउन्सर ड) अनुवादक

16) 'तीसरा आदमी' उपन्यास ..... पारिवारिक जीवन और समस्याओं का अंकन करता है।

अ) उच्चवर्गीय ब) निम्नवर्गीय क) मध्यवर्गीय ड) कृषक

17) 'तीसरा आदमी' उपन्यास में नरेश और चित्रा के बेटे का नाम.....है।

अ) पिंटू ब) गुडडू क) चिंटू ड) रिंकू

18) नरेश शादी के पहले....में रहता था।

अ) इलाहाबाद ब) कोलकत्ता क) दिल्ली ड) पटना

19) चित्रा और नरेश दिल्ली में......के साथ रहते थे।

अ) दिपक ब) सुमंत क) दुष्यंत ड) सुशांत

20) सुमंत के..... के साथ प्रेम संबध थे।

अ) चित्रा ब) सुमित्रा क) शुभांगी ड) आरती

1.6.2 निम्नांकित प्रश्नों का उचित मिलान कीजिए।

1. 'तीसरा आदमी' के पात्रों का उचित मिलान कीजिए।

सूची 1	सूची 2
1. नायक	अ) गुड्डू
2. नायिका	ब) सुमंत
3. सहपात्र	क) चित्रा
4. गौण पात्र	ड) नरेश

उत्तर : 1. 1 (अ), 2 (ड), 3 (क), 4 (ब)

2. 1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)

3. 1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

4. 1 (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

2. प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर से जुड़े तथ्यों का मिलान कीजिए।

सूची 1	सूची 2
1. नाम	अ) गायत्री
2. जन्म	ब) यथार्थवादी
3. पत्नी	क) मैनपुरी
4. व्यक्तित्त्व	ड) कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना

उत्तर :1. 1 (अ), 2 (ब), 3 (क), 4 (ड)

2. 1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)

3. 1 (क), 2 (ड), 3 (अ), 4 (ब)

4. 1 (ड), 2 (क), 3 (अ), 4 (ब)

1.6.3 निम्नांकित प्रश्नों की सही-गलत की पहचान करें

1. निम्नलिखित में से गलत वाक्य को पहचानें।

अ) नरेश रेडिओ एनाउन्सर में काम करता है।

ब) सुमंत प्रेस में काम करता था।

क) चित्रा स्कूर में नौकरी करती है।

ड) नरेश और चित्रा अध्यापक हैं।

उत्तर – ड

2. 'तीसरा आदमी' के सही विषयवस्तु को पहचानें।

अ) पति–पत्नी के आपसी संबंध

ब) रिश्तों में टकराहट

क) नैतिक–अनतिकता की पहचान

ड) उपरोक्त सभी

उत्तर – ड

1.7 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) – क	11) – अ
2) – अ	12) – क
3) – ब	13) – क
4) – ड	14) – ड
5) – अ	15) – क
6) – अ	16) – क
7) – क	17) – ब
8) – ब	18) – अ
9) – क	19) – ब
10) – ब	20) – अ

1.6.2 उचित मिलान

1. ड
2. ड

1.6.3 सही–गलत की पहचान

1. 2 1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)
2. 4 1 (ड), 2 (क), 3 (अ), 4 (ब)

1.8 'तीसरा आदमी' उपन्यास का सारांश

'तीसरा आदमी' यह कमलेश्वर ने सहज शैली में लिखा गया उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास लंबी कहानी की तरह है। कहानी में स्त्री-पुरूष संबंधों के बीच ''तीसरे आदमी'' की उपस्थिति को विशिष्ट शैली में लिखा गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र नरेश है, जो दिल्ली में रेडिओ स्टेशन पर रेडिओ एनाउंसर की नौकरी करता है। उसकी शादी चित्रा से होती है। शादी होने के उपरांत नरेश अपने दूर के रिश्ते के भाई सुमंत की पहचान चित्रा से हो जाती है। आर्थिक तंगी होने की वजह से नरेश अपनी परिवार की परवरिश अच्छी तरह से नहीं निभा पाता, इसलिए नरेश अपनी पत्नी चित्रा के साथ सुमंत के कमरे में एक साथ रहता है। सुमंत की शादी नहीं हुई है। धीरे-धीरे सुमंत का परिचय चित्रा भाभी से हो जाता है। कभी कभी नरेश को एनाउंसर दौरा करने के लिए लखनऊ जाना पडता है। नरेश अपनी पत्नी चित्रा को सुमंत के साथ नहीं छोडना चाहता है, लेकिन उसकी मजबूरी है। वह उसे साथ नहीं ले जा सकता है। इसी समय पर सुमंत और चित्रा का प्रेम हो जाता है। चित्रा अपने पति को छोडकर सुमंत से प्यार करती है। इस तरह नरेश और चित्रा के सुखी पारिवारिक जीवन में सुमंत तीसरा आदमी बनकर आता है। तभी से दोंनों के संबंध में दरारें पड जाती है। वे आपस में झगडे करने लगते हैं। उनमें अंतर्गत कलह हो जाता है। इसे लेखक कमलेश्वर जी ने सामाजिक आर्थिक जीवन से जोडकर विशिष्ट बना दिया है। इस तरह ये कहानी मध्यवर्ग परिवार की दाम्पत्य जीवन की उच-निच और असहज संबंधों का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती है। मध्यवर्गीय परिवारों के संस्कारों कुंठाओं आर्थिक विसंगतियों का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण कमलेश्वर के 'तीसरा आदमी' उपन्यास में है।

'तीसरा आदमी' मैं शैली में लिखा गया उपन्यास है। जिसमें प्रथम पुरूष मैं और अपनी पत्नी की कहानी कहता है। इसके बीच तीसरे आदमी की उपस्थिति होती है। उपन्यास के अंतर्गत तीसरे आदमी और पत्नी के बीच अंतरंग संबंधों का मुक्त चित्रण किया गया है। यह चित्रण संकेतों मे उभरता हैं। चूँकि में दृष्टा नही है। अंत: विशेष स्थिति के कारण मन का संदेह और अतिरिक्त व्दंन्द उसके भीतर का घृणा भाव द्वेष बहुत तीखा होकर उभरता है। इस प्रक्रिया में यह बहुत विश्वसनीय बन जाता है। 'तीसरा आदमी' इस उपन्यास में समकालीन जीवन के विभिन्न रूपों की पर्याप्त और विविध झाँकी मिलती है। मनुष्य कई एक परिचित अपरिचित रूपों के परिवेश और उसके साथ संबध के मानवीय संबंधों और परिस्थितियों के चित्र मिलते हैं। इस उपन्यास में जीवन के कटू सत्यों के सुक्ष्म और मार्मिक रूप अनुभूति की तीव्रता और विविधता के अगन्य स्तरों में बिखरे पडे है। लेखक कमलेश्वर जी ने 'तीसरा आदमी' 'इस उपन्यास' में चित्रित किया है।

1.9 स्वाध्याय :-

1) कमलेश्वर का व्यक्तित्व और कृतित्त्व को समझाईए।
2) कमलेश्वर के साहित्य सृजन पर प्रकाश डालिए।
3) कमलेश्वर का यथार्थ जीवन तथा निम्न मध्यवर्ग का वास्तविक रूप उनके साहित्य में चित्रित हुआ उसे विस्तृत रूप से समझाईए।

4) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

5) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की नायिका चित्रा का चरित्र चित्रण कीजिए।

6) 'तीसरा आदमी' उपन्यास के आधार पर स्त्री पात्र और पुरूष पात्र के योगदान को रेखांकित कीजिए।

7) 'तीसरा आदमी' उपन्यास के कथा शिल्प पर प्रकाश डालिए।

8) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की भाषा शैली स्पष्ट कीजिए।

9) 'तीसरा आदमी' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ स्पष्ट कीजिए।

10) 'तीसरा आदमी' उपन्यास की शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

1.11 क्षेत्रिय कार्य :-

1) कमलेश्वर के जीवन पर एकांकी लिखिए।

2) उपन्यास में आये हुए पात्रों की संवाद योजना छात्र को पात्र बनाकर संवाद योजना को अभिव्यक्त कीजिए।

3) चित्रा और नरेश का संवाद अथवा ।

4) चित्रा और सुमंत का संवाद ।

उपयुक्त संवाद को पंधरा से तीस मिनटों में लघुचित्रपट बनाकर दो पात्रों के अभिनय व्दारा रंगमंच पर खेलने का प्रयास कीजिए।

1.12 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :-

1) तीसरा आदमी (उपन्यास) - कमलेश्वर - राजपाल अॅन्ड् सन्स् कश्मीरी गेट नई दिल्ली प्रथम संस्करण प्रकाशन वर्ष 1992

2) कमलेश्वर का कथा साहित्य - माधुरी शाह - साहित्य रत्नालय कानपुर प्रकाशन वर्ष - 1982

3) कमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान - डॉ. रेखा शर्मा - मिलिंद प्रकाशन हैद्राबाद प्रकाशन वर्ष - 1991

4) कमलेश्वर के लघु उपन्यासों का शिल्प - विधान - डॉ बबन शंकर सातपुते - विनय प्रकाशन हंसपुरम कानपुर प्रथम संस्करण प्रकाशन वर्ष - 2021

5) कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति - डॉ. रणसुभे - पंचशील प्रकाशन जयपुर प्रकाशन वर्ष 1977

6) कमलेश्वर - मधुकर सिंह - शब्दकार प्रकाशन दिल्ली - प्रकाशन वर्ष - 1986

❑❑❑

इकाई–2
‘कितने पाकिस्तान’ – कमलेश्वर

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास का परिचय।

2.3.2 ‘कितने पाकिस्तान’ की कथावस्तु।

2.3.3 ‘कितने पाकिस्तान’ : कथावस्तु की समीक्षा।

2.3.4 ‘कितने पाकिस्तान’ के चरित्र चित्रण।

2.3.4 ‘कितने पाकिस्तान’ में चित्रित समस्याएँ।

2.4 सारांश

2.5 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.7 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य:–

इस इकाई को पढ़ने पर आप –

- ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास का परिचय पा सकेंगे।
- देश विभाजन के कारणों से परिचित होंगे।
- विदेशी आक्रमणकारियों की कूटनीति से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिन लेखकों ने उपन्यास–साहित्य को नयी दिशा प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया उनमें कमलेश्वर जी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। यशपाल और भीष्म साहनी के बाद हिन्दी उपन्यास साहित्य जन–संस्पर्श से कट गया था। और मनोविज्ञान की संकरी गली में भटक जाने के कारण अपने देश हित की सच्चाइयों से दूर पड़ गया था। राष्ट्रीयता की मुख्यधारा से कट जाने के कारण अचेतन और एकांतिक हो गया था। इसी राष्ट्रीयता को आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्थान देने में कमलेश्वर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का परिचय –

विभाजन और हिंसा के बीच पिस रहा मनुष्य सबकी नज़रों में होता है पर उसपर किसी का ध्यान नहीं जाता है या ऐसा कहें कि कोई ध्यान देना नहीं चाहता। विभाजन शब्द से यहाँ सिर्फ किसी भूमि के टुकड़े का विभाजन ना समझा जाए। जब हम अपने आस पास देखते हैं तो हमें अनेक प्रकार के विभाजन दिखाई देते हैं। ये विभाजन सामाजिक, आर्थिक, भाषिक एवं धार्मिक आदि भी हो सकते हैं। इन सभी विभाजनों के केंद्र में मनुष्य होता है। कमलेश्वर अपने बहुचर्चित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में विभाजन से जूझ रहे समाज में मरणासन्न मनुष्यता के एक लंबे इतिहास को दिखाते हैं। यह उपन्यास कमलेश्वर मई वर्ष 1990 में लिखना शुरू करते हैं और इसका पहला संस्करण सन् 2000 ई. में आता है। तबसे अबतक इसके बीस संस्करण आ चुके हैं। कमलेश्वर द्वारा रचित इस उपन्यास के लिये उन्हें सन् 2003 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह उपन्यास भारत–पाकिस्तान के बँटवारे और हिंदू–मुस्लिम संबंधों पर आधारित है। यह उनके मन के भीतर चलने वाले अंतर्द्वंद्व का परिणाम माना जाता है।

2.3.2 'कितने पाकिस्तान' की कथावस्तु–

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कोई नायक नहीं है। स्वयं कमलेश्वर इस उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं–''कोई नायक या महानायक सामने नहीं था, इसलिए मुझे समय को ही नायक–महानायक और खलनायक बनाना पड़ा।'' इस उपन्यास का नायक भी समय है और खलनायक भी। इसमें कुछ पात्र अवश्य हैं। मुख्य पात्र के रूप में 'अदीब' नामक व्यक्ति है। 'अदीब' शब्द का अर्थ होता है– साहित्यकार। इसके अलावा सलमा और अर्दली भी इस उपन्यास के पात्र हैं। ये पात्र मानवीय अवश्य हैं पर प्रतीकात्मक अधिक लगते हैं। साहित्यकार यानी अदीब वह इंसान होता है जो तमाम त्रासदियों में मानवता के अवशेष खोजता है, वह अपनी अदालत में इतिहास में हुई घटनाओं को सामने रखता है और एक निष्कर्ष पर पहुँचता है अथवा अंतर्द्वंद्व से घीरा रहता है।

सलमा इस उपन्यास में उस भावना की तरह है जिसे अदीब पाना चाहता है पर तमाम बंधनों और रूढ़ियों ने उसका रास्ता रोक रखा है। सलमा बहुत कम समय के लिए इस उपन्यास में रहती है। अतः इस

पात्र का उतना विस्तार हमें नहीं मिलता है। अर्दली इस उपन्यास में सभी घटनाओं तथा ऐतिहासिक पुरुषों को अदीब की अदालत में हाजिर करता है साथ ही साथ अदीब जब भावनाओं में बहने लगता है तो उस पर नियंत्रण भी करता है। अर्दली को हम बुद्धि की भाँति समझ सकते हैं जो हमारे समक्ष हमारे तमाम ज्ञान को रखता है जिसे हम विश्लेषित करते हैं। इस तरह से अगर देखें तो ये तीनों पात्र वो धागे हैं जिसमें इस उपन्यास में चलने वाली तमाम बहसें पिरोई गई हैं।

उपन्यास में कथा की जगह कथाएं हैं अर्थात् उपन्यास में कोई ऐसी कथा नहीं है जो पूरे उपन्यास में चलती है। इस उपन्यास में मुख्यतः इतिहास की तमाम घटनाओं और पात्रों को अदीब की अदालत में पेश किया गया है। ये इतिहास सिर्फ भारतीय उपमहाद्वीप के नहीं हैं वरन विश्व के उन हिस्सों के जैसे कोसोवो, पूर्वी तिमोर, सोमालिया, कश्मीर आदि की हैं जहाँ सामाजिक और धार्मिक विभाजन के चलते हत्याएं हो रही हैं। इस प्रकार कमलेश्वर पाकिस्तान शब्द का प्रयोग भी प्रतीकात्मक रूप से करते हैं। पाकिस्तान का अभिप्राय उस समाज और स्थान से है जहाँ भाषा, क्षेत्र, धर्म, जाति और विचारधारा आदि के नाम पर विभाजन और हिंसा हुई है।

इतिहास में जो धर्म आदि के नाम पर हत्याएं हुई हैं हर ऐसी घटना से हमारा भारतीय समाज बँटता चला गया। हर दंगे के बाद समाज में एक विघटन होता है और उस विघटन के साथ ही पूर्वाग्रह का जन्म होता है। इस उपन्यास में प्रमुखतः हमारे भारतीय इतिहास के दो घटनाओं को सामने रखकर बातें की गई हैं– एक बाबरी मस्जिद का विध्वंस और दूसरा औरंगजेब का धार्मिक उन्माद। इसके अलावा कश्मीरी हिंदुओं के पलायन और देश के विभाजन की भी त्रासदियाँ इस उपन्यास में आई हैं। इन घटनाओं का लेखक पड़ताल करते हैं तथा कई आयामों को हमारे समक्ष रखते हैं। अयोध्या का समाज क्या बाबरी मस्जिद के बन जाने से विभाजित हो गया था या क्या उस मस्जिद का निर्माण बाबर ने कराया था? इन सभी बातों को तथ्यों के माध्यम से कमलेश्वर हमारे समक्ष रखते हैं। विश्वनाथ मंदिर को गिराकर वहाँ पर मस्जिद बनाए जाने वाली घटना को वह अदीब की अदालत में पेश करते हैं। यहाँ पर हमें कुछ नए तथ्यों का पता चलता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि ये तथ्य कितने प्रामाणिक हैं और अगर प्रामाणिक हैं तो सामान्य जनमानस के मध्य क्यूँ नहीं हैं?

''हर समय ऐसे ही होते रहा है कि हर सदी में एक दाराशिकोह के साथ एक औरंगजेब भी पैदा होगा। इस दस्तूर को बदलना होगा, नहीं तो मेरे साथ-साथ तुम सबका भविष्य भी डूब जाएगा।..अगर मैं मर गया तो तुम्हारे सारे सपने समाप्त हो जायेंगे।'' दाराशिकोह की हत्या का प्रसंग इतिहास के षड्यंत्रों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है और साथ ही यह दिखाता है की मज़हब का इस्तेमाल किस तरह मात्र सत्ता हासिल करने के लिए किया जाता है और यह इस्तेमाल मात्र औरंगजेब ही नहीं वरन लगभग हर शासक ने किया और वह आज भी हमारी राजनीति का एक अभिन्न अंग है। धर्म, संप्रदाय आदि का प्रयोग हमेशा सत्ताधारी लोग करते हैं और जो सामान्य जन होते हैं वह बस इस चक्की में पिसते रहते हैं। लोगों के विश्वास को चराना राजाओं का प्रमुख हथियार रहा है।''

इस उपन्यास के कुछ हिस्सों में अलग-अलग टेक्स्ट के कुछ हिस्से लाकर रख दिये गए हैं। सभी पाठ एक पात्र या घटना के रूप में यहाँ आते हैं और इस उपन्यास में समा जाते हैं, यह इस उपन्यास की खासियत रही है। इस उपन्यास में लगभग 2-3 पेज 'आधा गाँव' उपन्यास का एक अंश है जहाँ एक हिन्दू दोस्त अपने मुस्लिम दोस्त को कहता है कि जिस हिसाब से यहाँ दंगे बढ़ रहे हैं उसे पाकिस्तान चले जाना चाहिए। मुस्लिम दोस्त इसका जवाब देता है-''तुम तो कह दिया चल जा.. लेकिन पाकिस्तान जाए का किराया-भाड़ा भी जुट गया, तो भी ई हमार खेतवा कइसे जाई पाकिस्तान?'' यह जो स्थान है जो खेत है, घर है यह किसी के साथ दूसरी जगह नहीं जा सकता। यह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। इंसान एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपना समाज बनाने में आधा जीवन लगता है कभी-कभी पूरा भी लग जाता है और फिर कोई आए और हमें वह समाज छोड़कर जाना पड़े।

एक बात ये भी कि भारत में जो मुस्लिम समुदाय है वह विश्व के अन्य जगह के मुस्लिम समुदाय से अलग है वह यहाँ की संस्कृति में घुल गया है और वह यहीं की पैदाईश है यहाँ की साझा संस्कृति कुछ वर्षों में नहीं बनी है वरन यह अनेक सदियों के तोड़ फोड़ के बाद बनी है। इस उपन्यास में एक स्थान पर नूरजहाँ शाहजहाँ से कहती है-''उड़ते सूरज को सलाम करना और डूबते सूरज को नमाज़ के साथ विदा करना यह तो हमारी हिन्दुस्तानी परंपरा का खास हिस्सा है।''

हमारे देश के भौगोलिक और सामाजिक दोनों विभाजन में अंग्रेजी हुकूमत का बहुत बड़ा हाथ रहा है उपन्यास में कहा गया है-''इन अंग्रेजों के बच्चों को सोचना चाहिए सदियों पहले सौदागर की तरह सलाम करते आए थे, वैसे ही सलाम करो और अपने मुल्क लौट जाओ पर. जो कमा लिया वो तुम्हारी किस्मत ले जाओ पर जो हमारा वो तो खुशी-खुशी छोड़ जाओ।''

जैसा की पहले ही कहा गया कि यह उपन्यास मात्र भारत और पाकिस्तान की पीड़ा तक सीमित नहीं है। वह हिरोशिमा का भी दर्द लेकर आता है और चीन का भी अफ्रीका का भी। एक अंश हिरोशिमा के दर्द का इस प्रकार है- ''मेरे ऊपर जो परमाणु बम गिराया था वह दुर्घटना नहीं युद्ध समाप्त करने के नाम पर सोचा समझा परीक्षण था। मानव जाति पर किया गया जघन्य आक्रमण. अरे दरिंदो! देखो मेरे इस क्षार-क्षार हुए शरीर को। नागासाकी के क्षत-विक्षत भूगोल को, माँ के कोख में विकलांग हो गई संतानों को, प्रचण्ड तापमान में पिघलकर वाष्प की तरह उड़ जाने वाले लाखों मनुष्यों को, जल-जलकर मुँह तक आकर न निकलने वाली मृत्यु की चीत्कारों की... घुटती साँसों में दम तोड़ती बेबस उसाँसों को, हिचकी लेती हिचक-हिचक करती जिंदगी को, देखो मुझे मैं हिरोशिमा हूँ। मैंने खुद झेला है मानव विनाश के मृत्यु को। परमाणु नाभकीय संकट को जन्म देने वाले जितने अपराधी हैं, मैं उन्हें उनकी कब्रों में चैन से सोने नहीं दूँगा। वे सभी वैज्ञानिक चाहे फ्राँस के हो या जर्मनी, ब्रिटेन या रूस के वे मानवद्रोही और जघन्य अपराधी हैं इन्हें कब्रों मै चैन से सोने की ऐय्याशी बख्शी नहीं जा सकती।''

इस उपन्यास की भाषा और शैली भी काफी अलग है। चूंकि अनेक जगहों के मिथक और घटनाओं का ज़िक्र हुआ है अतः उपन्यास की भाषा में वैसे शब्द भी मिल जाते हैं। उपन्यास में अधिकतर अरबी और

फारसी शब्दों की भरमार है। इसकी शैली स्वप्न की तरह लगती है एक घटना के बाद कोई और घटना कहीं और से आ गई फिर पहली घटना आ गई। अतः इसे पढ़ते वक्त पाठक कभी भी ध्यान भटकने नहीं दे सकता और उसे हर घटना को याद रखना पड़ता है क्योंकि वह आगे कहीं ना कहीं उसका इंतजार कर रही होती है और उपन्यास के साथ जुड़ जाती है।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास विश्व भर के मानव की पीड़ा का चित्रण करता है। क्योंकि मानवता की कोई भी सीमा नहीं होती है वह धर्म, जाति, नस्ल, विचारधारा, देश आदि की सीमाओं में नहीं बंधी हुई है। यही विचार हमारी सोच को स्वतंत्रता प्रदान करती है और हमें विश्व को देखने की एक व्यापक दृष्टि भी देती है।

2.3.3 'कितने पाकिस्तान' : कथावस्तु की समीक्षा

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का लिखा हुआ एक प्रयोगवादी उपन्यास है। इस उपन्यास को सन् 2003 ई. के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। यह उपन्यास बाकी उपन्यासों से कई मामलों में अलग है। पहला, इसमें सामान्य घटनायें, जैसे उपन्यासों में होती हैं, नहीं हैं, बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं का लेखक के नज़रिये से वर्णन है। दूसरा, पात्र बहुत कम हैं। ऐसा कहना भी सर्वथा उचित ही होगा कि मुख्य पात्र समय है क्योंकि सारा कथानक उसी के इर्दगिर्द घूमता है। उपन्यास में सदियों से चले आ रही हिंसा और मारकाट के प्रति गहरा क्षोभ है। पात्रों की इस कमी को इतिहास के प्रसिद्ध व्यक्तियों को कटघरे में लाकर दूर किया गया है।

कमलेश्वर द्वारा रचित 'कितने पाकिस्तान' कहानी का संचालन एक पात्र अदीब करता है। जैसा कि नाम से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि अदीब एक साहित्यकार या बुद्धिजीवी है जिसे अपनी जिम्मेदारियों का अहसास है और उसे लगता है कि अनेक वर्गों में जनता को बाँटकर फायदा उठाया जा रहा है। अदीब को लगता है कि ऐसे समय में लेखकों, पत्रकारों और अन्य बुद्धिजीवियों को कुछ करना पड़ेगा। अदीब अगर नायक है तो सलमा को नायिका कहा जा सकता है लेकिन कथानक में उसे स्थान कम ही मिला है। सलमा के माध्यम से कमलेश्वर ने कृत्रिम सीमाओं को लेकर निराशा व्यक्त की है। अदीब और सलमा के वार्तालाप के माध्यम से लेखक ने समाज के नियमों में खुद को ढाल न पाने वाले लोगों की चिंता दिखायी है। कहानी में एक और पात्र है जिसे अर्दली के नाम से पुकारा गया है। यह एक मजबूत पात्र है जिसने जगह जगह पर लोगों के दोगलेपन को उजागर किया है।

निष्कर्ष रुप में कहा जाए तो सदियों से चली आ रही विभाजन की परम्परा बंद हो और मनुष्य एक मनुष्य की तरह जीवित रह सके। धर्म के नाम पर, भगवान के नाम पर, जाति के नाम पर, विचारधारा के नाम पर, भाषा के नाम पर और वर्ण के नाम पर विभाजन अब बंद होने चाहिये। कमलेश्वर ने अपनी बात को पुख्ता तरीके से रखने के लिये सम-सामायिक घटनाओं का उल्लेख किया है जैसे कोसोवो, पूर्वी तिमोर, सोमालिया, कश्मीर आदि जगहों पर हो रहे आंदोलन और प्रतिहिंसा। इसके मूल में जाने की लेखक ने कोशिश की है तो पाया है कि कहीं न कहीं किसी अन्य ताकत ने ये पहचान के संकट खड़े किये और फिर

उसके बाद जब जनता विभाजित हो गयी तो उसका फायदा उठाया, वरना कोई कारण नहीं है कि दो अलग पहचान के लोग साथ नहीं रह सकते।

इतिहास जैसा हम जानते हैं और जैसा हमें पढ़ाया जाता है उसके प्रति भी कमलेश्वर ने अपनी राय दी है। मसलन अयोध्या जन्म-भूमि और बाबरी मस्ज़िद के विवाद के पीछे जो कारण बताया जाता है और जो अब राजनीतिक हो गया है उसको कमलेश्वर ने झूठ कहा है। मुगलकालीन कई अभिलेखों और पत्रों को उद्धृत करके यह बताने की कोशिश की गई है कि बाबरी मस्ज़िद की प्रचलित कहानी सही नहीं है। अगर यह सत्य है तो यह एक रुचिकर बात है कि इतिहासकारों का ध्यान अभी तक इस ओर क्यों नहीं गया और अगर गया भी है तो यह विचार मुख्यधारा में क्यों नहीं आ पाये। कमलेश्वर ने यह बताने की कोशिश की है जनता को बाँटकर रखने से उन पर नियंत्रण करना कितना आसान हो जाता है। अगर कोई शासक लोगों को साथ लेकर चल नहीं पाता है तो वह धर्म का सहारा लेकर शासन करना चाहता है। कमलेश्वर ने यह बात दाराशिकोह और औरंगज़ेब के बीच खींचतान को केंद्र में रखकर दिखाया है।

उपन्यास में वामपंथी विचारधारा के तत्त्व देखने को मिलते हैं और पश्चिम की व्यवस्थाओं के प्रति गुस्सा देखने को मिलता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि सामंतवादी विचारधारा को भारत में लाने के बाद यहाँ जनता की स्थिति ख़राब ही हुई है। पूँजीवाद और उसके द्वारा लायी गयी व्यवस्थाओं के प्रति कमलेश्वर का रुख बहुत उत्साही नहीं रहा है। साथ ही साथ धर्म के उपदेशकों को समस्या का एक भाग माना गया है, जैसा कि हमने औरंगज़ेब के प्रसंग में और अन्य जगहों पर देखा है। इस उपन्यास में एक सन्देश है जिसे लोग आत्मसात करने में कहाँ तक सफल रहेंगे यह तो नहीं कहा जा सकता है, लेकिन इतिहास से सीखने को काफी कुछ है यह दिखता है।

2.3.4 'कितने पाकिस्तान' के चरित्र चित्रण :-

कमलेश्वर के इस उपन्यास में पात्रों की संख्या तो बहुत है। लेकिन बहुत कम ऐसे पात्र हैं जो अपनी छाप छोडकर आगे जाते हैं्। उपन्यास मानवी जीवन का चरित्र होता है। उपन्यासों के पात्र खुद ही उपन्यास की कथावस्तु का विकास करते हुए उसे अपनी मंजिल तक ले जाते हैं्। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कोई नायक नहीं है। स्वयं कमलेश्वर ने इस रचना की भूमिका में लिखा है - 'कोई नायक या महानायक सामने नहीं था, इसलिए मुझे समय को ही नायक-महानायक और खलनायक बनाना पडा।' इसलिए इस उपन्यास का नायक और प्रतिनायक भी समय ही है। इस उपन्यास में ऐसे नायक पात्रों की भरमार अधिक है। जिनके नामों से हम सर्वपरिचित है। प्रमुख पात्र अदीब है जो इस रचना की कथावस्तु में अपना प्रभाव छोडता है। इसके साथ सलमा नामक नारी पात्र है किन्तु उसके चरित्र का अधिक विकास और विस्तार नहीं है। अर्दली एक पात्र है जो अदीब की अदालत में ऐतिहासिक पात्रों की हाजिर करने का काम करता है। अदीब इतिहास की त्रासदियों को खोजता है और अर्दली के माध्यम से इतिहास के अनसुलझे व्यक्तित्त्वों को अपनी अदालत मे हाजिर करते हुए उनसे सवाल पूछता है जिससे कथावस्तु का विकास हो जाता है।

1) अदीब :–

अदीब एक दैनिक पत्र का सम्पादक है। अदीब को अपने पुराने दिन याद आते हैं जब वह पढाई के लिए मैंनपुरी से इलाहबाद आया था। इलाहबाद में उसकी मुलाकात विद्या नामक युवती से होती है। विद्या फतेहगढ की निवासी थी और विज्ञान की छात्रा थी। छुट्टियों में आते–जाते वक्त दोनों साथ–साथ सफर करते थे। दो वर्षों के बाद विद्या कानपुर स्टेशन पर उतरती है। अदीब ने उसका सामान थाम दिया और वापस अपनी रेल में जाकर बैठ गया। विद्या का रूमाल वहाँ गिर जाता है लेकिन अदीब उसे उठा नहीं पाता क्योंकि उसकी रेल भी छूटनेवाली थी। उसके बाद विद्या उसे दोबारा नहीं मिलती मगर अदीब जब भी कानपुर से गुजरता था उसे वह रूमाल नजर आता था। कई वर्षों के बाद उसे एक खत मिलता है जिसपर लिखनेवाले का कोई अता पता नहीं था। लेकिन लिखावट से साफ नजर आता था कि लिखनेवाला कोई उर्दू से परिचित है। उसे विद्या पर शक होता है लेकिन विद्या तो विज्ञान की छात्रा थी और उसे उर्दू का कोई ज्ञान नहीं था। लेकिन यह खत विद्या ने ही लिखा था जो बाद में परवीन बन जाती है। अतः यह खत अदीब के लिए एक राज बन जाता है। विद्या न केवल मुसलमान बन जाती है बल्कि वह एक पाकिस्तानी मुसलमान के तीन बच्चों की माँ भी बन जाती है। उपन्यास की चरम सीमा पर उसकी अदीब से साथ मुलाकात हो जाती है किन्तु चाहकर भी वे एक दूसरे के साथ बातचीत नहीं कर सके और उनकी यह कहानी यहीं पर दम तोडती है।

मुख्य पात्र के रूप में अदीब हमारे सामने आता है और वह इतिहास की अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास करता है। वह अपनी अदालत में ऐतिहासिक घटनाओं का लेखाजोखा रखता है और उससे कुछ निष्कर्ष निकालता है। इतिहास की तमाम घटनाएँ और पात्रों को उसकी अदालत में पेश किया जाता है। यह ऐतिहासिक घटनाएँ केवल भारत या भारत की सरजमीं से नहीं जुडी अपितु विश्व के कोने–कोने से जुडी हुई है। जहाँ आंतकवाद, साम्प्रदायिकता और धार्मिक विवादों के कारण हत्याएँ हो रही हैं। इस प्रकार कमलेश्वर भी 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से करते हैं। पाकिस्तान का अर्थ ही है वह समाज या स्थान जहाँ भाषा, धर्म, क्षेत्र, जाति, वंश और परम्पराओं के कारण रक्तपात और खून की होली खेली जा रही है।

अदीब अर्थात् लेखक शायद कमलेश्वर भी हो सकते हैं। वह किसी भी दौर के अन्याय अत्याचारों के विरूध्द लडने की लिए सदैव तैयार है। उसने एक अदालत बनाई है जिसका कोई निश्चित समय नहीं है और न कोई विशेष स्थान। इस अदालत में प्राचीन समय से आज तक जितनी भी असामयिक मौतें हुई है उनकी फरियाद सुनाई जाती है और उनकी कैफियत से, जिरह से लेखक ने असलियत उजागर करने का प्रयास किया है।

अदीब, उसका अर्दली महमुद दोनों समय की नब्ज पर हाथ रखकर झूठ का पर्दाफाश करते हैं। भगवान राम पर शंबुक के संदर्भ में सवाल उपस्थित किए जाते हैं और अहल्या की कहानी पर विचार मंथन होता है। महाभारत के भयावह युद्ध में जो भीषण नरसंहार हुआ उसका भी विवेचन इस उपन्यास में मिलता है। इसका

अर्थ ही यही है कि अनगणित लोगों की अप्राकृतिक मृत्यु हुई थी और केवल पाण्डवों के साथ श्रीकृष्ण ही जीवित रहे थे।

अयोध्या विवाद पर भी अदीब अपनी बात रखता है। बाबर का कोई समकालीन महंत हामदास अदालत में आकर कहता है कि यह मस्जिद इब्राहिम लोदी ने बनाई थी, बाबर ने नहीं। अर्थात् अदीब इस मंदिर-मस्जिद विवाद पर पर्दा डालता है। कमलेश्वर ने जहाँगीर के दौर का भी चित्रण किया है। पहले ब्रिटिश सौदागर के रूप में आए थे और पलासी की लडाई के बाद वे इस देश के मालिक कैसे बन गए इसपर कमलेश्वर ने अपनी बात रखी है। सत्रहवी शती में मुगल वंश के उत्तराधिकार के लिए जो भीषण युध्द एवं रक्तपात हुआ था। औरंगजेब क्रूर शासक था और उसने अपने भाइयों को किस तरह से खत्म करते हुए तोजोतख्त हासिल किया, इस दर्दनाक घटना को रचनाकार ने बयाँ किया है और वह भी औरंगजेब के मुख से। कमलेश्वर मानते हैं कि दाराशिकोह की हत्या में ही उन्हें पाकिस्तान की बुनियाद नजर आती है।

अदीब अपनी अदालत में भारत के आखरी गर्वनर जनरल माँउंटबेटन को भी बुलाता है क्योंकि जो देश कई हजार वर्षों से विभाजित नहीं हुआ उस देश का उसने विभाजन किया था। ब्रिटिश सत्ता ने 'डिवाइड अँड रूल' का सहारा लेकर अब तक कारोबार किया था। जिन्ना भी इसी कडी का एक अभिन्न अंग था। 'इस्लाम खतरे में' का नारा देकर जिन्ना, इकबाल ने भारत का विभाजन करवाया। अर्थात् इकबाल की सन् 1938 ई. में ही मृत्यु हो चुकी थी। फलस्वरूप हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ और पाकिस्तान नाम से एक नया देश निर्माण हुआ्।

अदीब के सहारे लेखक ने दूसरे विश्वयुद्ध की त्रासदी से त्रस्त हिरोशिमा व नागासाकी का भी चित्रण किया है। तत्कालीन अमरीकी अध्यक्ष, रूजवेल्ट, वैज्ञानिक ओपनहायमर, हिटलर, मुसोलिनी, टोनो सब को अदालत में हाजिर किया जाता है क्योंकि यह सारे मानवता के दुश्मन है यह अदीब का अभिमत था।

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि उपन्यास में पौराणिक, ऐतिहासिक पात्रों की भरमार है और उनके द्वारा चलाए गए अभियान और कृत्यों के कारण मानवता को क्षति पहुँची थी, सब अदीब की अदालत में आकर अपने-अपने गुनाहों की सफाई देते हैं्। अपने युग के नायक वहीं होते है जिन्होंने इसे अनुभूत किया है किन्तु अदीब बीसवीं शती का आदमी है। वह केवल सूत्रधार है जिसका कार्य इतना होता है संचालन करना। वहीं काम अदीब करता है। इसलिए अदीब इस रचना का केवल मुख्य पात्र या सुत्रधार है। नायक नहीं है क्योंकि कमलेश्वर के अनुसार स्वयं समय ही इस रचना का नायक या प्रतिनायक है। इस तरह से अनेक ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्रों को अपनी अदालत में लाकर उनके गुनाहों की सफाई मांगनेवाला अदीब शायद इकलौता पात्र ही होगा जो इस रचना के कारण अजर और अमर है।

2) सलमा :-

अदीब अपनी अदालत में सभी ऐतिहासिक पात्रों को बुलाता है और उनकी सफाई सुनते-सुनते वह बेचैन हो जाता है। उसे अचानक सलमा की याद आती है। सलमा इस उपन्यास रचना का और एक उल्लेखनीय पात्र है जिसकी मुलाकात अदीब से हुई थी। वह उसे लाहौर एअरपोर्ट पर कराची जाते समय मिली

थी। सलमा के नाना-नानी परिवार के लोग विभाजन के वक्त पाकिस्तान चले गए थे। जब कि सलमा के माता-पिता मुसलमान होते हुए भी हिन्दुस्तान वापस आए थे। अदीब सलमा के इस परिवार के बारे में सोचता है कि यह परिवार कितना अजीब है? तब सलमा उसे कहती है कि अब्बा की नजर में और इस्लाम की नजर में भी पाकिस्तान बनना एक गुनाह है क्योंकि इस्लाम नफरत नहीं सिखाता और पाकिस्तान के निर्माण भी बुनियाद ही नफरत है।

अदीब और सलमा एक दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं। दोनों एक साथ एक ही सपने देखते हैं। यह आकर्षण अहिस्ता-अहिस्ता प्यार में बदल जाता है। सलमा विवाहित है और एक बच्चे की माँ भी है। सलमा और अदीब दोनों मॉरिशस भी चले जाते हैं। वहाँ सलमा के पति का दोस्त नईम उसे मिलता है और अदीब के साथ न रहने की हिदायत भी देता है। क्योंकि अदीब मुसलमान नहीं है। एक मुस्लिम औरत किसी गैर मुस्लिम मर्द के साथ नहीं रह सकती यह उसकी अवधारणा है। अदीब और सलमा के लिए मजहब एक रूकावट बन जाता है। एक दूसरे के साथ रहने के लिए किसी एक को धर्म परिवर्तन करना होगा इसलिए दोनों मॉरिशस के पूर्व की ओर निकल जाते है। बाद में सलमा अदीब की अदालत में भी रहती है किन्तु जब औरंगजेब का नाम पुकारा जाता है वह अदीब से इजाजत लेकर वहाँ से चली जाती है और न केवल अदालत से बल्कि उसके जीवन से भी दूर हो जाती है, कभी भी वापस न आने के लिए।

इस सम्पूर्ण उपन्यास रचना में बौद्धिक परिवेश छाया हुआ है और इस वातावरण से मुक्ति पाने के लिए पाठक को थोडा सा आराम देने के लिए रचनाकार ने अदीब और सलमा की प्रेमकहानी का आधार लिया है इतना ही पर्याप्त है। इस उपन्यास के नारी पात्रों में सलमा का चरित्र निश्चित ही उल्लेखनीय और नारी गुणों से परिपूर्ण है।

3) विद्या :-

अदीब और विद्या एक साथ सफर करने के कारण एक दूसरे से परिचित हो चुके थे। जब अंतिम बार विद्या अदीब से मिलती है और अपने घर चली जाती है। उसकी शादी तय हो चुकी थी और सगाई के लिए विद्या अपने परिवार के साथ दिल्ली से रोहतक रोड से रामनगर जा रही थी। तब कसाबपुरा के पास दंगा भडक जाता है। कसाईयों ने हिन्दूओं की कत्ल करना शुरू किया। इसमें विद्या का तांगा फंस गया। उसके सामने ही माता पिता और भाई का कत्ल हुआ। वह बेहोश होकर तांगे से नीचे गिर जाती है। जब उसे होश आता है तो वह एक मुस्लिम परिवार घर में खुद को पाती है। बेहोशी के आलम में उसकी जान किसी मुस्लिम परिवार ने बचाई थी। सैयद सिराज उसे पाकिस्तान के लायलपुर में लेकर चला जाता है। लेकिन सिराज की बेगम विद्या का धर्म परिवर्तन करती है और उसे परवीन सुलताना पुकारा जाता है। पडोसी नदीम साथ के साथ उसकी शादी हो जाती है और वह नदीम के तीन बच्चों की माँ भी बन जाती है। उन्हीं दिनों अदीब के कहानियों के उर्दू अनुवाद परवीन पढती है। पहली बार जब उसने एक कहानी पढी तो उसे अदीब की याद आती है। नदीम की मृत्यु के बाद उसके स्थान पर बडे बेटे परवेज को नौकरी मिल जाती है। परवीन

का अधिक वक्त अपने बीमार शौहर की खिदमत में ही गुजर जाता था। इस विभाजन की त्रासदी ने विद्या की तकदीर ही बदल गई और उसे परवीन सुलताना बनना पडता है।

हिन्दुस्तान ने पोखरण में अणु विस्फोट किए्। भारत की तर्ज पर पाकिस्तान ने भी वहीं किया और बलुचिस्तान के चगाई में अणु विस्फोट किए्। जिसे पढकर अदीब को दिल का दौरा पड जाता है। अस्पताल में उसे देखने के लिए लोग आते हैं जिसमें परवीन भी थी जो हिन्दुस्तान देखने के लिए अपने बेटे परवेज के साथ आई थी। वह अदीब को भी देखने के लिए जाती है। अदीब ने उसे पहचाना और रहस्यमय खत तथा उर्दु भाषा के मजमून के पीछे की कहानी उसे समझ में आई्। अदीब विद्या को अर्थात् परवीन को केवल इतना ही पूछना चाहता था कि क्या पाकिस्तान में भी ऐसी ही जहरीली हवा बहती है लेकिन अदीब उसे यह पूछ नहीं सका।

विभाजन का सर्वसाधारण भारतीय नारी पर कितना भयावह असर हुआ था इसका जीता जागता सबुत है विद्या उर्फ परवीन सुलताना का यह चरित्र चित्रण जिसके लेखन में कमलेश्वर को पर्याप्त सफलता निश्चित ही मिली है।

कथोपकथन :–

उपन्यास के पात्र जिस पारम्परिक बातचीत से कथावस्तु को आगे बढाते हैं और अपने चरित्र को प्रकाशित करते हैं उसे कथोपकथन कहते हैं। इस प्रकार कथोपकथन को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(1) कथावस्तु का विस्तार

(2) चरित्र चित्रण

कथोपकथन के द्वारा घटनाओं को गतिशीलता प्रदान की जाती है और बहुत–सी नवीन घटनाओं का प्रादुर्भाव होता है। दो विरोधी विचारधाराओं के संघर्ष से कोई भी घटना घटित होती है। यह संघर्ष वार्तालाप के माध्यम से ही मुखरित होता है। कथोपकथन के द्वारा ही कथावस्तु में नाटकीयता और सजीवता आती है। नाटकीय तत्वों के समावेश के कारण कथानक वास्तविक हो जाता है फलतः उसमें आकर्षण निर्माण हो जाता है।

कथोपकथन के व्दारा लेखक कथावस्तु की अनेक ऐसी घटनाओं का भी उल्लेख कर सकता है जिसे वह अपनी मूल कथा प्रवाह में घटित होती हुई नहीं दिखा सकता। जिससे कथा प्रवाह बना रहता है और उसमें अरोचकता भी नहीं आती और घटनाक्रम विकसित होता रहता है। 'कितने पाकिस्तान' इस रचना में कई स्थानों पर कमलेश्वर ने दुनिया के अनेक हिस्सों में घटित हुए युद्धों का वर्णन किया है और उस वर्णन से युद्धों की भयावहता स्पष्ट हो जाती है।

उपन्यास में संवाद पात्रानुकूल है। पात्रों के संवाद उनकी आयु और उनके ओहदे के अनुसार है। उदाहरण के लिए आलमगीर औरंगजेब का यह कथन – 'यहीं की मैंने जो भी किया वह गलत भी था और

सही भी था। सरजमीने हिन्द की नजर से मैंने बहुत कुछ गलत किया, जो मुझे शायद नहीं करना चाहिए था लेकिन इस्लामी मिल्लत की नजर से जो कुछ मैंने किया वह शायद सही था।'

कथोपकथन के संवाद पात्रों का परिचय देते हैं। जो कथोपकथन कथावस्तु को विकसित नहीं कर सकता और न पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करता है वह उपन्यास के लिए सदा अनुपयुक्त होता है। कथोपकथन से उपन्यास सजीव एवं धारावाही बन जाता है।

कथोपकथन पात्रों की बौद्धिक और मानसिक स्थिति के अनुकूल होना आवश्यक है। श्रीराम शर्मा औरंगजेब के बारे में कहते हैं – 'हमें औरंगजेब की एक मनौवैज्ञानिक गुत्थी को गहराई से समझना चाहिए .... होता यह है कि या तो लोग सहज भाव से मजहब की ओर जाते हैं या फिर वो लोग मजहब की तरफ दौडते हैं, जो जानते हैं कि मजहब के लिहाज से हमने पाप किया है। औरंगजेब ने हिन्दुस्तान का ताज हासिल करने के लिए जो जघन्य अपराध किए थे, उसकी ग्रंथी ही उसका पाप-बोध बन गया और पाप-बोध की इसकी यह कुंठा थी जो इसे मजहब की ओर मोड ले गई और यह कठमुल्लाओं का गुलाम बन गया ..... और यह भारत में हिन्दुओं का दुश्मन बन गया।'

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यास में कथोपकथन पात्रों की बौद्धिक और मानसिक स्थिति के अनुकूल है और बातचीत का ढंग सरल, सुबोध और मनोहर है। कथोपकथन में नाटकीयता और स्वाभाविकता है। इसलिए इस रचना का कथोपकथन सुसंगत और कथावस्तु के प्रवाह में बाधाओं का निर्माण नहीं करता। कथोपकथन की भाषा पात्रों के अनुकूल है और पात्रों के बौद्धिक धरातल के अनुरूप है। उपर्युक्त सभी गुणों के कारण 'कितने पाकिस्तान' रचना के कथोपकथन में स्वाभाविकता, सहजता, सरलता, सजीवता, रोचकता, सार्थकता, प्रसंगानुकूलता और संक्षिप्तता आदि विशेषताएँ नजर आती हैं।

'कितने पाकिस्तान' इस उपन्यास में देश, काल तथा वातावरण का वर्णन उचित ढंग से हुआ है जिससे कथा प्रवाह में कोई बाधा नहीं पहुँचती बल्कि कथा प्रवाह की गतिवर्धन में वह सहायक बन जाता है।

इस उपन्यास के संवाद छोटे और नाटकीय भी दिखायी देते है। जैसे –

'कहाँ थे तुम ?

हुजूर .... मैं पिछली सदियों में चल गया था।

पिछली सदियों में .... क्यों ?

मैं अपने पूर्वजों से मिलने गया था।'

इसी तरह कमलेश्वर ने उपन्यास में रोचक संवादों के साथ-साथ जिज्ञासा पैदा करनेवाले पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुकूल संवादों को प्रस्तुत किया है। उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के संवाद सहज होने के कारण उनमें सजीवता आई है। संवादों के सहारे की कमलेश्वर ने सच्चाई पर प्रकाश डालकर झूठ को बेनकाब किया है।

देश, काल तथा वातावरण :-

उपन्यास में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिए देश, काल और वातावरण का विशेष ध्यान रखना पडता है। प्रत्येक पात्र और उसका प्रत्येक कार्य किसी विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है कि यह सब इसमें बंधा हुआ होता है। अतः उपन्यास की पूर्णता के लिए इन सबका वर्णन आवश्यक है।

कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ उपन्यास माना जाता है। किन्तु या उपन्यास इतिहास नहीं अपितु ऐतिहासिक घटनाओं का आधार लेकर लिखी रचना है। देश, काल और वातावरण के अंतर्गत आचार-विचार, वातावरण, रीति-रिवाज, रहन-सहन और राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन आ जाता है। उपन्यास में विभिन्न समस्याओं का चित्रण करते हुए उपन्यासकार को पात्रों की और घटनाओं के घटित होने की परिस्थिति, काल और वातावरण का चित्रण करता पडता है।

'कितने पाकिस्तान' इस उपन्यास में देश, काल और वातावरण का चित्रण बहुत महत्त्व रखता है। क्योंकि लेखक की वर्तमान काल की और ऐतिहासिक काल की परिस्थितियों में बहुत अंतर होता है इसलिए वह ऐतिहासिक काल की घटनाओं की वर्तमान काल की परिस्थितियों में घटित होता हुआ चित्रित नहीं कर सकता। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने जिस अदालत का चित्रण किया है वह वर्तमान काल का ही है किन्तु अतीत के सारे ऐतिहासिक पात्र वर्तमान काल में वापस आकर अपनी सफाई देते हैं यह एक अनूठा प्रयोग कमलेश्वर ने किया है। गुण विशेष का चित्र प्रस्तुत करने के लिए तत्कालीन सामाजिक तथा राजनीतिक वातावरण का सजीव चित्रण आवश्यक है। इसलिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित रचना का लेखन करते समय कमलेश्वर ने अपने प्रतिपादित युग की सम्पूर्ण परिस्थितियों और रीतिरिवाजों का विशेष अध्ययन किया है। इस संदर्भ में कमलेश्वर ने पुरातत्त्व और इतिहास से विशेष सहायता ली है।

कथानक के पात्र भी देश काल के बन्धन में रहने चाहिए। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के उपन्यास में देश-काल वर्णन अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक है। विवेच्य उपन्यास का कालपट अधिक विशाल है इसलिए हर युग की संक्रमण स्थिति का चित्रण कमलेश्वर ने अधिक कुशलता के साथ किया है। संक्षेप में देश, काल तथा वातावरण के लिए आवश्यक प्रमुख तत्त्वों का निर्वाह कमलेश्वर ने अपनी रचना 'कितने पाकिस्तान' में किया है -

अ) परिस्थिति योजना - इस तत्त्व के अनुसार कमलेश्वर के पात्रों की बाह्य परिस्थितियों का चित्रण सफलता से हुआ है। इसमें अनेक ऐतिहासिक पात्र हैं जैसे गिलगमेश से लेकर औरंगजेब और माऊंटबैटन तक सभी आते हैं।

ब) आन्तरिक वातावरण - पात्रों की आंतरिक स्थिति जैसे उनकी मनोवैज्ञानिक अवधारणाएँ इसमें शामिल है। इतिहास का हर एक पात्र अदालत में आकर अपने अतीत के कृत्यों की सफाई देता है और उसकी अवधारणाओं का पाठक को आसानी से पता चलता है।

क) स्थानीय वातावरण – इस उपन्यास के सारे पात्र अपने अपने स्थानिक पृष्ठभूमि से संबंधित है। ईसा मसीह से लेकर सभी पात्र अपने स्थानों पर अपने ही परिवेश में रहते हैं और अदालत में आकर अपनी बात की पुष्टि करते हैं और इस घटना की और देखने का एक नया नजरिया उपलब्ध हो जाता है।

ड) उपन्यास की विषय वस्तु से संबंधित देशकाल का चित्रण – इस उपन्यास के पात्र अपने परिवेश से जुडे हुए है। कोई भी पात्र अपना परिवेश छोडकर किसी अन्य परिवेश से जुड नहीं जाता किन्तु अदीब की अदालत में आकर वह अपनी आप बीती जरूर सुनाता है जिससे उपन्यास की कलात्मकता निश्चित ही बढ जाती है।

इस तरह कमलेश्वर ने देश, काल, वातावरण के दोनों छोरों को पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। प्राकृतिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ काल विशेष का भी उन्होंने 'कितना पाकिस्तान' के अंतर्गत रेखांकन किया है। ऐतिहासिक घटनाओं के साथ प्राकृतिक चित्रण करते हुए पाठकों की उत्कंठा बढाने का उन्होंने सफल प्रयास किया है। इसमें कमलेश्वर के द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं के साथ–साथ भौगौलिक पृष्ठभूमि की जानकारी भी पाठक के सामने प्रस्तुत हो जाती है।

भाषा शैली :–

उपन्यास को उसकी शैली ही रोचक बनाती है। उत्सुकता, सम्बद्धता जैसे कथानक सम्बन्धी गुण शैली की प्रांजलता और प्रवाहत्मकता के कारण ही जन्म लेते हैं। शैली कलाकार के व्यक्तित्त्व की अभिव्यक्ति होने का साथ ही पाठक को मोहित करने का साधन भी है। शैली में विचारों की अभिव्यक्ति के साथ ही क्रम और गति का मिश्रण भी रहता है। वैसे प्रत्येक उपन्यासकार अपनी वैयक्तिक भाषा शैली का स्वतंत्र विकास करता रहता है।

भाषा शैली विचारों से सम्बन्ध रखती है। रचनाकार का उद्देश्य किसी बात को केवल बोधगम्य कराना नहीं है बल्कि प्रभाव डालना भी है। शैली के लिए लक्षणा और व्यंजना शक्तियों का अधिक प्रयोग होता है। प्रत्येक लेखक की शैली अपने ढंग से होती है। भाषा शैली दो प्रकार होती है जिसमें चलती मुहावरेदार शैली और दूसरी अलंकृत भाषा शैली। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में प्रथम शैली का ही अधिक प्रयोग किया है।

भाषा शैली में उपयुक्त शब्द चयन, पद मैत्री, सुसंगठित वाक्य विन्यास, अकुण्ठित प्रवाह, अलंकार योजना, भाषा की चित्रोपमता, शब्द शक्तियों का सफल प्रयोग आदि सभी प्रधान गुणों का होना आवश्यक है। वर्णन जड, चेतन, प्रकृति आदि सभी का होता है। वर्णनों के द्वारा रचनाकार अभिनय आदि की पूर्ति करता है। वर्णन में शैथिल्य नहीं आना चाहिए। भाषा का सौष्ठव, प्रभाव की एकता आदि का होना भी आवश्यक है।

कमलेश्वर ने इसी उपन्यास की भाषा शैली में तत्सम, तदभव और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है। संस्कृत, हिन्दी के साथ अंग्रेजी, उर्दू और फारसी शब्द प्रयोग उनकी भाषा शैली में मिलते हैं।

इस रचना में कमलेश्वर ने निम्नलिखित भाषा शैलियों का प्रयोग किया है –

(1) प्रतीकात्मक शैली

(2) पूर्व दीप्ति शैली

(3) विश्लेषणात्मक शैली

(4) पत्रात्मक शैली

(5) डायरी शैली

(6) आत्मकथात्मक शैली

(1) प्रतीकात्मक शैली :–

सन् 1947 ई. में पाकिस्तान के निर्माण के बाद अलगाववादी भावना का जन्म हुआ और आज दुनिया में हजारों पाकिस्तान निर्माण हुए हैं। इनके कारण शांति अब खत्म हो रही है। युद्ध की भीषण भयावहता के कारण मानवजाति के भविष्य पर सवालिया निशान लग रहा है और भीषण संहार के चित्र नजर आ रहे हैं। इसी तरह कमलेश्वर प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(2) पूर्व दीप्ती शैली :–

इस उपन्यास की शुरूआत ही इसी शैली से होती है। 'एक भूली हुई दास्तान' अदीब को विद्या की याद आती है। विद्या और अदीब की प्रेम कहानी का चित्रण इस शैली में हुआ है। कमलेश्वर ने विद्या और अदीब के भावनिक सम्बन्धों पर रोशनी डालते हुए विद्या से परवीन बनने की घटनाओं की पूर्व दीप्ति शैली में प्रस्तुत किया है। इलाहबाद से कानपुर और फिर फतेहगढ तक का सफर कमलेश्वर ने इसी शैली में चित्रित किया है।

(3) विश्लेषणात्मक शैली :–

सत्रहवी शती में मुगल वंश में उत्तराधिकार नारी के लिए दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच जो युद्ध हुआ था, उसी युद्ध में लेखक को पाकिस्तान की बुनियाद नजर आती है। बकौल कमलेश्वर, जब विश्वासघाती हिन्दूओं की कमजोरी और साजिश के चलते सन् 1659 ई. में औरंगजेब ने खुद अपने बडे भाई दारा शिकोह को शिकस्त देकर हिन्दुस्तान में ही अपना पाकिस्तान बनाया था। उन दिनों मुल्कों के नाम नहीं शहंशाहों के नाम बदलते थे और शहंशाह बदलने के साथ ही बदलता था सत्ता का रवैया और जहनियत ... और पाकिस्तानों के बदलने का सिलसिला शुरू हो जाता था। कमलेश्वर की यह विश्लेषणात्मक शैली इतिहास की ओर देखने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

(4) पत्रात्मक शैली :–

पत्रात्मक शैली के अंतर्गत पात्र एक दूसरे को पत्र लिखते हैं जिससे कथानक का विकास होता है। कलमेश्वर ने इस उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस रचना में दो विशेष महत्त्वपूर्ण पत्र है जिसमें एक गजल है। अदीब जब मुम्बई में काम करने लगता है तब उसे एक पत्र मिलता है जिसपर

भेजनेवाले का न नाम होता है और न पता। शायद विद्याने ही लिखा होगा जो मिर्जा गालिब की मशहूर गजब है –

‘अदीबे आलिया !
किसी को देके दिल कोई नवा संजे फूगां क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में, तो फिर मुँह में जुबाँ क्यों हो
किया गमख्वार ने रूसवा, लगे आग इस मुहब्बत को
न लाए ताब जो गम की, वो मेरा राजदां क्यों हो
वफा कैसी कहाँ का इश्क, जब सर फोडना ठहरा
तो फिर ऐ संगदिल तिरा ही संगे आस्तां क्यों हो।

– खुदा हाफिज... ’

अदीब यह खत पढ रहा था इसी वक्त उसे खबर मिलती है कि कारगिल में जंग शुरू हो चुकी है। अदीब प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री को खत लिखता है। कमलेश्वर ने और एक पत्र का उपयोग किया है जो जयसिंह ने महाराज जसवंतसिंह को एक पत्र लिखा था क्योंकि जसवंतसिंह ने दाराशिकोह का पक्ष लेकर आलमगीर के खिलाफ बगावत की थी – ‘आप को इससे क्या लाभ हो सकता है कि इस मंद भाग्य शहजादे दाराशिकोह को आप सहायता देने का प्रयास करे ! इस कार्य में लगने से आप का और आप के परिवार का नाश अवश्यभावी है। और इससे दुष्ट दारा के हितों को भी लाभ नहीं होगा। शहजादा औरंगजेब कभी आप को क्षमा नहीं करेगा।’

इस तरह इस उपन्यास में कमलेश्वर के पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(5) डायरी शैली :–

कमलेश्वर ने इस उपन्यास में डायरी शैली का भी प्रयोग किया है। बाबर ने अपनी डायरी ‘बाबर नामा’ लिखा था। इसी बाबरनामा के दि. 2 अप्रैल सन् 1528 ई. से दि. 17 सितंबर सन् 1528 ई. तक के पृष्ठ गायब हैं। इन दिनों बाबर कहां था? क्योंकि इस कालखण्ड में बाबर ने प्राचीन रामजन्मभूमि मंदिर तोडकर वहाँ बाबरी मस्जिद का निर्माण किया। बाबर की बेटी गुलबदन ने बाबर के पक्ष में गवाह देते हुए कहा कि बाबर की बेगम काबुल से हिन्दुस्तान आ रही थी, इसलिए उसे लेने के लिए बाबर अपनी बेगम के पास गया था इसलिए बाबरी के निर्माण का आदेश बाबर ने नहीं दिया था। यह कमलेश्वर का अभिमत है। इसी तरह कमलेश्वर ने डायरी शैली का प्रयोग किया है।

(6) आत्मकथात्मक शैली :–

इस शैली में उपन्यास का पात्र अपनी कथा स्वयं कहते हैं। कमलेश्वर ने अनेक ऐतिहासिक पात्रों की मन की बात इसी शैली में चित्रित की है। उदाहरण के लिए शहजहान की बात – ‘मेरी गवाही के बगैर आप का इतिहास पूरा नहीं होगा। मुझसे अधिक बदनसीब बाप और बादशाह इस दुनिया में दूसरा नहीं है। पेट की

इस जानलेवा बीमारी ने मुझे तोडकर रखा है। मैं पागल हो गया हूँ। कभी मैं दारा को अपने ही विद्रोही शहजादों के खिलाफ फौजी कार्रवाई की राय देता हूँ। कभी मिर्जा राजा जयसिंह को पराजित शुजा के साथ सुलह की सलाह देता हूँ। ..... मैं खुद अपने बेटों को एक दूसरे की खिलाफ लडवा रहा हूँ।'

इस तरह कमलेश्वर ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पात्रों का चित्रण किया है। साथ ही प्रतीकात्मक, विश्लेषणात्मक, पूर्व-दीप्ति, पत्रात्मक, डायरी, आत्मकथात्मक शैलियों की सहायता से शिल्प सौन्दर्य को अधिक आकर्षक बना दिया है। इसी कारण 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की कथा रोचक ढंग से परिपूर्ण हुई हैं।

उद्देश्य :-

कथावस्तु की अंतिम अन्विति उद्देश्य है। अर्थात् प्रत्येक साहित्यिक कृति का कोई न कोई उद्देश्य होता है। उपन्यासकार का भी कुछ न कुछ उद्देश्य जरूर होता है जिसके कारण वह उपन्यास लिखता है। वास्तव में उद्देश्य यह स्पष्ट करता है कि रचनाकार का कौनसा दृष्टिकोण है। अपने दृष्टिकोण को वह अपने पात्र और चरित्र चित्रण के माध्यम से स्पष्ट करता है। उपन्यास का लक्ष्य मानव चरित्र पर प्रकाश डालता है। उपन्यास की रचना करते समय कुछ विशेष सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना यह उद्देश्य नहीं होता पर उपन्यासों में कुछ न कुछ विशेष विचार अथवा सिद्धान्त स्वयं ही आ जाते हैं।

जनजीवन और मानव चरित्र के विश्लेषण के साथ किसी भाव, विचार, सिद्धान्त या जीवन के प्रश्नों के उत्तर की अभिव्यक्ति ही उपन्यास का लक्ष्य होता है। यह ऐसा दायित्त्व है जो हर रचनाकार को निभाना पडता ही है क्योंकि इसमें साहित्य का शिवत्त्व निहित है।

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का एक बृहद उपन्यास है किन्तु उसमें अनेक उद्देश्यों को उन्होंने पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। इसमें अनेक समस्याओं का उन्होंने सूत्रपात किया है किन्तु सब से बडी जो साम्प्रदायिकता की समस्या है उसे विभाजन की त्रासदी के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत किया है। साथ ही आज जो अलगाववाद की समस्या है जिससे मानवता पीडित है उस पर भी उन्होंने अपने विचार रखे हैं। भारत पाक का अंदरूनी युद्ध भी इस रचना में शामिल है।

आज के दौर में समूचा विश्व आतंकवाद से त्रस्त और पीडित है और मानवता कराह रही है। मानवता का नामोनिशान आज खतरे में हैं। विज्ञान की प्रगति से मानव डर रहा है जो विज्ञान मानवता के लिए वरदान है वही अब शाप बनकर सामने आ रहा है। वातावरण पर भी इसका प्रतिकूल असर हो रहा है इसलिए आनेवाली आबादी भी दिव्यांग के रूप में पैदा हो रही है। आनेवाली भविष्य की पीढियाँ भी अब अभिशप्त और बरबादी की कगार पर है।

कमलेश्वर अणु परीक्षण और अण्वस्त्रों की भयावहता का भी संकेत देते हैं इसलिए उपन्यास के अन्त में वे कबीर द्वारा बोधिवृक्ष की प्राक्कल्पना को प्रस्तुत करते हैं। कबीर के अनुसार, 'बोधिवृक्ष की जडे नीलकंठ

की तरह सारा विष पी लेती है .... पहला बोधिवृक्ष मैं पोखरन में लगाऊँगा, फिर सरहद पार करके दूसरा वृक्ष मैं चगाइ की पहाडियों में लगाउँगा..... तो मैं चलूँ।'

कमलेश्वर लोगों के दिलो दिमाग में पलती हुई अलगावतावादी भावना को निकाल कर उसके स्थान पर समता, एकता, बंधुता आदि भावनाओं का प्रचार और प्रसार करना चाहते हैं। ऐसा करने से 'अमन का माहौल' बना रहेगा इस बात का उन्हें विश्वास है। दुनिया में शांति बनी रहे यही कमलेश्वर का प्रमुख उद्देश्य है इसलिए उनका मंतव्य उन्होंने इन शब्दों में स्पष्ट किया है – 'कमलेश्वर का यह उपन्यास मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है ..... इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं, दुनिया भर में एक के बाद एक दूसरे पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परम्परा अब खत्म हो...'

'कितने पाकिस्तान' शीर्षक की सार्थकता :–

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का लिखा हुआ एक प्रयोगवादी उपन्यास है। इस उपन्यास को सन 2003 ई. के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह उपन्यास बीसवी शताब्दी की उपन्यासों में अपना अलग स्थान निर्धारित करता है। विवेच्य उपन्यास बाकी उपन्यासों की तुलना में अलग है। इसमें सामान्य या रोज की जिंदगी से संबंधित घटनाएँ बहुत कम हैं। लेखक कमलेश्वर ने इस उपन्यास के द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं को केन्द्र में रखकर इस उपन्यास का लेखन किया है।

'कितने पाकिस्तान' इस विवेच्य रचना का कैनवास और काल का पट बहुत विस्तृत एवं विशाल है। आज संपूर्ण दूनिया आतंकवाद एवं साम्प्रदायिकता की समस्याओं से त्रस्त है। पाकिस्तान का निर्माण ही आतंकवाद और साम्प्रदायिकता की पृष्ठभूमि पर हुआ था। सन् 1947 ई. या उसके पूर्व तत्कालीन हिन्दुस्तान में युद्ध जैसा माहौल था। उसकी बुनियाद पर ही पाकिस्तान का निर्माण हुआ था। इस रचना का आखरी कवर पेज ही इस उपन्यास का उद्देश्य एवं शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट करता है। इस कवर पेज पर लिखा हुआ है – 'कमलेश्वर का यह उपन्यास मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है ..... इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं, दुनिया भर में एक के बाद एक दूसरे पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परम्परा अब खत्म हो.....'

आज इक्कीसवी शती में भी आतंकवाद एवं साम्प्रदायिकता ने मानव जाति का पीछा नहीं छोडा। भारत नहीं बल्कि दुनिया भी आतंकवाद और रक्तपात से त्रस्त है इसलिए लेखक ने न केवल बीसवी शती का बल्कि प्राचीन कालखण्ड से रक्तपात की जो परंपरा जो ऐतिहासिक कालखण्ड से चली आ रही है उसका जायजा लेने का प्रयास किया है। विश्व के कोने–कोने में आज युद्ध का माहौल है। हमारा भारत विगत कई हजार वर्षों से इस समस्या से जुझ रहा है।

कमलेश्वर ने इस विवेच्य उपन्यास रचना में विश्व के कोने–कोने में चलनेवाले अनेक युद्ध प्रसंगों का चित्रण किया है। कमलेश्वर की कलम सामान्य घटनाओं का चित्रण नहीं करती बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं पर लेखक ने अधिक बल दिया है। दूसरी बात यह है कि इस उपन्यास में पात्रों की संख्या बहुत कम है। समय को केन्द्र में रखकर ही कमलेश्वर ने इस उपन्यास का लेखन किया है और पात्रों की कमीं पूरी करने के

लिए इतिहास के प्रसिद्ध व्यक्तियों को अर्थात ऐतिहासिक पात्रों को अदीब की अदालत में लाकर दूर किया गया है। जिसके माध्यम से उपन्यास की कथावस्तु अपने पथ पर आगे चलती है। इस उपन्यास का शीर्षक अनेक अर्थों से महत्त्वपूर्ण है।

भारतीय उपमहाद्वीप में बीसवी शती के पूर्वार्ध में साम्प्रदायिकता, धर्मांधता और आतंकवाद के कारण भीषण रक्तपात एवं शोर शराबा हुआ था। दुनिया के किसी भी मुल्क में इतने बडे पैमाने पर हानि नहीं हुई होगी। दो विश्वयुद्धों का अगर अपवाद करें तो शायद ही इतनी बडी न जनहानि हुई होगी न लोगों को अपना वतन छोडकर वहीं विस्थापित या शरणार्थी का जीवन बिताना उनकी नियति होगी।

धर्म के नाम पर, वंश के नाम पर, भाषा के नाम पर, शस्त्र के नामपर, भगवान के नामपर, जाति के नामपर, सम्प्रदाय के नामपर, वर्ण के नाम पर और विचारधारा के नाम पर समाज में जो विविध भेद निर्माण हो रहे हैं वह परम्परा अब समाप्त होनी चाहिए्। इससे मानवता और मानव को भी हानि पहुँचती है और उसका नुकसान हो जाता है और मानवी प्रगति में व्यवधान निर्माण होते हैं। इन सभी बातों की चिंता से रू-ब-रू कराने के लिए कमलेश्वर ने यह शीर्षक दिया है वह निश्चित ही महत्त्वपूर्ण है। कमलेश्वर ने अपनी बात के दृढ प्रमाण के लिए अनेक समकालीन घटनाओं का पूरजोर चित्रण किया है जो यह स्पष्ट करता है कि उनकी कलम के साथ उनकी निगाहें भी कितनी तीखी है। कोसोवो, पूर्वी तिमोर, सोपालिया, कश्मीर आदि जगहों पर होनेवाले युद्ध और प्रतिहिंसा जिससे वहाँ की आबादी ही नहीं बल्कि विश्व भी प्रभावित हुआ है और हो रहा है।

जब भी कही समाज में हिंसाचार होता है तब दंगा फसाद में औरतों की अस्मिता को सर्वाधिक क्षति पहुँचती है। औरतों का उत्पीडन बहुत बडे पैमाने पर हो जाता है। यह बात सभी जानते हैं कि औरतों पर हमला करना, उनकी इज्जत को तार-तार करना बहुत आसान होता है। विश्व पटल पर घटित घटनाएँ इस बात की गवाह है कि हिंसाचार से नारी जाति सर्वाधिक प्रभावित हो जाती है और उसे ही सर्वाधिक नुकसान पहुँचता है। इस अभिशाप को सहने के अलावा नारी के सामने कोई अन्य विकल्प नहीं होता। दुनिया के कोने-कोने में जहाँ भी इस तरह की घटनाएँ जब हो जाती है तब नारी को उत्पीडन का सामना करना पडता है और भविष्य में भी इसी तरह की घटनाएँ घटित होती रहेगी। कमलेश्वर ने योरोप और अमरिका के अनेक देशों के उदाहरणों को देकर अपनी बात को स्पष्ट किया है। भारत के विभाजन के समय भी वहीं हालात थे जिसे हम सब अच्छी तरह से जानते हैं्। पाकिस्तान में नारी जाति की क्या स्थिति थी और आज भी क्या स्थिति है इसपर अधिक लिखने की जरूरत ही नहीं है। संक्षेप में नारी जाति का भविष्य ऐसी घटनाओं से धूमिल हो जाता है इतना ही पर्याप्त है।

हिंसाचार और ऐसी संबंधित घटनाओं में मानव अधिकारों का हनन होता है। विश्व पटल पर अनेक ऐसे राष्ट्र हैं जहाँ मानव अधिकारों का हनन होता है और मानवीय मूल्य तथा मानवीयता को कोई कीमत नहीं है। ऐसे लोगों के कारण मानवता शर्मसार हो जाती है और लोगों को मानवता शब्द से ग्लानि निर्माण हो जाती है। जिन देशों में युद्ध का वातावरण है वहाँ पर किसी की जान लेना आसान है। मरे हुए आदमी के प्रति

मारनेवाले के मन में कोई करूणा नहीं होती और न सहानुभूति इसलिए प्राचीन समय से यह रक्तपात या खून की होली खेली जा रही है और भविष्य में इसमें परिवर्तन के कोई संकेत नजर नहीं आते।

सही अर्थ में हिन्दुस्तान के इतिहास को सत्रहवीं शती में एक नया मोड मिल सकता था यह कमलेश्वर की अवधारणा है। औरंगजेब की जगह अगर दाराशिकोह हिन्दुस्तान का सम्राट बन जाता तो भारत का इतिहास अलग हो जाता और भारत की वर्तमान स्थिति के साथ भारत का मानचित्र भी अलग हो जाता यह कमलेश्वर का मंतव्य है। दारा शिकोह उदारमतवादी व्यक्तित्त्व था जब कि औरंगजेब का व्यक्तित्त्व इसके विपरित था इसलिए कमलेश्वर ने इन दोनों के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट किया है।

भारत, पाकिस्तान, युगोस्लाविया, अफगानिस्तान, इरान, इराक, बोर्निया, मिसर आदि अनेक देशों के उदाहरण देकर कमलेश्वर इस बात को साबित किया है कि 'पाकिस्तान से पाकिस्तान पैदा होता है। यह छूत का एक रोग है। जब तक धर्म, नस्ल, जाति, और दुनिया की पहली शक्ति बनने का नशा नहीं टूटता, जब तक सत्ता और वर्चस्व की हवस नहीं टूटती तब तक इस धरती पर पाकिस्तान बनाए जाने की नृशंस परम्परा जारी रहेगी...' यह कमलेश्वर का अभिमत है जो इस रचना के शीर्षक की सार्थकता को बढावा देता है।

इतिहास के नीचे इतिहास दबा होता है और हमारी आँखों से ओझल रहता है। उस इतिहास को नए सिरे से सामने लाकर उस इतिहास से बोध ग्रहण करना मानव के लिए जरूरी है। जब पाकिस्तान जैसा मुल्क बन जाता है तब क्या-क्या हुआ था ? पाकिस्तान की तरह दुनिया में अनेक मुल्क है जहाँ पाकिस्तान की तरह दंगा फसाद चलते रहते हैं उन सब का विश्लेषण कमलेश्वर ने इस रचना के द्वारा किया है।

किसी उर्दू शायर की पंक्तियों को लेकर कमलेश्वर ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है – 'लम्हों ने खता की थीं, सदियों ने सजा पाई ....' भारत के इतिहास में अनेक क्षण ऐसे आ गए जिन क्षणों में हमारे हाथों अनेक गलतियाँ हुई और आज इतने वर्षों के बाद भी उन गलतियों की सजा से हम आजाद नहीं हो सके और उस भयावह भीषण अंजाम से हम मुक्त नहीं हो पाए यहीं हमारे देश का सबसे बडा दुर्भाग्य है यह कमलेश्वर की मान्यता है। पाकिस्तान या उसके जैसे राष्ट्रों का निर्माण यह क्षणों की गलतियाँ थीं किन्तु इसकी सजा आज पूरा विश्व भूगत रहा है और उसकी यह कोशिश है, इस कश्मकश से खुद को वह आजाद करें लेकिन ऐसा नहीं होता और भविष्य में भी यह असंभवनीय ही प्रतीत होता है यह भी लेखक का अभिमत है।

उपन्यास के अन्त में कमलेश्वर ने कबीर द्वारा बोधिवृक्ष लगाने की बात लिखकर शांति को बढावा देने का अनूठा प्रयास किया है। युद्ध संत्रस्त दुनिया और मानवता को अमन और शांति की ओर ले जाने की मंगल कामना की है। युद्ध, हिंसाचार, साम्प्दायिकता, धर्मांध प्रवृत्ति के खिलाफ अलख जगाने का लेखक ने प्रयास किया है।

'पाकिस्तान से पाकिस्तान ही पैदा होता है' यह वाक्य इस उपन्यास का सर्वोत्तम वाक्य है जिससे इस उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता बढ जाती है। संक्षेप में कमलेश्वर द्वारा रचित 'कितने पाकिस्तान' यह शीर्षक न केवल सार्थक है अपितु प्रासंगिक भी है और भविष्य में भी इसकी प्रासंगिकता बरकरार रहेगी इसके प्रति कोई आशंका नहीं है।

2.3.5 'कितने पाकिस्तान'में चित्रित समस्या–

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर द्वारा लिखित उपन्यास है। जिसका प्रकाशन सन् 2000 ई. में राजकमल प्रकाशन की ओर से हुआ है। उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक अर्थ है – धार्मिक उन्माद हेतु समूह द्वारा की गई मांग को स्पष्ट करता है। इस उपन्यास में लेखक ने विश्व मानव की अलगाव की करुण कहानी को चित्रित किया है। यह मानवी मूल्यों के विघटन की त्रासदी कही जा सकती है। आज मनुष्य का अंतस्थ भी विभाजित हो गया है। इसी कारण उसके शाश्वत मूल्यों का भी विघटन और अलगाव को निर्माण में सहायक घटकों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित विविध समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

1. युद्ध–

मानवता का अभिशाप – युध्द मानव, जीवन को शाप कहा जा सकता है। जिससे मानव का अस्तित्व खतरे में पड गया है। युध्द के दुष्परिणामों की चर्चा करते है। डॉ. फरुबुददीन ने लिखा है, युध्द संसार की शांति, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विचारों का स्वतंत्र आदान–प्रदान और विभिन्न समाजों के बीच संदेश वहन को नष्ट कर देता है। युध्द केवल आपसी नहीं अंतरराष्ट्रीय संबंधों को ही भंग करता है। वह व्यक्तियों की भी नैतिक अवस्था को गिरा देता है। युद्ध के दुष्परिणामों एवं उससे प्रभावित घटकों की कटु शब्दों में आलोचना की है। कमलेश्वर ने अपने विवेच्य उपन्यास में युध्द की समस्या को केंद्रीय समस्या के रुप में उठाया है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने लिखा है– क्या एक जीवित रहने के लिए दूसरी की मौत जरूरी है, सारे युद्ध – महायुद्ध यही तो बताते है कि, मौत के योग फल के आधार पर की हार–जीत तय हो जाती है, तुम कितनी मौत दे सकते हो त्याज नहीं होती। धर्म समाज को उपयोगी और निरोपयोगी पक्ष प्रदान करता है। धार्मिक कट्टरता के कारण मानव–मानव के रिश्ते में संकीर्णता आ जाती है। प्रत्येक धर्मावलंबियों को ऐसा लगता है कि, उसकी धार्मिकता सही है। ऐसा कमलेश्वर का मानना है। हिंदू और मुस्लिमों की धार्मिकता पर प्रकाश डाला है। हिंदुओं ने बाबरी मस्जिद गिरा दी थी दिनांक 6 दिसंबर सन् 1942 ई. को बाबरी गिरा दी इस प्रसंग पर लिखा है। तभी दहाड़ मारकर विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के नेता दस्तक देने लगे .... राम जन्मभूमि पर मंदिर बनकर रहेगा..... बल्कि हम कृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ को भी मुक्त करके रहेंगे । कमलेश्वर ने सभी धर्म के अनुयायियों को धर्म के प्रति बंधुता अपनाने का आवाहन किया है ।

2. जातीयता एक शाप –

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति व्यवस्था का अनोखा स्थान माना जाता है। भारत में जाति प्रथा के उद्भव के अनेक कारण है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र अदीब और सलमा के बीच धर्म और जाति को लेकर चर्चा होती है। सलमा मुस्लिम है। वह हिंदू धर्म पर आरोप लगाती हुई कहती है। ब्राह्मण ग्रंथों के आधार पर तुमने अपना वर्णाश्रम धर्म बना लिया था, हर बच्चा मां की कोख से पैदा होता है। पर तुम्हारे ब्राह्मणों, उनके ग्रंथों ने मां की कोख का अपमान करते हुए मनुष्य को ब्रह्म के अलग–अलग अंगों से पैदा

करने का सिद्धांत पैदा किया। आज के शब्दों में कहो तो तुम्हारे ब्राह्मणों ने अपना पाकिस्तान बना लिया। इसी उपन्यास में चित्रित भगवान राम राज्य में शंबूक की हत्या का प्रसंग जाति व्यवस्था का चित्रण करता है।

3. आतंकवाद के विविध रूप–

आतंकवाद ने बीसवीं शती में अपना विकराल रूप धारण किया है। भारत आतंकवाद की अग्नि में दो प्रधानमंत्री की आहुति दे चुका है। जिसमें भारत की वित्त हानि और जीवित हानि हो चुकी है। यह एक विश्व स्तर की समस्या बन चुकी है। कमलेश्वर ने अपने इस उपन्यास में आतंकवाद से प्रभावित देश एवं घटनाओं का जिक्र किया है। सन् 1993 ई. में मुंबई में हुए बम ब्लास्ट, उल्फा उग्रवादी सन् 2001 ई. में लाल किले पर हुआ हमला, नेपाल से आ रहे यात्री विमान का अपहरण, दिनांक 13 सितंबर को संसद पर हुआ हमला। अक्षरधाम, गुजरात के मंदिरों पर हुए हमले ये आतंकवाद के उदाहरण है। इस उपन्यास में धार्मिक और आर्थिक आतंकवाद के भी दर्शन होते है।

A) धार्मिक आतंकवाद –

हर युग में धर्म के नेताओं ने अपने–अपने धर्म की दहशत फैला कर अपना धर्म सर्वोपरि करने का प्रयास किया है। जिसके कारण कि जिहाद जैसी संकल्पनाओं में जन्म लिया। इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने ईसाई और इस्लाम धर्म के अनुयायियों द्वारा अन्य धर्मों पर किए गए अत्याचार का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। आव्तोमन साम्राज्य का शहंशाह सलीम प्रथम चीखा जीसस क्राइट की करुणा, अहिंसा, पश्चाताप, दया की जगह जितनी बर्बरता, अहिंसा की जगह जितनी हिंसा, पश्चाताप की जगह जितनी श्रेष्ठता, गश्त, नस्लवाद और दया की जगह दयाहीनता और हत्या का जितना अमानवीय इतिहास मौजूद है, वह तो दुनिया के किसी धर्म के पास मौजूद नहीं है। राजनीतिक सत्ता प्राप्ति के लिए धार्मिक आतंकवाद का प्रयोग श्रीलंका, चीन, कश्मीर, अफगानिस्तान, अल्जीरिया प्रांतों में किया जा रहा है। भारत में असम, पंजाब में धार्मिक आतंकवाद दिखाई देता है।

B) आर्थिक आतंकवाद–

पूंजीवादी, साम्राज्यवादी, देश अपना आर्थिक तकनीकी विकास करने के लिए अन्य कमजोर देशों पर अपनी अधिकार, प्रभूता जमाए रखने के लिए साम्राज्यवादी दृष्टिकोण अपनाते है। वे देश एक रुपसे आर्थिक आतंकवाद का समर्थन करते हैं। कमलेश्वर ने इस पर प्रकाश डालते हुए लिखा है। बाजारों के लिए ही बनते है साम्राज्य और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए ही बनाए जाते है। साम्राज्यों के रूप बदल सकते हैं परंतु इन पूँजीवादी प्रजातंत्र को जीने के लिए मुनाफे के बाजारों की जरूरत है। मनुष्य की आर्थिक लालसा भी आर्थिक आतंकवाद को प्रभावित करती है।

4. विश्व मानवता का संकट– अलगाववाद

अलगाव के कारण आज विश्व मानवता पर गहरा संकट है। मानव का अंतस्थ आज खंडित होता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की तुलना में अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। आज अलगाव के कारण विश्व मानवता खतरे में आ गई है। इस उपन्यास में अलगाव का चित्रण हुआ है। कमलेश्वर कहते हैं कि

अब ऐसे ही पागल लोग इस दुनिया में नहीं मिलते हैं।अगर मिले होते तो सोवियत यूनियन नहीं टूटता। युगोस्लोवालिया मेंवोस्निया के मुसलमानों का कत्लेआम नहीं होता। सोमालिया में बच्चे और लोग तड़प-तड़प कर अकाल से न मरते और चार सौ फिकलास्तनी इसरायली उन्हें इसरागल की सरहद पर भुख और ठंड में पडे पडे मौत का इंतजाम न करते और इस तरह मौत के मुँह में न खदेडते। अलगाववाद के कारण मनुष्य परंपरा में अजनवी अपरिचितों का व्यवहार कर रहा है इसके साथ- साथ इस उपन्यास में नए सिमेंट कांक्रीट के जंगलराज, विज्ञान के नए अविष्कार और उससे उत्पन्न परिस्थिति, उदात्त मानवीय मूल्यों का रहास, इतिहास लेखन में सत्ता का वर्चस्व आदि विविध समस्याओं का सुंदर चित्रण किया है।

उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने मानव जीवन की गंभीर समस्याओं का चित्रण किया है। युध्द के दुष्परिणामों का विवेचन विवेच्य उपन्यास में पाया जाता है। प्राचीन, पौराणिक युध्दों से लेकर दो महायुध्दों तक का चित्रण इस उपन्यास की एक मौलिक विशेषता कही जा सकती है। कट्टर धार्मिकता के कारण विश्व मानवता खतरे में आ गई है। ऐसा कमलेश्वर का प्रतिपादन है। जातीयता के कारण भारत में मानव समाज अनेक खेमों में विभाजित हुआ है। मानव निर्मित जातिगत उच-नीच भावना से समाज एक नहीं हो सका कमलेश्वर ने आतंकवाद के विविध रूपों का चित्रण किया है। धार्मिक आंतकवाद के कारण भारत को बहुत बडी जन, वित्त हानि उठानी पडी है। धार्मिक आतंक वाद विश्व व्यापी समस्या है संसार के अनेक देश आतंकवाद से आतंकित रहे हैं। आर्थिक आतंकवाद के कारण पूंजीपति मानसिकता त्रस्त रही है। अलगाव वाद के कारण विश्वमानव के आस्तित्त्व पर उठा सवाल दुनिया का कोई भी देश, जाति ऐसी नहीं है, जो इसका शिकार नहीं हुआ न हो। इस प्रकार कमलेश्वर ने अपने बहुचर्चित उपन्यास में विविध समस्याओं का चित्रण किया है।

2.4 सारांश

1. सदियों से चली आ रही विभाजन की परंपरा बंद हो जाए इस पर मार्गदर्शन किया गया है।
2. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने मनुष्य को मनुष्य की तरह जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है।
3. मुगलकालीन कई अभिलेखों और पत्रों को उद्धृत करके यह बताने की कोशिश की गई है कि बाबरी मस्जिद की प्रसिद्ध कहानी सही नहीं है।
4. कमलेश्वर ने यह बताने की कोशिश की है जनता को बांटकर रखने से उन पर नियंत्रण करना कितना आसान हो जाता है।
5. शासक लोगों को साथ लेकर चल नहीं पाता है तो वह धर्म का सहारा लेकर शासन करता रहता है।
6. प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर का महान दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ है। देश विभाजन के प्रति इनका चिंतन स्पष्ट हुआ है

2.5 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न–

अ) 1. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास.............. ई. में लिखा गया है।

क) सन् 2000 ख) सन् 2001 ग) सन् 2002 घ) सन् 2003

2. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास को.............. पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

क) ज्ञानपीठ ख) साहित्य अकादमी ग) भारत भूषण अग्रवाल घ) भूषण सम्मान

3. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का प्रमुख पात्र........... है।

क) अजीब ख) अजीत ग) अजीज घ) अदीब

4. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के महिला प्रमुख पात्र........... है।

क) सलमा और अर्दली ख) सोना और पारो

ग) नीरू और नीमा घ) मीरा और पार्वती

5. कमलेश्वर 'पाकिस्तान' शब्द का प्रयोग भी.......... रूप में करते हैं।

क) सकारात्मक ख) नकारात्मक ग) प्रतीकात्मक घ) ध्वन्यात्मक

6. .... की हत्या का प्रसंग इतिहास के षड्यंत्रों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

क) दाराशिकोह ख) औरंगजेब ग) जहांगीर घ) अकबर

7. .... मंदिर को गिराकर वहां जब मस्जिद बनाए जाने वाली घटना को अदीब की अदालत में पेश करते हैं।

क) गणेश ख) विश्वनाथ ग) महादेव घ) लक्ष्मण

8. उगते सूरज को सलाम करना और डूबते सूरज को नमाज के साथ विदा करना यह तो हमारी .... परंपरा का खास हिस्सा है।

क) हिंदुस्तानी ख) महाराष्ट्र की ग) पंजाबी घ) हरियाणवी

9. अंग्रेजों के बच्चों को सोचना चाहिए सदियों पहले .... की तरह से सलाम करते आए थे।

क) द्वारपाल ख) रखवालदार ग) सौदागर घ) मुनीम

10. मेरे ऊपर जो .... गिराया था वह दुर्घटना नहीं युद्ध समाप्त करने के नाम पर सोचा समझा परीक्षण था।

क) मिसाइल ख) एटम बम ग) अनु बम घ)परमाणु बम

11. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में.............. शब्दों की भरमार है।

क) अरबी और फारसी ख) मराठी और कनडा

ग) जर्मन और जापानी घ) पंजाबी और उर्दू

12. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास विश्व भर के .... का चित्रण करता है।

क) शैतान की पीड़ा ख) मानव की पीड़ा

ग) राक्षसी पीड़ा घ) जादू टोना

13. .... के माध्यम से कमलेश्वर ने कृत्रिम सीमाओं को लेकर निराशा व्यक्त की है।

क) सलमा ख) अर्दली ग) अजीब घ) अदीब

14. शासक लोगों को साथ लेकर चल नहीं पाता है तो वह .... का सहारा लेकर शासन करना चाहता है।

क) मंदिर ख) संस्कृति ग) रीति रिवाज घ) धर्म

15. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में......... की धार्मिकता पर प्रकाश डाला है।

क) हिंदू और मुस्लिम ख) सिख और ईसाइ

ग) हिंदू और जैन घ) हिंदू और लिंगायत

16. राम राज्य में .... की हत्या का प्रसंग जाति व्यवस्था का चित्रण करता है।

क) शंबूक ख) रावण ग) कंस घ) कर्ण

17. कमलेश्वर का निधन .... वर्ष के थे तब हुआ।

क) 77 ख) 78 ग) 75 घ) 76

18. कमलेश्वर का जन्म उत्तर प्रदेश के .... नामक कस्बे में हुआ था।

क) मैनपुरी ख) खंडवा ग) फरीदाबाद घ) काशी

19. कमलेश्वर को पहले .... रेडियो में नौकरी मिली।

क) मुंबई ख) भोपाल ग) इलाहाबाद घ) दिल्ली

20. सन् 2005 ई. में कमलेश्वर को पद्मभूषण पुरस्कार से .... महोदय ने सन्मानित किया।

क) अध्यक्ष ख) मुख्यमंत्री ग) प्रधानमंत्री घ) राष्ट्रपति

ब) सही/गलत बताइए।

1. अ) 'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का उपन्यास है।

ब) 'कितना पाकिस्तान' मोहन राकेश का नाटक है।

अ) अ सही ब गलत ब) अ गलत ब सही

क) अ और ब गलत ड) अ और ब सही

2. अ) 'कितने पाकिस्तान' ना नायक अदीब है।

ब) 'कितने पाकिस्तान' का नायक विजय है।

अ) अ सही ब गलत　　　　ब) अ गलत ब सही

क) अ और ब गलत　　　　ड) अ और ब सही

क) उचित मिलान कीजिए।

1. कितने पाकिस्तान पुरस्कार	अ) नायिका
2. कितने पाकिस्तान विषय	ब) साहित्य अकादमी
3. अदीब का अर्थ है	क) साहित्यकार
4. सलमापात्र	ड) देशविभाजन

ड) उचित मिलान

1. कितने पाकिस्तान	अ) बुद्धिजीवी
2. अदीब पात्र	ब) वामपंथी
3. कितने पाकिस्तान उपन्यास की विचारधारा	क) प्रयोगवादी उपन्यास
4. कितने पाकिस्तान में धार्मिकता प्रमुख रूपसे है	ड) प्रयोगवादी उपन्यास

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

तहजीब – सभ्यता, शिष्टता

अदीब – साहित्यकार, साहित्यिक

पराशक्ति – सर्वोच्च ऊर्जा, श्रेष्ठ शक्ति

झंझावात – प्रचंड वायु, आंधी तूफान

गिलगमेश – प्राचीनतम वीर काव्य

तकबीर – ईश्वर की प्रशंसा

धरम – ईश्वरीय उपासना, आराधना

प्रमथ्यु – सर्जनात्मक शक्ति का प्रतीक

देवदासी – देवता की दासी

शिद्दत – कठिनाई, कष्ट

मुल्तवी – स्थगित, रुकने वाला, देर करने वाला

सूबा – राज्य का एक विभाग

मुहाजिर – शरणार्थी, विदेश से आकर बसने वाला

मुजस्सिम – मूर्तिमान, साक्षात, देहधारी

वणिक – व्यापारी

2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1. सन् 2000	2. साहित्य अकादमी	3. अदीब	4. सलमा और अर्दली
5. प्रतीकात्मक	6. दाराशिकोह	7. विश्वनाथ	8. हिंदुस्तानी
9. सौदागर	10. परमाणु बम	11. अरबी और फारसी	12. मानव की पीड़ा
13. सलमा	14. धर्म	15. हिंदू और मुस्लिम	16. शंबूक
17. 75	18. मैनपुरी	19. इलाहाबाद	20. राष्ट्रपति

उत्तर :

अ)	1–अ	2–ब	3–क	4–ड
ब)	1–ब	2–ड	3–क	4–अ
क)	1–क	2–ड	3–ब	4–अ
ड)	1–ड	2–क	3–अ	4–ब
	1–ड	2–अ	3–ब	4–क

2.8 स्वाध्याय

1. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की कथावस्तु लिखिए।
2. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ लिखिए।
3. देश विभाजन की दृष्टि से 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
4. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के अदीब का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5. उपन्यास की तत्वों के आधार पर 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
6. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित धार्मिक आतंकवाद चित्रण कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य

'तमस' और 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की तुलना कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. तमस – भीष्म साहनी
2. झूठा सच – यशपाल

❑❑❑

इकाई–3
अनबीता व्यतीत

– कमलेश्वर

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय- विवेचन

- 3.3.1 कमलेश्वर का परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व
- 3.3.2 'अनबीता व्यतीत' का परिचय
- 3.3.3 'अनबीता व्यतीत' की कथावस्तु
- 3.3.4 'अनबीता व्यतीत': चरित्र-चित्रण
- 3.3.5 'अनबीता व्यतीत': संवाद
- 3.3.6 'अनबीता व्यतीत': देश- काल तथा वातावरण
- 3.3.7 'अनबीता व्यतीत': भाषा-शैली
- 3.3.8 'अनबीता व्यतीत': उद्देश्य

3.7 सारांश

3.5 स्वयं -अध्ययन के लिए प्रश्न

3.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.7 स्वयं- अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :-

इस इकाई को पढ़ने पर आप -

1. कमलेश्वर के जीवन परिचय और व्यक्तित्त्व से परिचित हो जाएंगे ।
2. कमलेश्वर के कृतित्त्व से परिचित होंगे ।
3. उपन्यासकार कमलेश्वर का परिचय पा सकेंगे ।
4. कमलेश्वर के पक्षी-प्रेम से परिचित हो जाएंगे ।
5. पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों से परिचित हो जाएंगे ।

3.2 प्रस्तावना :-

स्वातंत्र्योत्तर काल में सफल कहानी एवं उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वर को पहचाना जाता है । कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार हैं, साथ ही कहानीकार के रूप में भी उन्होंने बहुत ख्याति प्राप्त की है। उनके साहित्य का तत्कालीन समाज-पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है। कमलेश्वर ने उपन्यास और कहानी के साथ-साथ नाटक, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, निबंध, आलोचना, पत्र-पत्रिकाओं का संपादन, फिल्म - लेखन, रेडियो, टेलीविजन के लिए स्क्रिप्ट लेखन आदि में भी बहुत बड़ा योगदान दिया है। उनको हिंदी साहित्य जगत् में प्रतिभासंपन्न एवं बहुआयामी व्यक्तित्त्व के रूप में पहचाना जाता है।

3.3 विषय- विवेचन:-

3.3.1 कमलेश्वर का परिचय :-

जन्म एवं परिवार :-

कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी, सन् 1932 ई. को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी नामक कस्बे में हुआ था। उनका पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना है। उनके पिता का नाम जगदंबा प्रसाद सक्सेना एवं माँ का नाम शांतिदेवी है। जगदंबा प्रसाद की दो पत्नियाँ थीं। सुश्री शांतिदेवी की कोख से कमलेश्वर का जन्म हुआ। जब कमलेश्वर चार वर्ष के थे, तब उनके पिता की मृत्यु हृदयगति रूक जाने से हो गई। उन्हें पिता का अभाव आजीवन खलता रहा।

बचपन :-

पिताजी की मृत्यु के बाद उनका एकमात्र सहारा था, उनका बड़ा भाई सिद्धार्थ; लेकिन उसकी भी अचानक मृत्यु हो गई। इस प्रकार कमलेश्वर का बचपन अभावों तथा अकेलेपन में बीता। कमलेश्वर बचपन के सुख से वंचित रहें। कमलेश्वर का बचपन मैनपुरी के कटरा मुहल्ले में बड़े से मकान में गुजरा। वैसे कहने को तो जमींदार परिवार था। जमींदारी ठाठ समाप्त हो जाने पर भी, उनकी माँ द्वारा सामंती शान को

रखने का भरसक प्रयास किया गया, लेकिन उसमें वें असफल रहीं। इस प्रकार कमलेश्वर का बचपन आर्थिक अभाव में गुजरा और इन तनावग्रस्त दिनों का प्रभाव उन पर आजीवन रहा।

शिक्षा :–

कमलेश्वर की हाईस्कूल की पढ़ाई सन् 1946 ई. को मैनपुरी के 'गवर्नमेंट हाईस्कूल' में आरंभ हुई। इंटरमीडियेट सन् 1950 ई. को इलाहाबाद के 'के. पी. इंटर कॉलेज' से किया। सन् 1954 ई. में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिंदी) किया। उन्होंने भौतिकी, गणित, अर्थशास्त्र, रसायनशास्त्र, भूगोल, हिंदी आदि विषयों का गहरा अध्ययन किया। वे पहले विज्ञान के विद्यार्थी थे। सन् 1952 ई. में एम.ए. हिंदी में दाखिला लिया, तो फिर वे हिंदी के ही बनकर रह गए।

विवाह एवं परिवार :–

कमलेश्वर का विवाह सन् 1958 ई. में गायत्री के साथ उत्तरप्रदेश के फत्तेहगढ़ में हुआ। तब उनकी उम्र 27 साल की थी। कमलेश्वर के पहली पुत्री का जन्म के कुछ समय बाद ही निधन हो गया था। तब कमलेश्वर दिल्ली दूरदर्शन में काम करते थे। जब पुत्री की मृत्यु की खबर आई, तो छुट्टी मिल नहीं रहीं थी और जाने के लिए पैसे भी नहीं थे। उनके जीवन का यह सबसे बड़ा दुखद प्रसंग था कि अपनी पहली संतान को वे देख भी न सके। उनकी दूसरी और एकमात्र संतान है मानु, जो एक अध्यापिका है और उसकी भी शादी हो चुकी है। कमलेश्वर की पत्नी गायत्री भी लेखिका है। कमलेश्वर पत्नी के साथ दिल्ली में रहते थे।

आजीविका (नौकरी) :–

कमलेश्वर का बचपन अभावों में ही बीता। उस समय उनका प्राचीन सामंतशाही परिवार बिल्कुल डह गया था। इसी कारण घर की हालत बहुत बुरी थी। आर्थिक अभावों के कारण उन्हें कॉलेज पढ़ते–पढ़ते छोटी–मोटी नौकरियाँ भी करनी पड़ी। पहले वे 'प्रकाश प्रेस' मैनपुरी में प्रूफ–रीडिंग तथा स्थानीय पत्र में यदा–कदा लेखन करते थे। 'जनक्रांति' (कानपुर–इलाहाबाद) में लेखन, 'बहार' (इलाहाबाद) में पचास रूपये महावार पर संपादन कार्य, 'राजा साईन आर्ट' में पेंटिंग के साथ ड्राईंग, बुक ब्राँड चाय, तथा 'कहानी' मासिक में भी नौकरी की। उनकी एक जगह पक्की नौकरी नहीं थी। वे बार–बार नौकरी में बदल कर देते थे। वे गुलाम बनकर रहना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने 'सेंट जोसेफ सेमीनरी' में हिंदी अध्यापन का काम किया। राजकमल प्रकाशन में साहित्य–संपादक, ऑल इंडिया रेडियो में स्क्रिप्ट राईटर, 'नई कहानियाँ', 'इंगित' (साप्ताहिक), 'सारिका', 'कथायात्रा', 'श्रीवर्षा', 'गंगा' आदि का संपादन, दूरदर्शन में संयुक्त महानिदेशक पद पर काम, 'दैनिक जागरण' का संपादन, कहानी लेखन, फिल्म संवाद एवं टी.वी. सिरियल के लिए लेखन कार्य किया। कमलेश्वर एक मशहूर टी.वी. स्टार भी रहे हैं। मुंबई दूरदर्शन से प्रसारित 'परिक्रमा' कार्यक्रम के वे संचालक रहें।

पुरस्कार :–

कमलेश्वर को सन् 2000-2001 ई. में हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान, शलाका सम्मान, सन् 2001-2002 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का आचार्य शिवपूजन सहाय शिखर सम्मान, वर्ष 2003 में चर्चित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। वर्ष 2005 में वे 'पद्मभूषण' उपाधि से विभूषित हुए थे।

मृत्यु :–

वरिष्ठ कथाकार एवं उपन्यासकार कमलेश्वर जब पचहत्तर वर्ष के थे, तब 27 जनवरी, 2007 को हृदयगति रूकने के कारण उनका निधन हो गया।

रचना प्रक्रिया :–

कमलेश्वर के जीवन का उनके लेखन से गहरा संबंध है। जीवन की अनेक स्थितियों ने ही उनको लिखने के लिए प्रेरित किया था। कॉलेज में पढ़ते समय साधारण– सी पत्रिका के कार्यालय में माहवार पचास रुपये पर काम भी करते थे। रात को घर बैठकर वे अपने निहायत छोटे– से कमरे में बैठकर लिखते थे। शाम को उन्हें अकेला रहना पसंद था। उन्होंने अपने जीवन में जो पीड़ा, दर्द, अपमान भोगा, उसको एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए उन्होंने उसे अपने साहित्य में वाणी देने का काम किया। दिन–रात वे लिखते रहते थे। उन्होंने हिंदी में कई बेहतरीन कहानियाँ लिखीं, संपादन कार्य किया, फिल्मों के लिए कथा, पटकथा, संवाद आदि का लेखन कार्य किया। 'दैनिक भास्कर' को अच्छी तरह से संभाला था। कमलेश्वर के जीवन और लेखन का अटूट संबंध रहा है। जीवन के संघर्षों ने उनको एक सशक्त लेखक बना दिया है।

व्यक्तित्त्व :–

हिंदी साहित्य का कथाकार कमलेश्वर अब एक नाम न रहकर, विशेषणों एवं उपनामों से आभूषित एक व्यक्ति है। विभिन्न नाम, उपनाम व संज्ञाएँ उनके व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को समझने में सहायक हैं। कमलेश्वर के व्यक्तित्त्व के महत्त्वपूर्ण पहलू निम्नलिखित हैं –

प्रतिभा संपन्न :–

कमलेश्वर एक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे एक सशक्त लेखक, संपादक, आलोचक, संवाददाता, वक्ता और नेता हैं। कमलेश्वर अपनी कहानी और उपन्यास द्वारा सामाजिक, बौद्धिक और मानसिक रूढ़िबद्ध घेरों को तोड़ने का काम करते हैं। अद्भुत प्रतिभा, व्यंग्य और विनोदप्रियता, दृढ संकल्प, आदर्शवादिता आदि के कारण कमलेश्वर सभी जगह चर्चा में रहे हैं। उनके व्यक्तित्त्व में शील, संकोच, विनय आदि गुण अधिक मात्रा में हैं। सबसे स्नेहपूर्ण व्यवहार करने वाले तथा औरों के प्रति मन में द्वेष न रखने वाले ऐसे भलेमानस व्यक्ति ढूंढने पर भी बहुत कम पाए जाते हैं। उनके एक व्यक्तित्त्व में अनेक व्यक्ति समाहित हैं। वे एक अच्छे वक्ता एवं युवापीढ़ी के मार्गदर्शक हैं।

दृढ़ संकल्पी :–

कमलेश्वर के जीवनानुभवों ने उन्हें दृढ़ संकल्पी बना दिया। दसवीं पास हो जाने पर आर्थिक विपन्नता के बीच उन्हें सौतेले भाई की सहायता से नौकरी मिली थी; लेकिन उन्होंने 'यह दुनिया मेरी नहीं है' कहकर नौकरी छोड दी। उन्होंने मन की बातों को अर्थ से ज्यादा माना। उन्होंने अपने लिए साहित्य का रास्ता चुन लिया। उनके दृढ़- संकल्प की झलक उनकी रचना में भी मिलती है। जो कुछ वे लिखना चाहते थे, चाहे वह व्यवस्था विरोधी, सत्ता विरोधी या व्यक्ति विरोधी हो, लिखे बगैर पीछे मुड़ते नहीं थे। वे शुरू से अंत तक एक प्रतिबद्ध वामपंथी ही रहे हैं। चाहे जमाना बदल जाए, दुनिया बदल जाए, लेकिन कमलेश्वर उसी प्रकार दृढ संकल्पी बने रहें।

विनोदप्रिय :–

कमलेश्वर खुशदिल आदमी थे। व्यंग्य और विनोदप्रियता उनकी अन्यतम् विशेषता है। लतीफे और चुटकुले तो उनकी जबान पर सदा मौजूद रहते थे। अपने जोरदार ठहाकों से वे कइयों के दिलों पर छा जाते थे । उनके विनोद का लक्ष्य किसी की दुखती रग को छूना नहीं होता था। विनोदप्रिय स्वभाव के कारण किस्से गढ़कर सुनाने में वे माहिर थे। दोस्तों की छेपटी उड़ाने में उस्ताद कमलेश्वर के व्यक्तित्त्व का दूसरा पहलू व्यंग्य भी है, वे साहित्य में व्यंग्य के प्रयोग में अत्यंत उदार थे। उनकी व्यंग्यात्मकता उनके व्यक्तित्त्व का अहम हिस्सा है।

विद्रोही एवं स्वाभिमानी :–

कमलेश्वर में विद्रोह की भावना बचपन से ही विद्यमान थी। कस्बे के सरकारी स्कूल में सरकारी अफसरों के बच्चों को दिया जाने वाला विशेष सम्मान, साधारण छात्रों के प्रति बुरा व्यवहार, कक्षा में अधिकतर अव्वल आ जाने पर भी कमलेश्वर को कभी भी सालाना इम्तहान में अव्वल न आने दिया। अत: बचपन से ही व्यवस्था, असमानता के प्रति उनके मन में विद्रोह की भावना अंकुरित हुई। कमलेश्वर के विद्रोही व्यक्तित्त्व के दो ध्येय रहे हैं – पहला अधिकार की लड़ाई, दूसरा सत्ता के प्रति असंतोष व प्रतिवाद की अभिव्यक्ति। इसी निर्भिक स्वभाव ने उनकी कलम से सदा सच कहलवाया है। दूरदर्शन की नौकरी करते समय उनके कामकाज के बीच किसी ने हस्तक्षेप किया या बाधा डाली, तो वे उसे सह नहीं पाते थे। अपने विरोध में काम होते ही वे इस्तीफा देकर चले जाते। इस प्रकार स्वाभिमान से जीना उनकी आदत थी।

एक सच्चा मित्र :–

कमलेश्वर के दोस्ती के खाते में मोठा बैलेंस रहा। बचपन में चाहे कटरा मुहल्ले का घर सूना हो, रमेश और श्यामस्वरूप जैसे मित्र पेडों पर चढ़ने, इमली तोड़ने, बर्रो के छत्तों में हाथ डालने के लिए सदा साथ रहतें। किशोरावस्था में मार्कण्डेय और दुष्यंतकुमार जैसे दोस्त रहें। सभी उनके दुर्दिनों के साथी रहे हैं। कमलेश्वर को अजीज दोस्त भी मिला, जिसका नाम मोहन राकेश था। दोनों की दोस्ती में एक अटूट रिश्ता था। वे साहित्य और जीवन के सुख-दुख के साथी थे। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर की दोस्ती

का त्रिकोण प्रख्यात हो गया। राकेश के साथ उनके पारिवारिक संबंध भी थे। दिल्ली में वे दोनों साथ-साथ एक ही घर में ऊपर-नीचे रहा करते थे। मन्नू भंडारी भी उनकी दोस्ती की श्रेणी में थी। व्यक्तिगत रिश्तों में वे बेहद भावुक थे, जब भी वक्त आया है, उनके दोस्तों ने उनका साथ छोड़ा है, पर वे स्वयं तमाम यातनाओं के बाद भी अपने दोस्तों को नहीं छोड़ सके हैं।

एक प्रतिबद्ध वामपंथी :-

दसवीं पास हो जाते ही उन्हें कानपुर में योरोपियन इंस्टिट्यूट में नौकरी मिल गई। लेकिन वहां छावनी में नशे में धूत अंग्रेज एवं अमरीकन सिपाहियों के भारतीय लड़कियों के साथ जानवरों जैसे व्यवहार से उनका खून खौलने लगा। यात्रा के बीच क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के नेता योगेश चटर्जी और केशव मिश्र से उनका मिलन हुआ। कमलेश्वर क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के सदस्य बन गए। मैनपुरी से इलाहाबाद पहुंच गए, वहां क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी का काम करने लगे। उन्होंने पार्टी अखबार 'जनक्रांति' में जोरों से लिखना प्रारंभ किया। भारत आजाद हो जाने पर क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के अनेक जिम्मेदार नेता कांग्रेस में सामिल हो गए, लेकिन कमलेश्वर अपने आदर्शों पर अडिग रहें। 'सारिका' एवं 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में काम करते समय भी वे एक ईमानदार प्रतिबद्ध वामपंथी ही रहें।

कृतित्त्व :-

कमलेश्वर ने गद्‌य की लगभग सभी विधाओं में लेखन किया। कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, समीक्षा, लेख, स्क्रिप्ट लेखन, संवाद लेखन, पत्र-पत्रिकाओं का संपादन एवं वैचारिक लेख आदि उनके विशेष प्रिय क्षेत्र रहे हैं। उनके लेखन की विविधता ही उनकी बहुमुखी प्रतिभा को प्रस्तुत करती है।

1) कहानीकार कमलेश्वर :-

कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। 'नई कहानी' के निर्माता कमलेश्वर का कहानी लेखन सन 1951 ई. से प्रारंभ होता है। कमलेश्वर की कहानियाँ यथार्थ जीवन से जुड़ी हुई हैं। विशेषकर मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय लोगों के जीवन से। उन्होंने लगभग 100 कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियाँ अनेक संकलनों में संग्रहित हैं। जैसे -

'राजा निरबंसिया' (1957), 'कस्बे का आदमी' (1958), 'खोई हुई दिशाएँ' (1963), 'मांस का दरिया' (1964), 'जिंदा मुर्दे' (1969), 'कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ' (1976), 'इतने अच्छे दिन' (1989), 'कथा प्रस्थान, रावल की रेल' (1992), 'और कोहरा' (1994), 'परिक्रमा' (1996), 'महफिल' (2000), 'समग्र कहानियाँ' (2001)।

2) उपन्यासकार कमलेश्वर :-

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य जगत् में कमलेश्वर का स्थान अग्रणी है। समकालीन उपन्यासकारों में कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। आम आदमी की जिंदगी की संगति-विसंगतियों

को उन्होंने अपने अंदाज में प्रभावशाली ढंग से उद्‌घाटित किया हैं। उनके उपन्यासों का समाज से गहरा संबंध रहा है। उपन्यासों के कथानक कस्बों से लेकर बड़े शहरों के विभिन्न क्षेत्रों तक फैले हुए हैं। उनके उपन्यासों में मध्यवर्ग का यथार्थ जीवन अंकित हुआ है। उपन्यासों में अनावश्यक विस्तार नहीं है। कमलेश्वर के बारह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उनके अधिकतर उपन्यासों पर हिंदी में सफल फिल्में बनी हैं और वे काफी चर्चित भी रही हैं तथा लोगों ने उन्हें काफी पसंद भी किया है।

1) एक सड़क सत्तावन गलियाँ (1961)

यह कमलेश्वर का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास **'बदनाम गली'** नाम से प्रकाशित हुआ था और उसी नाम से उस पर फिल्म बनी है। यह उपन्यास कस्बे के जीवन का सजीव अंकन करता है। इसमें वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों, स्त्री-पुरूष के नए संबंधों एवं नारी विषयक समस्याओं का चित्रण मिलता है।

2) डाक बंगला (1962)

यह कमलेश्वर का दूसरा उपन्यास है। इस पर **'डाक बंगला'** नाम की फिल्म बनी है। इरा नामक युवती पर आधारित इस उपन्यास का 'डाक बंगला' उसके जीवन की अस्थिरता का प्रतीक बन जाता है। इरा के जीवन में कई पुरूष आते हैं। वह किसी के साथ स्थिर नहीं होती। इरा के माध्यम से नारी की स्थिति-नियति को चित्रित किया है।

3) लौटे हुए मुसाफिर (1963)

इस उपन्यास में हिंदू-मुस्लिम फूट को चित्रित किया है। सन् 1947 ई. के आसपास हुए विभाजन के दौरान कुछ लोग अपने कसबे से उखड़ गए। परंतु न वे पाकिस्तान जा सकें और न ही लौटकर उसी कसबे में बस सकें। संक्षेप में इसमें विभाजन की पीड़ा को झेलते हुए लोगों की वेदना व्यक्त हुई है।

4) समुद्र में खोया हुआ आदमी (1965)

मध्यवर्ग का आदमी जिन आशा, आकांक्षाओं व सुखों की प्रतीक्षा के व्यामोह मे जीता है, उसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। मध्यवर्ग की टूटन व व्यथा को मुखर किया है।

५) तीसरा आदमी (1974)

मध्यवर्गीय समाज में नारी-पुरूष के बदलते संबंधों का सूक्ष्म चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। नगर में रहने वाले पति-पत्नी के बीच तीसरे आदमी की उपस्थिति का चित्रण इसमें किया गया है।

6) काली आंधी (1974)

इस उपन्यास के आधार पर **'आँधी'** फिल्म बनी है। उपन्यास में पति-पत्नी के बीच की गलतफहमी के साथ एक महत्त्वाकांक्षी नारी का चित्रण है। उपन्यास में देश में चल रहे भ्रष्टाचार, घुसखोरी आदि का भंडाफोड किया है। यहाँ देश की वास्तविक स्थिति का वर्णन किया है।

7) आगामी अतीत (1980)

इस उपन्यास का प्रधान पात्र धन, संपत्ति व महत्त्वाकांक्षा में पड़कर आत्मीय संबंधों की कुर्बानी देता है। वह समृद्धिता की नशा में आकर संबंधों के टूटने की किमत चुकाता है। अर्थात् जीवन में आगे बढ़ने पर पीछे लौटने के रास्ते बंद हो जाते हैं।

8) वही बात (1980)

इसमें महत्त्वाकांक्षी पुरूष का चित्रण है। सफलता प्राप्त करने की होड में पति अपनी पत्नी से दूर होता चला जाता है और पत्नी के जीवन में दूसरे पुरूष का आगमन होता है। पत्नी का पार्टनर बदलने से स्थिति नहीं बदलती। उसका अकेलापन बना ही रहता है। मतलब 'वही बात' रहती है।

9) सुबह...दोपहर.. शाम (1982)

इस उपन्यास में आजादी पूर्व भारत का चित्रण है। उपन्यास का कथानक राष्ट्रप्रेम को छूता है। उपन्यास में ग्राम संस्कृति व संस्कारों का अंकन हुआ है। उपन्यास में मूल्यों एवं आस्थाओं के प्रति झुकाव व्यक्त हुआ है।

10) रेगिस्तान (1988)

जिस धरती पर मनुष्य कुछ नहीं उगाता, वह बंजर हो जाती है और कालांतर में बंजर भूमि रेगिस्तान में परिवर्तित हो जाती है । यह भारतवर्ष का कडवा सच है । भारत आज आचार-विचार आदर्शों व मूल्यों के प्रति रेगिस्तान हो रहा है ।

11) कितने पाकिस्तान (2000)

बीसवीं शती के अंतिम दशक के महान उपन्यास के रूप में इसे स्वीकारा जा रहा है। यह पूर्णत: एक गंभीर और पाठकों को बेचैन करने वाला उपन्यास है। यह उपन्यास मनोरंजन प्रधान नहीं है। इसमें न कोई कथावस्तु है, न कोई नायक और न ही कोई खलनायक है। इसमें देश - विभाजन, उसकी त्रासदी, आतंकवाद आदि का चित्रण है। मनुष्य को मनुष्य से तोड़ने का काम धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले लोग करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। इस उपन्यास का विस्तार बहुत बड़ा है। मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज तक की मनुष्य की यात्रा को पकडने का प्रयत्न प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है।

12) अनबीता व्यतीत (2004)

पर्यावरण की समस्या को केंद्र में रखकर मानवीय करूणा, दया के रागात्मक प्रसार का अंकन करने वाला कमलेश्वर का यह ताजा और अनूठा उपन्यास है।

3) नाटककार कमलेश्वर :-

'अधूरी आवाज', 'रेगिस्तान', रवींद्रनाथ ठाकुर के 'नष्टनीड' का 'चारूलता' शीर्षक से रूपांतर, 'गोदान', 'निर्मला', 'गबन' आदि का नाट्य रूपांतर, बाल नाटक (चार संग्रह) अनूदित-'खडिया का घेरा' (मूल लेखक ब्रेख्त)।

4) यात्रा वृत्तांत : 'खंडित यात्राएँ' (1975)

5) संस्मरण : 'आधार शीलाएँ' (1990)

'अपनी निगाह से' (1982)

6) निबंध : 'दौ सौ नए निबंध' (1996)

7) आलोचना : 'नई कहानी की भूमिका', 'नई कहानी के बाद और मेरा पन्ना': 'समांतर सोच'।

8) संपादित : 'गर्दिश के दिन' (1980), 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' (1975), 'समांतर-1' (1972), 'पहली कहानी' (1985), 'भारतीय शिखर कथा कोश' (1990)।

9) पत्र-पत्रिकाएँ संपादन : 'कहानी', 'इंगित', 'नई कहानियाँ', 'संकेत', 'सारिका', 'कथायात्रा', 'श्रीवर्षा', 'गंगा', दैनिक जागरण आदि।

9) रेडियो, टेलीविजन एवं सिनेमा स्क्रिप्ट लेखन :-

कमलेश्वर ने 1957-58 में इलाहाबाद रेडियो स्टेशन पर कार्य किया, उसी वक्त 700 स्क्रिप्ट लेखन किया। टेलीविजन के लिए २५० स्क्रिप्ट लिखें। जिसमें 'परिक्रमा', 'दर्पण' और 'उसके बाद' काफी चर्चित रहे हैं। 30-40 फिल्मों के लिए पटकथा लेखन, कहीं संवाद लेखन तो कहीं कहानीकार बनें। 'आंधी', 'बदनाम गली', 'सौतन', 'फिरभी', 'साजन बिना सुहागन', 'मौसम', 'आनंद आश्रम', 'राम-बलराम', 'डाक बंगला', 'पति-पत्नी और वह', 'द बर्निंग ट्रेन', 'तुम्हारी कसम', 'घडी के दो हाथ', 'वही बात', 'मृगतृष्णा', 'अमानुष' आदि फिल्में काफी चर्चित रहीं।

3.3.2 'अनबीता व्यतीत' का परिचय :-

कमलेश्वर का यह बिल्कुल नया उपन्यास है, जो सन् 2004 ई. में प्रकाशित हुआ है। आधुनिक युग में मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रकृति का इस तरह दोहन शुरू किया है कि जीव-जंतुओं का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। यह उपन्यास पर्यावरण की समस्या को पाठकों के सामने रखने का काम करता है। दशकों बाद पुनः मनुष्य ने पर्यावरण के महत्त्व को पहचाना और वन्यजीवों के संरक्षण पर ध्यान देना शुरू किया। किंतु व्यावसायिक एवं स्वार्थी मानसिकता वाले व्यक्ति अपने लाभ के लिए पशु-पंछियों की हत्या का कारोबार करते ही जा रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अत्यंत मासूम वन्यजीव, पशु-पक्षियों की पीड़ा तथा उनके जीवन को संकटमय करने वाले एवं उनके संहार को ही अपनी जीविका का साधन बनाने वाले व्यक्तियों और परिस्थितियों के कटु यथार्थ को उद्‌घाटित करने का प्रयत्न किया गया है। यह उपन्यास पक्षियों की दारूण मृत्यु-परम्परा के अंधे अभियान से मुक्ति का एक आख्यान है ।

3.3.3 'अनबीता व्यतीत' की कथावस्तु :-

अरावली पर्वतमाला की गोद में पहाड़ी पर सुमेरगढ़ राज्य था। सुमेरगढ़ राज्य भारत में विलीन हो चुका था। इसलिए वहाँ पहले जैसी चहल-पहल नहीं थी। नाममात्र की जागीरों में महाराजा सुरेन्द्रसिंह, अपनी

पत्नी महारानी राजलक्ष्मी तथा नातिन समीरा के साथ रहते हैं। वैभवशाली बीते हुए दिनों की याद दिलाने वाले, प्राचीन दुर्गनुमा कोठी में ये लोग जैसे-तैसे गुजारा कर रहें हैं।

उपन्यास के आरंभ में ही नानी माँ महारानी राजलक्ष्मी की बैचेनी, पीड़ा दिखाई देती है। किसी भयानक दृश्य को देखकर उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में भय तथा विषाद की छाया झाँकती है। महाराज ने की हिरणी की शिकार, उस रक्तरंजित लाश को, उस बीभत्स दृश्य को देखकर महारानी व्यथित हो उठती हैं। मृत्यु का यह दु:खदायी रूप देखकर नानी माँ बहुत व्याकुल हो उठती हैं। वे सोचती हैं कि आखिर इन्सान इतना निर्दयी, बेरहम और इतना जालिम कैसे बन जाता है? इन जीव-जन्तुओं को अपनी जीवन-रक्षा करने की शक्ति भगवान ने क्यों नहीं दी? महारानी के मन में होने वाली जीव-जन्तुओं के प्रति करूणा, दया भाव इस घटना से ही स्पष्ट हो जाता है। दर्द की तेज़ लहरों से वे बेचैन हो जाती हैं। उस रात वे काफी देर तक जागती रहती हैं। उनकी नातिन समीरा को भी जागते देखकर वे सोचती हैं कि दिनभर दिव्या (सहेली) के साथ घूमती रहती है। तभी समीरा उनसे कहती है कि, नीली झील पर परदेसी पंछियों ने आना शुरू कर दिया है। रंग-बिरंगे, भाँति-भाँति के पंछी। समीरा उन्हें भी नीली झील की ओर सुबह जाएँगे, आप भी चलिए ऐसा आग्रह करती है। अपनी नातिन समीरा भी पंछियों को इतना पसंद करती है, यह देखकर वह अचंबित हो जाती है। अपने काकातुओं तथा बेटी विजयलक्ष्मी की यादें, वे समीरा को बताती हैं। इसी दौरान वह नानी माँ से जिंदा चिड़ियों को खाने वाली राजकुमारी की कथा सुनती है। कथा सुनकर उसके मन में बहुत सारे सवाल उठते हैं कि कोई राजकुमारी इतनी निर्दयी कैसे हो सकती है? यह कैसा रहस्य था कि उस राजकुमारी के प्राण बरगद वाले तोते में बसते थे?

समीरा को महाराजा सुरेन्द्रसिंह की आर्थिक स्थिति मालूम है। पहले जैसी शानो-शौकत रखने के लिए नानाजी महाराज कोशिश करते रहते हैं, इस बात का भी उसे अंदाजा है। महाराज ने व्यापार और कई धंधे शुरू किए; लेकिन सामन्ती, आराम पसंदी स्वभाव के कारण वे सफल नहीं होते थे। आज़ादी के बाद महाराज सुरेन्द्रसिंह स्वतंत्र भारत में राजशाही के अवशेष हैं। देश आज़ाद हो गया; लेकिन महाराज मानते हैं कि वे कभी समाप्त न होने वाले अंधकार और सन्नाटे के घेरे में घिरे हैं। उनकी आन, बान और शान गुम हो गई है। महाराज को अपने मुकदमों की चिंता है, रियासत की घटती आमदनी की चिंता है। अपनी चिंता एवं दु:ख से मुक्त होने के लिए वे शिकार करते हैं। पराजय के दंश और अपमान बर्दाश्त करने का यही उनका तरीका है। परंतु उनका शिकार पर जाना नानी-माँ को कतई पसंद नहीं था। वे महाराज सुरेन्द्रसिंह को इस बात पर बार-बार सचेत करती रहती हैं। महारानी तथा समीरा में संवेदनशीलता और प्रकृति तथा पशु-पंछियों के प्रति मानवीय करूणा है।

महाराज सुरेन्द्रसिंह हमेशा प्रकृति के प्रति वीतरागी हैं। वे अपने अंदरूनी तनाव एवं परेशानी को दूर करने के लिए बंदूकें साफ करते रहते हैं। ऐसे समय आए भयानक, रौद्र, तूफानी अंधड़ के कारण नानी माँ के पालतू काकातुआ बैचैन होकर किमती झूमर को तोड़ते हैं। ये देखकर महाराज अपनी बंदूक चलाते हैं, जिससे काकातुआ की मौत हो जाती है। महारानी इससे अवाक् रह जाती है। महाराज सुरेन्द्रसिंह को गुस्से से तमतमाते हुए वे कहती हैं कि, *''किसी की जान लेना तो बहुत आसान है, लेकिन मुश्किल है किसी को*

जिंदगी देना।'' महारानी उन्हें सख्त हिदायत देती है कि अगर हमारे राज की सीमा में किसी भी मासूम जानवर की हत्या हो गई, तो मैं अपने मायके चली जाऊँगी। तमाम मतभेदों के बावजूद महाराजा सुरेन्द्रसिंह को अपनी महारानी से बेहद लगाव था। अपने किए पर वे पछताते हैं। इस हादसे के बाद रानी माँ, समीरा और दिव्या के साथ अपने मायके देवगढ़ चली जाती है। देवगढ़ में भी उनका मन नहीं लगता। जल्द ही वापस सुमेरगढ़ आ जाती हैं। रह रहकर उन्हें काकातुओं की याद आती है। उस प्रसंग के बाद काकातुओं के वियोग से व्यथित होने से उन पर छायी उदासी, बेचैनी दिनों दिन बढ़ती ही जाती है। दिन-ब-दिन उनकी तबियत बिगड़ती जाती है। इसी में उनके प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं। सचमुच उनके प्राण उन काकातुओं में ही बसे हुए होते हैं। उनकी मृत्यु से ऐतिहासिक सुमेरगढ़ के दुर्ग में एक अजीब-सी खामोशी छा जाती है।

महारानी की मृत्यु से समीरा बिल्कुल अकेली हो जाती है। अपनी सहेली दिव्या के साथ मित्रता के क्षण पूरे करती है। समीरा देवगढ़ से आने के पश्चात् दिव्या में कुछ बदलाव महसूस करती है। लेकिन वह समझ नहीं पाती कि इसका क्या कारण है? महारानी के वियोग से महाराज भी बिलकुल अकेले हो गए हैं। समीरा को लेकर भी वे चिंतित होते हैं। वे अपने दीवान द्वारिकादास तथा वकीलों के साथ गंभीर सलाह-मशवरे में अधिक समय बिताने लगते हैं। अपने नाना जी की परेशानियों को देखकर समीरा भी बेचैन होती है। आखिर वह दीवान जी से पूछ ही लेती है कि, ''नाना जी साहब की परेशानी की क्या वजह है?'' तब दीवान द्वारिकादास से उसे पता चलता है कि सुमेरगढ़ रियासत के पुराने भवनों, खंडहरों, इमारतों और उनके पुरातन इतिहास की खोजबीन करने के लिए भारतीय पुरातत्त्व विभाग से एक नौजवान अफसर आने वाला है। खानदानी जायदाद को सरकारी अधिग्रहण के चंगुल से बचाने का प्रयास महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा दीवान द्वारिकादास कर रहे हैं। उस वक्त समीरा दीवानजी से सरकार का ही समर्थन करते हुए बताती है, *''नाना जी साहब तो सारी रियासती जायदाद की देखभाल करने में असमर्थ हैं ..... हैं तो यह देश की ही। सरकार देखेगी तो कम-से-कम इमारतें खंड़हर होने से तो बच जाएंगी।''* समीरा बिलकुल नानी माँ वाली बात दोहराती है। समीरा की इन बातों से दीवान जी हक्के-बक्के रह जाते हैं। वे महाराजसाहब की आर्थिक दिक्कतों से बखूबी परिचित थे, इसलिए वे चाहते हैं कि सरकारी अधिग्रहण से जो कुछ बचाया जा सके, उसे बचाएँ।

सुमेरगढ़ आने पर सरकारी अफसर गौतम की प्रथमत: दिव्या से मुलाकात हो जाती है। गौतम दिव्या से गेस्ट हाऊस का पता पूछता है। दिव्या महसूस करती है कि कहीं ये वही सरकारी अफसर तो नहीं? उसके मन में उस युवक (गौतम) के संबंध में सबकुछ जानने का अनायास ही कौतुहल जाग उठता है। उन दिनों समीरा भी अपनी माँ के पास गई हुई थी। ऐसे समय नीली झील पर घूमने के लिए दिव्या अकेली ही जाया करती है। उस वक्त गौतम से उसकी मुलाकात हो जाती है। दिव्या के साथ उसकी बातें होती हैं। वह अपने आने का मकसद बताता है। वह दिव्या के साथ उसके घर भी जाता है। दिव्या के पिता मास्टर दीनानाथ के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से वह प्रभावित हो जाता है। मास्टर दीनानाथ से वह बिनति करता है कि सुमेरगढ़ राज्य के ऐतिहासिक आकलन करने में वे उसकी मदद् करें। मास्टर दीनानाथ गौतम के शालीन व्यक्तित्त्व से प्रभावित हो जाते हैं। वे उसे हाँ कर देते हैं और दिव्या को भी उसके साथ घूमने-फिरने की आज़ादी देते हैं।

दिव्या अक्सर गौतम के साथ सुमेरगढ़ के आसपास बिखरी ऐतिहासिक इमारतों को देखने चली जाती है । गौतम अपना काम खत्म करके हमेशा घूमने के लिए नीली झील पर चला जाता है। दिव्या भी वहाँ आती रहती है। झील के किनारे एक चट्टान पर बैठकर वे पंछियों को निहारते तथा बातें करते रहते है।

एक दिन दिव्या समझकर उसकी मुलाकात समीरा से हो जाती है। गौतम उसे संक्षेप में अपने बारे में सबकुछ बताता है। गौतम और समीरा को पहली ही मुलाकात में एकदूसरे के साथ इसतरह घुलमिलकर बातें करते हुए देख दिव्या आहत हो जाती है। गौतम के प्रति दिव्या के मन में एक लगाव निर्माण हुआ था। समीरा का चेहरा, रंग-रूप अपनी दिवंगत प्रेमिका दीपाली से मिलता-जुलता है, ऐसा गौतम जब कहता है, तब चट्टान के आड़े छिपि दिव्या अपने होश गवाँ देती है। दर्द, बेचैनी और निराशा में डूबकर वह रातभर सो भी नहीं पाती। सुबह मास्टर दीनानाथ उसे घर में न पाकर ढूँढने लगते हैं। दिव्या को ढूँढने के लिए समीरा और गौतम भी उनके साथ नीली झील की ओर जाते हैं। झील के किनारे दिव्या का शॉल, चप्पलें और पर्स प्राप्त होती हैं। कितनी बार नीली झील को खंगालने के बाद भी दिव्या की लाश प्राप्त नहीं होती । दिव्या के इस तरह से अचानक गुम हो जाने से सभी हैरान हो जाते हैं। समीरा विशाल राजमहल में नितांत अकेली हो जाती है। महाराज सुरेन्द्रसिंह अपने गिरते स्वास्थ्य और जिंदगी में बढ़ते सूनेपन, आर्थिक विवंचना से हताश होकर अपनी बेटी विजयलक्ष्मी और उसके पति कुँवर नरेन्द्रसिंह को अपने पास सुमेरगढ़ बुलवा लेते हैं। समीरा के माता-पिता के आगमन से दुर्ग में चहल-पहल बढ़ जाती है। समीरा बचपन से नाना-नानी के पास रहकर बड़ी हुई थी। जितना लगाव उसे अपने नाना-नानी के प्रति था - उतना अपने माँ-बाप के प्रति नहीं था उसके मन में वे भावनाएँ पैदा नहीं हो पाई थीं, जो साधारणत: एक बेटी के मन में अपने माँ-बाप के लिए होती हैं। समीरा खुश तो होती है लेकिन उनसे खिंची -खिंची सी रहती है। दिव्या के गम से मास्टर जी भी अर्धविक्षिप्त-से हो जाते हैं। अब वे समीरा को पढ़ाने के लायक नहीं रह गए थे। इसलिए समीरा रियासत के कॉलेज में पढ़ने जाने लगती है। कॉलेज से लौटने के बाद नीली झील पर जाकर पंछियों को निहारती रहती है। मासूम पंछी-पखेरूओं के प्रति वह और भी आकर्षित होने लगती है। समीरा को पक्षियों से जितना प्यार था, पक्षी भी निर्भिक होकर उसके पास आते थे, उससे उतना ही प्यार करते थे। समीरा किसी बीमार पशु-पक्षी को देखती, तो उसे उठाकर अपने महल में ले आती और उसका उपचार करती।

महाराज सुरेन्द्रसिंह के दामाद नरेन्द्रसिंह सुमेरगढ़ रियासत की इधर-उधर बिखरी जायदाद की देखभाल करने लगते हैं और अन्य जिम्मेदारियाँ भी सँभालने लगते हैं। साथ ही साथ नए कारोबार शुरू करने की योजनाओं में व्यस्त हो जाते हैं। कुछ ही दिनों के बाद समीरा अपने पिता द्वारा शुरू किए गए परिन्दों के एक्स्पोर्ट करने के कारोबार को जान लेती है। एक्स्पोर्ट करने के लिए पिंजरों में कैद पंछियों को वह आज़ाद कर देती है। अपने लाखों रूपयों के नुकसान को देखकर नरेन्द्रसिंह गुस्से से समीरा पर हाथ उठाते हैं। पहली बार समीरा के साथ इस तरह बर्बरतापूर्ण व्यवहार होता है। वह अपने पिता को हत्यारे मानकर उनकी भर्त्सना करती है। जो कुदरत की सन्तान हैं, जिन्होंने किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं, सैंकड़ों-हजारों मील दूर के देशों से यहाँ इस झील पर शरण आए ऐसे मासूम परिंदों के प्रति इस तरह का क्रूर व्यवहार देखकर समीरा बहुत व्यथित होती है। महाराज सुरेन्द्रसिंह भी इससे दुखी होते हैं। वे नरेन्द्रसिंह को अगाह कर देते हैं। वे चाहते हैं

कि भावुक समीरा किसी सदमें का शिकार न बन जाएँ। समीरा पर पड़ी अपनी नानी माँ की छाप मिटाने का एक उपाय कुँवर नरेन्द्रसिंह सोचते हैं, ''जल्द से जल्द समीरा की शादी कर दी जाय। समीरा की शादी कर देने से हमारे जरूरी फैसलों में दखल देने वाला कोई नहीं रहेगा।''

समीरा अपने पिता के परिन्दों वाले कारोबार को जानकर बहुत व्यथित हो जाती है। गौतम के साथ झील पर बातें करते हुए उसके चेहरे पर चमक और कोमलता उभर आती है। राजवंश की राजकुमारी होते हुए भी समीरा के दिल में नीली झील पर बसेरा करने वाले पंछियों के लिए ही नहीं, तो संसार के संपूर्ण प्राणियों के लिए कितना मोह, ममता और करूणा भरी हुई है, ये देखकर गौतम आश्चर्यचकित हो जाता है। उसे अपनी प्रेमिका दीपाली की याद आ जाती है। साँझ के समय गौतम और समीरा को नीली झील की ओर से आते देखकर महाराज सुरेन्द्रसिंह दीवान द्वारिकादास से पूछते हैं कि, ''समीरा के साथ वह नौजवान कौन है?''। दीवान जी संक्षेप में बताते हैं कि, गौतम वही पुरातत्त्व विभाग का सरकारी अफसर है जो सुमेरगढ़ राज्य की पुश्तैनी-गैर पुश्तैनी संपत्ति की रिपोर्ट बनाने वाला है। इस पर सुरेन्द्रसिंह महाराज बहुत क्रोधित हो, जाते हैं। गौतम को किले और वहाँ के इलाके में आने पर रोक लगाई जाए ऐसा बताते हैं। समीरा को भी मैं समझा दूँगा। कुँवर नरेन्द्रसिंह कभी भी नहीं चाहेंगे कि एक राजकुमारी का मेल-जोल मामूली घराने के किसी शख्स के साथ हो। ऐसा वे दीवान जी से बताते हैं। कुँवर नरेन्द्रसिंह समीरा को नीली झील पर जाने के लिए मनाई कर देते हैं। अपने ऊपर लगी इस पाबंदी का कारण वह पूछती है, तो कुँवर नरेन्द्रसिंह कहते हैं कि रतनपुर राज्य के महाराज सपरिवार राजपुत्र जयसिंह को लेकर सुमेरगढ़ आ रहे हैं और वे राजसी स्वभाव के हैं। अपने पिता की बातें सुनकर समीरा उदास हो जाती है। उसे लगता है कि भविष्य में भी वह नीली झील पर कभी नहीं जा पाएगी। उसे गौतम के साथ की हुई बातें याद आती हैं। गौतम ने उसे बताया था कि राष्ट्रीय धरोहर के रूप में प्राचीन भव्य दुर्ग और नीली झील तथा गौरवशाली स्मारकों की देखभाल की जाएगी। समीरा को ये बात अच्छी लगती है। वह चाहती है कि गौतम अपनी रिपोर्ट जल्द से जल्द बनवाकर हेडक्वार्टर पहुँचा दें।

समीरा के बाहर आने-जाने पर रोक लगा दी जाती है। समय बिताने के लिए वह राजमहलों के सुसज्जित कक्षों में घूमती, तो उसका मन बहलने के बजाय और भी दु:खी तथा बेचैन हो उठता। राजमहल को सुसज्जित बनाने के लिए पूर्वजों द्वारा की गई क्रूरता और नृशंसता को देखकर वह और भी मायूस हो जाती। हिरन, बाघ,सिंह आदि जानवरों के सिरों के साथ ढ़ाल-तलवारें सजाई गई थीं। काँच की अलमारियों और संगमरमर की मेजों-चौकियों पर भूसा भरे पशु-पक्षियों के बेजान जिस्म देखकर वह अंदर ही अंदर घुटन महसूस करती है। मुर्दों की यह दुनिया उसे बड़ी सुनसान लगती है। अपना जी बहलाने के लिए, खालीपन को दूर करने के लिए वह नाना जी से दूरबीन माँग लेती है। अपने कमरे की खिड़की से ही वह नीली झील तथा पहाड़ियों का हराभरा दृश्य देखती रहती है। एक दिन वह देखती है कि, झील के उस पार झाड़ियों की आड़ में कुछ बहेलिए जाल बिछाए बैठे हैं। बहेलियों के जाल में फँसने वाली चिड़ियों को देखकर वह कुछ परवाह किए बगैर एअरगन उठाकर लाती है और नीली झील की ओर दौड़ती हुई चली जाती है। बंदूक की नली आकाश की ओर उठ़ाती है और ट्रिगर दबाती है। बंदूक की आवाज़ से जाल में फँसने वाले पंछी

अपने-अपने घोंसलों या आकाश की ओर उड़ जाते हैं। समीरा जीवन में पहली बार बंदूक चलाती है, लेकिन वह इस धक्के को सह नहीं पाती। वह उबड़-खाबड़ पत्थरों पर गिर कर ढ़लान की ओर लुढ़कने लगती है। रोजाना की तरह झील पर घूमने के लिए आया गौतम इस दृश्य को देखता है और जैसे तैसे समीरा को झील में गिरने से बचाता है। उसके स्पर्श से समीरा के तन-मन में एक अनजानी अनुभूति जग जाती है, जो किसी भाषा-परिभाषा में बँधने से इन्कार करती है।

रतनपुर राज्य के युवराज जयसिंह और उनके परिवार के अन्य सदस्यों का आगमन सुमेरगढ़ में हो जाता है। सुमेरगढ़ के दुर्ग में फिर एक बार उत्साह छा जाता है। समीरा की आंतरिक करूणा से उसके सौंदर्य में एक ओज निर्माण हो गया था, जिसके कारण उसके सौंदर्य से सभी मंत्रमुग्ध हो जातें हैं। युवराज जयसिंह को भी समीरा पसंद आती है। राजसी परंपराओं का निर्वाह करते करते समीरा ऊब जाती है। वह नीली झील पर घूमने के लिए चुपचाप निकलती है। उसके पीछे पीछे युवराज जयसिंह भी आते हैं। उन्हें देखकर वह हैरान रह जाती है। उसे पता चल चुका था कि युवराज जयसिंह के साथ उसकी शादी निश्चित करा दी गई है। उसे लगता है कि हमेशा की तरह झील पर गौतम से उसकी भेंट हो जाएगी।

समीरा को पता नहीं होता कि महाराज सुरेन्द्रसिंह के कहने पर गौतम को समझा दिया गया है कि उसका किले की तरफ झील वाले हिस्से में जाना उचित नहीं। काम की वजह से वह सुमेरगढ़ राज्य के दूसरे ठिकानों पर जाकर आने के पश्चात कई दिनों बाद झील पर घूमने के लिए आता है। वह बेबस और उदास बन गया है। समीरा से अंतिम बार मिलकर दिल्ली लौट जाना चाहता है। अपनी माँ के पास उज्जैन भी जाना चाहता है। इसी उम्मीद से वह झील पर आता है। समीरा के साथ युवराज जयसिंह को देखकर वह बहुत हताश हो जाता है। उसे लगता है, अपनी बीमार माँ को अकेली छोड़कर, जिस घाव पर मरहम लगाने के लिए वह आया था, अब एक नया घाव उसका इंतजार कर रहा है। जीवन में दूसरी बार उसके दिल पर गहरी चोट पहुँचती है। गौतम जान लेता है कि समीरा की शादी तय हो गई है। वह घर पहुँच जाता है, तभी दीवान द्वारिकादास भी वहाँ आ जाते हैं। वे उसे रिश्वत से खरीदने की कोशिश करते हैं। लेकिन वह नहीं मानता। महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा नरेन्द्रसिंह द्वारिकादास से कहते हैं कि, 'समीरा की शादी में दो महीने रह गए हैं। उसके बाद उस सरकारी कारिंदे गौतम से निपट लिया जाएगा।'

समीरा के विवाह की तिथि निश्चित हो जाती है। लेकिन उसके मन पर एक अजीब-सी उदासी छाई रहती है। उसे बार बार दिव्या की याद आती है। राजपुतों की चली आई परंपरा का निर्वाह करते हुए वह शादी से न इन्कार करती है, न अपनी पसन्द-नापसन्द का इजहार करती है। गौतम को भूलने की कोशिश करते हुए मन मसोसकर रह जाती है। जान-बूझकर वह युवराज जयसिंह की बातों को याद करने लगती है। युवराज जयसिंह का पक्षियों का ज्ञान, पक्षियों के प्रति प्रेम देखकर ही वह जयसिंह के निकट आती है। लेकिन कहीं न कहीं वह अपनी आत्मा की गहराई में एक अनोखा स्पर्श महसूस करती है।

समीरा का विवाह राजसी ठ़ाट के साथ बड़ी धूम-धाम से संपन्न होता है। सुमेरगढ़, नीली झील, दिव्या, नानी-माँ का दुलार, उनकी दु:खद मृत्यु आदि तमाम यादों के साथ समीरा अपने ससुराल रतनपुर पहुँचती है। रतनपुर सुमेरगढ़ की तरह ही काफी पुराना राज्य था। वहाँ भी बड़ी समृद्धता एवं संपन्नता थी।

राजकुमार जयसिंह और उनके परिवार के सदस्यों के स्नेह और आदरपूर्ण व्यवहार से वह (समीरा) अपने अतीत की यादों को कुछ भूल जाती है। विवाह के एक वर्ष बाद समीरा एक पुत्र को जन्म देती है। परंपरा के अनुसार पुत्र जन्म पर रतनपुर में कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। इस खुशी के अवसर पर समीरा के माता-पिता तथा मास्टर दीनानाथ रतनपुर आते हैं। इस मौके पर भजन-संध्या के समय पूरी तन्मयता से भजनगायिका दीपशिखा अपने स्वरों से श्रोताओं को रसविभोर कर देती है। मास्टरजी तथा समीरा उस आवाज़ को पहचानने की कोशिश करते हैं। लेकिन भजन गायिका दीपशिखा तुरंत ही वहाँ से चली जाती है। हो न हो वह दिव्या है, ऐसा समीरा तथा मास्टर जी सोचते हैं।

राजपरिवारों के अनुसार समीरा के पुत्र विक्रम के लिए दाई माँ की व्यवस्था करा दी जाती है। अपना खाली समय बिताने के लिए समीरा जयसिंह के साथ घूमने-फिरने जाने लगती है। रतनपुर में समीरा का लगभग डेढ़ वर्ष बीतता हैं। समीरा को किसी भी चीज़ का अभाव नहीं है। परिवार के लोग आज़ भी उसी शानो-शौकत के साथ अपनी जिंदगी गुजारते रहते हैं। लेकिन कभी कभी वह एक अजीब- सा सूनापन महसूस करती है। विशेषकर तब जब जयसिंह कारोबार के सिलसिले में कई-कई दिनों तक रतनपुर से बाहर चले जाते हैं। समीरा को सिर्फ इतना ही पता होता है कि जयसिंह का आयात-निर्यात का कारोबार फैलता जा रहा है। समारोह की समाप्ति के बाद दीपशिखा को लेकर समीरा सोचती रहती है। उसे दिव्या की बहुत याद आती है। अतीत की स्मृतियों में वह भटकती रहती है। उसी वक्त वहाँ जयसिंह आते हैं और समीरा की आँखों में पानी देखकर उसे सँभालते हैं। उसे खुश रखने के लिए फार्म हाऊस ले जाते हैं।

फार्म हाऊस का विलोभनीय दृश्य देखकर समीरा दंग रह जाती है। फार्म में खड़ी लहलहाती फसलों और फार्म के चारों ओर खड़ी दूर-दूर तक फैली हरी-भरी पहाड़ियाँ देखकर उसके तन-मन पर छाई थकान दूर हो जाती है। दूसरे दिन सुबह तैयार होकर वह जयसिंह का इंतजार करने लगती है। वह फार्म हाऊस के पीछे वाली खिड़की में से झाँकती है। फूलों से लदी झाड़ियों से ढँकी पहाड़ियों का अवलोकन करते करते अचानक उसे कुछ ट्रक दिखाई देते हैं; जिनमें चीड़ की लकड़ी की बड़ी-बड़ी बक्सेनुमा पेटियाँ लदी हुईं होती हैं। रात में भी वह चिड़ियों के पंखों की फड़फड़ाहट तथा चीखें सुनती हैं। इसका संदर्भ लगाने से पहले ही वहाँ जयसिंह लौट आते हैं और अपना म्युजिअम दिखाने ले जाते हैं। वहाँ पर पक्षी विशेषज्ञ विश्वमोहन जी से उसकी मुलाकात हो जाती है। विश्वमोहन जी वायुसेना में एअर वाइस मार्शल की नौकरी करते हैं। वे समीरा को 'गैलरी ऑफ लाईफ' तथा अनेक देशी-विदेशी पंछियों के बारे में जानकारी देते हैं। वैराटेल-खंजन पंछी, सायबेरिया और मंगोलिया से चलकर हिमालय पार करके भारत आते हैं और तुलसीदास के रामचरितमानस में वर्णित पंक्तियाँ (जिसमें खंजन पंछी का उल्लेख है) विश्वमोहन जी बताते हैं। आर्किटिक टर्न (ध्रुवकुमारी) वाक, बगुला, हंस, महाबर, पीलकिया, भुजंगा, धनेश, चातक, चकवा, मुर्गाबी, सरीसृप, क्रौंच और न जाने कितने! सबका ब्यौरा विश्वमोहन जी जीवन विथी के द्वारा देते हैं। समीरा मंत्रमुग्ध होकर वह सब जानकारी सुनती रहती है। वह उनसे और भी बातें करना चाहती है, लेकिन विश्वमोहन जी का वहाँ रहना अब असंभव था। वे समीरा के लिए 'आनंद पंछी निहारन का' किताब भेंट देते हैं।

कुँवर जयसिंह समीरा को अपना अजायबघर म्युजियम दिखलाने लगते हैं। टैनरी का नाम चर्मशोधक कारखाना रखा है, ऐसा जयसिंह बताते हैं। खुशी के अतिरेक में जयसिंह उसे 'जानम!' कहकर पुकारते हैं और बताते हैं कि ''हमने इन परिन्दों को वह लंबी जिंदगी बख्श दी है, जो इन्हें कुदरत भी नहीं दे सकती थी। ये अब कहीं उड़कर नहीं जा सकते .... तुम जब चाहो, यहाँ आकर इनसे मिल सकती हो ....।'' समीरा शोकेसेज में रखे, सिले और स्टफ किए गए पंछियों को देखकर संज्ञाशून्य- सी हो जाती है। इस सच्चाई को देखकर, मौत के सन्नाटे को देखकर समीरा भौंचक्की सी रह जाती है। कुँवर जयसिंह अपनी आत्ममुग्धता में बोलते जाते हैं, लेकिन समीरा को कुछ भी सुनाई नहीं देता। कठपुतली की तरह वह शोकेस के सामने खड़ी होती है। जयसिंह उसे मैको, (काकातुआ, तोतों की नस्ल का शाही तोता) एक्लकटस्, पीफाऊल आदि स्टफ्ड पंछियों के शोकेस दिखाकर उनकी बातें करता है। रेनबो लौरीकीत (इंद्रधनुषी तोता) को देखकर समीरा को अतीत की घटना याद आती है। समीरा ने उसका उपचार किया था, जिसका नाम उसने पिंकू रख लिया था। उसके पैर में वह रत्ती वाला मूँगा भी ड़ाला था। उसी पिंकू को भी इसी कतार में देखकर वह हैरान हो जाती है। वहाँ के दृश्य को देखकर उसके दिल और दिमाग पर गहरी थकावट आ जाती है। एक अजीब सा- सदमा उसके दिल पर छा जाता है।

दूसरे दिन समीरा जयसिंह से बातें करती हैं। वह जयसिंह को स्पष्ट कहती है कि, 'मेरा शरीर संतृप्त होता रहे और मेरा मन मृत होता रहे, यह मुझे आपके साथ बहुत दूर तक नहीं ले जा सकता।'' इस पर दोनों में बड़े मतभेद हो जाते हैं। जयसिंह में सामन्ती समाज की मानसिक बुनावट कूट कूटकर भरी हुई थी। भावुकता, संवेदना तथा भावनाओं की उसे जरूरत महसूस नहीं होती थी। पंछियों के केमिकल से युक्त भूसा भरे शरीरों के करोडों रूपयों के बिज़नेस को छोड़ना जयसिंह के लिए मुमकिन नहीं है। संवेदनशील समीरा ये बर्दाश्त नहीं कर पाती। मुर्दों की इस दुनिया से वह बाहर जाना चाहती है। वह वापस सुमेरगढ़ लौटती है।

हिंदू राजपरिवार में विवाहित स्त्री का अपने मायके लौटना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। अपने परिवार तथा सभी लोगों की आँखों में वह नाराजगी तथा नापसंदगी का भाव महसूस करती है। उसके प्रति होने वाला स्नेह, आदरभाव, सहानुभूति वह महसूस नहीं करती। भारत सरकार द्वारा पुरानी इमारतों को संरक्षण में लेने की जो मुहिम चल रही थी, उसे लेकर नरेन्द्रसिंह पहले ही चिंतित थे और ऐसे में पति-परित्याग करके आई बेटी उनकी अप्रसन्नता का कारण बन जाती है।

राजपरिवार के लोग चाहते हैं कि गौतम के साथ समीरा की मुलाकात न हो जाए। वे लोग गौतम को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानने लगे थे। दीवान द्वारिकादास बड़े शातिराने अंदाज में गौतम पर दबाव ड़ालते रहते हैं। गौतम को उसकी रिपोर्ट दिखला देने के लिए, कभी अपनी बुजुर्गी का एहसास दिलाकर धमकी देते हैं या कभी रिश्वत के बहाने नर्मी से पेश आते हैं। उनके इस रवैये से गौतम तंग हो जाता है। समीरा को आने के पश्चात ये सभी बातें मालूम हो जाती हैं। गौतम को समीरा नहीं मिली, इसका बदला वह ले रहा है, ऐसी भी अफवाहें फैलती हैं। समीरा पर भी मानों एकतरह से दबाव ड़ालने की कोशिश की जाती है। वह रतनपुर लौट जाए, इसकी हर तरह से कोशिश होती रहती है। गौतम और उसमें सिर्फ भावनिक एकता के

संबंध होते हुए भी, उस पर आशंकाएँ उठ़ाई जाती हैं। इतना ही नहीं, तो अचानक रतनपुर से संदेश आता है कि विक्रम को वापस भेज दिया जाए।

कुँवर जयसिंह सारे गिले-शिकवे भूलकर अचानक सुमेरगढ़ पहुँचते हैं। रतनगढ़ चलने के लिए वे समीरा से कहते हैं। समीरा बड़ी आज़िजी से पूछती है कि, 'वहाँ के हालात कुछ बदल गए हैं क्या? मौत और मुर्दों की दुनिया में मैं कैसे रहूँ?' समीरा को इस बात का भी पता चलता है कि एक्स्पोर्ट के लिए मुर्गाबियों के डिब्बाबंद मीट का एक प्लांट लग चुका है। बातें बढ़ती जाती हैं। जयसिंह समीरा पर आक्षेप उठ़ाते हैं कि, 'यहाँ कुछ ऐसा है,जो तुम्हें मेरे पास रतनपुर आने से रोकता है।' समीरा इसका साफ साफ जवाब देती है। कुँवर जयसिंह इससे और क्रोधित हो जाते हैं, तो समीरा कहती है, 'मैं हार सकती हूँ..... मरना पड़ा तो मर सकती हूँ, लेकिन मरने के बाद भी मैं मरूँगी नहीं, कहीं और जी उठूँगी।' वह रतनपुर लौटने से इन्कार कर देती है।

गौतम की हवेली वाले दफ्तर पर जाकर कुँवर नरेन्द्रसिंह उसे धमकाते हैं। मास्टर दीनानाथ उसे बता देते हैं कि समीरा और कुँवर जयसिंह के संबंधों में आई हुई दरारों का कारण भी गौतम को मान लिया जा रहा है। गौतम इससे हैरान हो जाता है, वह मास्टर जी से साफ कहता है कि, ''उसे इस मामले में क्यों घसीटा जा रहा है। समीरा को जलील करने के लिए यह सब किया जा रहा है।' गौतम के दिल में समीरा के लिए कुछ अच्छी भावनाएँ थीं। वह समीरा की सोच, जिंदगी की ओर देखने के उसके नज़रिए से प्रभावित हुआ है। वह अपने और समीरा के रिश्ते को प्यार जैसे मामूली शब्दों से बाँधना नहीं चाहता। उसके लिए समीरा उस वृक्ष के समान है, जहाँ वह थककर आने के बाद बैठ सकता है। गौतम को मास्टर जी सलाह देते हैं कि, 'दिल्ली जाकर वह अपनी रिपोर्ट दाखिल करा दें और सुमेरगढ़ को व्यतीत मानकर भूल जाएँ।' गौतम भी उनकी बात को मानता है परंतु जाने से पहले एक बार वह समीरा से मिलना चाहता है । लेकिन ये संभव नहीं हो पाता।

दीवान द्वारिकादास, महाराज सुरेन्द्रसिंह, नरेन्द्रसिंह और कुँवर जयसिंह भी बहुत गंभीर, चिंतित और उत्तेजित होते हैं। समीरा की रतनपुर न जाने की जिद और गौतम की सर्वे रिपोर्ट का सवाल ये सभी उन्हें साल रहे हैं। इस पर चर्चा करते रहते हैं और तय होता है कि, 'उसकी (गौतम) रिपोर्ट को दिल्ली पहुँचने से रोका जाए, ऐसे काँटें को तो जड़ से उखाड़कर हमेशा के लिए खत्म कर देना जरूरी है।' गौतम की जान खतरे में है, ये देखकर समीरा भीतर ही भीतर भयभीत हो उठ़ती है। वह समझ नहीं पाती कि वह उसे कैसे आगाह करें? रातभर वह सो नहीं पाती। सुबह जल्दी उठकर वह नीली झील की ओर तेज़ी से बढ़ने लगती है। वह अंदाज करती है कि शायद सुबह घूमने के लिए आए गौतम मिल जाएंगे।

समीरा के पीछे-पीछे जयसिंह भी निकलते हैं और वह समीरा को रूकने की आज्ञा करते हैं। लेकिन समीरा रूकती नहीं। तब वे गुस्से में बंदूक चलाते हैं। दूसरी गोली समीरा के गर्दन में पीछे की ओर लगती है। वह बुरी तरह से ड़गमगाते हुए पानी में जाकर गिरती है। झील पर घूमने के लिए आए गौतम को कुछ दिखाई नहीं देता। लेकिन वह समझ जाता है कि वह औरत समीरा ही है। जयसिंह पानी में कूदते हैं और अधमरी समीरा को तैरकर पकड़ते हैं। उसे घाट की ओर ले जाते हैं, उसके पेट में भर गए पानी को निकालते हैं और

फिर उसे महल की ओर ले जाते हैं। गौतम इस हादसे से निर्जीव- सा हो जाता है। इस दुर्घटना के लिए वह स्वयं को दोषी मानता है। गौतम बुरी तरह से टूट जाता है। उसे बार-बार यही लगता है कि समीरा जरूर उसे कुछ बताने आ रही थी।

जयसिंह घायल समीरा को रतनपुर ले जाते हैं। उनके साथ घर के कुछ लोग और मास्टर जी भी चले जाते हैं। सब यही कहते हैं कि अपने राजसी अहंकार के कारण कुँवर जयसिंह समीरा की लाश को रतनपुर ले गए, क्योंकि झील से महल तक आते-आते ही उसकी मृत्यु हो गई थी। पैसे के बल पर इस हत्याकांड को दबा दिया जाता है। गौतम सुमेरगढ़ रियासत की पुरातात्त्विक सर्वे रिपोर्ट फायनल कर लेता है। वह उस रिपोर्ट के साथ दिल्ली जाने वाला होता है, तभी एकाएक उसके घर पर हत्यारे गुंडों का हमला हो जाता है । उसे धमकाया जाता है और अंत में उसके दफ्तर वाले कमरे में आग लगाई जाती है। गौतम की सारी फाइलें और रिकार्ड नष्ट हो जाता है। गौतम पहले से ही चौकन्ना रहता है, इसलिए वह सावधानी बरतता है। अपने रिपोर्ट की एक कॉपी वह पहले ही अपने सिक्युरिटी गार्ड मि. थापा के हाथों पुरातत्त्व विभाग भेजने की खबरदारी बरतता है।

ऑर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के चीफ रेड्डीसाहब गौतम के रिपोर्ट की प्रामाणिकता और इतिहास के साक्ष्योंसहित उसे पेश करने के लिए उसकी तारीफ करते हैं। रेड्डीसाहब उसे आश्वस्त करते हैं कि पर्यटन मंत्रालय के द्वारा इसे विकसित किया जाएगा। तब गौतम उन्हें ये भी बताता है कि, 'झील वाले इलाके को टूरिस्टों के लिए डेवलप जरूर किया जाए; लेकिन हांगकांग, सिंगापुर की तरह नहीं।' चीफ रेड्डीसाहब इस बात पर उसकी प्रशंसा करते हैं। मध्य प्रदेश की कुक्षी तहसील के क्षेत्रों में जाकर वहाँ की आदिवासी बाघ-गुफाओं की जानकारी हासिल करने की जिम्मेदारी उस पर सौंपते हैं । गौतम दो-तीन महीने की छुट्टी की माँग करता है और अपनी बीमार माँ के पास उज्जैन पहुँचता है।

गौतम अपनी माँ की हालत देखकर बहुत दुखी हो जाता है। माँ से बातें करते वक्त, माँ उसे उज्जैन महाकाल की नगरी और शिप्रा नदी का इतिहास बताती है। यहाँ इस पुण्यनगरी में धर्मशाला बनवाने का मनोदय भी वह व्यक्त करती है। गौतम किस तरह के संकटों से जूझता है और वह कब तक अकेला रहेगा, इस पर भी वह चिंता व्यक्त करती है। ठेकेदार धर्मशाला के नक्शे दिखाता है, तब वह (गौतम) पेशोपेश में पड़ जाता है कि इतना पैसा कहाँ से आएगा? तभी माँ उसे आश्वस्त करते हुए कहती है कि गौतम के नाना की शिप्रा के किनारे करीब साढ़े तीन एकड़ जमीन है, तथा अपने पति का पाँच लाख का फंड और उसके बचाए हुए पैसे हैं। इन पैसों से गरीब तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशाला बन जाएगी। सीधी, सरल और गाँधी जी के विचारों से प्रभावित अपनी माँ की ओर गौतम आश्चर्य से देखता है।

गौतम के चले जाने से सुमेरगढ़ के राजघराने को एकतरह से राहत मिल जाती है। पंछियों का कारोबार भी ढ़ीला पड़ता जाता है। समीरा की मृत्यु से दोनों राजघरानों में मुर्दनी और उदासी छाई रहती है। राजसी अहंकार और परंपरा से चले आए पति होने के पुरूषोचित अधिकार के दंभ में जयसिंह ने जो जघन्य हत्याकांड किया था, उससे जयसिंह दिल ही दिल में पश्चात्ताप करते रहते हैं। भीतर ही भीतर वे परेशान रहते हैं। फ्रोज़न मीट फैक्टरी के बारे में भी वे उतने उत्साहित नहीं रहते।

सुमेरगढ़ में अब एक दूसरी ही हलचल शुरू हो जाती है। सरकार कोई आदेश जारी करें, इससे पहले पुरातन अवशेषों को बेचकर पैसा कमाने की जालसाजी योजना बनाई जाती है। छुट्टी खत्म होने के बाद गौतम वापस ऑफिस पहुँचता है और अधीक्षक उसे आदेश पत्र देते हैं। वे फिर एक बार उसके रिपोर्ट की, ईमानदारी तथा निष्पक्ष दृष्टि की प्रशंसा करते हैं। तभी गौतम की माँ की तबीयत बिगड़ने से उन्हें आय.सी.यू. में भर्ती किया गया है ऐसा फोन ठेकेदार करता है। गौतम तुरंत माँ के पास पहुँचता है, लेकिन उसकी माँ का देहांत हो जाता है। माँ के चले जाने से गौतम बहुत ही दुखी होता है। उसके आँखों से आँसू सूखते नहीं।

माँ के चले जाने के बाद गौतम निपट अकेला रह जाता है। उज्जैन में एक महीना रहकर वह दिल्ली पहुँचता है। दफ्तरी औपचारिकता पूरी करता है और सुमेरगढ़ से बाकी सामान लाने के लिए चला जाता है। उसके मन पर एक उदासी छाई रहती है। वह सोचता है, अब अपने जैसे अकेले मास्टर जी ही है; उनसे मिलकर आएँगे। समीरा तो उसका बीता हुआ व्यतीत ही थी। सुमेरगढ़ पहुँचता है। नीली झील का वही सम्मोहक दृश्य, पंछियों का हल्का-हल्का शोर सुनकर भी वह अनमने मन से टहलता रहता है। कहीं भी कुछ नहीं था। वह उल्लासित भी नहीं था। फिर भी एक खिंचाव, आकर्षण उसके मन पर छाया रहता है। तभी एक आदिवासी बहेलिया आकर उसे पूछता है कि, 'कुछ चाहिए बाबू?' तब गौतम के मन पर दस्तक-सी पड़ती है। वह चौकन्ना हो जाता है। उस बहेलिए से ही गौतम को पता चलता है कि अब यहाँ राजासाब की फीस भरने के पश्चात शिकार करने की सहुलियत दी जाती है। यह सुनकर गौतम का मन कसैला हो जाता है। उसे समीरा की दुर्घटना तथा उसकी मृत्यु का प्रसंग याद आता है। वह सोचता है, समीरा की आत्मा इन सारे प्रकारों से मानो विलाप करती हुई छटपटा रही है। बीतकर भी न बीतने वाले अतीत के वे क्षण उसके सामने फिर एक बार जीवित हो उठते हैं। उसे लगता है कि बीतता तो कुछ नहीं, कुछ भी व्यतीत नहीं है।

गौतम मास्टर दीनानाथ जी से मिलता है। वे उसे दिव्या के जीवित होने की खबर सुनाते हैं। कुरूक्षेत्र में लोकगीत-संगीत महोत्सव में उनसे वह मिलती है, जिसने संन्यस्त वृत्ति धारण की है आदि बातें वे गौतम के साथ करते हैं। तभी वह वृत्तपत्र में एक विज्ञापन देखता है। सुमेरगढ़ नगरपरिषद का विज्ञापन देखकर गौतम मास्टर जी से बातचीत करता है। मास्टरजी बताते हैं जालसाजी से विदेशी बैंकों से पैसा उठाकर सत्तर करोड़ में महाराजा साहब की जायदाद नगरपरिषद ने उठाई है और अब उसके बेचने के विज्ञापन अखबार में आने लगे हैं। वे गौतम से इस पर बहुत सारी चर्चा करते हैं। वे गौतम का सामान पैक करवाके भिजवाने का भी जिम्मा उठा लेते हैं। गौतम सुबह जल्दी वापस जाना चाहता है।

दूसरे दिन सुबह जल्दी उठने के बावजूद गौतम सतपुड़ा के जंगलों की ओर नहीं निकलता। वह मन ही मन अपनी माँ से क्षमायाचना करता है और कुछ बातें तय कर लेता है। नगरपरिषद के कार्यालय में जाकर वह बिक्री वाली जायदाद के नक्शें देखता है। संबंधित अधिकारियों से मिलकर जानकारी इकट्ठा कर लेता है। हेड़ ऑफिस में दो हफ्ते की छुट्टी की अर्जी करता है और उज्जैन चला जाता है। जहाँ माँ की अंत्येष्टि की थी, उस जगह पर वह चला जाता है। शिप्रा तट पर बैठकर वह माँ से बातें करता है, ''माँ, तेरे पास तो

मन की बातें जान लेने वाला और सबकुछ बता देने वाला बेतार का यंत्र है। तू सबकुछ जान रही होगी .... माँ शिप्रा तट पर न सही, पर मैं धर्मशाला ही बनवाने जा रहा हूँ ....।'

गौतम सुमेरगढ़ वापस आता है और मास्टर तथा थापा से मिलकर सारी योजना बताता है। नगरपरिषद से वह नीली झील की खरीदारी करता है। रजिस्ट्री की कार्रवाई पूरी करता है। सुबह उठ़कर वह झील पर पहुँचता है तो उसे लगता है कि जैसे झील एक नई साँस ले रही है। उसने प्राणीमात्र की धर्मशाला बना दी। झील की सरहद पर थापा एक बोर्ड लगाता है, जिसपर लिखा हुआ होता है -

''पंछियों का धर्मशाला

यहाँ शिकार करना मना है।''

समीरा के प्रति होने वाली उसकी भावनाएँ वह इस तरह प्रस्तुत करता है।

मानवीयता का एक महान आदर्श प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त हुआ है। समय, समाज, सदी की विकास जनित त्रासदियों को यहाँ चित्रित किया है। प्रकृति के अत्यंत मासूम और कोमल पक्ष (पंछी) को सामने लाकर लेखक यही बताना चाहते हैं कि हम प्रकृति के प्रतिकूल न जाएँ। प्रकृति के साथ हो रहे अमानवीय और अप्राकृतिक व्यवहार और अंदाधुंद भोगवादी दोहन का कारूणिक दृश्य दिखाते हैं और इसतरह धरती-पहाड़ों, नदियों-झीलों, पशु-पक्षियों आदि के प्रति हमें न केवल सचेत करते हैं, बल्कि हमें प्रकृति और पर्यावरण के प्रति और भी विवेकपूर्ण, मानवीय और सहृदय होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। भारतीय सभ्यता, बौद्‌ध तथा जैन दर्शन में बताए आदर्श, अहिंसा तत्त्व आज की आवश्यकता बन रहे हैं। 'अतिथि देवो भव' ये हमारी परंपरा है। हजारों मील का सफर तय करके बहुत सारे मासूम पंछी सर्दियों में जीवन पाने के लिए नीली झील पर आते हैं। इन दिनों वे भारत को अपना घर बनाते हैं। लेकिन उन्हें जगह-जगह पर पकड़ा या मारा जाता है और इनका व्यापार किया जाता है। इस भयानक यथार्थ को आज हम देख रहे हैं लेकिन इसे भुगतने वाले मासूम और सुंदर पंछी जो हमारी वनसंपदा हैं, उनके प्रति हमारी संवेदनाएँ जागृत होनी जरूरी है। मानवीय करूणा, दया और सह-अस्तित्त्व का भारतीय सिद्‌धान्त फिर एक बार अपना महत्त्व प्रतिपादित कर रहा है।

दशकों बाद मनुष्य ने पर्यावरण के महत्त्व को पहचाना और वन्यजीवों के संरक्षण पर ध्यान देना शुरू किया। परंतु धन की भूख के कारण मनुष्य ने अपनी मान-मर्यादा और धर्म-सब कुछ निगल लिया है। मासूम परिन्दों (जो कुदरत की सन्तान हैं) के एक्स्पोर्ट के कारोबार से लाखों का मुनाफा कमाना चाहते हैं। विदेशों के चिड़ियाघरों में पशु-पक्षियों की जबरदस्त डिमांड है और हमारे देश में उनकी कोई कमी नहीं है। इनका कोई मालिक भी नहीं है, जो इनके पकड़े जाने पर ऐतराज करें। ऐसे सुरक्षित कारोबार के जरिए लाखों की पूँजी कमाने की स्वार्थी प्रवृत्ति रखने वाले लोग हैं तो दूसरी तरफ प्रकृति से प्रेम करने वाले समीरा जैसे भी लोग हैं, जो अपनी जान जोखिम में ड़ालकर भी इन पंछियों की रक्षा करना चाहते हैं।

भारत की स्वाधीनता के बाद देशी रियासतों का विलय भारत संघ में कर दिया गया। राजाओं के उत्तराधिकारी इसका विरोध करते रहें। लेकिन अपनी आर्थिक दुर्बलता तथा सामंती, विलासपूर्ण जीविका के

कारण कुछ काम करने के लिए मजबूर हुए हैं। ऐसे समय पंछियों के एक्सपोर्ट करने का कारोबार करना स्वीकारते हैं, जो तेजी में है, तथा उसमें कोई धोखा नहीं। ऐसे समय उन्हीं राजपुताने वंश की राजकुमारी इसका विरोध करती है, जिसमें पक्षी-प्रेम है। पक्षी प्रेम को अत्यंत मार्मिकता एवं सघनता से यहाँ प्रस्तुत किया गया है। 'पक्षी प्रेम' की संवेदना के विस्तार के साथ कथावस्तु रोचकता को बढ़ाती है। 'अहिंसा' मूल्य को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने समीरा, दिव्या, महारानी राजलक्ष्मी, गौतम आदि ईश्वर की मूल्यवान खूबसूरत धरोहर निर्दयी हाथों से बचाना चाहते हैं। मानवीय संवेदना के इस आयाम को कथावस्तु में सूक्ष्मता से अंकित किया है।

इसतरह प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु में कमलेश्वर ने मानवीय भावनाओं की दया, करूणा की शाश्वतता, चिरंतनता को बताया है। आधुनिक युग में भौतिक सुख-सुविधा पाने के लिए मनुष्य किस तरह प्रकृति का भी विनाश कर रहा है, इस सत्य का उद्घाटन लेखक ने किया है। प्रकृति के अत्यंत मासूम ऐसे पक्षियों के प्रति प्रेम व्यक्त करके समीरा, गौतम तथा नानी माँ के चरित्रों द्वारा एक नया आदर्श यहाँ प्रस्तुत किया है। कथावस्तु में अलग-अलग घटनाओं से पाठकों में शुरू से अंत तक उत्सुकता बनी रहती है। इसतरह प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु रोचक है; साथ ही साथ अपने मन्तव्य की अमीट छाप पाठकों के मन पर छोड़ जाती है।

कथावस्तु पक्षी प्रेम की केंद्रीय कल्पना पर आधारित है। उस मूल संवेदना को व्यक्त करते हुए हम देख सकते हैं कि लेखक ने अलग अलग पक्षियों की सूक्ष्म जानकारी दी है। जयसिंह, पक्षी विशेषज्ञ विश्वमोहन आदि व्यक्तियों के द्वारा खंजन, सर्पपक्षी, क्रौंच, चातक, भुजंगा, आदि अलग अलग पक्षियों के नाम तथा उनके बारे में जानकारी प्राप्त होती है । पाठकों में भी पक्षीप्रेम तथा उत्सुकता जागृत होती है।

3.3.4 अनबीता व्यतीत का चरित्र-चित्रण :-

किसी भी उपन्यास में चरित्र-चित्रण अंत-प्रकृति तथा बाह्य व्यक्तित्त्व आदि दोनों दृष्टियों से किया जाता है। इसमें पात्र की बाहरी परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता, उसके राग, विराग, महत्त्वकांक्षाएँ, संघर्ष, दया, करूणा, उदारता आदि मानसिक स्वभाव धर्म के गुण और क्रूरता, हिंसा, अनुदारता, शत्रुता आदि दुर्गुणों का चित्रण रहता है। चरित्र-चित्रण तत्त्व की दृष्टि से आजकल दो प्रमुख प्रकारों की चर्चा की जाती है - प्रत्यक्ष और परोक्ष। इसे विश्लेषणात्मक और अभिनयात्मक भी कहा जाता है। इनमें से पहले प्रकार के चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार अपने पात्रों का चित्रण स्वयं करता है। उनके विचारों-आचारों, भावों, मनोवेगों, प्रवृत्तियों का परिचयात्मक विश्लेषण वह स्वयं देता है। तो दूसरे प्रकार में चरित्रों का स्वाभाविक परिचय वार्तालाप द्वारा होता है। पात्र अपने क्रिया-कलापों द्वारा खुद ही अपनी पहचान पाठकों से कराते हैं। उपन्यासकार उसमें किसी भी प्रकार की दखलांदाजी नहीं करता।

प्रस्तुत उपन्यास ''अनबीता व्यतीत'' के चरित्र-चित्रण से इस बात का परिचय मिलता है। इस उपन्यास के सभी चरित्र अपने उच्च कोटि के व्यक्तित्त्व का परिचय अत्यंत स्वाभाविकता से देते हैं। कल्पना और यथार्थ के समन्वय से चितारे गए इस उपन्यास के सभी चरित्र रक्त-मांस के सामान्य, सांसारिक मनुष्य

के रूप में अपने व्यक्तित्त्व का प्रभाव पाठकों पर इस कदर डालते हैं कि वे उपन्यास के पन्नों पर न रहकर पाठकों के दैनिक जीवन का, उनके सोच-विचारों का, साथ ही साथ उनके दिल और दिमाग का एक अनिवार्य हिस्सा बनकर रह जाते हैं। इन चरित्रों का स्वतंत्र व्यक्तित्त्व पाठकों पर अपना अलग- सा प्रभाव डालकर हर पाठक को अपने समान सद् आचार-विचार से युक्त कृति करने के लिए, और अपने समान सोचने के लिए मजबूर कर देता है। उपन्यास में वर्णित चरित्रों की यही सजीवता, स्वाभाविकता और वास्तविकता ने इस उपन्यास को एक अलग- सी सफलता प्रदान की है। अत: उपन्यास में वर्णित चरित्र-चित्रण का विस्तृत एवं समीक्षात्मक परिचय हम आगे पाएंगे।

''अनबीता व्यतीत'' कमलेश्वरजी की एक उच्चकोटि की अंतिम औपन्यासिक रचना रही है। इतिहास और वर्तमान की पृष्ठभूमि पर तथा कल्पना और यथार्थ की भावभूमि पर साकार हुए इस उपन्यास में कमलेश्वरजी ने चरित्र-चित्रण इस तत्त्व को एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया है। विविध आचार्यों द्वारा प्रस्तुत उपन्यास प्रकारों की दृष्टि से देखे, तो कमलेश्वर का यह उपन्यास चरित्र-प्रधान उपन्यास ही लगता है; क्योंकि उपन्यास में वर्णित क्रिया-कलापों द्वारा घटित-घटनाएँ कथातत्त्व को अधिक प्रभावात्मक बनाने के बजाय उससे संबंधित चरित्रों का प्रभाव ही पाठकों के दिलोंदिमाग पर अधिक सशक्तता से डालती है। इससे हर चरित्र अन्य पात्रों से अलग हटकर अपनी स्वयं की अलग पहचान, उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक कायम रखने में सफल हुआ नजर आता है। इसी कारण इस उपन्यास में चित्रित हर चरित्र का व्यक्तित्व एक-दूसरे से स्वतंत्र है, वे लेखक के हाथ की कठपुतली बनने के बजाय अपनी खुद की पहचान स्वयं करते हैं। तात्त्विक प्रकारों की दृष्टि से देखे ,तो इस उपन्यास की चरित्र-सृष्टि प्रत्यक्ष और परोक्ष, विश्लेषणात्मक और अभिनयात्मक दोनों प्रकारों की है और यही कारण है कि इसका हर चरित्र रक्त-मांस से बने सामान्य सांसारिक मनुष्य का ही लगता है। इतना ही नहीं, वह अपने जैसा सोचने वाला, विचार करने वाला, दैनिक जीवन जीने वाला अपने ही बीच का कोई सगा-संबंधी लगने लगता है। इतनी सजीवता, वास्तविकता इन चरित्रों में कमलेश्वर ने डाली है।

आलोच्य उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' का चरित्र-चित्रण इस औपन्यासिक तत्त्व को केंद्र में रखकर स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जाए, तो सबसे पहले यह बात स्पष्ट होती है कि इसमें पात्रों की भरमार नहीं है। कुल मिलाकर अठारह चरित्रों का ही परिचय कमलेश्वर जी ने यहां पाठकों से किया है। उनमें से भी कुछ पात्रों का उपन्यास में केवल नामोल्लेख ही हुआ है। कथा तत्त्व ती गतिशीलता की दृष्टि से उपन्यास में वर्णित घटना व्यापार या क्रिया-कलाप से संबंधित चरित्रों का विभाजन अध्ययन की सुविधा के लिए 'मुख्य पात्र' और 'गौण पात्र' शीर्षक से किए जाने की हमारे यहां एक रूढ़ पद्धति है। उसी पद्धति की दृष्टि से देखे, तो आलोच्य उपन्यास में चित्रित चरित्रों का विभाजन इस प्रकार हो सकता है -

प्रमुख पुरूष पात्र :- गौतम (नायक), महाराज सुरेन्द्रसिंह (नाना जी), पं. द्वारिकादास (दीवान), पं. दीनानाथ (दिव्या के पिता), जयसिंह (समीरा के पति) आदि।

प्रमुख स्त्री पात्र :- समीरा (नायिका), महारानी राजलक्ष्मी (नानी जी), दिव्या (दीपशिखा) आदि।

गौण पात्र :– राणी विजयलक्ष्मी, कुँवर नरेंद्रसिंह (समीरा के पिता), गौतम की माँ, गौतम की पूर्व-प्रेमिका दीपाली, विश्वमोहन (पखेरू विशेषज्ञ) थापा (गौतम का सिक्योरिटी गार्ड), रामसिंह (महाराज सुरेन्द्रसिंह का नौकर) असिस्टेन्ट राजेंद्र, नेताजी शोराज चौधरी और सेनापति चंद्रभान सिंह आदि।

ऊपर लिखित गौण पात्रों में से उपन्यास में चित्रित घटना-व्यापार और कथा तत्त्व की गतिशीलता की दृष्टि से देखे, तो रानी विजयलक्ष्मी, कुँवर नरेन्द्रसिंह, गौतम की माँ, गौतम की पूर्व प्रेमिका दीपाली, असिस्टेन्ट राजेंन्द्र, थापा आदि प्रमुख गौण पात्र हैं । बाकी पात्रों का आलोच्य उपन्यास में स्थिति-प्रसंग के अनुरूप केवल नामोल्लख ही हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित प्रमुख चरित्रों को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है -

1. गौतम :–

आलोच्य उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' का नायक है - गौतम। वैसे तो स्वतंत्रता के बाद आजाद भारत ने अपनी कार्य प्रणाली के लिए निर्माण किए गए पुरातत्त्व विभाग का वह अफसर है। अपने विभाग के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा दिए गए आदेशानुसार वह प्राचीन इमारतों, ऐतिहासिक भवनों, स्थलों को खोजने, परखने और उनकी जन्म-कुंडली बनाने का काम करता है। उसके अनुसार प्राचीन राजा-महाराजाओं ने सदियों से अपने यहाँ किले, राजमहल, रंगमहल, स्मारक, मंदिर जैसी कई इमारतें बनवाई हैं। वे सारी इमारतें आज पुरातत्त्व विभाग की नजर में देश की ऐसी बहुमूल्य सम्पत्ति है, जिनकी रक्षा करना अब राजा-महाराजाओं के लिए असंभव है। इसलिए देश की सरकार ने यह काम पुरातत्त्व विभाग को सौंप दिया है। अपने वरिष्ठ अधिकारी के आदेशानुसार वह सुमेरगढ़ में काम करने के लिए आया है। पूरे उपन्यास में उसका स्वतंत्र व्यक्तित्त्व, उसकी सोच, उसके विचार एक धीरोदात्त नायक के समान प्रदर्शित हुए हैं। उपन्यास में वर्णित सभी पुरूष पात्रों में यही एक मात्र ऐसा चरित्र है, जो उपन्यास के नायक के लिए विविध आचार्यों ने दिए गए मापदंडों के ढ़ाँचे में बैठकर अपने आपको इस उपन्यास का नायक प्रमाणित करता हुआ नजर आता है। अत: आलोच्य उपन्यास के प्रमुख पात्र अर्थात् नायक गौतम का व्यक्तित्त्व विभिन्न चारित्रिक विशेषताओं से परिपूर्ण रहा है। उसके व्यक्तित्त्व की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ, जो उपन्यास में अलग-अलग घटना-व्यापारों द्वारा प्रगट हुई हैं, इस प्रकार हैं -

♦ **इमानदार अफसर :–**

गौतम असल में भारतीय पुरातत्त्व विभाग का एक इमानदार अफसर है। देश आजाद हो जाने के बाद हमारे प्राचीन, ऐतिहासिक मौल्यवान धरोहर का सर्वेक्षण करने का काम सरकार ने इस विभाग पर सौपा था। पूरे देश में फैले सुंदर इमारतों, किलों, रंगमहलों और राजमहलों को खोजकर, उनका सूक्ष्म अध्ययन करना, उनकी सद्यस्थिति की जानकारी तथा अब उन पर किसका अधिकार है, सरकार ने उन्हें अपने अधीन लेना चाहिए या नहीं आदि सब बातों की सूक्ष्म जानकारी देने का कार्य इस विभाग ने अलग-अलग अफसरों पर सौंपा था। वे सारे अफसर देश के कोने-कोने में जाकर ऐसे स्थलों को खोजकर उनका ऐतिहासिक महत्त्व जानकर, उसे देश की मौल्यवान सम्पत्ति के रूप में प्रमाणित करने हेतु सही रिपोर्ट अपने विभाग को भेजते

थे। वैसे तो सर्वेक्षण का यह काम बड़ा ही जानलेवा था; क्योंकि यह सारी खण्डहर बनी सम्पत्ति तत्कालीन राजा-महाराजाओं के प्राचीन घरानों की परंपरागत सम्पत्ति थी और वे राजा-महाराजा इतनी आसानी से अपना हक और अधिकार छोडने वाले नहीं थे। फिर भी पुरातत्त्व विभाग के अफसर यह जोखीम भरा काम बड़ी इमानदारी से कर रहे थे। गौतम उन्ही में से एक इमानदार अफसर था। इस उपन्यास का कथानक जहाँ घटता है, उस सुमेरगढ़ में स्थित प्राचीन इमारतों, स्थलों और रंगमहलों, राजमहलों, स्मारकों को खोजने और परखने तथा उन्हें देश की मौल्यवान धरोहर के रूप में प्रमाणित करने की जिम्मेदारी पुरातत्त्व विभाग ने उस पर ड़ाली थी। वह स्वयं इस क्षेत्र का अभ्यासक होने से इस जिम्मेदारी को अत्यंत इमानदारी और होशियारी से निभाता है। उपन्यास में हम देखते हैं कि इस जिम्मेदारी को निभाने हेतु वह जानलेवे खतरों से खेलकर सही रिपोर्ट पुरातत्त्व विभाग के दिल्ली स्थित सर्वेक्षण कार्यालय में भेजता है। यह रिपोर्ट न भेजने के लिए सुमेरगढ़ के दीवान द्वारिकादास ने तरह-तरह के प्रयत्न किए थे। कभी उसे प्रेम से तो कभी धमकी देकर समझाया था। एक बार तो लाखों रूपयों से भरी अटैची उसके सामने रखकर उसे रिश्वत देने की कोशिश भी की थी। मगर ईमानदारी से काम करने वाले गौतम ने दीवान जी को जेल में भेजने की धमकी देकर एक ईमानदार सरकारी अफसर होने का प्रमाण दिया था। आखिर उसका दफ्तर भी जलाया जाता है, उसकी जान लेने की कोशिश भी की जाती है। मगर गौतम अपनी जिम्मेदारी आखिर तक अत्यंत हिम्मत से, प्रामाणिकता से, खंबीरता से और इमानदारी से निभाता है। उसके इसी ईमानदारी को देखकर उपन्यास के आखरी पर्व में हम देखते हैं कि पुरातत्त्व विभाग के बड़े चीफ अफसर द्वारा उसकी प्रशंसा की जाती है; साथ ही साथ उस पर सातपुड़ा के जंगलों, कंदराओं, वनों और खण्डहरों में फैली गुफाओं का सर्वेक्षण करने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। सुमेरगढ़ में स्थित प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर का अत्यंत प्रामाणिकता और इमानदारी से सही-सही सर्वेक्षण करने वाले गौतम पर पुरातत्त्व विभाग से यह दूसरी जिम्मेदारी डाली जाती है। इस दृष्टि से देखे, तो गौतम सचमुच ही एक इमानदार अफसर है।

- **प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति आसक्त :-**

गौतम पुरातत्त्व विभाग द्वारा नियुक्त प्राचीन इमारतों का अध्ययन करने वाला एक होनहार अफसर होकर भी उसका निजी आकर्षण प्राकृतिक सौंदर्य रहा है। इसीलिए वह अपना सर्वेक्षण का काम पूरा करके हर रोज नीली झील के किनारे आकर बैठता है। नीली झील का प्राकृतिक सौंदर्य उसकी दिन भर की थकान को दूर कर देता है। सुमेरगढ़ में स्थित यही एक मात्र स्थान ऐसा है, जो उसे अधिक पसंद है। इस झील में आने वाले तरह-तरह के विदेशी पक्षी उसे अपने अकेलेपन के साथी लगते हैं। झील के आस-पास मँडराते, उडते, पंख फडफडाते, रंग-बिरंगे पंछियों को देखकर वह अपनी दिन भर की थकान भूल जाता है। इसी प्राकृतिक आकर्षण के कारण वह झील के किनारे मंडराने वाले पंछियों के समान स्वयं एक बाशिंदा न होने का दु:ख व्यक्त करता है। दिव्या को वह एक बार झील के सौंदर्य को अपने आँखों से देखने की बिनती करता है। प्रात: समय का झील का वातावरण, साँझ समय का प्राकृतिक दृश्य, वहाँ के पंछी, वहाँ की चट्टानें, बहती हवा, चहकने वाले देशी-विदेशी पंछी, फैला हुआ कोहरा उसे बार-बार आकर्षित करता है। खामोश पत्थरों के मौन संगीत के स्वर उसकी समझ में आते हैं। इस संबंध में वह एक बार दिव्या से कहता

भी है कि ''इन पुरानी इमारतों के पत्थरों में संगीत सुनाई देता है। इन पत्थरों में गूँजता है, उन कलाकारों की आत्मा और कल्पना का संगीत, जिन्होंने इन्हें अपनी छेनी-हथौडी से तराशा है।'' प्रकृति के प्रति रहा उसका यही आकर्षण उसे पुरातत्त्व विभाग में ईमानदारी के साथ बड़ी लगन से सर्वेक्षण का काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इतना ही नहीं, उपन्यास के अंत में हम देखते हैं कि सुमेरगढ़ नगर परिषद की ओर से दिए गए विज्ञापन के अनुसार गौतम स्वयं नीली झील को खरीद लेता है। उसके द्‌वारा नीली झील को खरीदना, देश-विदेश के पंछियों की रक्षा के लिए किए गए उपाय के साथ-साथ उसके मन में प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति रही आसक्ति का उदाहरण भी है।

♦ **असफल प्रेमी :-**

गौतम के जीवन में प्रेम का अभाव रहा है, वह एक असफल प्रेमी के रूप में पाठकों के सामने आता है। उसने जीवन में पहली बार अपने एक सहपाठी की बहन दीपाली से प्यार किया था। दीपाली भी उसे जी-जान से प्यार करती थी। वे दोनों भी हमेशा-हमेशा के लिए जीवन साथी बन जाना चाहते थे। किंतु दीपाली के पिता को उनका यह रिश्ता मंजुर नहीं था। कट्टर जातिवादी होने से उन्होंने अपने लड़की की शादी, अपने ही जाति के किसी लड़के से करा दी थी, जो एक मानसिक रोगी था। किंतु शादी के दो महीने बाद ही दीपाली ने वाजीराबाद के पुल से निकलती जलधारा में छलांग लगाकर आत्महत्या की थी। गौतम को यहाँ पहली बार न चाहते हुए भी प्रेम में असफलता स्वीकारनी पड़ी थी। दीपाली के पिता द्‌वारा उसके प्यार भरे जीवन के साथ जातीयता के नाम पर किया गया खिलवाड गौतम ने चुपचाप सहन करके अपने असफल प्रेम का बोझ जिंदगी भर ढोने का प्रामाणिक प्रयत्न किया था। सुमेरगढ़ आने पर भी दीपाली की यादें उसके मन से उसकी अंतिम निशानी मैरून रंग की शाल के समान लिपटी थीं। यहाँ आने के बाद गौतम का दिव्या और समीरा के साथ अच्छा दोस्ताना बना था। इनमें से समीरा का चेहरा, उसका नाक-नक्शा हू-ब-हू दीपाली से मिलता था। शायद यही कारण था कि गौतम हमेशा समीरा के साथ झील के किनारे गप-शप करते घंटों बैठता था। किंतु दीपाली के चेहरे से साम्य रही समीरा से उसने अपने मन के असली भाव का कभी स्पष्ट शब्दों में इजहार नहीं किया था। ऐक प्रेमी की तरह समीरा से मिलने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहने वाला गौतम, सच कहे तो समीरा में दीपाली को तलाशता रहता था। इसीलिए वह समीरा को उसके लिए छाया देने वाला एक वृक्ष मानता था। समीरा के प्रति मन में उठने वाले अनोखे भाव को श्रध्दा का नाम देने वाला गौतम, आखिर तक एक असफल प्रेमी बनकर, अपना पूरा जीवन व्यतीत करता है। न वह दीपाली के पिता के साथ संघर्ष करके दीपाली के साथ जीवन जीने की हिंम्मत दिखाता है, न दिव्या के एकतर्फा प्रेम को समझता है, न समीरा को दीपाली का स्थान देने की हिंमत करता है। वास्तव में वह एक असफल प्रेमी है और उसे उसी रूप में उपन्यास में चितारा गया है।

♦ **माँ का लाड़ला बेटा / माता-पिता के प्रति गर्व और श्रध्दा :-**

गौतम अपनी माँ का इकलौता बेटा है। उसके पिता को देश की आज़ादी के आंदोलन में भाग लेने के जुर्म में भरी जवानी में फाँसी पर लटका दिया गया था। तब से अपने लाड़ले बेटे गौतम को उसकी विधवा

माँ ने पाल-पोसकर एक ईमानदार अफसर बना दिया था। अपने पिता द्वारा देशप्रेम के खातिर दिए-गए योगदान को लेकर गौतम के मन में हमेशा आत्मविश्वास भरा श्रद्धा और गर्व भाव रहता है। पिता के समान गौतम की माँ के मन में भी देश और देश के महान नेताओं तथा यहाँ की गरीब जनता के प्रति आस्था, स्वाभिमान और करूणा के भाव स्थाई रूप में विद्यमान रहे हैं। इसीलिए उसने गरीब यात्रियों के लिए धर्मशाला बाँधने का निश्चय किया था। माता और पिता के इन्हीं सद्गुणों का दर्शन गौतम के व्यक्तित्त्व में अत्यंत सहजता से होता है। उसके मन में माता-पिता के प्रति एक अनोखा गर्व और श्रद्धा भाव छिपा है। वह भाव तब अधिक तीव्रता से व्यक्त होता है, जब दीवान जी सुमेरगढ़ की रिपोर्ट उनके मर्जी के अनुसार न भेजने पर गौतम को धमकी देते हैं। उनके धमकी के बाद गौतम ने उन्हें जो जवाब दिया था, वह जवाब ही उसके मन में अपने माता-पिता के प्रति रहे गर्व और श्रध्दा भाव का भली-भाँति परिचय देता है।

इकलौता बेटा रहा गौतम, उज्जैन में अकेली रहने वाली अपनी विधवा माँ की सेवा बड़े ही श्रध्दा-भाव से करना चाहता है। इसीलिए उसने अपने हेडक्वाटर को अपना ट्रान्सफर उज्जैन करने के लिए लिखा था। उसे ज्ञात है कि उसकी माँ वहाँ अकेली और अक्सर बीमार रहती है। उसकी देखभाल करना उसका पहला कर्तव्य है। इसी श्रद्धा और कर्तव्य भाव से सुमेरगढ़ के सर्वेक्षण का काम पूरा करने के बाद तीन महीने की छुट्टी लेकर वह अपनी माँ के पास आया था। माँ का धर्मशाला बनाने का सपना पूरा करने का वह निश्चय करता है और अंत में धर्मशाला बनाने का अपनी माँ का सपना वह नीली झील खरीद कर वहाँ प्राणीमात्र की धर्मशाला बनाकर पूरा करता है। गौतम द्वारा एक बेटे के रूप में किए गए प्रयत्न और सरकारी काम में दिखाई गई लगन तथा इमानदारी उसके मन में रहे माता-पिता के प्रति गर्व और श्रद्धा भाव का ही प्रतिबिंब है।

- **निर्गुणवादी व्यक्तित्त्व (निर्गुणवादी विचारों का समर्थक) :-**

गौतम के इस वैचारिक व्यक्तित्त्व का पहलू समीरा के साथ हुई पहली मुलाकत के दौरान स्पष्ट होता है। गौतम आध्यात्मिक या ईश्वरवादी विचारों का नहीं है। वह नास्तिक या निरीश्वरवादी भी नहीं है। उसके मतानुसार ईश्वर कोई रहस्य नहीं है, वह तो मनुष्य की पवित्र आध्यात्मिक कल्पना मात्र है; जिसे स्वयं मनुष्य ने एक बहुत खूबसूरत प्रतिमान के रूप में अपनी कमजोरियों से ऊपर उठने के लिए निर्माण किया है। गौतम के विचारानुसार मनुष्य कभी ईश्वर बनना नहीं चाहता; क्योंकि ईश्वर के रूप में स्वयं मनुष्य ने अपने लिए एक आदर्श पैदा किया है। ईश्वर संबंधी निर्गुणवादी विचारों को प्रमाणित करने के लिए वह एक कहानी भी सुनाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि कोई भी सामान्य मनुष्य कुछ समय के लिए भी ईश्वर की इच्छानुसार ईश्वर का स्थान लेने के लिए तैयार नहीं होता। सब अपना-अपना स्वार्थ ही देखते हैं और उसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए ईश्वर का हर रोज पूजा-पाठ करते हैं। इतना ही नहीं, वह मनुष्य द्वारा मुक्ति और मोक्ष के बारे में निर्मित आस्था और विश्वास को महज एक कल्पना मात्र समझता है। उसके अनुसार पराजगत् या पराजीवन मात्र एक आकर्षक छलावा है। गौतम के ईश्वर संबंधी विचार मध्ययुगीन संत कवियों के समान हैं। वह इन संतों की तरह एक ओर ईश्वर के नाम पर मनुष्य ने निर्माण किए हुए आध्यात्मिक भाव को आकर्षक छलावा बताता है; मोक्ष, मुक्ति जैसी बातों को छलावा कहता है; पराजगत्, पराजीवन को स्वीकारता नहीं;

किंतु दूसरी ओर वह उसी अज्ञात ईश्वर को परमसत्ता मानता है, 'उस परमसत्ता ईश्वर के बिना मनुष्य नहीं रह सकता', इस बात को वह स्वीकारता है। उसका विरोध निर्गुणवादी संतों के समान केवल 'ईश्वर के नाम पर धर्माचार्यो ने जो अतिक्रमण किया है'', उससे है। परमसत्ताधारी ईश्वर का वह विरोधी नहीं है, वह तो निर्गुणवादी विचारों का समर्थक है।

- **सच्चा देशभक्त :-**

गौतम एक सच्चा देशभक्त है। वह जिस केंद्रीय पुरातत्त्व विभाग के कार्यालय में काम करता है, वह कार्यालय और उसका सर्वेक्षणात्मक कार्य ही इस भावना को उजागर करने वाला है। गौतम के मन में अपने देश के प्रति अगाध श्रद्धा है। साथ ही इस देश की प्राचीन, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर के प्रति बड़ी आस्था भी है। इसीलिए वह सुमेरगढ़ के ऐतिहासिक भवनों, राजमहलों, रंगमहलों और प्राचीन सांस्कृतिक इमारतों का सर्वेक्षण करके उसके पुश्तैनी और गैर-पुश्तैनी सम्पत्ति की रिपोर्ट बड़ी ही नीडरता और ईमानदारी से तैयार करता है। यह रिपोर्ट बनाते समय सुमेरगढ़ के दीवान जी उसे जान से मारने की धमकी देते हैं, उसे रिश्वत देने की कोशिश करते हैं। उसका कार्यालय जलाया जाता है और आखिर उस पर जानलेवा हमला भी किया जाता है। मगर अपने पिता से विरासत में मिली देशभक्ति को कायम रखते हुए उसने हर स्थिति में खुद की रक्षा करके एक सच्चे देशभक्त की तरह अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाई है। वह रिश्वत को केवल गैर-कानूनी ही नहीं मानता, तो उसकी दृष्टि में रिश्वत लेना या देना एक सामाजिक जुर्म भी है। इसी देशभक्ति भाव से वह दीवान जी द्वारा दी हुई दस लाख रूपयों की रिश्वत ठुकरा देता है और कहता है कि सरकार ने उसे जिस काम के लिए भेजा है, उसे पूरा करना उसकी सिर्फ जिम्मेदारी ही नहीं, वह उसका पहला और आखरी फर्ज भी है। गौतम की यह देशभक्ति की भावना उसके व्यक्तित्त्व की सबसे खास विशेषता है।

- **पर्यावरणवादी व्यक्तित्त्व :-**

प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति आसक्तिभाव रखने वाले गौतम का व्यक्तित्त्व मूलत: पर्यावरणवादी है। उसके मन में प्रकृति के प्रति बड़ा ही आकर्षण है। इसीलिए वह सुमेरगढ़ आने के बाद नीली झील के किनारे घटों बैठकर वहाँ के सौंदर्य का आनंद लेता है। चारों ओर फैली हरी-भरी पहाडियाँ, नीली झील के आस-पास मंडराते, रंग-बिरंगे पंछी उसके आकर्षण का केंद्र है। इसीलिए वह प्राचीन इमारतों के समान नीली झील को भी एक मूल्यवान धरोहर समझता है। नीली झील पर आने वाले देश-विदेश के परिदें उसकी दृष्टि से मूल्यवान धरोहर हैं। साथ ही साथ इस प्राकृतिक सौंदर्य का रक्षण करने वाली अरण्य संस्कृति उसकी दृष्टि से सबसे अधिक मूल्यवान है। उसकी रक्षा करना वह अपना कर्तव्य समझता है। मौन पत्थरों का संगीत सुनने वाला गौतम जानता है कि इस प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट करने की कोशिश चारों ओर से हो रही है, यहाँ सुदूर देश से आए पंछियों की शिकार हो रही है। उनका व्यापार चल रहा है। यह कारोबार पर्यावरण को नष्ट करने वाला है। पर्यावरण की रक्षा के लिए आखिर वह अपने मृत माता-पिता की सारी जमा-पूँजी सुमेरगढ़ नगर परिषद में जमा करके नीली झील खरीद लेता है। मां का गरीब यात्रियों के लिए धर्मशाला बनाने का

सपना पंछियों की धर्मशाला बनवाकर पूरा करता है और एक सच्चे पर्यावरणवादी के समान वहाँ बोर्ड लगाता है कि यहाँ शिकार करना मना है। गौतम द्‌वारा किए गए ये सारे प्रयत्न उसके पर्यावरणवादी व्यक्तित्त्व की ही पहचान कराते हैं।

ऊपर लिखित प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं के अतिरिक्त आलोच्य उपन्यास का नायक गौतम के चरित्र में कुछ ऐसी भी विशेषताएँ विद्यमान हैं, जिन्हें आमतौर पर सभी सद्‌चरित्रों में देखा जाता है। गौतम के व्यक्तित्व में स्थाई रूप में रही उन विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु स्वयं कमलेश्वर ने एक स्थान पर लिखा है कि ''गौतम स्वस्थ, सुशील, शिक्षित और सुदर्शन ही नहीं था, उसके भीतर से जैसे पूरी सभ्यता बोलती थी। उसमें नगर संस्कृति का नागरिक भी था और अरण्य संस्कृति का प्रकृति प्रेमी भी। उसे मानव और पशु-पक्षी में कोई भेद दिखाई नहीं देता था। इससे भी बढ़कर उसे उन मूक पाषाणों से भी उतना ही लगाव और स्नेह था, जीतना जीवन धारियों से।'' गौतम के व्यक्तित्त्व में रही ये सारी विशेषताएँ उसे केवल 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास का नायक ही नहीं, तो एक यादगार चरित्र बनाकर पाठकों के सामने खड़ा करती है। शायद यही कारण है कि उपन्यास पढ़ने के बाद पाठकों के दिलों दिमाग पर गौतम की छवी कायम रहती है।

2. समीरा :-

समीरा सुमेरगढ़ की राजकुमारी और विवेच्च उपन्यास की नायिका है। इस उपन्यास में यही एक ऐसा चरित्र है, जिसे कथानक के साथ-साथ प्रारंभ से अंत तक बढ़ती उम्र और बदलते व्यक्तित्त्व की चारित्रिक विशेषताओं के साथ साकार किया है। वैसे तो समीरा सुमेरगढ़ की राजकुमारी नहीं है। असल में वह सुमेरगढ़ के महाराज सुरेंद्रसिंह और महारानी राजलक्ष्मी की पोती है। महाराज सुरेंद्रसिंह की इकलौती बेटी विजयलक्ष्मी की वह बेटी है। राजकुमारी विजयलक्ष्मी के जन्म के बाद महारानी राजलक्ष्मी ने किसी संतान को जन्म नहीं दिया था। राजकुमारी विजयलक्ष्मी की शादी कुंवर नरेंद्रसिंह से हुई थी। समीरा उन्हीं की बेटी है। विजयलक्ष्मी ने भी समीरा के बाद किसी दूसरी संतान को जन्म नहीं दिया था। सुमेरगढ़ की महारानी राजलक्ष्मी जो समीरा की नानी है, उसने कुछ ही महीने की बच्ची समीरा को अपने यहाँ लाया था। तब से समीरा का लालन-पालन नानी माँ और नाना जी महाराज की देखरेख में हो रहा था। समीरा उनकी इकलौती पोती होने के नाते तथा समीरा के सिवा दूसरा कोई वारिस न होने से उसे ही सुमेरगढ़ की राजकुमारी माना जाता था। समीरा का चरित्र उपन्यास में वर्णित कथानक की गतिशीलता के अनुरूप विकसित हुआ दिखाई देता है। उसकी बढ़ति उम्र और बदलते व्यक्तित्त्व की चारित्रिक विशेषताएँ कुछ इस प्रकार स्पष्ट की जा सकती हैं -

- **छोटी समीरा :-**

विवेच्च उपन्यास के प्रथम चरण में समीरा एक छोटी बच्ची के रूप में चितारी गई है। उसका लालन-पालन नानी माँ की देख-रेख में हो रहा था। सुमेरगढ़ की हवेलीनुमा गढ़ी में वह अपनी सहेली दिव्या के साथ दिन-भर धमा-चौकडी मचाती रहती थी। पढ़ने के सिवा वह कभी आराम से बैठती ही नहीं थी। दिन में कई बार वह अपनी सहेली को साथ लेकर नीली झील के चक्कर लगाती रहती थी। वह अपनी नानी माँ को नीली झील पर आए देश-विदेश के पंछियों का वर्णन सुनाती थी, जिसे उसने दिन-भर में देखा था। उन

पंछियों का एक साथ चहचहाना उसे एक साथ बजने वाला ऑर्केस्ट्रा लगता था। उन तरह-तरह के पंछियों की अलग-अलग आवाजें छोटी समीरा को बड़ी पसंद आती थीं। उन अनोखे पंछियों को देखकर वह झूम उठती थी और खुद उन पंछियों के साथ नीली झील के किसी छतरी में रहने की कल्पना करती थी। दिन भर की धमा-चकौडी से जब उसे नींद नहीं आती, तो वह अपनी नानी को कहानी सुनाने के लिए जिद् करती थी। एक बार नानी माँ द्वारा सुनाई गई राजकुमार और सुंदर राजकुमारी की कहानी उसे अनोखी और अजीब-सी लगी थी। कहानी की राजकुमारी पंछियों का मांस खाती थी, उसकी जान बरगद के पेड़ पर रखे पिंजरे में कैद तोते में थी, उस तोते की गर्दन मरोडने पर राजकुमारी की मौत हुई थी। नानी माँ की इस कहानी ने समीरा के मन में तरह-तरह के सवाल पैदा किए थे, जिसके जवाब वह एक चौकस बालक की भाँति नानी माँ से पूछना चाहती थी। नानी माँ की देखरेख में पलने वाली इस छोटी सी बच्ची में नानी माँ के ही सारे सद् विचार संस्कार स्वरूप उतरे थे। छोटी होकर भी उसे घर के अच्छे-बुरे वातावरण का सही ज्ञान रहता था। जब कभी नाना महाराज शिकार खेलने जाते थे, तो वापस आने के बाद घर का वातावरण कई-दिनों तक अच्छा नहीं रहता था, इस बात को वह समझती थी। नानी माँ द्वारा सँभाले काकातुओं के जोड़ी की हत्या नाना महाराज के हाथों हुई थी। इस हादसे का सबसे गहरा प्रभाव छोटी समीरा पर पड़ा था। काकातुओं के हत्याकांड के बाद अक्सर बीमार रहने वाली अपनी नानी माँ को उसने संवारने का भी प्रयत्न किया था; किंतु वह जान गई थी कि कहानी की राजकुमारी के समान नानी माँ की जान अपने काकातुओं की जोड़ी में बसी थी। नानी माँ के समान समीरा के मन में अपने नाना महाराज के प्रति भी आदर भाव था। वह जानती थी कि जब भी नाना महाराज जमीन के मुआवजे का मामला हारते थे, वे अपने मित्रों के साथ शिकार खेलने जाते थे। जब भी ऐसी स्थिति निर्माण होती थी, छोटी समीरा का मन आशंकाओं से भारी हो जाता था। नानी माँ के देहांत के बाद वह नाना महाराज की परेशानियों को लेकर परेशान रहती थी। उसकी शिक्षा दिव्या के पिता पंडित दीनानाथ के यहाँ हो रही थी। नानी माँ के देहांत के बाद छोटी समीरा की दिव्या ही एक मात्र सहेली रही थी। इस प्रकार उपन्यास के प्रथम चरण में समीरा बाल-सुलभ, चौकस व्यक्तित्त्व वाली एक छोटी बच्ची थी, उसके मन में बड़ों के प्रति आदर-भाव तथा आस-पास के प्राकृतिक परिवेश के प्रति आकर्षण था।

- **पशु-पक्षियों से लगाव :-**

समीरा के मन में बचपन से ही पशु-पक्षियों के प्रति लगाव था। अपने इसी लगाव के कारण वह दिव्या के साथ नीली झील के कई चक्कर लगाती थीं। बढ़ती उम्र के साथ नीली झील पर मंडराने वाले देश-विदेश के रंग-बिरंगे, भाँति-भाँति के पंछियों के प्रति उसका आकर्षण और लगाव बढ़ता ही रहा था। नानी माँ की देख-रेख में इन पशु-पक्षियों की रक्षा करने के संस्कार उस पर हुए थे, जिसके दर्शन आगे बार-बार होते हैं। नानी माँ के देहांत के बाद अपनी सहेली दिव्या के अतिरिक्त नीली झील और वहाँ आने वाले पशु-पक्षी ही उसके साथी थे। गौतम और उसके बीच निर्माण हुए अनोखे रिश्ते का मूल आधार यही पशु-पक्षियों के प्रति लगाव था। दिव्या द्वारा आत्महत्या का भ्रम निर्माण करके वहाँ से जाने के बाद अकेली पड़ी समीरा इन्हीं पशु-पक्षियों के प्रति रहे लगाव के कारण साँझ-सवेरे नीली झील के किनारे आकर घंटों बैठती थी। समीरा

को इन पक्षियों से जितना प्यार था, पक्षी भी उससे उतना ही प्यार करते थे। वे उसके पास निर्भिक होकर चले आते थे। उसका इन मासूम पक्षी-पखेरूओं के प्रति रहा लगाव और प्यार दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया था। वह हमेशा बीमार पशु-पक्षियों पर उपचार करती थी। अगर कोई बहेलिया या शिकारी इन पंछियों की शिकार करते हुए नजर आता, तो समीरा उसे भगा देती थी। उन्हें नीली झील के आस-पास फटकने भी नहीं देती थी।

सुमेरगढ़ में पिता महाराज नरेंद्रसिंह द्वारा चिड़ियों का शुरू किया ट्रान्सपोर्ट का व्यापार जब समीरा के सामने खुलता है, तो वह उन पंछियों को पिंजरों से आजाद करती है। पिता द्वारा मारने और गुस्सा करने पर वह उन्हें चिड़ीमारों से भी गए गुजरे हत्यारे कहती है। वह तो पंछियों को कुदरत की संतान मानती है और उनकी रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझती है। उसका यह मानना है कि 'जब हम किसी को प्राण दे नहीं सकते, तो उसके प्राण को छिनने का अधिकार हमें किसने दिया है।' इसी एक सूत्र पर समीरा के पूरे जीवन का संकल्प निर्भर है। अपने इस संकल्प की पूर्तता के लिए वह हमेशा तत्पर रहती है। पशु-पक्षियों की जान बचाने के अपने इस अनोखे संकल्प के कारण ही उसने एक बार एक्सपोर्ट के लिए अपने पिता द्वारा कैद किए गए पाच सौ खरगोशों को आजाद करके नीली झील की झाड़ियों में छोड़ दिया था। उसके इस व्यवहार से ऐसा लगता है कि नीली झील पर बसेरा करने वाले पंछियों के समान संसार के संपूर्ण प्राणियों के लिए समीरा के मन में एक अनोखी लगन है। इसी लगन के कारण उसने एक बार बहेलिए द्वारा बिछाए गए जाल पर उतरने वाले पंछियों को बंदूक की फायर की आवाज करके सजग किया था, जिससे कई पंछियों की जान बचाने में वह सफल हुई थी। शादी के ढाई साल बाद अपना पति भी चिडियों को मारकर उनका मांस एक्सपोर्ट करता है, जिंदा पशु-पक्षियों को बेचता है, साथ ही साथ टेनरी का अवैध व्यवसाय भी करता है, इस बात को जब वह स्वयं देखती है, तो वह पति को छोड़कर मायके चली आती है। अपना संसार बचाने के लिए पति के साथ समझौता करने के बजाय वह पशु-पक्षियों की जान बचाना अधिक जरूरी समझती है। समीरा पशु-पक्षियों को आज़ाद होकर, मुक्त बनकर, निर्भय होकर जीते हुए देखना चाहती है, जो असल में उनका प्राकृतिक जीवन है। पशु-पक्षियों के इसी प्राकृतिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिए उसे अपने नाना जी, पिता जी और अंत में पति के साथ भी संघर्ष करना पड़ता है। मानो वह पशु-पक्षियों के लिए प्राकृतिक अधिकार की लड़ाई लडती है। विवेच्च उपन्यास की नायिका समीरा के चरित्र की यह विशेषता उसे अधिक यादगार बनाती है।

- **संस्कारशील युवती :-**

समीरा एक संस्कारशील युवती है। नानी माँ की देखरेख में पली समीरा राजघरानों के संस्कारों में बढ़ रही थी। उसके मन में नाना महाराज, नानी माँ, माता-पिता और अध्यापक के प्रति श्रद्धा भाव था। 'जब हम किसी को प्राण दे नहीं सकते, तो उसके प्राण को छिनने का अधिकार हमें किसने दिया' जैसे आदर्श और मौलिक विचारों के संस्कार उसे अपनी नानी माँ द्वारा विरासत में मिले थे। बडो का सम्मान रखना, हम उम्र वालों के साथ मित्रतापूर्ण भाव रखना, उसके संस्कारशील युवती होने के ही प्रमाण हैं। परिवार में निर्माण हुई भयंकर स्थिति को वह अपने संस्कारशील व्यक्तित्त्व के कारण ही संवारने का प्रयत्न करती है।

गौतम का स्पर्श उसे बेचैन करता है, मगर इसी संस्कारी व्यक्तित्त्व के कारण वह अपने मन में निर्माण हुई भावनाओं को न बढ़ावा देती है, न उसे कभी प्रकट करती है। पशु-पक्षियों के प्रति लगन, उनकी रक्षा के लिए किए गए प्रयत्न, संघर्ष आदि बातें समीरा के संस्कारशील व्यक्तित्त्व को अधिक उजागर करती है। राजघरानों द्वारा परंपरा से चले आए संस्कारों का पालन भी समीरा एक सुशील राजकुमारी के रूप में करती है। इसीलिए वह बड़ो की पसंद और इच्छानुसार राजकुमार जयसिंह के साथ बिना कुछ पूछताछ किए शादी कर चुपचाप अपने ससुराल चली जाती है। वैसे तो समीरा का पात्र आलोच्य उपन्यास में एक पोती, एक सहेली, एक सखी, एक पत्नी और एक माँ आदि विविध रूपों में चित्रित विकसनशील चरित्र है; किंतु इन विविध रूपों में समीरा एक संस्कारशील युवती होने का प्रमाण देती है। उसके चरित्र की यह एक खास विशेषता है।

- **गौतम से अनोखा रिश्ता :-**

विवेच्य उपन्यास की नायिका समीरा का गौतम के साथ अनोखा रिश्ता है। गौतम के साथ उसकी पहचान के बाद वे दोनों हमेशा नीली झील के किनारे घंटों तक बैठकर गप-शप करते रहते थे। नीली झील पर मंडराने वाले रंग-बिरंगे पक्षी उन दोनों के आकर्षण का कारण था। दोनों भी पशु-पक्षियों की जीव-रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। प्राकृतिक सौंदर्य की रक्षा करना दोनों भी अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे। उन दोनों के बीच रहा अनोखा रिश्ता इन्हीं वैचारिक एकता के कारण विकसित हुआ था। वैसे तो समीरा का नाक-नक्शा हू-ब-हू गौतम की मृत प्रेमिका दीपाली के साथ मिलता था। इस बात को वह समीरा के सामने प्रकट भी करता है; मगर गौतम की इस बात का उस पर कतई परिणाम नहीं होता। फिर भी उनके बीच एक ऐसा रिश्ता है, जो आहों, आँसुओं और एक-दूसरे के लिए तडपने वाले क्षणों का रिश्ता नहीं है। अर्थात उसे प्यार जैसे मामूली शब्दों से समझा नहीं जा सकता। इसी अनोखे रिश्ते की बदौलत गौतम समीरा को अपने लिए छाया देने वाला वृक्ष समझता है, तो दूसरी ओर समीरा भी गौतम द्वारा अनायास किए गए स्पर्श को बार-बार महसूस करती है। उनके बीच का यह बेनाम रिश्ता मानो अनोखा ही है, जिसे समीरा अंत तक बड़ी प्रामाणिकता से निभाती है।

- **गलत-फहमी का शिकार :-**

समीरा अपने पारिवारिक जीवन में गलत-फहमी की सबसे बड़ी शिकार है। वैसे तो गौतम के साथ उसका रिश्ता प्रेम से बढ़कर है; फिर भी उन दोनों का नाम एक-दूसरे से जोड़ा जाता है। नीली झील के किनारे बैठने वाले समीरा और गौतम की चर्चा उसके परिवार के साथ-साथ सगे-संबंधियों में भी चलती है। किंतु असल में उन दोनों के बीच न प्यार था, न उनके नाजायज संबंध थे। फिर भी उनके बीच रहे भावनात्मक, वैचारिक अनोखे रिश्ते को लेकर गलत-फहमी का वातावरण चारों ओर निर्माण किया जाता है। शादी के ढ़ेड साल बाद जब समीरा अपने बेटे को लेकर अपने पारिवारिक एवं व्यक्तिगत कारण से वापस सुमेरगढ़ आती है, तो उसकी वापसी का कारण 'गौतम के साथ उसका प्रेम संबंध' बताया जाता है। समीरा के पति जयसिंह के साथ समीरा के माता-पिता भी यहीं मानते कि गौतम के साथ रहे संबंधों के कारण ही

समीरा ससुराल छोडकर वापस मायके चली आई है। अपनी ओर से समीरा इस गलत फहमी को निकालने की कोशिश करती है। वह बताती है कि उसकी जिंदगी में कोई पुरानी परछाई नहीं है, कोई स्पर्श, स्मृति की कोई छाया या कोई निशान मौजूद नहीं है। फिर भी उस पर कोई विश्वास नहीं रखता। बँधी-बँधाई परम्परा की सोच पर विश्वास रखकर उसके चारों ओर गलत-फहमी का कोहरा निर्माण करने का प्रयत्न किया जाता है। शादी के बाद एक बच्चे की माँ बनी समीरा को गौतम से मिलने से रोका जाता है, उस पर पाबंदी लगाई जाती है। अखिर इसी गलत-फहमी के कारण पति जयसिंह द्वारा समीरा की हत्या होती है। इस प्रकार गलत-फहमी का शिकार हुई समीरा की चारित्रिक विशेषताओं में से यह एक अत्यंत दर्दभरी करूणमय विशेषता है।

- **विद्रोही पत्नी :-**

समीरा के चरित्र की यह सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वह एक विद्रोही पत्नी है। शादी के बाद रतनपुर की महारानी और राजकुमार जयसिंह की पत्नी बनी समीरा का व्यक्तित्त्व अधिक प्रभावात्मक रूप में प्रस्तुत हुआ है। शादी के ढ़ेड वर्ष के बीच वह एक पुत्र की माँ बनी थी। किंतु ढ़ेड वर्ष के बाद जब वह स्वयं देखती है कि उसका पति टेनरी का धंधा करता है, जिंदा-मुर्दा पक्षियों को विदेश में एक्सपोर्ट करता है, पशु-पक्षियों का डिब्बाबंद गोश्त विदेश भेजता है, तो उसके पक्षी-प्रेमी ह्रदय को बहुत बड़ी ठेंस पहुँचती है। इतने दिनों तक उसे अपने पति द्वारा किए जाने वाले इस अवैध कारोबार की तनिक भी जानकारी नहीं थी। किंतु जब पक्षियों की जान लेने वाले अपने ही पति के अवैध धंधे का राज उसके सामने खुलता है, तब वह चुपचाप बैठने के बजाय अपने पति के विरोध में व्यक्तिगत स्तर पर बगावत करती है। वह अपने पति को स्पष्ट रूप से समझा देती है, कि अगर आप जिंदगी भर मेरे साथ रहना चाहते हैं, तो यह धंधा आपको बंद करना पड़ेगा। समीरा का यह रूप एक विद्रोही पत्नी का है। पति को बार बार समझाने पर भी जब वह अपना चिड़िमार का धंधा बंद करना नहीं चाहता, तब समीरा अपने छोटे बच्चे विक्रम को लेकर मायके चली आती है। उसका यह विद्रोही फैसला पति सहित मायके वालों को भी अच्छा नहीं लगता, मगर समीरा खुद अपनी आत्मा के तहत लिए इस फैसले से कदम पीछे हटाना नहीं चाहती थी। आगे सुमेरगढ़ में आकर जब समीरा का पति उसे समझाने की कोशिश करता है, तब वह उसे अपना आखरी फैसला सुनाती है। जिससे यही स्पष्ट होता है कि वह मर सकती है, मगर पति के अवैध धंधे के साथ किसी भी तरह का समझौता नहीं कर सकती है। समीरा के ये विचार उसके विद्रोही व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालते हैं।

ऊपर लिखित प्रमुख चरित्रगत विशेषताओं के अतिरिक्त समीरा के चरित्र में कुछ ऐसे भी सद्‌गुण हैं, जो उसकी चारित्रिक प्रतिभा को अधिक उजागर करते हैं। जैसे वह एक सुशील लड़की है। वह एक पढ़ी लिखी लड़की है। ईश्वर के प्रति श्रद्‌धा रखकर भी प्रकृति को रहस्य मानने वाली है। उसका निजी स्वभाव सर्वसमावेशक रहा है। इसके अतिरिक्त वह एक संवेदनशील, दयावान, करूणामयी, ध्येयवादी, संकल्पवादी, गौतम के समान पर्यावरणवादी शीलवान, बहुआयामी सद्‌गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्त्व वाली नायिका है। उसके प्रभावशाली व्यक्तित्त्व की खासियत को स्पष्ट करने हेतु स्वयं उपन्यासकार ने एक स्थान पर लिखा है कि ''समीरा सुंदर, सुशिक्षित, और सुशील तो थी ही, उसकी आंतरिक करूणा और सुंदरता ने उसके चेहरे पर

एक ऐसा सौन्दर्य, एक ऐसा आकर्षण और ओज पैदा कर दिया था कि जो भी उसे देखता था उसके प्रति सहज ही आकर्षित हो जाता था।'' (पृ. 80)

3. दिव्या (दीपशिखा):-

दिव्या इस उपन्यास की सह-नायिका है। वह पंडित दीनानाथ की इकलौती बेटी और समीरा की बचपन की सहेली है। इनके बीच रही दोस्ती बढ़ती उम्र के साथ बढ़ती ही है। चौबीस घंटों में से अठारह घंटे दोनों एक दूसरे के साथ रहकर राजमहल से नीली झील तक धमा चौकड़ी मचाती रहती हैं। नानी माँ, नाना महाराज दोनों दिव्या के साथ भी समीरा के समान पोती जैसा ही व्यवहार करते हैं। बचपन में वह भी नानी माँ द्वारा कहीं कहानियाँ सुनती थी। युवती बनी दिव्या संगीत विद्यालय में अध्ययन कर रही थी। एक रोज दिल्ली से सुमेरगढ़ आए पुरातत्त्व विभाग के अफसर गौतम से गेस्ट हाऊस का रास्ता पूछने के बहाने उसकी मुलाकात होती है। कुछ ही पल की इस पहली मुलाकात में दिव्या के मन में अपरिचित गौतम के प्रति आकर्षण पैदा होता है। उस रोज के बाद संगीत विद्यालय में आते-जाते समय कभी वह गौतम की गाडी को तलाशती है, तो कभी गौतम को। किंतु कई दिनों तक न उसे गाडी नजर आती है, न वह अपरिचित युवक-गौतम।

एक रोज सांझ ढ़लते समय नीली झील पर मछली पकड़ने वाले को डांटने के लिए दिव्या ने गुस्से से चीखकर आवाज दी, उसने देखा वह मछली पकड़ने वाला नहीं था। वह युवक गौतम था, जिसे वह पिछले कुछ दिनों से तलाश रही थी। अपनी चाहत को इस प्रकार अचानक देखकर दिव्या हड़बड़ा जाती है। मगर बाद में खुद को संभालती हुई उससे अपना परिचय कराती है। उस रोज से दिव्या और गौतम के बीच अच्छी दोस्ती निर्माण हुई। दोनों अक्सर नीली झील के किनारे बैठकर प्राकृतिक सौंदर्य, वहाँ पर आने वाले पशु-पंछी, गौतम के निजी काम से संबंधित विविध इमारतों का महत्त्व आदि विविध विषयों पर घंटों तक गप-शप करते थे। वैसे तो दिव्या के मन में गौतम के प्रति पहली ही मुलाकात में प्यार का अंकुर फुटा था। परिणामत: दिव्या अपना अधिकाधिक समय गौतम के साथ बिताने का प्रयास करती थी। दूसरी ओर गौतम अविवाहित है, इस बात को जानने के बाद दिव्या के पिता दीनानाथ जी ने भी उसे पूरी-पूरी छूट दे रखी थी। दिव्या ने ही अपने पिता के माध्यम से गौतम के रहने के लिए एक छोटी-सी हवेली का इंतजाम किया था। दोनों के बीच की बढ़ती मुलाकातों में गौतम की उपस्थिति धीरे-धीरे दिव्या के लिए कुछ अर्थ रखने लगी थी। दिव्या के मन में गौतम के प्रति रहा आकर्षण तथा प्यार, विश्वास और अधिकार में बदलने लगा। उसके मन में उपजी प्रेम की भावना गौतम के प्रति अधिक तीव्र बन गई थी।

किंतु इस बात से पूरी तरह अनजान रहा गौतम जब उसकी पहचान समीरा से होती है, तो वह दिव्या से अधिक वक्त समीरा के साथ गुजारने लगता है। हमेशा घुल-मिलकर बात करने वाले गौतम और समीरा के बीच बढ़ने वाले स्नेह-संबंधों को देखकर दिव्या के मन में नारी सुलभ ईर्ष्या भाव निर्माण होता है। वह मन ही मन अनजाने में ही ऐसा महसूस करने लगती है कि उसकी अपनी बचपन की सहेली समीरा ही उसका स्थान ले रही है। साथ ही साथ उसे ऐसा भी लगने लगता है कि अब गौतम भी उसकी उपेक्षा करने

लगा है। जिस गौतम को उसने अपनी ओर से जी जानसे प्यार किया था, उसी गौतम का समीरा से मिलना, उसके साथ घूमना-फिरना, गप-शप लड़ाना दिव्या को सहन नहीं होता। गौतम और समीरा के बीच की यह बढ़ती मित्रता दिव्या के मन को गहरी ठेंस पहुँचाती है। उसका मन तरह-तरह की बातें सोचता है और इसी विचित्र मन: स्थिति में वह गौतम और समीरा की बीच होने वाली बातें सुनने के लिए हर रोज नीली झील पर एक पत्थर के पिछे छिपकर बैठती है। गौतम के प्रति उसका प्यार और विश्वास तब आखरी बार टूट जाता है, जब वह गौतम को समीरा से यह कहते सुनती है कि उसके नाक-नक्शा हू-ब-हू उसकी पूर्व प्रेमिका दीपाली से मिलते-जुलते हैं। गौतम द्वारा कहीं गई यह बात दिव्या के मन में उसके प्रति निर्माण हुए एकतर्फा प्रेम-भाव को पूरी तरह से चकना-चूर कर देती है। मानो गौतम के साथ उसने अपने जीवन के जो सुनहरे सपने देखे थे, गौतम की इस अनपेक्षित बात से, व्यवहार से एक ही झटके में तार-तार कर दिए थे। उसे अपना सारा जीवन उदास और निराशा से भरा हुआ लगने लगा था। इस एकतर्फा सोच-विचार ने उसकी मन:स्थिति विचित्र-सी हो गई थी। इसी मन:स्थिति में वह रात के अंधेरे में नीली झील के किनारे एक पत्थर के पास अपनी शॉल, चप्पलें और पर्स रखकर आत्महत्या का भ्रम निर्माण करके सुमेरगढ़ से गायब हो जाती है।

उसके द्वारा रचाया गया आत्महत्या का यह भ्रम सब को असली आत्महत्या ही लगती है। मगर दिव्या की आत्महत्या का कारण बहुत बार सोचने पर भी न गौतम की समझ में आता है न समीरा के; केवल दिव्या के पिता मास्टर दीनानाथ इस बात पर विश्वास नहीं रखते। उनके मतानुसार दिव्या उन लड़कियों में से नहीं है, जो आत्महत्या जैसा कदम उठा लेती हैं। वे मानते थे कि दिव्या ने आत्महत्या नहीं की है, वह कहीं दूर चली गई है, बहुत दूर। पिता दीनानाथ का यह आंतरिक विश्वास तब सच साबित होता है, जब दिव्या रतनपुर में समीरा के पुत्र जन्मोत्सव पर दीपशिखा नाम से एक भजन-गायिका के रूप में उपस्थित रहकर राधा-कृष्ण का भजन गाती है। समीरा और पंड़ित दीनानाथ उसके सुरीले आवाज के कारण दिव्या को पहचान लेते हैं; मगर यहाँ पर भी अपनी पहचान छिपाने हेतु उनसे बिना मिले ही वह चली जाती है। किंतु आखिर पिता दीनानाथ का विश्वास उसे ढूँढ ही निकालता है। तब यह बात स्पष्ट होती है कि दिव्या ने अपने जीवन में जो चाहा था, उसे वह नहीं मिल सका। परिणामत: इसकी पूर्ति उसने अपने अंतरतम की उर्जा से की थी, वह एकांत चाहती थी। इसीलिए उसने आत्मनिषेध किया था और कोई उसकी तलाश न करें, इसलिए आत्महत्या का भ्रम रचा था। आत्महत्या का भ्रम रचने के बाद उसने अपना नाम दीपशिखा रखकर मीराँ की तरह सन्यास लेकर अपना सारा जीवन साकार ब्रह्म को समर्पित कर दिया था। परम बह्म के प्रति अपना सारा जीवन समर्पित कर चुकी दिव्या अलग-अलग शहरों, तीर्थक्षेत्रों में अपनी भजन मंडली के साथ भजन गाती भटकती है, यही दिव्या के जीवन की सच्चाई है।

इस प्रकार दिव्या प्रस्तुत उपन्यास की सह-नायिका और प्रमुख स्त्री चरित्र है। वह एक सीधी-साधी, सच्चरित्र लड़की है। वह अपने पिता की इकलौती बेटी थी। सुमेरगढ़ में रहने वाले सभी उसे बेहद प्यार करते थे; क्योंकि वह सुंदर, सुशील और सर्वगुण सम्पन्न थी। लेखक के शब्दों में - ''दिव्या बहुत ही सीधी साधी और मिलन सार लड़की थी। हर एक के लिए उसके मन में सम्मान और स्नेह की भावना कूट-कूट कर भरी

थी। उसे जितना प्यार मनुष्यों से था, उतना ही प्यार उसे संगीत से था। निश्चय ही वह बड़ी होनहार लड़की थी।'' (पृ. 55)

4. महारानी राजलक्ष्मी (नानी माँ) :–

समीरा की नानी माँ महारानी राजलक्ष्मी आलोच्य उपन्यास की वैसे तो गौण स्त्री पात्र है, किन्तु उनके पर्यावरणवादी विचारों का ही पूरे कथानक पर प्रभाव पड़ा हुआ दिखाई देता है। पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रही महारानी राजलक्ष्मी की देखरेख में समीरा के आचार–विचारों का विकास हुआ था। समीरा के मन में पशु–पक्षियों के प्रति अहिंसा का भाव तथा उनके प्राकृतिक अधिकार की लड़ाई का विचार उसे इसी नानी माँ से विरासत में मिला था। अपने जीवन में महारानी राजलक्ष्मी ने राज परिवार के पुरूषों द्वारा अत्यंत निर्दयता से शिकार में मारे गए पशु–पक्षियों की बेजान लाशों का भयानक दृश्य कई बार देखा था। जब जब वह ऐसा दृश्य देखती थी, उसके मन में उन असहाय पशु–पक्षियों के प्रति करूणा और दया भाव निर्माण होता था। उस बीभत्स दृश्य को देखकर उसका सिर चकरा जाता था और वह ईश्वर से प्रार्थना करती थी, कि इन असाह्य पशु–पक्षियों को भी अपनी जान बचाने के लिए शक्ति दें।

महारानी राजलक्ष्मी के मन में पशु–पक्षियों के प्रति रहा अहिंसात्मक करूण भाव उसके चरित्र की स्थाई विशेषता है; जिसे वह अपनी पोती समीरा में भी संक्रमित करती है। समीरा पर पर्यावरण की रक्षा के संस्कार करने वाली, साथ ही साथ पशु–पक्षियों के प्रति ममता भाव रखने वाली महारानी राजलक्ष्मी आगे चलकर अपने पति पर शिकार जैसा भयंकर हिंसात्मक खेल न खेलने के लिए दबाव डालती है। उसके द्वारा संभाले गए काकातुओं का हत्याकांड पति के हाथों से होने पर वह जितना व्याकुल होती है, उससे अधिक वह अपने पति के साथ कठोर व्यवहार करती है। वह नहीं चाहती कि नीली झील के आस पास कोई पशु–पक्षियों की शिकार करें, अपने पति को भी वह सुमेरगढ़ के इलाके में शिकार न करने की सलाह देती है। अपने काकातुओं का भयंकर हत्याकांड होने के बाद वह अक्सर बीमार रहने लगती है, मानो उसके प्राण उन काकातुओं की जोड़ी में ही बसे थे। आखिर इसी बीमारी में उनका देहांत हो जाता है।

महारानी राजलक्ष्मी की मृत्यु ने महाराज साहब को केवल व्याकुल ही नहीं किया था, तो उनमें रही शिकार खेलने की या किसी पशु–पक्षी की जान लेने की हिम्मत भी छिन ली थी। अपनी वाणी में अद्भुत शक्ति रखने वाली महारानी राजलक्ष्मी की छाया समीरा पर पड़ी थी। इस बात को महाराज साहब भी मानते थे। इस प्रकार पशु–पक्षियों की रक्षा के लिए अपनों से ही संघर्ष करने वाली तथा उस तरह की शिक्षा तथा आत्मविश्वास अपनी पोती समीरा में भरने वाली महारानी राजलक्ष्मी आलोच्य उपन्यास का गौण पात्र होकर भी, अपने अहिंसा, करूणा, दयाशील स्वभाव के कारण अत्यंत प्रभावात्मक चरित्र लगता है। पशु–पक्षियों की रक्षा करने के लिए आक्रमक, संघर्षशील, आत्मबलिदानी वृत्ति को प्रमाणित करने वाली सहृदयी, एक सजीव नारी चरित्र का वह परिचय देती है। महारानी राजलक्ष्मी का औपन्यासिक चरित्र इन्हीं विशेषताओं के कारण गौण होकर भी महत्त्वपूर्ण लगता है।

5. महाराज सुरेंन्द्र सिंह (नाना महाराज) :–

प्रस्तुत उपन्यास में महाराज सुरेंद्र सिंह सामंतशाही मानसिकता का प्रतिनिधित्त्व करने वाला एक महत्त्वपूर्ण किंतु गौण चरित्र है। वे महारानी राजलक्ष्मी के पति और समीरा के नाना जी हैं। सुमेरगढ़ की राजसत्ता और सम्पत्ति उन्हें पुरखों से मिली थी। किंतु इसी बीच भारत देश आजाद हुआ था और सारे देशी राजाओं की, राजघरानों का सत्तातंत्र तत्कालीन राजाओं ने भारत में विलीन होने के कागजात पर दस्तखत करके खत्म की थी। क्योंकि आजादी के बाद स्वतंत्र भारत ने संविधान के तहत लोकतंत्र राजसत्ता का स्वीकार किया था। सुमेरगढ़ उसी में से एक राज्य था, जिसके राजा सुरेंद्र सिंह थे। सत्ता परिवर्तन के इस बदलाव में भारतीय राजघरानों को अपने निरंकुश अधिकार नए संविधान के तहत लोकसतंत्र को समर्पित करने पड़े थे। देश में हुए इस बदलाव को आम लोगों ने बड़ी ही सहजता से स्वीकारा था किंतु राजघरानों के वारिस इसे स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थे। उनकी सामंती मानसिकता कायम थी।

महाराज सुरेंद्र सिंह उसी सामंतशाही विचारों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। उनका राजपाट चला गया था, सत्ता नष्ट हो चुकी थी, अपने प्रांत से आने वाली आमदनी बंद हो चुकी थी; मगर शान–शौकत से रहने की उनकी पुरानी आदत बदली नहीं थी। न उसे बदलने की उनकी मानसिकता थी। लगभग दो सौ सदियों की गुलामी के बाद देश आजाद हुआ था। सारे लोग जश्न मना रहे थे। किंतु अपने निरंकुश अधिकार छिने जाने का दु:ख सभी राजघरानों के समान सुमेरगढ़ के वारिस महाराज सुरेंद्र सिंह को भी था। उनका राजमुकुट भी प्रशासक सील लगी शाही खजाने की तिजोरी में बंद किया गया था। महाराज सुरेंद्र सिंह के मन का यह दु:ख उन्हें बेचैन करता था। दूसरी ओर शान–शौकत से रहने की उनकी आदत बदली नहीं थी। खर्चा कम करने के लिए उन्होंने नौकर–चाकर, दास–दासियों को निकाल दिया था। फिर भी शान–शौकत भरी अपनी परंपरागत राजसी आदतों का उनके द्वारा त्याग न होने से खर्चा दिन–ब–दिन बढ़ ही रहा था। वैसे तो अब पहले जैसी रौनक, शान–शौकत नहीं थी; परंतु पुराने दिनों की रौनक बरकरार रखने के लिए तरह–तरह के प्रयत्न इन राजघरानों के वारिसों द्वारा हो रहे थे। स्वयं महाराज सुरेंद्र सिंह ने भी तरह–तरह के व्यापार–धंदे शुरू किए थे; किंतु अपनी सामंती आराम पंसदी स्वभाव के कारण उन्हें किसी भी व्यापार या धंधे में सफलता नहीं मिली थी।

इसी बीच सरकार द्वारा पुरातत्त्व विभाग की ओर से एक जमाने में इन्हीं राजा–महाराजाओं के पुरखों ने जो इमारतें बनवाई थीं, जिनकी मरम्मत करना अब राजाओं के बस की बात नहीं थी, खंडहर बनती जा रही थीं। वे इमारतें देश की मूल्यवान धरोहर समझकर उनकी रक्षा करने हेतु सरकार द्वारा सर्वेक्षण शुरू हुआ था। उस सर्वेक्षण द्वारा हर राज्य की पुश्तैनी और गैर पुश्तैनी सम्पत्ति की सही रिपोर्ट सरकार को दी जाने वाली थी। गौतम द्वारा सुमेरगढ़ का सर्वेक्षण हो रहा था, जिससे महाराज सुरेंद्र सिंह बेचैन थे; क्योंकि वे जानते थे कि इस सर्वेक्षण के बाद उनका बहुत बड़ा नुकसान होने वाला है। इसलिए एक ओर वे अपने पूर्वजों की खंडहर बनती जा रही इमारतों, नीली झील, आदि सम्पत्ति को अपने अधिकार में रखने के लिए कोर्ट कचहरी में पुराने नक्शे, पुराने दस्तावेजों के जरिए अपनी खानदानी मिलकियत का पिटिशन वकीलों की सहायता से तैयार करवा रहे थे। तो दूसरी ओर सर्वेक्षण करनेवाले गौतम पर अपने दामाद तथा दीवान जी के

माध्यम से दबाव डालकर उनकी मर्जीनुसार रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु उन्हें दोनों तरफ से हार ही मिल रही थी। परिणामत: जब वे कोर्ट में हार जाते थे, अपने मित्रों के साथ और अधिक ऐय्याशी करते या शिकार पर जाकर यह दिखाने का प्रयास करते कि इस नुकसान का उन पर कोई असर नहीं पड़ा है। सुरेंद्र सिंह जी को चारों ओर से हार मिली थी।

आखिर उन्होंने दामाद और दीवान जी की जालसाजी के अनुरूप एक नायाब योजना द्वारा अपने पूर्वजों की सारी सम्पत्ति सुमेरगढ़ नगर परिषद को बेच दी। हांलाकि वे जानते हैं कि गौतम की रिपोर्ट के अनुसार वह सारी सम्पत्ति देश की मूल्यवान धरोहर थी, जिस पर कुछ ही दिनों के बाद सरकार का अधिकार होने वाला था। फिर भी वे ऐसा धोखाधडी का, बेइमानी का, घिनौना, गैरकानूनी काम करते हैं। उनके चरित्र का यह एक भयंकर रूप था, जिसके तहत वे एक राजा द्वारा किए जाने वाले सारे अवैध, गैरकानूनी, अमानुष, हिंसात्मक कार्य करते हैं। वे पशु-पक्षियों की हत्या करते हैं, अपने दामाद की मदद से उनका व्यापार करते हैं, यहाँ तक कि अपनी निजी परेशानियों के कारण वे महारानी द्वारा संभाले काकातुओं की भी हत्या करते हैं। उनका यह रूप सामंतशाही के उस राजा का है, जो लोकतंत्र प्रजातंत्र में पूरी तरह से हार चुकने के बाद भी अपनी हार स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। महाराज सुरेंद्र सिंह तो इस राजसी-सामंती मानसिकता और लोकसत्ता के बीच के टकराहट रूपी परिवर्तन को बड़ी गंभीरता से देख रहे थे। उनके अनुसार देश को आजादी तो मिली थी, मगर केवल उन लोगों को, जिनकी कोई गिनती नहीं थी, जिनकी कोई इज्जत नहीं थी; सामंती राजघरानों को नहीं। इसीलिए वे अपना सारा व्यवहार एक सामंती राजा के समान कर रहे थे।

महाराज सुरेंद्र सिंह के इस रूप के अतिरिक्त एक दूसरा और रूप भी था, जिसमें वे अपनी पोती समीरा के लिए हमेशा सजग रहते थे। महारानी और दिव्या के न रहने पर अकेली पड़ी समीरा के लिए वे अधिक चिंतित, उदास और परेशान रहते थे। इसी तरह महारानी की मौत के लिए वे खुद अपने आपको जिम्मेदार समझते हैं। अपने दामाद द्वारा समीरा पर हाथ उठाने के बाद वे व्याकुल होकर उसे दुबारा हाथ न लगाने की तथा उस पर गुस्सा न करने की सलाह देते हैं। साथ ही वे अपने दामाद को पशु-पक्षियों का व्यापार न करने के लिए अपनी ओर से सुझाव देते हैं। इस प्रकार सद्-असद्, हिंसा-अहिंसा, क्रूरता-ममता, कठोरता और सहृदता, हार और जीत, जैसे सम्मिश्र चारित्रिक विशेषताओं के दर्शन महाराज सुरेंद्र सिंह के चरित्र में होते हैं। मानो उनका चरित्र सम्मिश्र भावनाओं का प्रदर्शन करने वाला एक सामान्य किंतु सबसे सरस चरित्र है।

6. द्वारिकादास :-

विवेच्य उपन्यास में चित्रित द्वारिकादास आजादी के पहले और आजादी के बाद भी सुमेरगढ़ के दीवान जी हैं। देश में हुए सामाजिक और राजकीय परिवर्तन को उन्होंने गंभीरता से देखा है। आजादी के पहले सुमेरगढ़ के राजदरबार में दीवान जी का काम करते समय उन्होंने यहाँ के नगरवासियों पर अधिकार जताए थे। उस समय पूरे सुमेरगढ़वासियों में से किसी के पास इतनी हिंम्मत नहीं थी, कि कोई उनकी बात न

माने या उनके सामने ऊँची आवाज में बोलें। फिर भी अगर कोई ऐसी हरकत करता, तो उसकी लाश सुमेरगढ़ के किसी गड्ढे में पडी मिलती। मगर आजादी के बाद ऐसी स्थिति नहीं रही। आम लोगों को मिली इस आजादी ने सामंती मानसिकता वाले राजघरानों से संबंधित लोगों को हिलाकर रख दिया था। सुमेरगढ़ के दीवान जी द्वारिकादास उन्हीं में से एक थे। उनके सामंती अधिकारों को छिने जाने का उन्हें अधिक दुख था। साथ ही साथ उन्हें चिंता थी राजमहल के आमदनी की। क्योंकि महल में केवल खर्च ही हो रहा था, आमदनी कुछ भी नहीं थी।

राजमहल की आमदनी बढ़ाने के लिए दीवान जी के नाते उन्होंने महाराज साहब को तरह-तरह के उपाय भी बताए थे। सरकारी कार्यालयों के लिए खाली पड़ी हवेलियाँ किराए पर देने का सुझाव उन्होंने ही महाराज के सामने रखा था, जिसे महाराज ने स्वीकारा नहीं था। दूसरी ओर वे परेशान थे, सुमेरगढ़ की पुश्तैनी और गैरपुश्तैनी जमीन-जायदाद, खंडहर, इमारतों जैसी सम्पत्ति को लेकर। प्रारंभ से ही दीवान जी का काम करने से उन्हें सुमेरगढ़ के राजवंशों द्वारा निर्माण की गई जायदाद की जानकारी महाराज सुरेंद्र सिंह से अधिक थी। वे जानते थे कि इस पुश्तैनी इमारतों, खंडहरों, हजारों एकड़ जमीन पर महाराज का अधिकार नहीं है, उनके पास वैसा सबूत भी नहीं है। परिणामत: सुमेरगढ़ की बहुत सारी सम्पत्ति मूल्यवान धरोहर के नाम पर सरकाराधीन होने वाली है। साथ ही साथ वे इस बात के भी जानकार थे, कि दिल्ली से सुमेरगढ़ का सर्वेक्षण करने के लिए आया गौतम अगर उनकी मर्जी के अनुसार रिपोर्ट नहीं भेजेगा, तो महाराज का बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। जिंदगी भर दीवान जी का काम प्रामाणिकता से, ईमानदारी से करने वाले द्वारिकादास किसी भी हालत में अपने महाराज साहब का नुकसान होने देना नहीं चाहते थे।

अपने आश्रयदाता की जायदाद बचाने के लिए दीवान जी हर तरह के प्रयत्न करते हैं। इसके लिए वे गौतम को दस लाख की रिश्वत देने का प्रयास करते हैं, उसे जान से मारने की धमकी भी देते हैं, जब वह मानता नहीं, तो उसके कार्यालय पर अपने आदमियों द्वारा हमला करके उसका कार्यालय जला देते हैं। इतने प्रयास करने पर भी जब उन्हें सफलता नहीं मिलती, तो आखिर सारी जायदाद बेचकर सरकारी आदेश आने से पहले अधिक- से- अधिक पैसा कमाने की अपनी नायाब योजना महाराज के सामने पेश करते हैं। उनकी योजना के अनुसार महाराज की सारी जायदाद, ''जो सबुत के तौर पर एक तो ऐतिहासिक थी या गाँव पंचायत की सम्पत्ति थी'', सुमेरगढ़ नगरपरिषद की सहायत्ता से बेचने का सफल प्रयत्न था। द्वारिकादास की इस नायाब योजना के अनुसार महाराज साहब को नगर परिषद की ओर से सत्तर करोड़ रूपये भी मिल जाते हैं। इस जालसाजी में द्वारिकादास शहर के सभी सरकारी अफसरों को सम्मिलित करते हैं। इस प्रकार द्वारिकादास सामंती मानसिकता का वास्तविक दर्शन कराने वाला एक महत्त्वपूर्ण चरित्र है। साथ ही साथ वह एक जालसाजी, घिनौना राजनीतिज्ञ, समझदार तथा निष्ठावान कर्मचारी है; जो अंत तक अपने मालिक के साथ प्रामाणिक रहता है। द्वारिकादास के चरित्र की यहीं प्रमुख विशेषताएँ हैं।

7. पंडित दीनानाथ :-

दिव्या के पिता और समीरा के अध्यापक मास्टर दीनानाथ आधुनिक विषयों के अलावा भाषाओं के प्रकाण्ड पंड़ित थे। महाराज सुरेंन्द्र सिंह जी ने उन्हें पास वाली ही एक हवेली दान में दी थी और अपनी पोती समीरा की शिक्षा-दीक्षा का भार भी उन्हीं पर सौंपा था। वैसे तो वे कभी राजमहल में आते-जाते नहीं थे। फिर भी महल में घटने वाली घटनाओं के प्रति उनका ध्यान हमेशा रहता था। अपने इक्कीस हजार एकड़ जमीन के मुआवजे का मामला महाराज कोर्ट में हारे थे। इस बात को पंड़ित दीनानाथ जानते थे। साथ ही साथ महल के बिगडते हालात से भी वे परिचित थे। अपनी बेटी दिव्या और समीरा में वे भेद नहीं करते थे। उनके अनुसार वे दोनों केवल सहेलियाँ ही नहीं थीं, सगी बहनों से बढ़कर थीं।

पंड़ित दीनानाथ एक आधुनिक विचारों के पिता थे। इसलिए बढ़ती उम्र की बेटी दिव्या के प्रति अधिक चिंता जताने के बजाय उन्होंने उसे पूरी आजादी दे रखी थी। उन्होंने अपने बेटी को यह तक कह दिया था कि दिव्या जिस लड़के को भी पसन्द करेगी, वह उसी के साथ उसकी शादी करा देंगे। भले ही वह लड़का किसी भी जाति-धर्म का हो। इसीलिए सुमेरगढ़ आए पुरातत्त्व विभाग के अफसर गौतम के साथ अपनी बेटी के बढ़ते रिश्ते पर उन्हें कोई एतराज नहीं था। गौतम से हुई पहली मुलाकात में ही वे उसकी शालीनता और निगर्वी स्वभाव को देखकर बड़े ही प्रभावित हुए थे। गौतम अविवाहित है, इस बात को जानने के बाद तो पंड़ित दीनानाथ जी ने अपनी बेटी को पूरी-पूरी आजादी दे रखी थी। मानो वे चाहते थे कि गौतम और दिव्या एक-दूसरे के जीवन साथी बन जाए। किंतु उनकी यह सोच तब टूट जाती है, जब दिव्या आत्महत्या का भ्रम निर्माण करके कहीं दूर चली जाती है। सारा सुमेरगढ़ दिव्या की आत्महत्या पर विश्वास रखता है, मगर पंड़ित दीनानाथ इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं होते कि उनकी लड़की आत्महत्या कर सकती है।

आखिर समीरा के पुत्रोत्सव में दीपशिखा नाम से भजन गाने वाली की केवल आवाज सुनकर ही वे अपनी बेटी को पहचानते हैं और अंत में उसे ढूंढ़ने में सफल होते हैं। अपनी संतान के प्रति प्रगाढ़ विश्वास रखने वाले पं. दीनानाथ एक जिम्मेदार पिता हैं। दिव्या के समान उनका यही विश्वास गौतम और समीरा के प्रति भी अटूट है। इसीलिए वे गौतम को उसके सर्वेक्षण के कार्य से संबंधित आवश्यक जानकारी देते हैं। समीरा के जीवन में उठने वाले हर तूफान में सही मार्गदर्शन करके बिगडती पारिवारिक स्थिति को संवारने के लिए उसकी सहायता करते हैं। अपनी बेटी द्वारा सन्यास लेने के निर्णय पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। इस प्रकार पं. दीनानाथ आधुनिक विचारों के पिता, कर्तव्यदक्ष सुमेरगढ़वासी, प्रकाण्ड पंड़ित, सही मार्गदर्शक, अपने काम के प्रति इमानदार और जिम्मेदारियों के प्रति सजग तथा सबके साथ विश्वास और प्रामाणिकता से व्यवहार करने वाले एक आदर्श चरित्र की पहचान कराते हैं।

8. कुंवर जयसिंह :-

कुँवर जयसिंह रतनपुर राज्य का राजकुमार और समीरा का पति है। एक जमाने में यह राज्य भी देश का बड़ा राज्य माना जाता था। देश के राज्य गणराज्य में विलीन होने के बाद उसकी भी स्थिति सुमेरगढ़

जैसी ही हुई थी। किंतु इस राज्य के महाराज के पास पूर्वजों की छोड़ी हुई अथाह दौलत थी। महाराज ने मुंबई में एक बंगला खरीद कर महालक्ष्मी रेसकोर्स में दौड़ने वाले घोडों पर अपनी काफी दौलत गवाई थी। इसके बावजूद उनकी सम्पत्ति बढ़ती ही जा रही थी, क्योंकि उनका अपना एक्सपोर्ट का व्यवसाय था। स्वयं राजकुमार कुँवर जयसिंह रॉयल प्रिन्सेस कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी करके इसी कारोबार में जुटे थे।

जब समीरा के साथ उनके शादी की बात हो रही थी, तो समीरा के अतिरिक्त परिवार के सारे लोग उनके द्वारा किए जाने वाले अवैध कारोबार से परिचित थे। समीरा के साथ हुई पहली मुलाकात में पशु-पक्षियों के प्रति अपने मन में कितना प्यार है, इस बात को जयसिंह बता देते हैं। कुँवर जयसिंह का पशु-पक्षियों के प्रति रहा प्रेम, उनकी पक्षियों की पहचान, उनके रक्षा की चिंता ये सारी बातें समीरा को अपने संकल्प के अनुकूल लगती हैं। शादी के बाद ढ़ेड़ साल तक जयसिंह अपने असली कारोबार से समीरा को दूर रखने में सफल हुए थे; किंतु पुत्र जन्म के बाद वे खुद समीरा को अपने फार्म हाऊस पर ले जाते हैं। यहाँ उनका अधिकांश समय बीतता था।

यह फार्म हाऊस काफी बड़ा था। उपजाऊ जमीन के बिखरे टुकड़ों को इकट्‌ठा करके उसे बनाया था। उस फार्म हाऊस का बाहरी नजारा देखकर समीरा खुश हुई थी; मगर उसके अंदर चलने वाले कारोबार को देखकर उसका माथा ठणक उठा था। वह मन ही मन में घायल हो चुकी थी। पशु-पक्षियों के प्रति लगाव रखने का ढोंग रचने वाला अपना पति असल में जिंदा-मुर्दा पशु-पक्षियों का व्यापार करता है, इस बात को वह जान जाती है। किंतु जयसिंह की दृष्टि से यह एक कारोबार है, जिसके बल-बुते उसकी और उसके राजघराने की शान-शौकत भरी जिंदगी गुजर रही थी। अपने इस अवैध व्यवसाय की तरक्की करने हेतु उसने एक अलग-सा म्युजियम बनवाया था, जहाँ उसने काँच के शोकेज में कई पशु-पक्षियों को स्टफ करके रखा था। टेनरी का यह कारोबार उसके अनुसार कम से कम दो सौ करोड रूपयों का था। क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन स्टफ बर्डस की अधिक माँग थी। शौकीन लोग इन्हें ही पसंद करते थे।

कुँवर जयसिंह के इस घिनौने, अवैध और पशु-पक्षियों की जान लेने वाले कारोबार को देखकर समीरा अधिक दुःखी और परेशान हुई थी। पशु-पक्षियों को जी जान से चाहने वाली उसकी पत्नी समीरा आखिर जयसिंह को अपने ऐशोआराम के लिए दूसरों को मौत देने वाला यह भयंकर कारोबार बंद करने के लिए कहती है। मगर जयसिंह अपनी पत्नी को स्पष्ट शब्दों में कहता है, कि यह करोबार बंद करना मुश्किल ही नहीं, तो नामुमकिन है। बार-बार इस गलत धंधे को बंद करने के लिए कहने पर भी जब जयसिंह नहीं मानता, तो आखिर समीरा अपने बच्चे को लेकर मायके जाने की बात करती है। जयसिंह स्वार्थी है, उसकी नजर सुमेरगढ़ की सम्पत्ति पर है। इसलिए वह अपनी पत्नी समीरा को कुछ नहीं बोलता। इसके अतिरिक्त वह यह भी जानता है कि समीरा अब कुछ नहीं कर सकती थी। ग्लोबलायजेशन के इस युग में जयसिंह के अनुसार यही एक मात्र व्यवसाय ऐसा था, जो करोड़ों रूपया कमाकर दे सकता था, जिसके लिए अलग ढंग से कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं थी।

पति-पत्नी के बीच निर्माण हुए तनाव का परिणाम पति जयसिंह पर कतई नहीं होता। इसके विपरीत मायके चली गई पत्नी के जाने का मूल कारण जानकर भी वह अपनी पत्नी पर ही घिनौने आरोप करता है।

पत्नी को मनाने के बजाय वह एक इटेलियन कम्पनी की साझेदारी से मुर्गाबियों के डिब्बा बंद मीट का नया प्लांट शुरू कर देता है। इस व्यवसाय की आवश्यकता समझाने पर भी समीरा जब उसके साथ ससुराल आने के लिए या उसके साथ रहने के लिए तैयार नहीं होती, तो सुबह के प्रथम प्रहर में नीली झील के किनारे वह गोली मारकर उसकी हत्या कर देता है। असल में वह गौतम की हत्या करने के लिए गया था, मगर उसके हाथों से समीरा की हत्या होती है। इस हत्याकांड का मामला भी वह पैसा देकर दबा देता है। इस प्रकार कुँवर जयसिंह आजादी के बाद भी सामंती जीवन जीने वाला चरित्र है। पशु-पक्षियों का जीवन नष्ट करके ऐयाशी करने वाला एक क्रूर, भयंकर हत्यारा है। मानवी स्वार्थी वृत्ति और हिंस्त्र जानवरों जैसी हिंसात्मक वृत्ति ही उसकी चारित्रिक विशेषताएँ हैं। यही उसकी असली पहचान है।

9. कुँवर नरेंद्र सिंह :-

कुँवर नरेंद्र सिंह समीरा के पिताजी हैं। इन्होंने अपनी शिक्षा रॉयल प्रिन्स कॉलेज से पूरी की थी। महाराज सुरेंद्र सिंह जी के दामाद होने के नाते वे भी किसी राज्य के राजकुमार रह चुके थे। राजपुतों के किसी वंश से इनका संबंध है। नानी महाराज के देहांत के बाद ये अपनी पत्नी विजयलक्ष्मी के साथ सुमेरगढ़ में रहने के लिए आए थे। अन्य सामती चरित्रों के समान ये भी सामंती मानसिकता में जीते हैं। अपनी शान-शौकत के लिए पैसा कमाने के लिए इन्हें भी जिन्दा-मुर्दा पशु-पक्षियों के एक्सपोर्ट का कारोबार सबसे आसान लगता है। परिणामत: सुमेरगढ़ में बसने के बाद अपने ससुर की सहायता से वे भी यही व्यापार शुरू करते हैं।

किंतु उनके इस घिनौने व्यापार का भेद जब समीरा बेटी के सामने खुलता है, तब समीरा पिंजरों में बंद किए सारे पशु-पक्षियों को आजाद कर देती है और अपने पिता नरेंद्र सिंह को बुरी तरह से फटकारती है। समीरा के अनुसार अपनी शरण में आए शरणागतों पर अत्याचार करना राजपुतों का धर्म नहीं है। वह अपने पिता से कहती है - 'आप राजपूत नहीं है, चिडिमार से भी गए-गुजरे हत्यारे हैं।' अपनी बेटी से इतनी बुरी तरह से फटकार खाने के बाद भी नरेंद्र सिंह पशु-पक्षियों का कारोबार बंद नहीं करते। बल्कि इस व्यवसाय में बार-बार नुकसान पहुँचाने वाली अपने बेटी की शादी रचाते हैं। कुँवर नरेंद्र सिंह क्रूर, कठोर ह्दयी और घिनौने राजनीतिज्ञ हैं। अपने इसी स्वभाव के बल पर वे सुमेरगढ़ की सर्वेक्षण की रिपोर्ट तैयार करने वाले गौतम पर दीवान जी के माध्यम से दबाव डालते हैं। इसमें सफलता न मिलने पर भी वे हार नहीं मानते। आखिर सरकारी आदेश आने से पहले ही सुमेरगढ़ की सम्पत्ति अपने ससुर जी की सहायता से नगर परिषद को बेचकर करोड़ों रूपया हासिल करते हैं। इस प्रकार कुँवर नरेंद्र सिंह भी आलोच्य उपन्यास में सामंती मानसिकता का प्रतिनिधित्त्व करने वाला एक चरित्र है।

10. गौतम की माँ :-

गौतम की माँ का कोई नाम नहीं है। असल में माँ का कोई नाम नहीं होता, माँ तो माँ होती है। गौतम की माँ भी अपने इकलौते बेटे को लेकर अन्य माताओं के समान चिंतित रहती हैं। उसके अनुसार हर एक माँ के पास एक बेतार का तारयंत्र यंत्र होता है, जिससे उसे अपने संतान के सुख-दु:ख की जानकारी मिलती

है। शायद इसी कारण वह अपने बेटे को और उसके काम को जानती है। उसे अपने पति के समान अपने बेटे पर भी गर्व है। उसके पति अर्थात् गौतम के पिता को देश की आजादी की लढ़ाई में हिस्सा लेने के कारण फाँसी पर लटका दिया गया था। पति की मौत को देखकर उन्हें दु:ख नहीं हुआ था, न उनकी मौत पर वह रोई थी। देश सेवा का काम करने वाले अपने पति पर उन्हें गर्व था। गौतम की माँ को अपने बेटे के एकाकी जीवन की चिंता भी है, इसलिए वह उसे अपने लिए कोई संगी-साथी ढूंढ़ने के लिए कहती है, जिससे गौतम अपना दु:ख बाँट सके। असल में गौतम की माँ पर महात्मा गांधी जी के विचारों का काफी प्रभाव था। गांधी जी के समान उसने भी अपनी जरूरतें कम की थीं। वह कहती है कि जब तक अपना देश गरीब है, हर औरत को तन ढकने का कपड़ा, परिवार को दो जून खाने की रोटी और सर पर छप्पर नहीं मिल जाता, तब तक हमें अपने देश में शान-शौकत से रहने का अधिकार नहीं है। अपने इन्हीं आदर्श देशप्रेमी विचारों से उसने अपना सारा पैसा बचाया है, जिससे वह गरीब यात्रियों के लिए एक धर्मशाला बनवाना चाहती थी। मगर अचानक हुई मृत्यु के कारण उसका यह सपना पूरा होते हुए वह नहीं देख सकी थी। इस प्रकार गौतम की माँ देशप्रेम, संतान के प्रति प्रगाढ ममता, अपने क्षेत्र का ऐतिहासिक, पौराणिक ज्ञान रखने वाली साथ ही अपने मानवतावादी, गांधीवादी विचारों के कारण गौण चरित्र होकर भी अपनी अलग-सी पहचान देती है।

ऊपर लिखित चरित्रों के अतिरिक्त प्रस्तुत उपन्यास में समीरा की माँ विजयलक्ष्मी, गौतम का सिक्योरिटी गार्ड थापा, राजमहल का नौकर रामसिंह, गौतम का असिस्टेंट राजेंद्र आदि चरित्रों का घटना और प्रसंगानुरूप चित्रण हुआ है। ये सारे चरित्र कुछ समय के लिए ही उपस्थित होते हैं, मगर उस सीमित समय में ये सारे चरित्र अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी प्रामणिकता से निभाते हुए अपना चरित्रगत परिचय देते हैं ।

अत: चरित्र-चित्रण इस औपन्यासिक तत्त्व की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' एक उच्च कोटि का चरित्र प्रधान उपन्यास है। इसमें वर्णित सभी चरित्र हाड-मांस के हैं। उनमें से एक भी चरित्र असामान्य या अलौकिक स्वभावधर्म वाला नहीं है। वे सब इसी जमीन पर, इसी समाज में रहने वाले आम आदमी का वास्तविक जीवन प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें वर्णित सारे चरित्र अपनी चारित्रिक पहचान लेखक का सहारा लिए बिना खुद करते हैं। इसी कारण वे काल्पनिक चरित्र न रहकर हाड-मांस से बने वास्तविक मनुष्य लगते हैं। शायद इसी कारण इस उपन्यास में वर्णित सारी चरित्र-सृष्टि और उनके द्‌वारा प्रस्तुत सारा क्रिया-कलाप काल्पनिक लगने के बजाय विश्वासपूर्ण लगता है।

इतनी सजीवता से प्रस्तुत हुई यह चरित्र सृष्टि, कथानक में वर्णित विषयवस्तु की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित है। यह वर्गीकरण इन चरित्रों के सद्‌गुण-दुर्गणों के आधार पर हुआ है। इनमें से एक वर्ग अहिंसा, सहृदयता, करूणा, मैत्रीभाव, चराचर सृष्टि के प्रति स्नेहमय आस्था, पशु-पक्षियों के प्रति लगाव, उनकी जीव-रक्षा के लिए तत्पर, पर्यावरणवादी, मानवतावादी स्वभाव वाला है। तो दूसरा वर्ग हिंसा, कठोरता, वैरत्व, स्वार्थ, अपने ऐशो आराम के लिए जीव हत्या, प्राकृतिक सौंदर्य की निजी हित के लिए लूट, पर्यावरण का विनाश करने के लिए अत्यंत घिनौने और क्रूर स्वभाव वाला है। इन दोनों के बीच पूरे उपन्यास में संघर्ष होता है। उनके बीच की यह टकराहट अहिंसा, करूणा, मैत्री और पर्यावरण की रक्षा के साथ साथ

पशु-पक्षियों के प्राकृतिक अधिकार की लढाई लड़ने जैसे विविध सद्संकल्पों की पूर्ति के लिए है। इस संघर्ष में आखरी जीत अहिंसा, करूणा, मैत्री और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहे सद्विचारवादी वर्ग की होती है। नीली झील पर धर्मशाला का लगाया हुआ बोर्ड उनकी जीत का ही प्रमाण है।

कुल मिलाकर प्रस्तुत उपन्यास की चरित्र-सृष्टि, अपने अपने विचारों का प्रामाणिकता से प्रतिनिधित्त्व करने वाली, मानवीय जीवन के वास्तविक रूप को साकार करने वाली, अपने अहिंसावादी स्वभाव धर्म से पशु-पक्षियों की जीव रक्षा करते हुए पर्यावरण की रक्षा जैसे सद् संकल्प को साकार करने वाली सजीव चरित्र-सृष्टि है, जिसे कमलेश्वर जी ने कल्पना और वास्तविकता के सहारे बड़ी ही कुशलता से सजाया है।

3.3.5 अनबीता व्यतीत : संवाद –

उपन्यास में कथोपकथन का अपना एक विशेष महत्त्व है। लघु उपन्यास का फलक सीमित होता है। प्रभावान्विति की सफलता के लिए संवादों का संक्षिप्त, संवेदनशील और सहज-स्वाभाविक होना आवश्यक होता है। संवादों से पात्रों का चरित्र-चित्रण तथा कथावस्तु में गतिशीलता आती है। संवादों में नाटकीयता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

प्रस्तुत उपन्यास के कथोपकथन में नाटकीयता तथा सजीवता है, जिससे कथावस्तु में गतिशीलता आती है; साथ ही साथ पात्रों का चरित्रोद्घाटन भी होता है। पात्रों की मानसिक तथा सामाजिक स्थिति का बोध संवादों के माध्यम से होता है। स्वाभाविक बोलचाल की भाषा के प्रयोग से रोचकता बढ़ गई है। मनुष्य और पक्षियों की प्रेम संवेदना को दर्शाने का प्रयत्न उपन्यास के प्रारंभ में ही है। नानी माँ महारानी राजलक्ष्मी कहती हैं, ''हे भगवान! जब तूने इन जीव-जन्तुओं को जीवन दिया था, तो इन्हें इतनी शक्ति भी देता कि ये बेचारे अपने जीवन की रक्षा कर पाते।'' समीरा का कौतुहल भरी बातों से अपनी नानी माँ को आग्रह करना, ''कल आप हमारे साथ नीली झील पर चलिए न नानी माँ। ऐसे रंग-बिरंगे और अनोखे पंछी आए हैं इस बार कि उन्हें देखकर आप खुशी से झूम उठेंगी।''

उपन्यास में भाषा पात्रानुकूल है, जिससे पात्रों के शिक्षित होने का स्तर, संस्कृति तथा पद का एहसास होता है। महाराजा सुरेन्द्र सिंह स्वतंत्र भारत में राजेतंत्र के अवशेष हैं। उनकी सामन्ती मानसिकता बड़ी कुशलता से व्यक्त होती है। काकातुओं की हत्या के प्रसंग में वे गुर्राते हुए कहते हैं, ''कम्बख्तों ने हजारों रूपयों का नुकसान कर दिया। यह झूमर हमारे खानदान की पुरानी निशानियों में से एक था।'' गौतम के साथ भी उनका यही रवैया रहता है। दीवान द्वारिकादास, महाराज नरेन्द्र सिंह, कुँवर जयसिंह सभी सामन्ती विचारों से प्रेरित हैं। उनके विचारों में उनकी मानसिकता स्पष्ट रूप से झलकती है। कदम-कदम पर वे सभी राजसी-परंपराओं का निर्वाह करते रहते हैं। जयसिंह को छोड़कर रतनपुर से समीरा सुमेरगढ़ आ जाती है, तो सबके दिल पर मानो साँप लोटता है। पिता नरेन्द्र सिंह अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते हैं, ''इतना अच्छा लड़का है। इतना अच्छा कारोबार है। सम्मानित राजघराना है। राज्य चला गया, लेकिन फिर भी लाखों रूपए के मुनाफे की जमीन-जायदाद मौजूद है।...''

मास्टर दीनानाथ समीरा से अपनी बेटी की तरह ही प्यार करते हैं। मास्टर जी उसे परंपरा के दलदल से निकल सकने का रास्ता सुझाते हैं, ''उचित यही होगा कि, तुम रतनपुर रियासत के वारिस अपने बेटे विक्रम को लेकर ससुराल लौट जाओ...''!

दीवान द्वारिकादास की खल प्रवृत्ति दिखाई देती है। अपनी सामन्ती सत्ता को लेकर पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सरकारी अधिकारी (गौतम) की लोकसत्ता से वे बारबार टकराते हैं। उसीतरह गौतम को लेकर परेशान जयसिंह भी पति होने के पुरूषोचित अधिकार के दंभ से समीरा की हत्या करते हैं।

समीरा अपने और गौतम के रिश्ते को लेकर मास्टर जी से कहती है, ''मास्टरजी-मेरी आत्मा और वह झील गवाह है कि मेरी जिंदगी में कोई पुरानी परछाइयाँ नहीं हैं, कोई स्पर्श, स्मृति की कोई छाया या ऐसा निशान मौजूद नहीं है, जो मिटने से मना करता हो...!''

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के विचार, भाव उनके संवादों द्वारा अत्यंत व्यंजक रूप में स्पष्ट होते हैं। संवादों के माध्यम से पात्रों की स्वभावगत विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं। महारानी राजलक्ष्मी पशुपंछियों से प्रेम करती है। महाराज सुरेन्द्र सिंह जब हिरणी की शिकार करते हैं, तब वह कहती है,' हे भगवान! जब तूने इन जीव-जन्तुओं को जीवन दिया था, तो इन्हें इतनी शक्ति भी देता कि ये बेचारे अपने जीवन की रक्षा कर पाते। ... तेरी दी धरोहर को उन निर्दयी हाथों से बचा पाते, जो तूने इन्हें दी थी। विचित्र है तेरी माया... जीवन मृत्यु का यह दुःखदायी संयोग ... काश इन्सान इसे समझ पाता...।''

समीरा की सखी दिव्या को भी पक्षियों से बेहद प्यार है। नीली झील में तरह-तरह की मछलियाँ भरी पड़ी थीं। एक दिन वह देखती है कि पत्थर पर बैठकर एक व्यक्ति बंसी ड़ाले मछली फँसाने की कोशिश कर रहा है। तब क्रोध से उसका समूचा शरीर तमतमा उठ़ता है और वह गुस्से से चीखकर कहती है, 'तुम्हे पता नहीं नीली झील की मछलियों को मारने की सख्त मनाही है।' दिव्या गौतम से अनेक विषयों पर बातें करती है। साथ ही अपनी सहेली समीरा के बारे में बताते हुए कहती है,'' कल ही समीरा की चिट्ठी मिली है। दरअसल समीरा का मन कहीं और लगता भी नहीं ...उसे भी इस झील और इस झील पर रहने वाले पंछियों से बेहद् प्यार है। वह इनसे ज्यादा दूर नहीं रह सकती।''

गौतम और समीरा पहली ही मुलाकात में एक दूसरे के विचारों से प्रभावित हो जाते हैं। उस समय दोनों की बातचीत अनेक विषयों पर होती है और अन्त में ईश्वर की परिकल्पना को लेकर गौतम कृष्णा जी की एक कथा समीरा को सुनाते हैं। दिव्या की आत्महत्या के बाद तो समीरा गौतम के और करीब आ जाती है। वह हमेशा संध्या तक उसके साथ बातें करती है। अपने भावों को व्यक्त करते समय उसके चेहरे पर एक विचित्र-सी चमक और कोमलता उभर आती है। वह गौतम से पूछती है,'' जंगल में शेरनी कंटीली झाड़ियों या हरी-भरी घास पर लेटकर जब अपने नन्हें-मुन्ने बच्चों को दूध पिलाती है, तो कितनी सुंदर दिखती है। उस समय उसकी आँखों में हिंसा नहीं होती...माँ की ममता, वात्सल्य, और करूणा होती है ... लेकिन इन्सान बड़ी बेरहमी से शेरनी को.. इन चहचहाते निर्दोष पंछियों को अपनी गोली का निशाना बना देता है। क्यों? किसने उसे अधिकार दिया है, निर्दोष प्राणियों की हत्या करने का... और गौतम बाबू, जब हम

किसी को प्राण दे नहीं सकते तो उसके प्राण छीनने का अधिकार हमें किसने दिया?'' इन्हीं विचारों से प्रेरित समीरा जब जान जाती है कि उसके पिता पक्षियों के एक्स्पोर्ट का कारोबार करते हैं, तो वह क्रोध से उन पर टूट पड़ती है, 'परिन्दों को एक्स्पोर्ट करना था? ...इन मासूम परिन्दों को! जिन्होंने आपका कभी कोई नुकसान नहीं किया... क्या धन की भूख ने आपकी मान-मर्यादा और धर्म-सबकुछ निगल लिया है .. आप राजपुत्र नहीं, हत्यारे हैं- हत्यारे।'

कुँवर जयसिंह अलग अलग परिन्दों की जानकारी रखते हैं। वे समीरा से कहते हैं,'' मैंने देशी-विदेशी पशु-पक्षियों के बारे में काफी कुछ पढ़ा है। चलिए, मैं शायद आपको बता पाऊँ कि वे पंछी कौन हैं और किस देश से आए होंग?'' समीरा जयसिंह की इसी जानकारी के कारण उसके करीब जाती है।

दीवान द्वारिकादास गौतम के पास जाकर हमेशा उसे धमकाते, समझाते या कभी बिनति करते रहते हैं। उन्हें राजपरिवार की आमदानी बढ़ाने की चिंता रहती है। राज्य की पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक महत्त्व की चीजों को बचाने का प्रयत्न वे करते रहते हैं। एक निष्ठावान राज कर्मचारी के रूप में उनकी तस्वीर उभरती है। वे गौतम से कहते हैं,'' गौतम जी, शायद आपको पता नहीं कि राजपाट छिन जाने पर भी सुमेरगढ़ राज्य में हमारे कानून चलते हैं, दिल्ली सरकार के नहीं। आप सुमेरगढ़ राज्य की इमारतों वगैरह के बारे में जो भी रिपोर्ट लिखेंगे, हमसे पूछकर लिखेंगे-हमारे मर्जी से लिखेंगे। वरना....। ''

समीरा के पति जयसिंह भी पक्षियों की जानकारी रखते हैं। चिडियों की अनेक नस्लों का उन्हें सूक्ष्म ज्ञान है। लेकिन शाही जिंदगी जीने के लिए वे स्टफड बर्ड का जो कारोबार चलाते हैं, उसे जानकर समीरा और उनके संबंधों में दरार आती है। उनकी सामन्ती मानसिकता का परिचय, उनके और समीरा के संवादों से होता है। अपना म्यूजियम एक अलग ढंग का बना हुआ है, इस पर वे गर्व से कहते हैं, ''समीरा! आज मैं तुम्हें अपना सबसे शानदार और नायाब कलेक्शन दिखाऊँगा। जो दुनिया में सिर्फ निराला ही नहीं, अनोखा भी है। दुनिया में किसी के पास ऐसा म्यूजियम नहीं हैं। ''

महाराज नरेन्द्र सिंह, जयसिंह, दीवान द्वारिकादास आदि सामन्ती विचारधारा से ग्रस्त पात्रों के संवाद उनके चरित्र के परिचायक हैं। उसी तरह गौतम और समीरा के संबंधों को लेकर राजघराने के लोग गौतम को ही जिम्मेदार ठहराते हैं, तो वह मास्टरजी से स्पष्ट कहता है, 'मास्टर जी, समीरा चाहे सुमेरगढ़ में रहें या रतनपुर में, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे लिए वह एक वृक्ष है, जो मेरे साथ-साथ चलता है। मैं जहाँ भी थककर बैठ़ता हूँ, वह वृक्ष मुझे छाया देता है।' गौतम के स्पष्ट भाव तथा समीरा के प्रति उसकी दृष्टि इससे स्पष्ट हो जाती है।

गौतम पर जो संस्कार हुए हैं, उसमें उसकी माँ की छाया दिखाई देती है। गौण पात्रों के रूप में हम गौतम की माँ का उल्लेख कर सकते हैं। उपन्यास में उनका अल्प परिचय है, लेकिन वह उतना ही सशक्त एवं प्रभावकारी है। उनके विचारों पर गाँधी जी के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। वे गौतम से बातें करते हुए गाँधी जी के जीवन की घटना बताती हैं। वे सात्त्विक स्वभाव की है। धर्मशाला का अपना मनोदय

व्यक्त करते हुए वे कहती हैं, ''ये ठेकेदार साहब हैं, शिप्रा के तट पर गरीब तीर्थयात्रियों के लिए बड़ा सा धर्मशाला बनवाने की मेरी इच्छा है। सोचा चलते-चलते यह पुण्य कार्य करती जाऊँ ....।''

इसतरह प्रस्तुत उपन्यास में संवादों द्वारा चरित्रोद्घाटन तथा कथावस्तु की गतिशीलता बढ़ती गई है।

3.3.6 'अनबीता व्यतीत' : देश-काल एवं वातावरण :-

उपन्यास लेखन में रचनाकार की दृष्टि से केवल कथावस्तु, चरित्र-चित्रण तथा घटनाएँ ही आवश्यक नहीं रहतीं, देश-काल एवं वातावरण भी महत्त्व रखता है। उपन्यासकार जिस देश और काल का वर्णन अपने उपन्यास में करता है, वह वर्णन जितना सजीव, यथार्थ तथा सशक्त होता है, उतना ही कथावस्तु की दृष्टि से औपन्यासिक जीवन स्वाभाविक एवं मुखर हो उठता है। **डॉ.गोंविद** जी के मतानुसार ''देशकाल तथा वातावरण का उपन्यास में वही स्थान है, जो चित्र में उसकी पृष्ठभूमि का है।'' उनके अनुसार उपन्यास में वर्णित कथानक के पात्र भी देशकाल के बन्धन में रहने चाहिए। क्योंकि उपन्यास में देश काल तथा वातावरण उसके चरित्रों की सोच-विचार तथा जीवन जीने की आधारभूमि होता है। उपन्यास पढ़ते समय पाठक पर इन्हीं चरित्रों की सोच विचारों का, क्रिया कलापों का प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। यह प्रभाव तब और अधिक सजीव बन जाता है, जब उसमें देश-काल तथा वातावरण के वर्णन में औचित्य रहता है। इसके अंतर्गत कथातत्त्व से संबंधित सभी बाह्य उपकरण जैसे आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक विशेषताएँ, परिस्थितियाँ आती हैं।

किसी भी अपन्यास का अध्ययन करते समय उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, भौतिक, प्राकृतिक आदि विविध भागों में वर्णित देश-कालं एवं वातावरण पर प्रकाश डाला जाता है। इनमें से सामाजिक और सांस्कृतिक चित्रण के अंतर्गत उस देश और काल की, जहाँ उपन्यास का कथानक घटता है वहाँ की सामाजिक मान्यताएँ, रीति-रिवाज, शिष्टाचार, भाषा का प्रयोग, वेश-भूषा आदि का चित्रण (तीज-त्योहार) होता है। तो भौतिक तथा प्राकृतिक चित्रण के अंतर्गत उपन्यासकार चरित्रों की मानसिक, भावात्मक, रागात्मक स्थितियों का परिचय देता है। प्रकृति का यह चित्रण कभी अनुकूलावस्था का होता है, तो कभी प्रतिकूलावस्था का ? इनमें से अनुकूलावस्था में प्रकृति चरित्रों के मानसिक स्थिति के अनुकूल चितारी जाती है और प्रतिकूलावस्था में प्रकृति का वर्णन गंभीर, भयानक, व्यंग्यात्मक, विरोधात्मकता युक्त चितारा जाता है।

वैसे तो देश-काल एवं वातावरण का चित्रण हर उपन्यास में होता है। किंतु ऐतिहासिक उपन्यासों में इसे अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक माना गया है। इसका सफल चित्रण तभी संभव होता है, जब उपन्यासकार स्वयं उस काल का पूर्ण अभ्यासक और जानकार हो; साथ ही साथ इतिहासकार एवं पुरातत्त्ववेत्ताओं द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री की सहायता से मनोरम, कौशल्य पूर्ण चित्र निर्माण करने की शक्ति रखता हो। **प्रोफेसर हडसन** ने एक स्थान पर लिखा है कि ''ऐतिहासिक उपन्यासों के पाठक उसी उपन्यासकार का अधिक आदर करते हैं, जो सभ्यता एवं संस्कृति के किसी विशिष्ट अतीत काल का सजीव, यथार्थ एवं मनोरंजक वर्णन प्रस्तुत करने में सफल होते हैं।'' इस प्रकार उपन्यास में देश-काल एवं वातावरण का चित्रण

उपन्यासकार अत्यंत स्वाभाविक एवं सजीव रूप में करता है, जिससे उपन्यास में एक ओर कलात्मक सौंदर्य बढ़ता है, तो दूसरी ओर पाठक देश-काल एवं वातावरण से पूर्णतः परिचित होता है। फिर भी यह ध्यान रखना नितांत आवश्यक है कि देश-काल एवं वातावरण उपन्यास रचना की दृष्टि से कथानक के विस्तार और चरित्रों के विकास के लिए एक साधन मात्र है, साध्य नहीं। अगर इसका अनुपात अधिक बढ़ जाता है, तो पाठक उब जाता है।

ऊपर लिखित देश-काल वातावरण से संबंधित सैद्धांतिक बातों को मध्य नजर रखते हुए जब हम कमलेश्वर जी द्वारा प्रस्तुत उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' का अध्ययन करते हैं, तो यह भली- भाँति स्पष्ट होता है कि इसमें कमलेश्वर ने देश-काल एवं वातावरण का चित्रण मात्र एक साधन के रूप में, किंतु अत्यंत कु शलता से किया है। प्रस्तुत उपन्यास का कथानक पाठकों के सम्मुख उस वातावरण को उपस्थित करता है, जिसमें भारतीय परिवेश का वास्तविक चित्र उभर आता है। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को आजादी मिली थी। इस आजादी के कारण भारत में प्रचलित पूर्व राजसत्ता, सामंतीसत्ता के स्थान पर जनतंत्र की स्थापना होती है। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में होने वाले इस परिवर्तन का स्वीकार एक ओर सामान्य जनों ने अति उत्साह से किया था, तो दूसरी ओर अपनी पूर्व राजसत्ता गवा बैठे राजा महाराजाओं ने मजबूरी से किया था। अपनी सत्ता, संपत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा इस प्रकार एका-एक (अचानक) नष्ट होने से जो कसक, पीडा, यातना इस वर्ग को सहन करनी पड़ी, उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। शान-शौकत से अपना जीवन जीने की आदत से मजबूर इस वर्ग को अपने अलग-अलग शौक त्यागना बडा ही मुश्कील था। परिणामतः इस वर्ग ने अपना पूर्व शान-शौकत भरा जीवन-स्तर उसी प्रकार कायम रखने का विफल प्रयत्न करते हुए कभी अपनी सम्पत्ति बेची, तो कभी अपने पूर्व प्रतिष्ठित संबंधों के माध्यम से गलत कारोबार द्वारा अपनी आमदनी बढाई। उनके द्वारा किए गए कारोबार प्राकृतिक, सांस्कृतिक धरोहर के लिए हानिकारक थे। इस दौर में ऐसे गलत कारोबार से अपने सांस्कृतिक, प्राकृतिक सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए अलग-अलग ढंग से प्रयास किए गए। प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर जी ने इसी दौर के परिवेश, देश-काल एवं वातावरण का बडा ही स्वाभाविक एवं अत्यंत सजीव चित्र उपस्थित किया है।

विवेच्य उपन्यास ''अनबीता व्यतीत'' में चित्रित देश-काल एवं वातावरण पूर्णत: स्वाभाविक एवं यथार्थ है। प्रस्तुत चित्रण के अंतर्गत आलोच्य उपन्यास में वर्णित भौतिक स्थल, शहर, नगर जहाँ कथानक की घटनाएँ घटती हैं। तथा कथानक जिस कालखंड को हमारे सम्मुख उपस्थित करता है, उस समय की सामाजिक रीति-नीति, शिष्टाचार, भाषा, वेश भूषा और परिस्थिति की चर्चा आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विवेच्य उपन्यास में वर्णित प्राकृतिक पीठिका को देखना भी आवश्यक होगा। विवेच्य उपन्यास में चित्रित देश-काल एवं वातावरण का इन्हीं सैद्धांतिक मापदंडों के आधार पर परिचय इस प्रकार है -

कमलेश्वर द्वारा प्रस्तुत इस उपन्यास का अधिकांश कथानक सुमेरगढ़ में घटता है। यह स्थान अरावली पर्वतमाला की गोद में एक ऊँची समतल सपाट पहाडी पर बसा है। अपने प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास का परिचय देने वाले सुमेरगढ में एक प्राचीन दुर्गनुमा कोठी में लाल-पत्थरों तथा संगमरमर से बने महलों और विशाल, सूने प्रकोष्ठों और गलियारों में उपन्यास में वर्णित सारा घटनाक्रम प्रारंभ से अंत तक घटता

रहता है। सुमेरगढ एक जमाने में स्वतंत्र राज्य था यहाँ का इतिहास रणबांकुरे, शूरवीर योद्धाओं का इतिहास रहा था । किंतु आजादी के बाद सुमेरगढ राज्य भारत देश में विलीन हो चुका था। किंतु अब भी वह अपनी ऐतिहासिक पहचान कायम रखे हुए था, जिसका वर्णन उपन्यास में बडी ही सजीवता से किया गया है। सुमेरगढ में स्थित प्राचीन किंतु विशाल दुर्गनुमा कोठी, विशाल दिवानखाने, संगमरमर के फर्श, महल के जोहड, विशाल प्राचीर आदि का वर्णन बड़ा ही सजीव हुआ है। '' झील की तरफ जाते रास्ते में ही कई खण्डहर और टूटी-फूटी हवेलियाँ खडी थीं, जो महल का ही हिस्सा थीं। इन्हीं में नाना जी साहब के कई मंत्री और एक बडी हवेली में सेनापति चंद्रभान सिंह रहा करते थे। रास्ते में बाई ओर फीलखाना था। कुछ आगे जाकर दाहिनी ओर अरबी घोडों की घुडसाल थी।'' (पृ.17) उपन्यास में इसी प्रकार कई स्थानों पर सुमेरगढ की भौतिक स्थिति का वर्णन कमलेश्वर ने किया है, जो पाठकों से सुमेरगढ की प्राचीनता और ऐतिहासिकता से भली-भाँति परिचित कराने में सफल हुआ है। सुमेरगढ के समान देवगढ, रतनपुर, उज्जैन, कुरूक्षेत्र, जयसिंह का फार्म हाऊस, शिप्रा का तट, आदि स्थानों का वर्णन सजीवता से हुआ है। सुमेरगढ के समान रतनपुर की ऐतिहासिक पहचान कराने हेतु उपन्यासकार ने एक स्थान पर लिखा है कि ''रतनपुर का प्राचीन दुर्ग एक विशाल और ऊँची टेकरी पर बना हुआ था। दुर्ग के चारों ओर दूर दूर तक हरे-भरे पेड़ों और झाड़ियों से लदी पहाडियाँ थीं। '' (पृ.92)

सुमेरगढ़ के सांस्कृतिक धरोहर की पहचान गौतम ने समीरा को एक स्थान पर कराई है। वह कहता है कि 'सुमेरगढ राज्य का सर्वाधिक मूल्यवान और आकर्षक स्मारक है, यह झील और इसके जंगली परिसर में बने विश्रांति गृह और मंदिरों की श्रृंखला। खास बात तो यह थी कि इस नीली झील के चारों ओर ऐसे परिन्दे रहते हैं, जो देश और विदेश में दुर्लभ हैं। फिर सुदूर उत्तरी ठंडे देशों से आने वाले पक्षी इस झील के आकर्षण और सौंदर्य को और भी बढ़ा देते हैं ...। हमारे देश की अरण्य संस्कृति भी हमारी बहुत बड़ी धरोहर है।' (पृ.74)

उज्जैन का वर्णन करते हुए गौतम की माँ कहती है कि ''..यह उज्जयिनी महाकाल की नगरी है। इसे कालिदास ने कालजयी बनाया है। शिप्रा नदी यहाँ बहती है और यही महाकाल की दिशा को निर्धारित करने वाली नदी है। ... समय और दिशा,दोनों को यही नदी तय करती है। भारतीय काल निर्धारण और गणना का यही मेरूदण्ड है।''(पृ.132) इन सारे भौगोलिक स्थलों के सजीव वर्णन द्वारा कमलेश्वर जी ने पाठकों के मानसपटल पर प्राचीन और ऐतिहासिक परिवेश का चित्र बडी ही कुशलता से चितारा है। इसे पढ़कर हर एक पाठक भारत के ऐतिहासिक परिवेश को अत्यंत स्वाभाविकता से केवल जानता ही नहीं, तो उसे पूरे उपन्यास में स्वयं अनुभव करता है, उसे प्रत्यक्ष अपने मानसचक्षुओं से देखता है।

देशकाल वातावरण की दृष्टि से स्थल (देश) वर्णन में प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में है, सुमेरगढ के प्राचिरों में स्थित 'नीली झील'। आलोच्य उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक जितनी भी अच्छी-बुरी घटनाएँ घटती हैं, वे सब इसी नीली झील के तट पर ही घटती हैं। मानो यह नीली झील इस उपन्यास का प्राणतत्त्व है। अतीत और वर्तमान की सारी घटनाओं की गवाह यही नीली झील है।

स्थल और घटनाओं के अतिरिक्त कुछ उपकरण ऐसे हैं, जिनका चित्रण उपन्यासकार ने घटनानुरूप, प्रसंगानुरूप किंतु अत्यंत सजीवता पूर्ण शैली में किया है। प्राचीन ऐतिहासिक अतीत और वर्तमान के बीच की पृष्ठभूमि अपनाकर कमलेश्वर जी द्वारा किया गया सामंती शिष्टाचार, रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, मंदिरों का आध्यात्मिक वातावरण, होम-हवन, यज्ञ, धार्मिक कर्मकांडों का वर्णन विवेच्य उपन्यास में घटित घटनाओं को स्वाभाविक सजीवता प्रदान करता है। महारानी राजलक्ष्मी का देहांत होने पर राज्य और आस-पास के हजारों नागरिक शोकाकुल होकर शवयात्रा में सम्मिलित हुए थे या राजकुमारी समीरा के विवाह तिथि का पता चलने पर सारे सुमेरगढवासी अपने घर-द्वार, दुकानें सजाने में जुट गए थे। ये बातें उपन्यास में एक अलग-सा वातावरण निर्माण करती हैं, जिससे पाठक यह जान जाता है कि भूतपूर्व सामंती और राजसत्ता के युग में आम-आदमी भी किस प्रकार उनके सुख-दुःख के साथ जुडे रहते थे। राजकुमार जयसिंह और रानी समीरा के पुत्र विक्रम के जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम पाठकों को उस समय की सामंती सामाजिक परंपरा का परिचय देता है। उसका स्वाभाविक वर्णन करते हुए कमलेश्वर ने लिखा है कि'' परंपरा के अनुसार पुत्र जन्म पर रतनपुर में कई तरह के आयोजन हुए, जो सप्ताह भर चलते रहें। पुश्तैनी रंगमहल में नाच-गाने की महफिल सजी, तो नौचंदी चौक में विशाल शामियाने में जनसमूह के लिए लोकनृत्य और लोकगीतों के आयोजन हुए। पूरे सप्ताह भण्डारा चलता रहा और गरीबों को निछावर में मोहरें बाँटी गईं। पंडितों, पुरोहितों, ज्योतिषियों के पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन व अन्य अनुष्ठान होते रहें। धार्मिक परम्परा के अनुसार रानी-महारानियों के लिए अलग से एक भजन संध्या का आयोजन किया गया।'' (पृ.93-94) इस प्रकार आलोच्य उपन्यास में देश-काल वातावरण का चित्रण कमलेश्वर ने अत्यंत कुशलता से किया है।

वैसे तो इस बात पर पहले ही प्रकाश डाला गया है कि प्रस्तुत उपन्यास में कथा विकास की दृष्टि से घटने वाली प्रत्येक घटना के केंद्र में सुमेरगढ स्थित नीली झील है। नीली झील का प्राकृतिक सौंदर्य, चरित्रों और पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुसार, साथ ही साथ घटने वाली घटनाओं की अच्छाई-बुराई के अनुरूप पाठकों के सामने उपस्थित होता है। प्रथम प्रहर से लेकर घना अंधेरा छाने तक के वातावरण की जानकारी लेखक इसी नीली झील के माध्यम से देता है। सुमेरगढ में रहने वाले और बाहर से सुमेरगढ में आने वाले सभी को नीली झील का प्राकृतिक सौंदर्य बड़ा ही सुखद आनंद देता है। उपन्यास का नायक गौतम इस झील के सौंदर्य के प्रति आकर्षित होकर कहता है कि, ''दरअसल मुझे इस शहर में अगर कोई स्थान पसन्द आया है, तो बस यह नीली झील। इस झील और इसके आस पास मंडराते, उडते, पंख फडफडाते, रंग-बिरंगे पंछियों को देखकर मैं अपनी दिन भर की थकान भूल जाता हूँ। जब से मैं आया हूँ, मेरी हर शाम यही गुजरती है। सोचता हूँ काश मैं भी इस सुमेरगढ का बाशिंदा होता ... इन पंछियों की तरह एक पंछी होता...'' (पृ.48) ऐसे कई मनोहारी प्राकृतिक सौंदर्य वर्णनों के माध्यम से कमलेश्वर जी ने पूरे उपन्यास में पात्रों एवं चरित्रों की मानसिक स्थिति का संकेत दिया है। गौतम के प्रति आकर्षित दिव्या को यह नीली झील ''सबसे अधिक सुंदर और मूल्यवान धरोहर'' (पृ.38) लगती है। राजकुमारी समीरा में अपनी मृत प्रेमिका दीपाली को महसूल करने वाले गौतम को इसी नीली झील का प्रातः समय और संध्या समय का वातावरण सुकून देता है। प्राचीन विशाल दुर्ग में घटने वाली हर घटना से उत्पन्न होने वाली परशानियों से

समीरा को मुक्त करके आनंद देने वाला इसी नीली झील का प्राकृतिक सौंदर्य है। समीरा, गौतम, दिव्या तीनों के सुखद-दुखद, हर्षमय-तनावमय मानसिक स्थिति का एक साथ प्रतिनिधित्व करती है, अकेली नीली झील। यह नीली झील पूरे उपन्यास में कमलेश्वर ने एक आईने के रूप में प्रस्तुत की है, जिसमें हर चरित्र का, हर अच्छी-बुरी घटना का असली प्रतिबिंब अत्यंत यथार्थ रूप में उभरता है।

उपन्यास में नीली झील का प्राकृतिक दृश्य जिस प्रकार चरित्रों की अनुकूल मानसिक स्थिति का प्रतिनिधित्त्व करता है, उसी तरह कुछ प्रतिकूल स्थिति का भी प्रतिनिधित्त्व प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से किया गया है। उपन्यास के प्रथम पृष्ठ पर ही पशु-पक्षियों के मृत पड़े शरीरों का जो दृश्य लेखक ने चितारा है, उसे पढ़ने के बाद उनकी बेरहमी से हत्या करने वालों के प्रति पाठकों के मन में क्रोध भाव जागृत होता है, तो दूसरी ओर उस भयंकर दृश्य को देखकर, उन बेजान पशु-पक्षियों के प्रति मन में वेदना और करूणा का भाव अपने आप उमडता है। महारानी राजलक्ष्मी द्वारा संभाले गए काकातुओं की जोडी की हत्या की घटना के पूर्व लेखक ने प्रकृति के भयानक रूप का चित्रण किया है, जिससे आगे घटने वाली भयंकर घटना का संकेत अपने-आप ही मिलता है। इनमें से प्रथम दृश्य में महारानी राजलक्ष्मी की व्याकुल, हताश मनस्थिति का प्रतिबिंब पशु-पक्षियों की बेजान, बेनुर पड़ी लाशों द्वारा स्पष्ट होता है; तो दूसरे दृश्य में महाराज सुरेन्द्र सिंह की हिंसात्मक वृत्ति का भयानक रूप प्रगट होता है। इन दो दृश्यों के समान उपन्यास में जब जब अघटित घटनाएँ घटी हैं, कमलेश्वर जी ने उसका पूर्व संकेत या परवर्ती विपरीत परिणामों का संकेत गंभीर, भयानक, व्यंग्यात्मक, प्राकृतिक वर्णन के माध्यम से ही दिया है। जैसे महारानी राजलक्ष्मी द्वारा समीरा को बताई गई कहानी के राजकुमारी के प्राण बरगद के पेड़ में लटके पिंजरे में रखे तोते में होना, आजादी के बाद भी सुमेरगढ़ के दुर्ग में फैला अन्धकार और सन्नाटा, पिता कुँवर नरेंद्र सिंह द्वारा व्यापार हेतु कैद किए पंछियों, खरगोशों को समीरा द्वारा मुक्त करना, रतनपुर के राजकुमार जयसिंह द्वारा समीरा के सामने प्रथम भेंट में पशु-पक्षियों के प्रति झूठी आस्था और प्यार प्रगट करना, पुरातत्त्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट के निमित्त दीवान द्वारिकादास द्वारा गौतम को बार बार धमकाना आदि अनेक विपरीत घटना-प्रसंगों की भयानकता को कमलेश्वर ने प्रकृति के प्रतिकूल दृश्यों के माध्यम से ही अत्यंत वास्तविकता से चितारा है।

उपर्युक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, भौतिक और प्राकृतिक उपकरणों के माध्यम से कमलेश्वर जी ने आलोच्य उपन्यास में देश-काल एवं वातावरण का अत्यंत स्वाभाविक वर्णन प्रस्तुत किया है। देश-काल-वातावरण का यह स्वाभाविक वर्णन इस उपन्यास को वास्तविकता के धरातल पर खरा उतारता है। अतीत और वर्तमान की पृष्ठभूमि का समन्वयात्मक ताना-बाना बुनकर कमलेश्वर ने इस उपन्यास का निर्माण किया है। इसके लिए उन्होंने एक ओर बीते हुए सामंती युग के राजघरानों के रीति-रिवाज, रहन-सहन, सोच-विचार, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परंपराओं का जीवंत वर्णन किया है, तो दूसरी ओर देश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने के लिए ग्लोबलायजेशन के इस युग को देश-काल एवं वातावरण के माध्यम से नया संदेश देने का महत् कार्य भी किया है। आने वाले संकेतों की भयानकता का अत्यंत गंभीरता से संकेत देते हुए लेखक ने समीरा के माध्यम से एक स्थान पर कहा है कि ''इस ग्लोबलायजेशन ने हमारा नजरिया ही बदल दिया है... अपनी खुशहाली और ऐशो-आराम के लिए दूसरे की

मौत जरूरी हो गई है।'' (पृ.122-123) सामंतशाही युग में ऐसा ही था। उस युग में भी मनुष्य ने अपनी प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक मूल्यवान धरोहर रूपी सम्पत्ति के प्रति ध्यान देने के बजाय उसे अपने निजी सुख, चैन और शान-शौकत के लिए तरह-तरह के नुस्खे तलाशकर नष्ट करने का प्रयास किया था। आज का वर्तमान युगीन मनुष्य भी स्वयं की खुशी के लिए बाजारवादी घिनौनी संस्कृति का शिकार बन चुका है। आज भी वह सामंतयुगीन मानवों की तरह अपने प्राकृतिक धरोहर को मूल्यहीन मानकर हिंसात्मक रूप धारण करके उसे नष्ट कर रहा है। कमलेश्वर जी के अनुसार यह भयंकर संकट है, जो सारी जीव सृष्टि पर अत्यंत क्रूरता से मंडरा रहा है। एक दिन इसी भयंकर संकट से पूरा संसार नष्ट होने की आशंका है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने इसी भयंकर संकट को 'देश-काल एवं वातावरण''इस औपन्यासिक तत्त्व के माध्यम से बताने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है।

3.3.7 'अनबीता व्यतीत' : भाषा शैली :-

उपन्यास एक ऐसी गद्य विधा है, जिसमें मानव के भौतिक जीवन की व्यापक अनुभूतियों को रचनाकार वास्तव और कल्पना के आधार पर पाठकों के सामने पूरी सजीवता से प्रस्तुत करता है। उपन्यास में सरसता, रोचकता, एवं भावुकता प्रगट करने का काम भाषा-शैली तत्त्व करता है। इनमें से भाषा तत्व मानवीय मनोभावों की अभिव्यक्ति का साधन है, तो शैली तत्त्व उस साधन का उपयोग करने की रीति। ऐसा माना गया है कि साहित्य क्षेत्र में कार्यरत प्रत्येक रचनाकार की अपनी एक स्वतंत्र भाषा और शैली होती है। उपन्यास विधा में उनका प्रयोग भले ही समन्वयात्मक ढंग से होता है, मगर अध्ययन की सुविधा के लिए उन पर स्वतंत्र रूप से प्रकाश डाला जा सकता है। विविध आचार्यों के मतों को आधार बनाकर आलोच्य उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' में कमलेश्वर द्वारा प्रयुक्त भाषा और शैली तत्त्व पर स्वतंत्र रूप से चर्चा की जा सकती है। जैसे-

1. ''अनबीता व्यतीत'' की भाषा :-

किसी भी उपन्यास की भाषा मात्र एक साधन होती है, उसका उपन्यास में प्रवाहमय और प्रभावात्मक होना अनिवार्य माना गया है। प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर ने इन्हीं बातों को केंद्र में रखकर अपनी स्वतंत्र भाषा का परिचय दिया है। उनके द्वारा प्रयुक्त शब्द और वाक्य, भाव और विचारों की अभिव्यक्ति सहज ही होती है। उनकी भाषा प्रवाहमय अर्थात् गतिशील होकर भी प्रभावात्मकता उसका सबसे बड़ा गुण है। अपनी भाषा को जीवंत बनाने के लिए कमलेश्वर ने जनभाषा में प्रचलित विभिन्न भाषाओं के अलग-अलग शब्द अत्यंत सहजता से ग्रहण किए हैं। अपने व्यापक अनुभव के कारण ही उन्होंने भाषा प्रयोग की दृष्टि से अपने आपको केवल खडीबोली के दायरे में न रखकर विभिन्न भाषाओं से शब्दों का चयन किया है, जिससे उनके पास रही असीम शब्द-सम्पत्ति का परिचय भली-भाँति हो जाता है। साथ ही साथ हर शब्द का सही स्थान पर प्रयोग करके उन्होंने अपने आपको एक अच्छे शब्द प्रयोक्ता एवं सफल रचनाकार के रूप में साकार किया है। उनकी यह कुशलता प्रस्तुत उपन्यास में अधिक निखरी हुई नजर आती है।

प्रस्तुत उपन्यास में तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी, फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि भाषा के शब्दों का प्रयोग लिया है। अतः भाषा तत्त्व की दृष्टि से देखें तो कमलेश्वर जी का यह उपन्यास एक सरस उपन्यास है। क्योंकि भाषिक प्रयोग की दृष्टि से उपन्यास में प्रस्तुत वाक्य रचना और शब्द प्रयोग व्याकरणिक नियमों के साथ साथ मृदुता, कोमलता, कठोरता, कारूण्य, प्रेम, झल्लाहट जैसे मानवीय स्थाई भावों को प्रगट करके अपना अलग-सा प्रभाव निर्माण करते हैं। यह प्रभाव पाठकों पर इतनी प्रखरता से पडता है, कि हर पाठक सहज गति से लेखक द्वारा निश्चित किए गए साध्य तक पहुँच जाता है। मानो अपेक्षित प्रभाव निर्माण करने के लिए कमलेश्वर जी ने एक सफल प्रयोक्ता के रूप में पूरे उपन्यास में भाषा का सही प्रयोग किया है। उसमें कहीं भी जटिलता नहीं है ; बल्कि उसमें एक अलग प्रकार की सादगी है, जिसके द्वारा उन्होंने अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। इससे यही प्रमाणित होता है कि कमलेश्वर ने आलोच्य उपन्यास में भाषा प्रयोग को साध्य न मानकर केवल साधन ही माना है। इसीलिए उनकी भाषा औपन्यासिक भाषा तत्त्व के दायरे में रही है। अंततः इतना ही कहा जा सकता है कि 'अनबीता व्यतीत'' उपन्यास में कमलेश्वर द्वारा प्रयुक्त भाषा प्रवाहमय (गतिशील), तथ्याभिव्यंजक, प्रौढतापूर्ण, प्रभावात्मक, काव्यात्मक, सजीव, भावमय, और प्रसादमय रही है।

2. ''अनबीता व्यतीत'' की शैली :-

भारतीय साहित्य शास्त्र में आचार्य वामन ने 'विशिष्ट पद रचना' को रीति कहा है; औपन्यासिक तत्त्व विधान में उसे ही 'शैली तत्त्व' कहा जाता है। वर्तमान आचार्यों के अनुसार प्रत्येक प्रकार की साहित्यिक कृतियों में शैली तत्त्व का विशेष महत्त्व होता है। उनके अनुसार शैली ही एक ऐसा तत्त्व है, जिसमें रचनाकार के स्वतंत्र व्यक्तित्त्व की, उसके वैशिष्ट्य की झलक मिलती है। रचनाकार की यह झलक अन्य विधाओं की तुलना में उपन्यास विधा में अधिक प्रखरता से प्रगट होती है, क्योंकि उपन्यास विधा ही एक मात्र ऐसी विधा है, जिसमें मानवीय जीवन की समग्रता का एक सजीव चित्र प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए उपन्यास लेखन में शैली तत्त्व को सभी ने महत्त्वपूर्ण माना है। आधुनिक उपन्यासों की सफलता का पूरा श्रेय इसी शैली नामक तत्त्व को दिया जाता है, क्योंकि उपन्यासकार अपने उपन्यास में जिस विषय की प्रस्तुति करना चाहता है, उसकी प्रभावशाली अभिव्यंजना के लिए वह जितने प्रकार की प्रणालियों का उपयोग करता है, वे सब शैली के अंतर्गत आती हैं। इस दृष्टि से देखें, तो शैली तत्त्व उपन्यास विधा का एक ऐसा अनिवार्य तत्त्व है, जिसमें उपन्यास के अन्य सभी तत्त्वों का नियोजन किया जाता है।

इस बात को अधिक स्पष्ट करने हेतु **डॉ. भोलानाथ तिवारी** जी ने एक स्थान पर लिखा है कि ''शैली का अर्थ सामान्यतः मात्र'भाषा शैली' समझा और लिया जाता है। वस्तुतः शैली का क्षेत्र काफी विस्तृत है। कथानक की रूपरेखा बनाना, घटनाओं को विशिष्ट क्रम देना, मुख्य कथानक तथा गौण कथानक का संयोजन करना, पात्रों का चयन करके उन्हें अलग-अलग भूमिकाएँ देना, समस्याओं, पात्रों तथा बाह्य परिवेश आदि का चित्रण करना, कहानी या उपन्यास का नामकरण करना; कृति के लेखन में अपने लक्ष्य को अभिव्यक्ति देना तथा समवेततः भाषा-शैली इन सभी की शैली होती है। और इसीलिए किसी की शैली पर विचार करने का अर्थ है, समग्रतः इन सभी दृष्टियों से उसकी शैली पर विचार करना।'' (पृ.79,

'व्यावहारिक शैली विज्ञान') तिवारी जी द्वारा प्रस्तुत इस मत से यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि शैली तत्त्व उपन्यास की दृष्टि से वह अनिवार्य तत्त्व है, जिस पर पूरे उपन्यास की मौलिकता निर्भर रहती है। इसलिए हर उपन्यासकार अपनी रचना में एक स्वतंत्र शैली का निर्माण करता है। अर्थात् प्रत्येक लेखक अपनी शैली का निर्माण स्वयं करता है। शायद इसी कारण उपन्यास विधा में विविध प्रकार की शैलियों का प्रचलन हुआ है। उनमें से प्रमुख प्रकार हैं- कथात्मक या वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक या आत्मनिवेदनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, फ्लैश बॅक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, डायरी शैली, आँचलिक शैली, नाटकीय या संवाद शैली, ऐतिहासिक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, भावात्मक शैली आदि। उपन्यास कृतियों में दिखाई देने वाली ये विविध शैलियाँ युगीन आवश्यकता के अनुसार विकसित हुई हैं। कमलेश्वर जी द्वारा प्रस्तुत उपन्यास'अनबीता व्यतीत' में इनमें से अधिकांश शैलियों के दर्शन होते हैं, जिनका सामान्य परिचय कुछ इस प्रकार दिया जा सकता है..

कथात्मक या वर्णनात्मक शैली :-

उपन्यास लेखन की परंपरागत पद्धतियों में सबसे अधिक प्रचलित यही शैली है । विश्व के अधिकांश उपन्यास इसी शैली में लिखे गए हैं। इस शैली के उपन्यासों में घटनाओं, पात्रों तथा स्थितियों का कथात्मक वर्णन लेखक तृतीय पुरूष के रूप में करता है। इस प्रकार की शैली में लेखक को सर्वज्ञता की दृष्टि अपनाकर चलना पडता है। इस शैली को अपनाने वाला लेखक अपने विचारों, मान्यताओं और अपने जीवन दर्शन को अधिक स्वतंत्रता से प्रस्तुत करता है। वह कथानक के विकास को, वातावरण की निर्मिति को, कथोपकथन की सहजता और सजीवता को, चारित्रिक विकास को और अपने उद्देश्य को इस शैली के माध्यम से अत्यंत व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करता है। अर्थात् उपन्यासकार अपनी रचना में भूत, वर्तमान तथा भविष्य से संबंधित सभी घटनाओं का यथासंभव सम्यक वर्णन एवं विवेचन इसी शैली को अपनाकर अधिक सफलता से करता है।

इस शैली के उपन्यासों में कथात्मकता की पद्धति सीधी भी हो सकती है और विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक भी। इनमें से सीधी पद्धति में उपन्यासकार का काम बहुत आसान होता है। इसमें वह उपन्यास के लिए नियोजित की गई घटनाओं, पात्रों तथा वातावरण आदि को बिना किसी व्यंजना या संकेत से सीधे-सरल ढंग से प्रस्तुत करता है। विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक पद्धति में नियोजित सभी प्रसंगों, कथ्यों तथा विचारों को प्रगल्भ आयामों द्वारा प्रस्तुत करके उसे कलात्मक ढंग से प्रगट किया जाता है। वस्तुतः ये दोनों पद्धतियाँ संसार की सभी भाषाओं में लिखे गए उपन्यासों में कमअधिक मात्रा में उपन्यासकारों के द्वारा प्रयुक्त की जाती हैं।

आलोच्य उपन्यास 'अनबीता व्यतीत' में कमलेश्वर ने इस शैली को अधिक मात्रा से प्रयुक्त किया है। उन्होंने इस उपन्यास के लिए नियोजित घटनाएँ, प्रसंग, पात्र, वातावरण, कथोपकथन सहज सरल पद्धति से प्रस्तुत करके उपन्यास की प्रभावोत्पादकता बढ़ाई है। उपन्यास में वर्णित हर पात्र की अपनी स्वतंत्र जीवन कहानी होकर भी वह केंद्रीय कथानक के साथ एकसंघ होकर जुड जाती है। कथोपकथन, वातावरण आदि

दृष्टि से भी यही शैली अपनायी हुई नजर आती है। कुलमिलाकर हम कह सकते हैं कि कमलेश्वर जी ने प्रस्तुत उपन्यास में कथात्मक या वर्णनात्मक शैली का बडी ही कुशलता से प्रयोग किया है।

♦ **आत्मनिवेदनात्मक शैली :-**

उपन्यास विधा में अत्यधिक प्रिय शैली के रूप में यह शैली प्रचलित है। हिंदी के अधिकांश समीक्षक इसे ही आत्मकथनात्मक शैली मानते हैं। ऐसे उपन्यासों में विशेष प्रभावोत्पादकता एवं गतिशीलता परिलक्षित होती है। इन्हें पढ़ते समय पाठक चरित्रों के साथ अत्यधिक तादात्म्य प्रस्थापित करता है। फलतः उपन्यास में प्रभावात्मकता तथा भावमयता आ जाती है। इस शैली की और एक खास विशेषता यह होती है कि इसमें उपन्यास के सभी पात्र कथानक की आवश्यकता और परिस्थितियों की जरूरत के अनुसार अपना-अपना आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हैं, किंतु उनके बीच संबंधों की एक सशक्त कडी होती है। इन्हीं अलग-अलग कडियों से उपन्यास का क्रमिक विकास होता है।

प्रस्तुत उपन्यास ''अनबीता व्यतीत'' में कमलेश्वर ने इस शैली का बड़ी ही कुशलता से प्रयोग किया है। उपन्यास में वर्णित नानी माँ, नाना महाराज, समीरा, गौतम तथा दिव्या से लेकर छोटे-छोटे गौण पात्रों तक सभी अपना-अपना निवेदन प्रस्तुत करते हैं। उन सबके निवेदनों में संबंधों की एक कड़ी है, और वह कड़ी है ''किसी भी तरह की मृत्यु का विरोध करके दुःख की जगह करूणा, दर्द की जगह दया और सह-अस्तित्त्व के लिए जीवन का स्वीकार करना।'' इन्हीं कडियों से इस उपन्यास का कथानक विकासात्मक गतिशीलता अपनाकर प्रभावोत्पादकता निर्माण करने में सफल हुआ है।

♦ **आँचलिक शैली :-**

आधुनिक उपन्यासों में फणीश्वरनाथ रेणु ने इस शैली को प्रथम बार बड़ी ही सफलता से प्रयुक्त किया। उनके बाद इसे हिंदी उपन्यासों में कई लेखकों ने अपनाया। इस शैली में मुख्य रूप से स्थानीय चित्रण पर अधिक बल दिया जाता है। नागरी सभ्यता से कटकर कस्बों एवं गावों के मनोहारी भूमिखंड में अपनी विशिष्ट संस्कृति, रीति-रिवाज, आचार-विचार तथा सहज-सुंदर स्थानीय बोली को लेकर जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को विशाल फलक पर अंकित करने में यह शैली प्रयुक्त की जाती है। इसके माध्यम से उपन्यास में वातावरण की निर्मिति की जाती है। समस्त परिवेश ही नायक के रूप में चित्रित होने के कारण पूरा उपन्यास प्रभावी हो जाता है। लोकभाषा के सफल प्रयोग के कारण प्रभाव की दृष्टि से यह शैली लोककथात्मक शैली जैसी ही प्रतीत होती है।

कमलेश्वर के 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में आँचलिक शैली के दर्शन बार बार होते हैं। वैसे तो इस उपन्यास में प्रयुक्त भाषा आँचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त होने वाली लोकभाषा नहीं है; किंतु इसमें आँचलिक शैली जैसा ही स्थानीय भूमिखंड का चित्रण है। अरावली पर्वतमाला की गोद में एक ऊँची समतल सपाट पहाडी पर बने सुमेरगढ का वर्णन, ऐतिहासिक दुर्गनुमा विशाल कोठी का वर्णन, नीली झील का प्राकृतिक वर्णन, रतनपुर का वर्णन उपन्यास के कथानक में आँचलिक शैली का प्रभाव निर्माण करता है। उपन्यास में वर्णित नीली झील ने मानो नायक का स्थान लिया है; क्योंकि उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक वहाँ

का परिवेश कमलेश्वर ने बार-बार चितारा है। नीली झील के माध्यम से सुमेरगढ जैसे स्थानीय भूखंड का कमलेश्वर द्वारा किया गया मनोहारी चित्रण उपन्यास में प्रयुक्त आँचलिक शैली की सजीवता को भली-भाँति प्रमाणित करता है।

- **फ्लॅश बॅक शैली (पूर्वदीप्ति पद्धति) :-**

उपन्यास लेखन की यह एक महत्त्वपूर्ण शैली है। इस शैली में उपन्यासकार घटनाओं तथा प्रसंगों को तत्काल न दिखाकर किसी विशिष्ट पात्र की स्मृतियों द्वारा दिखाता है। उपन्यास में इस शैली का प्रयोग दो ढंग से किया जाता है। इनमें से पहले ढंग में उपन्यास के कथानक के प्रारंभ अथवा अंत में किसी पात्र की स्मृतियाँ जाग्रत करके कुछ समय के लिए वह पात्र अपने अतीत की स्मृतियों में खो जाता है और दूसरे ढंग में कथानक के प्रारंभ में वह घटना या प्रसंग पूरी तरह से उपस्थित किया जाता है और बाद में फिर मूल कथानक में आवश्यतानुसार उसी पात्र की स्मृति द्वारा उसे उपस्थित किया जाता है। इन दोनों पद्धतियों द्वारा उपन्यासकार फ्लॅश बॅक शैली के माध्यम से पात्रों के दोहरे या द्विधा मनोभावों को सरल और सहजता से दिखाता है। इसी शैली द्वारा उपन्यासकार अपने उपन्यास में प्रभावात्मकता, सरसता, तर्कशुद्धता के साथ-साथ कथ्य और शिल्प में भी आकर्षण निर्माण करता है।

प्रस्तुत उपन्यास में इस शैली का प्रयोग कमलेश्वर ने कई बार किया है। जैसे -काकातुओं की हत्या का प्रसंग नाना महाराज को आगे कई बार याद आता है, नानी माँ के जीवन की कुछ पूर्व घटनाएँ उनकी मृत्यु के बाद समीरा को, नाना महाराज को याद आती हैं। गौतम द्वारा समीरा को हुआ अनायास स्पर्श समीरा को बार बार याद आता है। रतनपुर के फार्म हाऊस में रखा रेनबो लौरीकत, जिसके पैरो में लाल घुंघरू पहनाए थे। उस रत्तीवाले मूंगा को देखकर समीरा को जो याद आती है वह फ्लैश बॅक शैली में चितारी गई है। दिव्या की आत्महत्या के आभास के बाद उसके संबंध में चितारी गई घटनाएँ, समीरा की मृत्यु के बाद गौतम के माध्यम से, गौतम की पूर्व प्रेमिका दीपाली के संबंध में चितारी गई घटनाएँ, विविध प्रसंग इसी फ्लॅशबॅक शैली की सहायता से प्रस्तुत किए गए हैं। इन प्रसंगों के अतिरिक्त कई घटनाएँ और प्रसंग प्रस्तुत उपन्यास में फ्लॅश बॅक शैली की सहायता से प्रस्तुत हुए हैं। इससे यह स्वीकारना पडता है कि प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर जी ने इस शैली का प्रयोग बड़ी ही सरलता और सहजता से किया है। इस शैली के सरस प्रयोग से उपन्यास के कथानक में एक अलग ही प्रभावात्मता निर्माण हुई है। इससे पात्रों की मनःस्थिति का भी परिचय हो जाता है।

ऊपर लिखित विविध शैलियों के अतिरिक्त हिंदी उपन्यास क्षेत्र में ऐतिहासिक शैली, पत्रात्मक शैली, दैनंदिनी (डायरी) शैली, नाटकीय शैली, मिश्रित शैली, आत्मकथात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, भावात्मक,संवादात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, आदि शैलियों के प्रयोग उपन्यासकारों द्वारा अपनी उपन्यास रचनाओं में आज कल बड़ी मात्रा में हो रहे हैं। इन सभी शैलीयों का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में कमलेश्वर ने बड़ी ही कुशलता से किया है।

3.3.8 'अनबीता व्यतीत' : उद्देश्य :-

उपन्यास का प्रमुख संगठन-तत्त्व उसका उद्देश्य होता है। उपन्यास का उद्देश्य जीवन की झाँकी देकर उसकी व्याख्या करना होता है। सामाजिक तथा पारिवारिक चित्रणों द्वारा हमारे ह्रदय को आंदोलित करना तथा आदर्श चरित्रों द्वारा संस्कार करना भी उपन्यासकार का उद्देश्य होता है।

इस दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य की ओर देखते हैं, तो पहला उद्देश्य है पर्यावरण रक्षण। खास करके प्रकृति के अत्यंत मासूम पशु-पक्षियों के रक्षण की दृष्टि से इस उपन्यास के पात्र कार्यरत दिखाई देते हैं। प्रकृति की मासूम, खूबसूरत धरोहर-वन्यजीव संपत्ति की रक्षा करना आज के युग की माँग है। पर्यावरण की रक्षा आज की आवश्यकता है। इस दृष्टि से आरंभ में ही महारानी राजलक्ष्मी (नानी माँ) की कोमल, संवेदनशील भावनाएँ व्यक्त होती हैं, जो उपन्यास की केंद्रीय समस्या को अभिव्यक्त करती हैं -

'हे भगवान! जब तूने इन जीव-जन्तुओं को जीवन दिया है, तो इन्हें इतनी शक्ति भी देता कि ये बेचारे अपने जीवन की रक्षा कर पाते। तेरी दी धरोहर को उन निर्दयी हाथों से बचा पाते, जो तूने इन्हें दी थी। विचित्र है तेरी माया-जीवन-मृत्यु का यह दु:खदायी संयोग-काश इन्सान इसे समझ पाता।'

मानवीय संवेदना के दया और करूणा आदि भावनाओं प्रतीक के रूप में प्रस्तुत उपन्यास के अन्य पात्रों में समीरा, दिव्या तथा गौतम हैं। जयसिंह भी पक्षियों की जानकारी रखता है; लेकिन उसमें उसका आर्थिक स्वार्थ छिपा हुआ है। सरकारी अफसर गौतम भी प्रकृति प्रेमी है। उसकी बातों में सह अस्तित्त्व की संकल्पना स्पष्ट होती है। दिव्या से वह कहता है, ''क्षमा करें दिव्या जी, अगर आप मेरी आँखों से देखें, तो इस नीली झील के सौंदर्य को इन घाटों, दीप स्तंभों और मंदिरों ने नहीं बढ़ाया है, बल्कि इस झील को सुंदर बनाया है, तरह-तरह के इन पक्षियों ने ..... जिनमें सुदूर उत्तरी देशों से आए ये पक्षी भी शामिल हैं, जो उत्तरी प्रदेशों की सर्दी से बचने के लिए यहाँ आते हैं ।आपने ठीक ही कहा ..... यह झील ही इस सुमेरगढ़ की सबसे अधिक मूल्यवान धरोहर है।''

उसके ये विचार उपन्यास के अंत में और अधिक उभरकर आते हैं, जब वह पंछियों का धर्मशाला बनवाता है, तथा जब वह सुनता है कि नीली झील पर राजासाहब की फीस भरने के बाद शिकार की आज़ादी दी गई है। गौतम के सर्वे रिपोर्ट की प्रामाणिकता की उसके चीफ रेड्डी साहब प्रशंसा करते हैं और पर्यटन स्थल के रूप में नीली झील को विकसित किया जाएगा ऐसा जब वे बताते हैं, तो गौतम स्पष्ट रूप में उन्हें कह देता है, ''सर! झील वाले इलाके को टूरिस्टों के लिए डेवलप जरूर किया जाए, लेकिन पिंजरों में कैद मुर्गाबियों और तीतर वगैरह को दिखाकर यह न पूछा जाए कि तुम किस पंछी का गोश्त खाना चाहोगे ... और फिर हांगकांग, सिंगापुर की तरह उसे ही मार कर उसका मांस टूरिस्ट की प्लेट में पेश न कर दिया जाए।''

इस तरह गौतम, समीरा, दिव्या, नानी माँ जैसे पात्र अपने वैयक्तिक सुख-दु:ख के लिए संघर्ष करने के अतिरिक्त पक्षियों की उन्मुक्त उड़ान तथा उनके प्राकृतिक अधिकार के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। पक्षियों के सामूहिक कलरव में इन्हें ऑर्केस्ट्रा का संगीत सुनाई देता है। दूसरी ओर बाजारवाद तथा

व्यावसायिकता को अपनाकर स्वार्थी प्रवृत्ति से इन पंछियों का व्यापार करके धन कमाने वाले लोग जयसिंह, नरेंन्द्र सिंह, सुरेन्द्रसिंह आदि हैं। उनके इस प्रवृत्ति के विरूद्ध जनमानस तैयार करना भी प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य दिखाई देता है। जयसिंह के इन विचारों का समीरा ड़टकर मुकाबला करती है। समीरा जीवन पर्यन्त पशु-पक्षियों के प्राकृतिक अधिकार की लड़ाई लड़ती रहती है। अपने पिता की नाराज़गी सहती है, पति द्वारा उपेक्षित होती है; लेकिन अपने दिल के मोह, ममता और करूणा से पंछियों की रक्षा करती है। उसके इस रूप द्वारा लेखक ने मानो, भारतीय सिद्धान्त (दया, करूणा और सह अस्तित्त्व-अहिंसा) का पुनरूच्चार किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रियासतों के पतन के कारण सामन्ती प्रवृत्ति के लोगों की मानसिकता का भी चित्रण किया है। रियासत की घटती आमदनी के कारण विलासी जीवन जीने के आदि ये लोग धन की भूख से अंधे हो गए हैं। धन की भूख ने इनकी मान-मर्यादा तथा धर्म सब कुछ हर लिया है। अपनी झूठी शान-शौकत पूरी करने के लिए वे लोकतांत्रिक मूल्यों को मरोड़ देते हैं। लेखक ने इन लोगों की जालसाजी कितनी विघातक होती है, इसे भी यहाँ चित्रित किया है। नगरपरिषद का कारोबार, अधिकारियों के कामकाज़ में अनुचित हस्तक्षेप, रिश्वत आदि के द्वारा सामंती प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। ये लोग इतने निम्न स्तर पर उतरते हैं कि उससे पर्यावरण तथा सांस्कृतिक वातावरण को भी प्रदूषित कर देते हैं। गौतम जैसे नेक अफसर को अनेक यातनाएँ देते हैं तथा अपनी पत्नी की हत्या करने तक बढ़ जाते हैं। खुलेआम पत्नी की हत्या करने वाला जयसिंह पैसों के दबाव से इस मामले को रफादफा कर देता है। राजनीति तथा सामाजिकता में इसतरह की स्थिति आज खुलेआम दिखाई देती है, जिससे सामाजिक न्याय की धज्जियाँ उड़ रही हैं, इसकी ओर भी यहाँ संकेत किया है।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास द्वारा लेखक ने अहिंसा के मूल्य को फिर एक बार महत्त्व दिया है। सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक समस्याओं को स्वाभाविक दृष्टि से यहाँ अंकित किया है। पक्षी प्रेम को अत्यंत मार्मिकता एवं सघनता से व्यक्त करने वाले पात्रों द्वारा वन्यजीव पक्षियों की पीड़ा तथा उनके जीवन को संकटमय बनाने वाले लोगों की प्रवृत्ति का उद्घाटन किया है और साथ ही इस कटू यथार्थ के विरोध में जीवन का सही रास्ता चुनने वाले, सहअस्तित्त्व का मंत्र जपने वाले पात्रों द्वारा पंछियों के लिए धर्मशाला बनवाकर उनकी जीत भी दिखाई है।

3.4 सारांश :-

1. प्रस्तुत उपन्यास प्रमुखतः पर्यावरण की रक्षा, भूतदया, तथा पक्षीप्रेम को उजागर करता है।
2. मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक सहयोग एवं सद्भाव को स्पष्ट करने के साथ-साथ अहिंसा धर्म मनुष्य का परमधर्म है, यह दिखाता है।
3. आधुनिक युग का मनुष्य स्वार्थी एवं अपनी ही सुख-सुविधाओं में व्यस्त है। मनुष्य ने पर्यावरण विनाश द्वारा अपने ही अस्तित्त्व के लिए खतरा मोल लिया है।

4. प्रस्तुत उपन्यास में अत्यंत मासूम वन्य जीव पक्षियों की पीडा तथा उनके जीवन को संकटमय करने वाले एवं उनके संहार को ही अपनी जीविका का साधन बनाने वाले व्यक्तियों और परिस्थितियों के कटू यथार्थ को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है।

5. यह उपन्यास पक्षियों की दारूण मृत्यु परंपरा के अंधे अभियान से मुक्ति का एक आख्यान है।

6. सांमतशाही को बनाए रखने के लिए गैरमार्ग अपनाने वाले राजघरानों की पोल खोल दी है।

7. समीरा पक्षियों को बचाने के लिए अपना बलिदान देती है। वह चाहती है, राजा-महाराजा, राजकुमारी, आदि अहिंसा को परमधर्म मानें और जीव-जंतुओं और प्रजा की रक्षा करना उनका प्रधान धर्म बनें।

8. इस उपन्यास के माध्यम से पक्षियों की विविध जातियाँ, प्रकृति चित्रण, पुरातात्त्विक विभाग के महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

9. गौतम के माध्यम से कर्तव्य के प्रति पूर्ण निष्ठावान, देशप्रेमी, पक्षी-प्रेमी एवं भावात्मक प्रेमी का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

10. बाजारवाद तथा व्यावसायिकता से आक्रांत मनुष्य को इसमें आगाह किया है कि समय रहते वह यदि पर्यावरण के प्रति सचेष्ट नहीं होगा, तो उसका जीना दूभर हो जाएगा।

3.5 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न :-

अ) निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से सही पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. महारानी नानी माँ का नाम .... है।

   क) विजयलक्ष्मी ख) श्रीलक्ष्मी ग) जयलक्ष्मी घ) **राजलक्ष्मी**

2. कुँवर जयसिंह .... रियासत से हैं।

   क) अलीगढ़ ख) देवगढ़ ग) **रतनपुर** घ) सुमेरगढ़

3. समीरा के पिता का नाम कुँवर .... हैं।

   क) सुरेन्द्र सिंह ख) जयेन्द्र सिंह ग) विक्रम सिंह घ) **नरेन्द्र सिंह**

4. महाराज सुरेन्द्र सिंह की रियासत का नाम .... है।

   क) रतनगढ़ ख) देवगढ़ ग) **सुमेरगढ़** घ) अरावली

5. उपन्यास में तुलसीदास के दोहे में वर्णित पंछी का नाम .... है।

   क) **खंजन** ख) बुलबुल ग) सरपपक्षी घ) काकातुआ

6. समीरा के पुत्र का नाम .... है।

   क) **विक्रम** ख) नरेन्द्र ग) जयसिंह घ) गौतम

7. गौतम की माँ .... के विचारों से प्रभावित हैं।

क) **गांधी जी** ख) नेहरू जी ग) आंबेडकर जी घ) फुले जी

8. समीरा ने बचाए रैनबो लौरिकत पंछी का नाम .... रखा था।

क) मिंकू ख) **पिंकू** ग) चिंकू घ) रिंकू

9. पक्षी विशेषज्ञ का नाम .... हैं।

क) मनमोहन ख) प्यारे मोहन ग) मदनमोहन घ) **विश्वमोहन**

10. मुर्गाबियों के डिब्बाबंद मीट का प्लांट लगाने के लिए जयसिंह ने ...... कंपनी के साथ साझेदारी की थी।

क) **इटेलियन** ख) आस्ट्रेलियन ग) साइबेरियन घ) इंडियन

ब) निम्नांकित विकल्पों में से चुनकर उचित मिलान कीजिए।

1. 1) महाराज सुरेंद्र सिंह की बेटी — अ) महारानी राजलक्ष्मी
 2) महाराज सुरेंद्र सिंह की नातिन — ब) महारानी सुधालक्ष्मी
 3) महाराज सुरेंद्र सिंह के दामाद — क) कुँवर महेंद्र सिंह
 ड) विजयालक्ष्मी
 इ) कुँवर नरेंद्र सिंह
 ई) समीरा

2. 1) काकुतुआ — अ) टॅराटेल
 2) ध्रुवकुमारी — ब) तोते की नस्ल का शाही तोता
 3) खंजन पक्षी — क) आर्किटिक टर्न
 ड) वैराटेल
 इ) पॅसिफिक टर्न

क) निम्नांकित वाक्यों का सही या गलत में चुनाव कीजिए।

1. महाराज सुरेंद्र सिंह की रियासत का नाम रतनगढ़ है।
2. समीरा की सहेली का नाम दिव्या है।
3. महारानी राजलक्ष्मी ने काकातुआ पंछियों की जोड़ी पाली थी।
4. पक्षी विशेषज्ञ का नाम प्यारे मोहन है।
5. मास्टर रमानाथ दिव्या के पिता हैं।
6. महारानी राजलक्ष्मी का मायका देवगढ़ है।

7. गौतम की माँ नेहरु जी के विचारों से प्रभावित हैं।
8. महाराज सुरेंद्र सिंह के दीवान का नाम तुलसीदास है।
9. पक्षी विशेषज्ञ समीरा को 'आनंद पंछी निहारन का' नाम की किताब देते हैं।
10. नानी माँ दिव्या को 'चिड़िया खाने वाली राजकुमारी' की कहानी सुनाती है।

3.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :–

- काकातुआ : अफ्रिका के खास तोते, एक तरह का उजला बडा तोता, जिसके सिरपर चोटी होती है। (तोते की नस्ल का शाही तोता)
- बतख : हंस की जाति का एक जल पक्षी।
- जल मुर्गाबिया : मुर्गे की जाति का एक पक्षी, जलमुरगा।
- साइबेरियन सारस : खूबसुरत पंखों वाले सुंदर पक्षी
- वैराटेल : खंजन पक्षी
- आर्किटिक टर्न : ध्रुवकुमारी
- क्रेस्टेड कुक्कू : शिखी चातक (दक्षिण अफ्रीका से आने वाले)
- अंजन: जिसके बाल काले हों ऐसा पक्षी
- खंजन: काले रंग की एक प्रसिद्ध चंचल चिडिया
- भुजंगा : काले रंग की एक चिडिया
- तीतर : मुर्गी की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।
- रेनबो लौरिकत : इंद्रधनुषी तोता
- लिम्पकिन : सारस
- पीफाइल : मोर की तरह सतरंगा पंछी
- टिटिहरी : पानी के किनारे रहने वाली एक चिड़िया
- चकोर : तीतर जाति का एक पक्षी, जो चंद्रमा का प्रेमी माना जाता है।
- बटेर : तीतर जाति की एक छोटी चिड़िया
- धनेश : एक पक्षी
- चातक : पपीहा पक्षी
- चकवा : जलाशयों के किनारे पाया जाने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी, जो रात में अपने जोड़े से अलग हो जाता है।

- सरीसृप : जमीन पर रेंगने वाले जीव
- पंडुक : फाख्ता पक्षी।

3.7 स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :–

अ)	1. राजलक्ष्मी	2. रतनपुर	3. नरेंद्रसिंह	4. सुमेरगढ़
	5. खंजन	6. विक्रम	7. गांधी जी	8. पिंकू
	9. विश्वमोहन	10. इटेलियन		
ब)	1) 1) ड	2) ई	3) इ	
	2) 1) ब	2) क	3) ड	
क)	1. गलत	2. सही	3. सही	4. गलत
	5. गलत	6. सही	7. गलत	8. गलत
	9. सही	10. गलत		

3.8 स्वाध्याय :–

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. कमलेश्वर जी के जीवन–परिचय पर संक्षेप में प्रकाश ड़ालिए।
2. महाराज सुरेंद्र सिंह की चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास का सारांश लिखिए।
4. समीरा की सहेली दिव्या का चरित्र–चित्रण कीजिए।
5. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास के आशय को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
6. महारानी राजलक्ष्मी और समीरा के गहरे रिश्ते पर प्रकाश डालिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न :–

1. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास की कथावस्तु लिखिए।
2. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास की नायिका 'समीरा' का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में गौतम 'पंछियों की धर्मशाला' क्यों बनवाता है?
4. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में संवादों के माध्यम से कथावस्तु गतिशील बनी है' स्पष्ट कीजिए।
5. पुरातत्त्व विभाग के सरकारी अफसर गौतम का चरित्र चित्रण कीजिए।

6. 'महारानी राजलक्ष्मी तथा समीरा में संवेदनशीलता और प्रकृति तथा पशु-पंछियों के प्रति मानवीय करूणा है' - स्पष्ट कीजिए।

7. प्रस्तुत उपन्यास के संवाद और भाषाशैली गंभीर, सशक्त, रोचक एवं प्रसंगानुकूल है' स्पष्ट कीजिए।

8. 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

क) निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. ''वैसे तो हम सभी इन्हीं राजघरानों के हैं, लेकिन इन घरानों के मर्दों ने जिंदगी जीना सीखा ही नहीं... इन्हें सिर्फ एक ही चीज आती है... तरह-तरह से जिंदगी को जलील करना...।''

२. ''यह झूमर हमारे खानदान की पुरानी निशानियों में से एक था। हमारे परदादा इसे बेल्जियम से खरीद कर लाए थे। महारानी साहिबा, आपके काकातुआ ने हमारे परदादा की अनमोल निशानी चूर-चूर कर ड़ाली।''

३. ''महाराज, किसी की जान लेना तो बहुत आसान है, लेकिन मुश्किल है किसी को जिंदगी देना।''

४. ''नानी माँ, मेरी और दिव्या की राय है कि आप कुछ दिन बड़े नाना साहब यानी कि अपने मैके चली चलें। यहाँ जाने पर अबोहवा तो बदल ही जाएगी। काकातुओं की याद भी कम हो जाएगी...''

५. ''आप तो परियों की कहानी दाहरा रही है महारानी साहिबा। हर इन्सान की जान उसके शरीर में रहती है, किसी पंछी में नहीं।''

६. ''सरकार यह सब पुरानी धरोहर को बचाने के नाम पर कर रही है। आला वकील अपनी सुमेरगढ़ रियासत के भारत में विलीन होने के कानूनी प्रावधानों का अध्ययन भी कर रहे हैं, ताकि जरूरत पड़ने पर बाकायदा मुकदमा भी लड़ा जा सके...।''

७. ''ऐ... तुम यहाँ क्या कर रहे हो। तुम्हें पता नहीं नीली झील की मचलियों को मारने की सख्त मनाही है।''

८. ''लेकिन गौतम बाबू, सुमेरगढ़ राज्य की सबसे अधिक पुरातन, ऐतिहासिक और मूल्यवान स्मारक है नीली झील। सुमेरगढ़ राज्य की भव्यता भले ही नष्ट हो गई हो, लेकिन सुमेरगढ़ को मिला प्रकृति का यह उपहार कभी भी नष्ट नहीं होा....।''

९. ''इससे कौन निकार कर सकता है... मनुष्य ने ईश्वर के रूप में स्वयं अपने लिए एक आदर्श पैदा किया है... इसके बावजूद मनुष्य, मनुष्य ही रहना चाहता है, वह ईश्वर नहीं बनना चाहता।''

१०. ''तुमने यह क्या किया? लाखों रूपयों पर पानी फेर दिया। तुम यहाँ आई क्यों? तुमने इन परिन्दों को आजाद क्यों किया?''

११. ''नहीं! आप मेरे पिता नहीं हो सकते... आप तो चिड़ीमारों से भी गए गुजरे हैं... हत्यारे हैं... नहीं... नहीं आप मेरे पितासाहब नहीं हो सकते...! अपने मुझे मारा...।''

१२. ''हम इस लड़की को बर्दाश्त नहीं कर सकते। महारानी साहिबा खुद तो आराम की नींद सो गई। लेकिन इसे ऐसी शिक्षा दे गई कि इसने हम लोगों की नींद हराम कर दी।''

१३. ''बेहतर यही होगा कुँवर जी कि आप अपने गुस्से पर काबू पाइए... और हमारी सलाह है कि पंछियों के एक्स्पोर्ट के इस कारोबार को भूलकर किसी दुसरे कारोबार के बारे में सोचिए।''

१४. ''यह सब तो ठीक है, लेकिन सरकार को इन पुराने खंडहरों और हमारी जमीन-जायदाद की छानबीन कराने की क्या जरूरत पड़ गई। आखिर सरकार ने यह कदम क्यों उठाया है। इससे सरकार को क्या फायदा होगा?''

१५. ''मैंने गौतम बाबू से बातचीत की थी कि कुछ ले-देकर हमारी पुरानी इमारतों पर हमारा पुश्तैनी हक और कब्जा दिखा दें, लेकिन उसने साफ इन्कार कर दिया।''

१६. ''महाराज... मैं खुद समझ नहीं पा रहा कि इस गौतम का क्या इलाज किया जाए? रिश्वत को वह गैर-कानूनी नहीं, सामाजिक जुर्म मानता है। अगर हम इसकी कोशिश करके ट्रांसफर करवा भी दें, तो इसकी जगह जो आएगा, वह भी ऐसा ही नहीं होता, इसका क्या भरोसा?''

१७. ''आपकी तरह ही मुझे भी झीलें और पहाड़ियाँ बहुत पसंद हैं; खासतौर पर इनमें रहने वाले पशु-पक्षियों से तो मुझे बेहद प्यार है समीरा जी।''

१८. आज झील पर साइबेरियन सारस आए हुए हैं। आइए आपको दिखाऊँ? साइबेरियन सारस हमारे देश के सारसों से बड़े... खूबसुरत पंखों वाले और ज्यादा सुंदर होते हैं।

१९. ''मैंने देशी-विदेशी पशु-पंछियों के बारे में काफी कुछ पढ़ा है। चलिए, मैं शायद आपको बता पाऊँ कि वे पंछी कौन हैं और किस देश से आए होंगे?''

२०. ''हमें सिर्फ तुम्हारी नौजवानी का ख्याल हैं बेटे-फिर यह भी सुना है कि तुम अपनी माँ के इकलौते बेटे हो। उसका एक मात्र सहारा तुम ही हो।''

२१. ''मेरी माँ उस दिन भी नहीं रोयी थी, जिस दिन देश की आजादी के आंदोलन में भाग लेने के जुर्म में मेरे पिता को भरी जवानी में फांसी पर लटका दिया गया था और मुझे विश्वास है कि सही काम करते हुए अपने इकलौते बेटे की मौत पर भी उसकी आँखें गीली नहीं होंगी।''

२२. ''अरे दीवान जी, कागजों पर लिखी रिपोर्ट है, कोई खजाना तो है नहीं, जिसे हथियार बन्द गार्ड दिल्ली पहुँचाने जाएँगे।''

२३. ''मैं जानता हूँ कुँवर जी। वैसे तो महाराज के नाम का दबदबा आज भी कायम है। पुलिस और कानून हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।''

२४. ''अगर आप चाहते हैं कि मैं यही रहूँ -जिंदगी भर आपके पास और साथ रहूँ तो यह टेनरी का धन्धा बंद करना पड़ेगा आपको।''

२५. ''समीरा! यह मुमकिन नहीं होगा। मैं मर सकता हूँ मगर हार नहीं सकता।''

२६. ''देखो गौतम! बात बहुत बढ़ गई है। समीरा ने रतनपुर लौटने से इनकार कर दिया है। इसका कारण तुम्हें बताया जा रहा है... कि समीरा के इसं फैसले का कारण तुम हो... वहाँ घर में तूफान-सा आ गया है।''

२७. ''मास्टर जी, समीरा चाहे सुमेरगढ़ में रहे या रतनपुर में, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे लिए वह एक वृक्ष है, जो मेरे साथ-साथ चलता है। मैं जहाँ भी थक कर मैठता हूँ, वह वृक्ष मुझे छाया देता है...।''

3.9 क्षेत्रीय कार्य :-

1. मायणी (खटाव, जिला-सातारा) में स्थित पक्षी अभयारण्य देखिए और प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पक्षी-जातियों को जानने का प्रयत्न कीजिए।

2. लक्ष्मी तलाव (पेठवडगाव, जिला-कोल्हापुर), कलंबा तलाव (कोल्हापुर) में जाकर देशी-विदेशी पंछियों को देखिए।

3. प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित पंछियों के मराठी नाम और उनकी विशेषताएँ जानने की कोशिश कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :-

1. मोरपंखी सावल्या - रणजित देसाई

❑❑❑

इकाई–4
दस प्रतिनिधि कहानियाँ – कमलेश्वर

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय–विवेचन

4.3.1 कोहरा

4.3.2 राजा निरबंसिया

4.3.3 चप्पल

4.3.4 गर्मियों के दिन

4.3.5 खोई हुई दिशाएँ

4.3.6 नीली झील

4.3.7 इंतजार

4.3.8 दिल्ली में एक मौत

4.3.9 मांस का दरिया

4.3.10 बयान

4.4 सारांश

4.5 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न

4.6 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.7 स्वयं–अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने पर आप –

1. हिंदी के महान साहित्यकार कमलेश्वर का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. कमलेश्वर के पठित कहानियों के कथ्य एवं शिल्प से परिचित होंगे।
3. सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक परिस्थितियों का ज्ञान होगा।
4. मानवी स्वभाव का सूक्ष्म निरीक्षण कर पाएंगे।
5. मानवीय मूल्यों के बदलते संदर्भ समझ जाएंगे।

4.2 प्रस्तावना

हिन्दी कहानी एक रचना है, जो जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करती है। कहानी सुनने, पढ़ने और लिखने की एक लम्बी परम्परा हर देश में रही है; क्योंकि यह मन को रमाती है और सबके लिए मनोरंजक होती है। प्राचीन काल से ही कहानियाँ भारत में बोली, सुनी और लिखी जा रही हैं। ये कहानियाँ ही हैं जो हमें हिम्मत से भर देती है और हम असंभव कार्य को भी करने को तैयार हो जाते हैं और अत्यंत कठिनाइयों के बावजूद ज्यादातर कार्य पूरे भी होते हैं। शिवाजी महाराज को उनकी माता ने कहानी सुना सुनाकर इतना महान बना दिया कि शिवाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज बन गए। यही कारण है कि कहानी का महत्त्व दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। हर कहानी का अपना एक अलग उद्देश्य होता है कुछ कहानियाँ हमें कोई सिख प्रदान करती है, कुछ हमे मनोरंजन कराती है, कुछ जीवन के संघर्ष के बारे में बताती है तो कुछ हमें धार्मिक बातों की ओर ले जाती हैं। आधुनिक हिंदी कहानी का आरंभ 20 वीं सदी में हुआ। हिंदी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आँचलिकता आदि के दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि हिंदी के प्रमुख कहानीकार हैं।

कमलेश्वर प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे एक सशक्त लेखक, संपादक, आलोचक, संवाददाता, वक्ता और नेता हैं। उनके लेखन की विविधता ही उनकी बहुमुखी प्रतिभा को प्रस्तुत करती है। कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। 'नई कहानी' के निर्माता कमलेश्वर का कहानी लेखन सन् 1951 ई. से प्रारंभ होता है। उन्होंने लगभग 100 कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियाँ अनेक संकलनों में संग्रहित हैं। जैसे (प्रकाशन वर्ष) – राजा निरबंसिया (1957), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएँ (1963), मांस का दरिया (1964), जिंदा मुर्दे (1969), कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ (1976), इतने अच्छे दिन (1989), कथा प्रस्थान, रावल की रेल (1992) और कोहरा (1994), परिक्रमा (1996), महफिल (2000), समग्र कहानियाँ (2001), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2004)। कमलेश्वर को वर्ष 2003

में चर्चित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान'के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। वर्ष 2005 में वे 'पद्मभूषण' उपाधि से विभूषित हुए थे।

4.3 विषय विवेचन

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर ने उनकी 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' नाम से सन् 2004 ई. में संकलन निकाला। इसे नई दिल्ली स्थित 'किताबघर' ने प्रकाशित किया। इसमें 'कोहरा', 'राजा निरबंसिया', 'चप्पल', 'गर्मियों के दिन', 'खोई हुई दिशाएँ', 'नीली झील', 'इंतजार', 'दिल्ली में एक मौत', 'मांस का दरिया' और 'बयान' कहानियाँ सम्मेलित हैं। प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका में लेखक ने 'शायद कुछ परिवर्तित होने की प्रतीक्षा ही मेरी कहानियों की आधारभूमि' बताया है। कमलेश्वर की कहानियाँ यथार्थ जीवन से जुड़ी है, विशेषकर मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय लोगों के जीवन से। अतः आधुनिक हिंदी कहानीकारों में कमलेश्वर का स्थान बहुत ऊँचा है।

4.3.1 'कोहरा' कहानी का आशय

सेठों के सेठ कहलाने वाले स्विट्जरलैंड देश ने मजदूरों के किए गए बदतर हालातों पर लेखक ने प्रकाश डाला है। साथ ही इस नीति के खिलाफ वहाँ के कुछ युवा सेनानी हैं, जो असहयोग पर उतरे हैं। इसके अलावा लेखक-रीथ और पियरे की त्रिकोणीय प्रेम कहानी को गूंथने की सफल कोशिश की है।

स्विट्जरलैंड की रहनेवाली रीथ महाबलेश्वर के कोयना घाटी में आदिवासियों के अध्ययन के लिए आ गई थी। लेखक भी उन दिनों आदिवासियों के काम के सिलसिले में महाबलेश्वर गए थे। दोनों के बीच अच्छी-खासी पहचान होती है। दोनों में प्यार भरी दोस्ती होती है। लेकिन रीथ लेखक से शादी के बारे में वचन देना नहीं चाहती, क्योंकि उसका दोस्त पियरे उनके देश में इंतजार कर रहा है। उसे वापस आने का रीथ वचन देकर आई है। रीथ के मन में ऑस्कर वाइल्ड का वाक्य हमेशा याद रहता है - शादी वह रोमांस है जिसमें कोई एक पात्र पहले ही अध्याय में मर जाता है। इस कारण लेखक और रीथ के बीच सिर्फ और सिर्फ प्यार भरी दोस्ती का रिश्ता है। महाबलेश्वर से चले जाने के तीन महीने बाद मुंबई में लेखक की रीथ से मुलाकात होती है। वह चार दिन वहाँ ठहरती है और अपने देश स्विट्जरलैंड चली जाती है।

कुछ दिनों बाद लेखक स्विट्जरलैंड गए थे। वे लूजान शहर के जिस समुदाय (कम्यून) में ठहरे थे, इत्तफाक से पर रीथ और उसका प्रेमी पियरे भी वहाँ ठहरे हुए थे। रीथ और पियरे ने शादी नहीं की थी। दोनों अलग अलग कमरे में रहते थे, लेकिन एक साथ होने का नितांत सुख लेते थे। लेखक को पियरे के बातों से पता चलता था कि वह उनके देश से बहुत नाराज है। वह कहता है- स्विट्जरलैंड में पैसों की कोई कमी नहीं है। सेठों के सेठ है। सेठ मुल्कों का पैसा उनकी देश में है। पैसों से पैसा उगाता है उनका देश। लेकिन पैसों से उजाला नहीं होता। अगर ऐसा होता तो सूरज को भी खरीद सकते।

स्विट्जरलैंड सारी दुनिया के लिए दवा बनाता है, लेकिन उनके देश में फैली बीमारी की दवा नहीं बना पाते। यह बीमारी वहाँ की बेरोजगारी की समस्याओं को दर्शाती हैं। स्विट्जरलैंड ने स्विस मजदूरों की

हडताल को जबरन तोड़ दिया है। इन मजदूरों को घर का रास्ता दिखाया है। इनके बदले आस- पड़ोस के देश के मजदूर हवाई जहाज से ले आते हैं और शाम को वे मजदूर इंटरनेशनल रेल से अपने-अपने देश-घरों को लौट जाते हैं। नतीजतन लूजान में बेरोजगारी बढ़ गई है और वहाँ का युवा देश के खिलाफ बगावत कर रहा है। उनका एक समुदाय (कम्यून) बनाया है, जिसमें पियरे भी शामिल है जो सेनानी भी है। पियरे कहता है कि गरीब देशों में उन्नति न हो इसलिए स्विट्जरलैंड गरीब मुल्कों में हथियारों के स्पेयर पार्ट्स बेचता है। इस नीति के कारण सोवियत यूनियन की तरह योगोस्लाविया देश दुनिया के नक्शे से मिट गया है। अब योगोस्लाव मजदूर दवा बनाने के बदले हाथों में गन लिए अपने ही सर्बियन, क्रोशियन, बोसनियन लोगों को मार रहे हैं।

प्रस्तुत कहानी स्विट्जरलैंड की गलत नीतियों के कारण बेरोजगारी बढ़ने से वहाँ के युवा बगावत पर उतरे हैं। सेनानी भी विरोध में हैं। इन्हें पुलिस थाने में हाजिरी लगाने पड़ती है। सेठों के सेठ कहलाने वाले स्विट्जरलैंड देश में मजदूरों के हालात बद से बदतर हुए हैं, इसका चित्रण लेखक ने कोहरा कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इसके अलावा लेखक-रीथ और पियरे की त्रिकोणीय प्रेम कहानी को गूंथने की कोशिश की है।

4.3.2 'राजा निरबंसिया' कहानी का आशय –

'राजा निरबंसिया' कहानी में दो कथाएँ हैं। एक लेखक की माँ द्वारा सुनाई राजा निरबंसिया और दूसरी लेखक के खयालों की; जिसमें राजा जगपति प्रमुख हैं। मतलब इस कहानी में दो कथाएँ एक साथ चलती हैं। प्राचीन कहानी (राजा निरबंसिया) लोककथा पर आधारित है, जो अविश्वसनीय एवं अति प्राकृत लगती है। नई कहानी (जगपती) में दाम्पत्य जीवन के संबंधों में परिवर्तन, प्रेम, सेक्स, टूटन, पुनःविवाह आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है।

कहानी में कमलेश्वर ने दोहरे कथा शिल्प का प्रयोग किया है। पहला कथानक लेखक की माँ द्वारा सुनाई कहानी का है। एक राजा निरबंसिया थे, उनके राज्य में सब प्रकार की खुशहाली थी। राजा की पत्नी बहुत ही सुंदर थी। राजा को शिकार का शौक था शिकार के लिए जाते थे, तो सातवे दिन अवश्य वापस लौट आते थे। एक बार राजा लौटे नहीं। रानी चिंतित हो गई। राजा को खोजने के लिए रानी एक मंत्री को साथ लेकर जंगल चली गई। वापस आकर देखा तो राजा महल में उपस्थित थे। रानी का मंत्री के साथ अकेला जाना राजा को अच्छा नहीं लगा। राजा निसंतान थे। राजा सवेरे टलहने जाते थे। एक मेहतरानी ने सुबह राजा का मुँह देखा, तो उसे अपशकुन लगा। मेहतरानी के व्यंग्यबोल से राजा बहुत दुखी हुए और राजसी वस्त्र उतारकर जंगल की ओर चले गए। रानी ने भटियारिन का भेस धारण कर जंगल में राजा के साथ एक रात बिताई। वहाँ से राजा अन्य देश चला जाता है। बहुत सारा धन कमाकर वापस आता है। धन से भरी गाड़ी का पहिया उलझ जाता है। गाड़ी का पहिया तभी निकल सकता है जब कि संकट के दिन जन्मा बालक हाथ में सुपारी लेकर गाड़ी को छूता है। सकट के दिन जन्मे दो बालक गाड़ी को छूने को तब तैयार होते हैं, जब उन्हें आधा धन मिल जाए। राजा महल में उपस्थित हो जाते हैं, देखते हैं कि वे दो बालक भी

महल में रहते हैं। रानी से पता चलता है कि वे उन्हीं के राजकुमार हैं। राजा रानी के चारित्र पर संशय व्यक्त करता है। रानी अपना सतीत्त्व सिद्ध करने के लिए घोर तपस्या करती है। तपस्या से कुलदेवता प्रसन्न होते हैं और दोनों बालकों को तत्काल जन्मे शिशुओं में बदल देते हैं। रानी की छाति में दूध भर आता है। राजा का संशय दूर हो जाता है और रानी का पैर पकड़ता है। राज–काज संभालकर राजा रानी के नाम से बड़ा मंदिर बनवाता है। बड़े राजकुमार का नाम राज के नए सिक्कों पर खुदवाकर कार्यान्वित किया जाता है, जिससे राजभर में राजा के उत्तराधिकारी की खबर हो जाती है।

'राजा निरबंसिया' कहानी का प्रमुख एवं दूसरा कथानक जगपति का है। जगपति लेखक का बचपन का दोस्त है, दोनों स्कूली जीवन में साथ पढ़े–बढ़े हैं। जगपति वकील के यहाँ मुंशी का काम करता है। चंदा के साथ उसकी शादी हो जाती है। जगपति की माँ घर की चाबियाँ चंदा को सौंपकर जगपति के संतान का मुख देखे बगैर मर जाती है। एक बार जगपति रिश्तेदारी में दयाराम की शादी में चला जाता है, वहाँ डाका पड़ जाता है, जगपति डटकर मुकाबला करता है। संघर्ष करते वक्त जगपति के जाँघ–कूल्हे में गोली लग जाती है। उसी गाँव के अस्पताल में उसे भरती कराया जाता है। चंदा अकेली देखभाल करने के लिए उसके साथ रहती है। उस अस्पताल में कम्पाउण्डर ही सबकुछ था। उसका नाम था बचनसिंह। जगपति के घाव की पट्‌टी बदलते समय उसकी नजर चंदा पर पड़ती है। जगपति को ताकत बढ़ाने की दवाइयों की आवश्यकता होती है। बचनसिंह दवाइयों देना चाहता है, लेकिन जगपति को लगता है कि कर्ज कोढ़ का रोग होता है एक बार लगने से तन तो गलता ही है, मन भी रोगी हो जाता है। फिर भी बचनसिंह सभी दवाइयाँ लाकर देता है। उसके बदलें चंदा उसे अपना सोने का कड़ा देने जाती है। बचनसिंह कड़ा न लेकर चंदा के हाथ में ही पहना देता है। दोनों मे अपनापा बढ़ने लगता है। बचनसिंह चंदा के लिए खाट का इंतजाम करता है। बचनसिंह का तबादला मैनपुरी के सदर अस्पताल में हो जाता है। मैनपुरी जगपति के गाँव के नजदीक ही है। जगपति तबादले की बात सुनता है, तो उसे लगता है कि किसी काले पिशाच के पंजों से मुक्ति मिली हो। जगपति अच्छा होकर अपने गाँव आता है। द्वार पर आते ही पड़ोस की चाची ताना कसती है कि राजा निरबंसिया अस्पताल से लौट आए... कुलमा भी आई है। जगपति भी उसी समय चंदा के मातृत्त्व पर चोट करता है। रात में चंदा के सौंदर्य पर आकर्षित होकर उसके पास आता है; परंतु तकिए के नीचे छिपाए सोने के कड़े उसके हाथ लगते हैं। चंदा का झूठ पकड़ा जाता है, जो उन्होंने जगपती से बोला था कि सोने का कड़ा देकर बचनसिंह से दवाइयाँ ली थीं। जगपति अर्थ लगाता है कि चंदा और बचनसिंह के अस्पताल के समय से ही शारीरिक सम्बन्ध बने हुए हैं।

जगपति की नौकरी छूट जाती है। वह कुछ काम–धाम की तलाश में दिनभर घूमता रहता है। वह चाहता है कि चंदा से कड़े मांगकर छोटा–मोटा कारोबार शुरू करें। लेकिन सोचता है कि उसका पत्नीत्त्व और मातृत्त्व कैसे छीने। एक दिन चंदा अकेली थी। उसी समय बचनसिंह उसके घर आता है। वह कभी भी अकेली औरत के घर नहीं गया था। चंदा इस बात का जिक्र करती है, तो जगपति कहता है 'आड़े वक्त काम आने वाला आदमी है, लेकिन उससे फायदा उठा सकना जितना आसान है... उतना... मेरा मतलब है कि... जिससे कुछ लिया जाएगा, उसे दिया भी जाएगा।' बचनसिंह जगपति को लकड़ी की टाल खोलने के

लिए पैसे देता है। अब बचनसिंह रोजाना चंदा के घर आने लगता है। जगपति कामदार आदमी बन जाता है, उसके सामने उसे उसका अस्तित्त्व डूबता नजर आता है। रात के वक्त सोने के लिए वह टाल पर चला जाता है, दर्द से तड़पता रहता है। बचनसिंह खाने के लिए घर पर आता है, उसी समय भी चंदा का ध्यान अपने पति से ज्यादा उस पर रहता है।

चंदा गर्भवती बनने की खबर सारे गाँव में फैल जाती है। सभी स्त्री-पुरुष चंदा और कंपाउंडर के आपसी रिश्ते को लेकर चर्चा करते हैं। जगपति को इसकी भनक लगती है; परंतु वह दिनभर टाल पर ही रहता है और रात को घर आता है। चंदा उसे बताती है कि वह कल उसके गाँव जा रही है। वह संतप्त होकर चंदा को मारता है और कहता है कि अस्पताल से ही तुम्हारा बचनसिंह के साथ चक्कर चल रहा था। तभी चंदा इस बात को नकारती हुई कहती है कि अस्पताल से नहीं, तो तुमने ही मुझे बेच दिया है। चंदा अपने गाँव चली जाती है। इधर जगपति दूसरे गाँव लकडी काटने चला जाता है, सोचता है कि, ''क्या बचनसिंह ने टाल के लिए जो रुपये दिए थे, उसका व्याज इधर चुकता हुआ? क्या सिर्फ वही रुपए आग बन गए, जिसकी आँच में उसकी सहनशीलता, विश्वास और आदर्श मोम-से पिघल गए?'' एक मजदूर (शकूरे) द्वारा जगपति की नपुसंकता की बात भी स्पष्ट हो जाती है। एक उखटे हुए पेड़ का उदाहरण देकर शकुरा कहता है, ''हरा होने से क्या उखट तो गया है। न फूल का, न फल का। अब कौन इसमें फल-फूल आएँगे, चार दिन में पत्ती झूरा जाएँगी।''

जगपति के टाल पर मुंशीजी आकर बताते हैं कि चंदा को लड़का हुआ है और वह मदसूदन नामक व्यक्ति के घर बैठ रही है। बच्चा दीवार बन गया है, जगपती चाहे तो अदालत से बच्चा उन्हें मिल सकता है। तब जगपती कहता है कि, ''अपना कहकर किस मुँह से माँगू बाबा? हर तरफ तो कर्ज से दबा हूँ, तन से, मन से, पैसे से, इज्जत से, किस के बल पर दुनिया संजोने की कोशिश करूँ? ''चंदा की इस अवस्था के लिए वह अपने को ही दोषी मानता है। कितने बड़े पाप में धकेल दिया चंदा को... वह सोचता स्वयं भी तो एक उखटा हुआ पेड़ है, न फल का, न फूल का, सब व्यर्थ ही तो है।'' जगपति पश्चाताप की आग में झुलसता है, ''उसे लगता है कि औलाद ही तो वह स्नेह की धुरी है, जो आदमी-औरत के पहियों को साधकर तन के दलदल से पार ले जाती है... नहीं तो हर औरत वेश्या है और हर आदमी वासना का कीड़ा। चंदा जरूर औरत थी परंतु स्वयं उसने उसे नरक में डाल दिया। वह बच्चा नहीं, परंतु चंदा तो मेरी है। वह चंदा को चाहता था, परंतु उसके दिल में चाहत न जगा पाया। वह दूसरे के घर बैठने जा रही है, यह बात जगपति को पश्चाताप की अग्नि में झुलस देती है। वह अपना सारा कारोबार त्याग देता है और अफीम और तेल पीकर आत्महत्या कर लेता है। आत्महत्या से पहले वह दो चिट्ठियाँ लिखकर रखता है। पहली में लिखता है कि उसकी अंतिम इच्छा है कि चंदा बच्चे को लेकर चली आए, क्योंकि आदमी को पाप नहीं, पश्चाताप मारता है। दूसरी चिट्ठी कानून को लिखी थी, जिसमें कबूल किया था कि उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली है, 'मैंने अफीम नहीं रूपये खाए हैं।' उन रूपयों में कर्ज का जहर था, उसी ने मुझे मारा है।'' और आगे लिखा था कि उसकी लाश तब तक न जलाई जाए, जब तक चंदा बच्चे को लेकर न आ जाए। आग बच्चे से दिलवाई जाए।

'राजा निरबंसिया' कहानी दूहरे कथा शिल्प के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुई। पुरानी एवं नई दो कथाएँ एक-साथ चलती हैं। पुरानी कथा राजा-रानी की कथा को लेकर है। जिसका कथानक नीतिपरक एवं लोककथात्मक है। कथा का राजा निरबंसिया है, जिसे दैविक वरदान से पुत्र होता है। वह उसका वारिस बनता है। जगपति की कथा में चंदा को बचनसिंह से पुत्र होता है, जिसे जगपती स्वीकार नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता है। जगपती-चंदा मध्यवर्ग का अभावग्रस्त जोड़ा है, जिसका चित्रण कमलेश्वर ने यथार्थवादी ढंग से किया है।

4.3.3 'चप्पल' कहानी का आशय

चप्पल कहानी कमलेश्वर की प्रसिद्ध कहानी है। इसमें घटनाओं का वर्णन बड़ी मार्मिकता के साथ किया है। प्रस्तुत कहानी में संध्या का बड़ा ऑपरेशन हुआ है, उसे देखने के लिए लेखक अस्पताल में पहुंचते हैं। अस्पताल के वॉर्डो से गुजरते समय लेखक दुनिया भर के कष्टों और दुखों से परिचित होते हैं। उन्हें जीवन क्षणभंगुर होने का अहसास होता है। लेखक इमरजेंसी वॉर्ड की दर्द भरी चीखों के बीच से निकलते हुए अपने मित्र को याद करता है, जिसने संध्या को देख आने की फर्ज अदायगी का उसे स्मरण दिलाया था।

लेखक लिफ्ट के मार्ग से सांतवे मंजिल की ओर बढ़ता है। पांचवी मंजिल पर जब लिफ्ट रुकती है तो अनेक लोगों के साथ-साथ पाँच साल का बच्चा उसके के गोद में बैठा देखते हैं। उस बच्चे ने छोटी नीली हवाई चप्पलें पहन रखी थी जो कि छोटे-छोटे पैरों में उलझी हुई थी। बच्चे ने चप्पल के उलझने पर पिताजी से कहा 'बाबा! चप्पल' यह सुन उसके पिता ने उसकी चप्पल ठीक कर दीं थी। वार्ड ब्वॉय के कहने पर बच्चा हील चेयर पर बैठा, जिसे बैठते हुए तकलीफ अवश्य हुई पर वह कुर्सी को सिंहासन समझ हँसते हुए बैठा था। लिफ्ट सात मंजिल पर रुकी, पर लेखक वहाँ न उतरे। आठवीं मंजिल पर वह बालक बाहर निकलते समय चप्पल फिर लिफ्ट के पास गिरी, तब बालक फिर बोला-'बाबा चप्पल' उसके पिता ने चप्पल उठाई और बच्चे को पहनाई। तब तक नर्स आई और उसे ऑपरेशन थिएटर की ओर ली गई।

कुछ क्षण बाद लेखक को याद आता है कि उन्हें सांतवीं मंजिल पर जाना है। लेखक सीढ़ियों के रास्ते संध्या की केबिन की ओर जाते हैं। उसे रास्ते में ही संध्या का डाक्टर पति मिलते हैं जिससे संध्या के बारे में पूछने पर वे बताते हैं कि संध्या का ब्लीडिंग अधिक हुआ था, अब उसे कंट्रोल किया है। चार घंटे आपरेशन में लग गए। संध्या एक डाक्टर थी। उसे कृत्रिम साँस के सहारे रखा गया है तथा इस कृत्रिम साँस की मदद से उसके पूरे शरीर को आराम दिया जा रहा है। इसी प्रकार डॉक्टर की लेखक से बातचीत होती है। डॉक्टर ने यह भी बताया कि संध्या कुछ बोलती नहीं है लेकिन वह अक्सर अपने मन की बात लिखकर बता देती है। लेखक केबिन के बाहर से ही संध्या को देखते हैं, बीमारी के कारण लाचार-सी नजर आ रही थी जिसे देख लेखक को बहुत आश्चर्य होता है।

लेखक डाक्टर से बातचीत के बाद सिगरेट पीने के बहाने खिड़की के पास जाकर खड़े हो गए। खिड़की से उसे अस्पताल का पूरा दृश्य दिखाई देता है जिसमें मनुष्य की लाचारी, दर्द और पीड़ा-युक्त दृश्य दिखाई

देता है। ऐसे में लेखक भी मनुष्यता की भावना से ओत- प्रोत हो ईश्वर से प्रार्थना करने लगते हैं। अस्पताल को देखते-देखते लेखक दार्शनिक-सा हो जाता है और दर्द, ईश्वर और मनुष्य के बीच अंतः संबंध स्थापित करता जाता है। तभी वे देखते हैं कि डाक्टर आपस में मरीज की बिगड़ती व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करने लगे हैं। मानो, जिन्दगी और मौत के बीच जंग शुरू हो। कुछ क्षणों में नर्स चिंताग्रस्त अवस्था में तेजी से गुजरती है। लेखक कुछ देर बाद डॉक्टर के साथ लिफ्ट में जाता है। लिफ्ट आठवीं मंजिल पर पहुँचती है। इस तल पर अधिक लोग नहीं थे। एक स्ट्रेचर पर लेखक पहले वाले बच्चे को चादर में लिपटा देखता है। उसके साथ उसके पिता थे जिनके हाथों में बच्चे की चप्पल थी। बाप के एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल थी। लेखक को उसके बाप से पता चलता है कि सड़क पार करते हुए इसे एक कार ने ठोकर मार दी थी जिससे जांघ की हड्ड़ी टूट गई। अंततः इसकी टांग काटनी पड़ी। बच्चा बेहोशी की हालत में था। कुछ देर बाद बच्चे के पिता ने बच्चे की हवाई चप्पलें फेंक दी, लेकिन बच्चे का ध्यान आते ही उसने वे चप्पलें फिर हाथ में ले ली। यह दृश्य देख लेखक का दिल पसीजने लगा वे सोचते हैं कि बच्चा अस्पताल से रिहा होगा तब शायद चप्पल माँगेगा या चप्पलों को देख कर अपना पैर देखेगा। इस कारूणिक बात पर विचार करता हुआ लेखक लिफ्ट के रास्ते नीचे उतरने लगता है।

लेखक इस कहानी के द्वारा पीड़ा, करूणा जैसे भाव पाठक-समाज में जगाना चाहता है जिससे मनुष्य स्वार्थ की परिसीमाओं को त्याग कर मानवता की सम भूमि पर खड़ा हो सके।

4.3.4 'गर्मियों के दिन' कहानी का आशय

'गर्मियों के दिन' कहानी में चुंगी-दफ्तर और वैद्य व्यवसाय का चित्रण है। पारंपरिक व्यवसाय चलाने में बहुत तिकड़मबाजी करनी पड़ती है। मध्यवर्गीय जीवन (कस्बे का जीवन) के यथार्थ का चित्रण करने में कमलेश्वर सिद्ध हस्त हैं। आधुनिक काल में प्रत्येक बेचने वाली वस्तु का विज्ञापन करना पड़ता है। गर्मियों के दिनों में नित्यानंद तिवारी की परेशानी का चित्रण वास्तववादी लगता है। नित्यानंद तिवारी नामक एक वैद्य हैं, जो हमें आत्मकथनात्मक शैली में कहानी सुनाते हैं और बीच-बीच के प्रसंगों द्वारा कहानी खुद-ब-खुद आगे बढ़ती है। वैद्य जी को मालूम है कि दुकान पर बोर्ड लगाने से ही दुकान पर ग्राहक आते हैं। पारंपरिक (होमोपैथिक) वैद्यकीय सेवा, मरीजों को लूटना, बीमारी के जाली प्रमाणपत्र देना और ग्राहकों का इंतजार करने वाले डॉक्टर का चित्रण प्रस्तुत कहानी के प्रमुख विषय हैं।

'गर्मियों के दिन' कहानी एक अलग विषय को लेकर सामने आती है। चुंगी-दफ्तर और उसके पास-पडोस के छोटे-मोटे व्यावसायिक या दुकानदारों का वर्णन करना इस कहानी का मुख्य विषय है। उसमें भी आज वैद्यकीय सेवा में 'सेवा' गायब होती जा रही है और वह पूर्णतः दुकान बन चुकी है। चुंगी-दफ्तर के आस-पास हलवाई और वैद्यकीय (होमोपैथिक) व्यवसाय की दुकानें हैं। प्रो. कविराज नित्यानंद तिवारी की 'श्री धन्वन्तरि औषधालय' की दुकान है। आजकल दुकान पर बोर्ड लगाने से ही ग्राहक आते हैं। इसलिए शहर के सभी दुकानदार पेण्टर सैयदअली से साइनबोर्ड बनवा रहें हैं। प्रथम बार दीनानाथ हलवाई ने अपनी दुकान पर साइनबोर्ड लगवाया था, तो ग्राहक की भीड़ लग गई थी। चुंगी दफ्तर के चेयरमैन साहब ने तो

तीन-तीन भाषाओं में साइनबोर्ड बनवाकर लगा रखे थे। हर वर्ष मेले-तमाशे के दिनों में हलवाई, जुलाई-अगस्त में किताब-कागद वालों, सहालग में कपड़े वालों और खराब मौसम में वैद्य-हकीमों के साइनबोर्डों पर नया रंग चढ़ता है। रंगीन पोस्टर चिपकाने से (विज्ञापन) ही सिनेमा चलता है। साइन बोर्ड लगाकर ही सुखदेब बाबू कंपाउंडर से डॉक्टर हो गए हैं और अब इक्का-घोड़ा खरीदकर मरीज की जेब कतरने घूमने लगे हैं। नित्यानंद कहते हैं कि अंग्रेजी शब्द बोलकर, अपना रौब दिखाकर, मरीजों को लूटते हैं, ऐसे लोगों के कारण ही वैद्यकीय पेशे की बदनामी हो रही है, डॉक्टरी तो तमाशा बन गई है। किसी का भी बेटा डॉक्टर (वैद्य) बन जाता है। लेकिन वैद्य नित्यानंद का मानना है कि सिर्फ वैद्य का बेटा ही सही विद्या प्राप्त कर सकता है; क्योंकि उसे बचपन से उसी प्रकार की शिक्षा मिलती है। दवाई बनाते समय दवाओं में भंग-अफीम की पुड़िया इस्तेमाल करनी पड़ती है, तो सरकार को तफसील देनी पड़ती है। वैद्य बनने के लिए भी रजिस्टरी करानी पड़ती है। उसके लिए भी लखनऊ में सरकारी जाँच-पड़ताल के बाद दस्तखत मिलता है। और उधर सरकार ने जब से शराब-बंदी की है, तब से कच्ची शराब की भट्टियाँ घर-घर में शुरू हो गई हैं।

नित्यानंद जी अपने दुकान का बोर्ड चंदर से करवा रहे हैं। चंदर का अक्षर सुंदर है और दस-बारह आने के खर्चे में पूरा बोर्ड तैयार हो जाएगा; क्योंकि एक मरीज रंग का डिब्बा मुफ्त देकर गया है। उसी बोर्ड को बनवाने के लिए सैयदअली पाँच रुपये मांग रहा था। चंदर बोर्ड लिख रहा है। वैद्य जी के यहाँ बहुत कम मरीज आते हैं। इसलिए खाली बैठने से अच्छा है कि चुंगी दफ्तर का काम (बढ़ा हुआ) वैद्य जी करते हैं, जिससे कुछ आमदनी भी हो जाती है। इतने में एक खलासी 'डाक्टरी प्रमाणपत्र' माँगने के लिए आता है। उसको बाईस दिन का बीमारी का प्रमाणपत्र चाहिए था। वह प्रमाणपत्र शहर में पाँच रुपए में मिलता है, वैद्य जी चार रुपए माँगते हैं। वैद्य जी कहते हैं कि प्रमाणपत्र बनवाना जोखीम भरा काम है; क्योंकि मरीज का नाम, बीमारी का नाम,सबकुछ पंद्रह दिन पूर्व का लिखना पड़ेगा। वैद्य जी खलासी के सामने बहुत व्यस्त रहने का बहाना बनाते हैं। खलासी वहाँ से चल पड़ता है। वैद्य जी अंदर से अनिश्चितता दिखाते हैं; लेकिन विश्वास रखते हैं कि वह आदमी जरूर वापस आएगा।

वैद्य जी चंदर ने बनाए बोर्ड की प्रशंसा करते हैं। यदि यह साईन बोर्ड सैयदअली के हाथ का लिखा होता, तो पाँच रुपए हो जाते और वही पाँच रुपए मरीजों से वसूलने पड़ते। वैद्य जी दोपहर खाना खाने भी नहीं जाते हैं। एक किवाड बंद करके गर्मियों के दिनों की लू से बचना चाहते हैं, बहुत ही थकान महसूस करते हैं, इधर-उधर मन लगाने की कोशिश करते हैं। शीशियों पर जमी धूल झाड़कर करीने से लगाते हैं, बाहर सडक की ओर तांकते हैं, धन्वन्तरि औषधालय का बोर्ड लगवाते हैं। इकहरी छत की दूकान आँच सी तप रही है। वैद्य जी पानी पीकर सो जाते हैं। उनका पड़ोसी बच्चनलाल आवाज लगाता है कि अभी तक आप घर गए नहीं? तब वैद्य जी उत्तर देते हैं कि एक मरीज आने को कह गया है, उसका इंतजार कर रहें हैं। इस प्रकार वैद्य जी के आर्थिक अभाव के माध्यम से समकालीन होमोपैथिक डॉक्टरी व्यवसाय की स्थिति से पाठकों को अवगत कराया है।

4.3.5 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी का आशय

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में दिल्ली महानगर का जीवन चित्रित है। आधुनिक शहरी संस्कृति में आदमी की पहचान ही खोती नजर आ रही है। महानगर में आदमी का जीवन बहुत ही तेज हो गया है। आदमी-आदमी को नहीं पहचानता है, उसे अपने बारे में भी सोचने के लिए समय नहीं है। खोई हुई दिशाएँ 'कहानी में भारत की राजधानी दिल्ली का चित्रण है; कहानी का प्रमुख पात्र चंदर है। वह तीन साल पहले इलाहाबाद से दिल्ली आया हुआ है। महानगर की जीवन शैली, पत्नी, पूर्व प्रेमिका चंद्रा एवं शहर की विसंगतियों का चित्रण आत्मकथनात्मक शैली में चित्रित है। आदमी-आदमी को नहीं पहचानता है; बल्कि मनुष्य अपनी खुद की पहचान भूल चुका है। जान-पहचान के होते हुए भी चंदर अनजान सा महसूस करता है।

कहानी का प्रमुख पात्र चंदर तीन बरस से दिल्ली में रह रहा है। एक दिन सुबह के आठ बजे घर से निकला हुआ चंदर रात को घर पुहँच जाता है; लेकिन दिन भर वह निजता की तलाश करता है। चंदर कनॉट प्लेस के पास खड़ा है, बहुत सारी भीड़ है, आसपास से सैंकड़ों लोग गुजरतें जा रहे हैं। परंतु इतनी सारी भीड़ में उसे पहचानने वाला कोई नहीं है। हर आदमी या औरत लापरवाही से दूसरों को नकारता या झूठे दर्प में डूबा हुआ गुजर जाता है। तब उसे लगता है, आज का दिन व्यर्थ ही गया हुआ है। तीन साल पहले वह इलाहाबाद से दिल्ली चला आया था, इलाहाबाद में उसे पहचान की झलक मिल जाती थी; परंतु ''यह राजधानी! जहाँ सब अपना है, अपने देश का है... पर कुछ भी अपना नहीं है, अपने देश का नहीं है।'' तमाम सड़कें हैं, तमाम बस्तियाँ-मकान हैं पर वह किसी के घर नहीं जा सकता, क्योंकि सब दूसरों के हैं। चंदर को कहीं भी अपनापा नजर नहीं आता।

घर पर पत्नी निर्मला इंतजार कर रही होगी; परंतु चंदर को लगता है कि घर जाने पर भी मेहमान की तरह बर्ताव करना पड़ेगा। क्योंकि पडोसीन मिसेस गुप्ता चंदर के घर पर होगी, खुराना की तरफ की खिडकी बंद करने पड़ेगी, बेकरीवाले का रेडियो भर्राई आवाज में गा रहा होगा, गुलाटी की खाँसी की आवाज सुनाई देगी, गली में कोलाहल होगा, बिशन कपूर जो अकेला रहता है, उसका अकेलापन दिखाई देगा। मतलब चंदर को घर की ओर आकर्षित करने वाला कोई साधन उपलब्ध नहीं है। इसलिए घर जाने की उसे कोई जल्दी नहीं है। उसे अपने दैनिक काम याद आते हैं, जैसे रेडियो (आकाशवाणी) सेंटर जाना है, रिजर्व बैंक मे कैश जमा करना है, गाँव मनीऑर्डर भेजना है, एक समाचार पत्र के यहाँ फोन करके मिलने जाना है। परंतु सभी कामों में देरी लगने की संभावनाओं ने चंदर डर सा जाता है।

चंदर जहाँ खड़ा है, उसके सामने बहुत बड़ी इमारत है, वहाँ कपड़ों का व्यापारी है, जो महानगर निगम का चुनाव लड़ने की तैयारी में है। कनॉट प्लेस के बगीचे में बच्चे खेल रहे हैं, उनकी माताएँ साथ में हैं, लेकिन उनमें मातृत्त्व नहीं रहा है। तनहा खड़े पेडों और उनके नीचे सिमटते 'अंधेरे में अजीब-सा खालीपन भरा हुआ है। चंदर सोचता है कि इन तीन सालों में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जो उसका हो। एक जमाना गुजर गया, उसने अपने बारे में कभी विचार नहीं किया, सप्ताह में एक बार 'खुद से मिलने की बात तय की थी, वह भी नहीं हुआ। तभी उसका मतलबी दोस्त आनंद आता हुआ दिखाई देता है, आनंद दुनिया में ऐसे

दोस्त खोजता है, जिससे गहरी दोस्ती न हो और सिर्फ काम की दोस्ती हो। आनंद नजदीक आते ही चंदर की तारीफ करता है और कुछ उधार पैसे माँगता है, न मिलने पर वहाँ से निकल जाता है। चंदर को लगता है कि ऐसा बनावटीपन उसमें भी है। उसे लगता है अबतक का सारा समय उसने बरबाद ही किया है। जैसे अनपढ़ गाईड बरसों तक पर्यटकों को झूठा इतिहास बताकर अपना जीवन बिताते हैं, उसी प्रकार चंदर और उस गाईड में कोई फर्क नहीं है।

चंदर टी-हाऊस में चला जाता है। वहाँ बेपनाह शोर है। स्त्री-पुरुष अपना समय बिताने के लिए यहाँ आते हैं और चले जाते हैं, मतलबी और क्षणिक संबंध दिखाई देते हैं। दोनों मिले, खाना खाया, बात खत्म; दोनों अपने-अपने रास्ते निकल जाते हैं। ऐसे वातावरण से चंदर का मन और भारी हो जाता है, अकेलेपन का नागपाश और भी कस जाता है। वह एक बस स्टॉप पर खड़ा हो जाता है, जहाँ पेड़ से झड़कर पीले पत्ते पड़े हैं। उन पत्तों की चुरमुराने की आवाज चंदर को फ्लैश-बैक में ले जाती है - जब चंदर खंडहरों में (गाइड का काम) अपनी जिंदगी खराब कर रहा था, तब उसके जीवन में इंद्रा नाम की, संपन्न परिवार की लड़की आई थी। इंद्रा चंदर की स्थिति बदलने के लिए उसका हौसला बढ़ाती है। उसे विश्वास दिलाती है कि वह बहुत कुछ कर सकता है। परंतु चंदर इंद्रा से कहता है कि, ''तुम अपनी जिंदगी मेरे खातिर बिगाड़ मत लो; क्योंकि पता नहीं किस किनारे लगकर भूखा मरूँ या पागल हो जाऊँ...'' इंद्रा और चंदर का प्रेम फूलता-फलता है। इंद्रा उससे वादा करती है कि वह हर हाल में उसका साथ देगी। वह दोनों एक बेंच पर हमेशा बैठ जाते हैं, बहुत सी प्यार की बातें करते हैं। एक-दूसरे पर भरोसा जताने की बातें होती हैं। परंतु चंदर कहता है कि, ''मैंने तो सिर पर कफन बाँधा है, मेरा क्या ठिकाना।'' तब इंद्रा उसे विश्वास दिलाती है कि वह अच्छा बने या बुरा बने, उसके लिए एक-सा रहेगा। एक दिन इंद्रा चंदर के घर आती है, चंदर को लगता है इंद्रा अब उसके बहुत करीब आ चुकी है। चंदर उसके माथे पर ओठ रखता है, दोनों प्रतिज्ञा करते हैं।

इंद्रा दिल्ली में ही रहती है, उसकी शादी हो गई है। चंदर दो महीने पूर्व उसे मिला था। चंदर ने देखा कि उसके प्यार में कमी नहीं आई है। चंदर की आदतें आज भी उसे याद हैं, जैसे चंदर को दूध से चिढ़ और कॉफी से लगाव है, चाय में सिर्फ एक चम्मच चीनी अच्छी लगती है। चंदर का फ्लैश बैक समाप्त हो जाता है। बस स्टॉप से फटफट वाली संवारी से इंद्रा से मिलने चला जाता है। संवारी का ड्राइवर पहचान वाला होकर भी उससे ज्यादा पैसे लेता है, वह अपना व्यवहार देखता है। चंदर इंद्रा के घर पहुँच जाता है, इंद्रा अपने पति की राह देख रही होती है। चंदर मुक्त रूप से टाँगे फैलाकर हमेशा की तरह बैठ जाता है। इंद्रा उसे चाय में शक्कर डालने की बात पूछती है, तो सचमुच उसे बहुत बड़ा झटका लगता है, फिर भी खुद को संयत करके मजे में 'दो चम्मच' कहता है। इंद्रा सचमुच ही दो चम्मच चीनी डालती है। चंदर भारी मन से चाय पीता है, उसे वह चाय जहर के घूँटों के समान लगती है। वह इंद्रा में आया परिवर्तन जान जाता है, उसकी मेहमान नवाजी में बू महसूस करता है और वहाँ से भाग निकलता है।

थका हुआ चंदर घर आता है, निर्मला खुशी से उसका स्वागत करती है, उसे अच्छा लगता है। किराए का मकान भी उस क्षण उसे राहत देता है। खाना खाए बगैर वह निर्मला को लेकर सो जाता है। वह चाहता

है कि निर्मला के शरीर का अंग-अंग और मन की हर धडकनें उसे पहचान की साक्षी दें... गहरी आत्मीयता और निर्बंध एकता का अहसास दें...। वह अपनी पत्नी के रोम-रोम से जुड़ जाता है, अपनी पहचान ढूँढता है। शारीरिक प्रेम के बाद निर्मला ढीली पड़ जाती है। चंदर फिर भी उसे अपनी जकड़ में रखना चाहता है, तब निर्मला करवट बदलकर सो जाती है। अब चंदर खुद को बेहद अकेला महसूस करते हुए हताश-सा सो जाता है। रात के दो बजे उसकी निंद टूटती है। वह फिर एक बार निर्मला को टटोलकर अपनी पहचान ढूँढना चाहता है। परंतु उसे डर लगता है कि वह जाग न जाए और अजनाने स्पर्श से अजनबियों की तरह चौंक न जाए। फिर भी वह निर्मला को झकझोरकर उठाता है और कहता है, ''मुझे पहचानती हो? मुझे पहचानती हो निर्मला?'' निर्मला उसे आँखें फाड़े देखती रह जाती है। चंदर निर्मला को ताकता रह जाता है, उसकी आँखें उसके चेहरे पर कुछ खोजती रह जाती है।

इस कहानी में प्रमुख पात्र चंदर है। निर्मला उसकी पत्नी है और इंद्रा पूर्व प्रेमिका एवं वर्तमान में एक धनवान की पत्नी है। पूरा कथानक चंदर को केंद्रित रखकर लिखा गया है। चंदर आज की उस पीढी का प्रतिनिधित्त्व करता है, जो गाँव से शहर चले आते हैं और अपने को दिशाहीन, अकेला, अजनबी, बेगाना महसूस करते हैं। शहरों की चकाचौंध में मानवीयता, प्रेम, अपनापन लुप्त हो रहा है। दिल्ली शहर में रहने वाला चंदर कमलेश्वर की स्वानुभूति को ही व्यक्त कर रहा है। कहानी व्यक्ति की पहचान की अकुलाहट को व्यक्त करती है।

4.3.6 'नीली झील' कहानी का आशय

प्राकृतिक संपदा का चित्रण 'नीली झील' कहानी का प्रमुख उद्देश्य है, साथ ही मनुष्य की देव-दानव प्रवृत्तियों का चित्रण करना। कहानी रोमानी स्तर की लगती है; लेकिन लेखक का मूल उद्देश्य प्रकृति की अनमोल देन-पक्षियों की रक्षा करना है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में गाँवों का शहरीकरण होने लगा। शहरी सुख-सुविधाओं को जुटाने में गाँव भी पीछे नहीं रहें। गाँवों में बाहरी तौर पर परिवर्तन हुआ, लेकिन भीतर से अपनी भूमि से जुड़े रहें। 'नीली झील' इसका एक उदाहरण है। 'नीली झील' कहानी शीर्षक से ही पता चलता है कि इसमें प्राकृतिक संपदा का चित्रण है। इस झील में तरह-तरह के पंछी विचरण करते हैं। विदेशी पंछी आने से झील का सौंदर्य और अधिक बढ़ जाता है। प्रमुख पात्र महेसा को इन पंछियों के साथ गोरी मेम को देखना भी अच्छा लगता है। वह रूमानी प्रवृत्ति का है, लेकिन पारबती की मृत्यु के बाद पूर्णतः बदल जाता है। अंत में नीली झील खरीदकर पंछियों का धर्मशाला बनाता है।

प्रकृति के गोद में शीशे जैसी झलकने वाली एक नीली झील है। इस झील पर जल-पक्षियों के शिकार के लिए आए हुए अंग्रेज कलक्टर ने तीस बरस पूर्व कहा था कि झील तक पहुँचने के लिए पक्का रास्ता होना चाहिए। तब बस्ती से झील तक रास्ता बनाने के लिए आए हुए मजदूरों की टोली में महेसा भी आया था। महेसा को नीली झील, जल-पक्षी एवं शिकार या टहलने के लिए आई गोरी-गोरी औरतें अच्छी लगती हैं। उनकी मदद करते समय उसकी हरदम कोशिश रहती है कि उनके साथ बातें करें, उन्हें किसी बहाने स्पर्श करें। महेसा रंगीले स्वभाव का है, वह नाचता, गाता रहता है। महेसा को सभी पंछियों की जानकारी है, हर

पक्षी की आवाज वह पहचानता था, ''उनकी हर आवाज का अर्थ वह समझता था। वे लड़ रहे हैं, या आनंद से भरकर गा रहे हैं, या साथियों को खतरे का बिगुल सुना रहे हैं। झील के पानी में किलोलें करते हर पक्षी की सरसराहट का एहसास है उसे, चाहे वह मुर्गाबी हो, सुरखाब, जंगली बत्तख, चाहा, बगुला, सारस, नकटा, रेती, सरपपच्छी या सोना-पतारी ! उनकी सीटियों की मधुर आवाजें उनके कानों में बसी हुई हैं...'' परंतु बंदूक चलने और उसके बाद पक्षियों के कातर शोर से महेसा के दिल पर एक चोट-सी लगती है। वह बहुत उदास हो जाता है।

झील तक पक्की सड़क नहीं बन पाई, परंतु महेसा अपनी टोली से बिछुड़ गया। एक चालीस बरस की विधवा पंडिताइन जो बहुत ही सुंदर है, इतनी सुंदर कि ऐसी दस गाँव में भी नहीं मिलेगी, उससे वह शादी कर लेता है। पारबती उम्र में दस साल उससे बड़ी है। किसी का कहना था कि जवान महेसा को देखकर पारबती ने उसे फँसा लिया, तो कोई कहता कि महेसा पारबती की धन-दौलत देखकर ढरक गया। दोनों ने लोकनिंदा की परवाह नहीं की, ''क्योंकि किसी को बुरा देखकर लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते और अच्छा बनते देखना उनसे सहा नहीं जाता।'' महेसा पारबती को बिलकुल मेम की तरह देखना चाहता था। कहीं जाते तो दोनों साथ जाते। एक इक्कागाड़ी खरीद ली थी। दोनों निश्‍चिंत रहकर, मन में जो आता करते चले जाते। बस्ती वाले हमेशा इन दोनों के बारे में बातें करते रहते हैं। पारबती पैसों के लेन-देन का काम करती है, किसी जरूरतमंद को मदद करना उसका स्वभाव है। महेसा को अब काम-धाम करने की आवश्यकता नहीं है। वह अब भी सुंदर औरतों को नीली झील की ओर जाते देखता, तो खुद को रोक नहीं पाता। उन औरतों के साथ बातें करने की कोशिश करता। वहाँ जाकर पंछियों को निहारने में तल्लीन हो जाता है। पारबती पूछती तो झूठ बोल देता है; लेकिन इस बात को लेकर दोनों में किसी प्रकार का तनाव नहीं है। पारबती समझती है कि अपने सुख के कारण उसने महेसा का जीवन खराब किया है।

पारबती की एक इच्छा है कि एक मंदिर और धर्मशाला बनवाया जाए। जहाँ थके-हारे मुसाफिर आराम कर सकें। महेसा ने पारबती की ओर गौर से देखा तो उसे लगा कि सचमुच ही वह उससे बहुत बड़ी है। पारबती गर्भवती होने की बात सुनकर महेसा बहुत खुश हो जाता है। हाफिज जी की दुकान से तरह-तरह की नई चीजें खरीदकर पारबती को ला देता है। दोनों ने स्टुडियों में जाकर फोटो निकलवाया था और तस्वीर फोटोफ्रेम में लगवाई थी। गाँव में बिजली आने वाली है। बिजली के लिए खर्चा बहुत है। इसलिए चुंगी वाले अपने कब्जे की बेकार जमीन बेचकर बिजली का खर्चा उठाना चाहते हैं। पारबती चाहती है कि चबुतरे के पासवाली जमीन खरीदें और मुसाफिरों के लिए धर्मशाला बनवाए। महेसा ने वाक, सारस और सोनापतारी के अण्डे जमा करके रखे थे। सोनापतारी का अण्डा पारबती के हाथ से छूटकर फूट जाता है। यह घटना पारबती के लिए दुखदायक होती है। पारबती का बच्चा पेट में मरा हुआ पाया जाता है और उसके तुरंत बाद पारबती भी मर जाती है। महेसा की दुनिया वीरान हो जाती है। महेसा बिलकुल बदल जाता है। पारबती का फैला पैसा कड़ाई से वसूल करता है। दूसरी शादी की सोच से भी काफी दूर रहता है। हर वक्त उसे पारबती की याद आती है, याद में रोता रहता है। लोग समझते हैं कि महेसा पागल हो गया है। परंतु महेसा जल्दी ही संभल जाता है। वह 'पारबती मंदिर' बनाने की मंशा रखता है। वह अब महेस पाण्डे के नाम से पुकारे जाने

लगा है। मिर्जापुर जाकर मंदिर के पत्थर की तलाश करता है। परंतु मंदिर के लिए जमीन खरीदने और बनवाने के लिए उसके पास पैसे नहीं है। लोगों को लगता है कि महेसा के पास बहुत पैसे हैं।

'नीली झील' पर शिकार करने वालों की तादात बढ़ती जा रही है। पंछियों की दर्दभरी आवाज महेसा को बेचैन करती है। वह नीली झील की ओर जाकर घण्टों बैठता है। पक्षियों को निहारता है, सभी पक्षी अपना-अपना जीवन खुशी से जी रहे हैं। परंतु एकाध शिकारी आकर उन्हें मारता है। महेसा को लगता है कि पारबती जैसे वे भी चले जाएंगे। वह नीली झील, जल-पक्षी, विदेशी से आए पक्षी और उनकी जान के खतरे को लेकर काफी चिंतित हो जाता है। मंदिर और धर्मशाला बनवाने की योजना को लेकर सभी लोगों के पास जाता है। सभी लोग महेसा की मदद के लिए तैयार हो जाते हैं। जिससे महेसा की उदासी और बढ़ जाती है। चुंगी वालों के नीलामी में वह चबूतरे के पास वाली जमीन न खरीदकर दलदल वाली 'नीली झील' खरीदता है। सभी लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। परंतु महेस पांडे बहुत खुश हो जाता है। वह पढ़ना-लिखना तो नहीं जानता था, फिर भी उसने झील वाले रास्ते के पहले पेड़ पर मालिक की हैसियत से एक तख्ती टांग दी थी, जिसपर लिखा था, ''यहाँ शिकार करना मना है।'' इस प्रकार नीली झील कहानी में प्रकृति का एक अनमोल तोहफा 'नीली झील' और वहाँ संचार करने वाले देशी-विदेशी पक्षियों का चित्रण कर लेखक ने सुंदर प्राकृतिक परिवेश की निर्मिति की है। महेसा एक सामान्य मजदूर, मस्करा, रंगीन स्वभाव का होते हुए भी पारबती से शादी करके अच्छा इंसान बन जाता है। पारबती की मनुष्य के लिए धर्मशाला बनाने की इच्छा को वह पक्षियों की धर्मशाला बनाकर अपनी और पारबती की मंशा को साकार करता है।

4.3.7 'इंतजार' कहानी का आशय

इंतजार कहानी में कमलेश्वर ने पेरिस देश की सामंतशाही से पीड़ित मजदूरों के बदतर हालातों का दर्दनाक चित्रण किया है। हरदिन की मारकाट, गाली-गलौज से मजदूरों में खौफ पैदा हुआ है। परिणामस्वरूप मजदूरों का परिवार भी प्रभावित है। इस तानाशाही के खिलाफ बारह साल का बच्चा मित्रों की मदद से गोरे सिपाहियों के नाक में दम कर देता है। वह इंसानियत के हक के लिए अपनी जान गवाँ देता है। इस तरह से दिल दहलाने वाला चित्रण इंतजार कहानी में रेखांकित किया है।

पेरीज़ शहर के फ्रीटाउन इलाके के बाहर तुमाहोल की बस्ती है। घरों में रोशनी नहीं। यही पर कहानी का नायक स्तोम्पी सीपी का जन्म हुआ है। पाँच साल में उसके पिता का निधन हुआ। माँ ने दूसरे शादी की, तो तुमाहोल मोहल्ला छोड़कर नजदीक ही दूसरे मोहल्ले में रहने लगे थे। स्तोम्पी का सौतेला बाप खदान में काम करता है। खदानों के ठेकेदार भला आदमी है, जब दिन-भर में पच्चीस ट्रॉली बजरी काटने पर वह साथ बैठकर कॉफी पिलाते थे। हर गोरा कामचोर या बदमाश नहीं, पर विजिलांते के सिपाहियों का खौफ हर मजदूरों के जहन में बैठा है। स्तोम्पी के बाप को खदानों या वहां खदानों के अंदर के अँधेरे का डर नहीं था, लेकिन खदान से निकलकर धरती पर आते-आते विजिलांते के सिपाहियों के बूटों की मार और उनकी गालियों से डरते थे। उनका शक है कि विजिलांते से बचाने के लिए विदोहियों को मजदूर खदानों में छुपाते हैं। मजदूरों को सिर्फ नंबर से पहचाना जाता था। अगर किसी ने नंबर एकदम न बोला हो, या याद करने में

देर लगी हो, तो विजलांते के सिपाही बूटों से बहुत पिटते थे। स्तोम्पी के सौतेले पिता ने भी सिपाहियों की बहुत मार खाई है। इस डर के कारण उसके भीतर गुस्से का भूत जागता और घर लौटने पर पत्नी को भी पिटता था। उसकी एकदम चीख और कराहने पर पिता बिलख-बिलखकर रोने लगता। माँ को समझाता। फिर वह खाना परोसती और रात में स्तोम्पी का पिता माँ की टाँगों पर जहाँ जहाँ मारा था उसे सेंकता था। और खुद भी अपनी उस जगह को सेंकता जहाँ उसे विजिलांते ने मारा था। विजिलांते का मानना है कि इन मजदूरों का कोई इतिहास, वर्तमान और भविष्य नहीं है। रोज़गार दिया, चर्च दिया और सभ्य बनाया है। बस इन्हें इनका ईश्वर अब मिल गया है। लेकिन पादरी से नायक जान चुका है कि, जो मन और तन से आज़ाद नहीं है वो किसी भी धर्म का बंदा नहीं है। काले पादरी के ये वचन आज़ादी का आसरा देते हुए सहने और सहते जाने की सीख नायक सीपी को देते थे।

एक दिन स्तोम्पी पिता को बिना बताए खदानों के इलाके में गया था। एक टीले पर चढ़कर देखता रहा था। खदानों के मुहाने छोटे-छोटे छेदों की तरह दिखाई दे रहे थे और उनमें उतरने वाले मज़दूर केकड़ों की तरह ही गायब होते जा रहे थे। कटी हुई बजरी लेकर आने वाली ट्रालियाँ तो बहुत बाद में ऊपर आती हैं। मज़दूर तो केकड़ों की तरह नीचे ही छिपे रहते हैं। उस दिन स्तोम्पी ने मेन स्ट्रीट में लोगों को धरती के ऊपर देखा था। तब वह मनुष्य के अस्तित्व को समझ सका था और तभी अपने सौतेले पिता के प्रति उसके मन में अपनापन-सा उभरा था। तब स्तोम्पी ने विजिलांते के शिकारी सिपाहियों को आँख उठाकर देखा था और दौड़कर भीड़ के आगे खड़ा हो गया था। उसे देखकर तमाशबीन बच्चे भी धीरे-धीरे भीड़ के आगे आ गए थे और सामंतशाही के खिलाफ पहली लहर की तरह विजिलांते के दस्तों के सामने खड़े हो गए थे। विप्लवी आंदोलन के नेता ने 'बच्चों को पीछे हटाने को कहा पर एक बुजुर्ग साथी ने कहा था दस-बारह बरस के ये बच्चे हमसे ज़्यादा साहसी हैं। इनके पास केवल भविष्य है। इन्हें सिर्फ पाना है, कुछ खोना नहीं। हमारा वर्तमान हमें कायर बना सकता है। इन्हें नहीं। इनके पास केवल भविष्य है। उसके बाद सिपाहियों ने सभी को पीटा और डिटेंशन लॉकअप में बंद किया। डिटेंशन वार्ड में अँधेरा था। दो महीने बाद नया जेलर आया। उसने कहा-ब्रिटिश कानून नेस्तनाबूत हुआ होगा, लेकिन प्रीटोरिया की सरकार मानव-अधिकार और आधारभूत कानूनों की अभी भी रक्षा करती है। इन नाबालिगों को हम अदालत की आज्ञा बिना डिटेंशन में नहीं रख सकते। आखिरकार बच्चों को सही सलामत उनके घर तक पहुंचाते हैं।

स्तोम्पी का सौतेला पिता उसे डाँट-फटकारते हुए तू अभी बच्चा है, इस सोवेतो के विप्लव से दूर रहने की सलाह देता है तब वह पिता से कहता है, ''अत्याचार और अन्याय सहने वालों की उम्र हमेशा बराबर होती है।'' स्तोम्पी ने बुजुर्गो की तरह चीखकर यह भी कहा कि ''मैं ज़्यादा नहीं जानता, पर जब आप मां को मारते हैं तो मैं जानता हूँ वह मार कहाँ से आती है'' आखिर एक अंधेरी रात में विजिलांते ने चर्च की झोंपड़ी के पीछे खड़े स्तोम्पी पर गोलियाँ चलाई। बुरी तरह से घायल स्तोम्पी खून की मटमैली चादर पर तड़प रहा था। डर से थरथर काँपती चर्च की बुढ़िया टीचर ने उसके पास बैठते हुए पादरी से कहा था ''स्तोम्पी के घर वालों को खबर कर दो। यह सिर्फ पाँच-सात मिनट का मेहमान है। तब स्तोम्पी कहता है- ''नहीं! किसी को खबर मत करो मुझे चुपचाप यहीं कहीं दफना देना, मगर मेरी माँ, मेरे पिता को मत बताना

उन्हें यही बताना मैं डिटेंशन में हूँ तब वे रोएँगे नहीं, मेरा इंतज़ार करेंगे'' यह सुनकर पादरी की आँखों में आँसू आते हैं। जीसस क्राइस्ट का कहना है कि मैं मनुष्य का शरीर धारण करके फिर धरती पर आऊँगा... मेरा इंतज़ार करना, लेकिन नायक को जीसस क्राइस्ट का इंतज़ार नहीं है। वह खुद क्रांति करना चाहता था।

लेखक ने महज बारह साल के बच्चे को प्रस्तुत कहानी का नायक बनाया है, जिसके माध्यम से सामंतशाही, तानाशाही के खिलाफ विप्लव मचाते दिखाया है। गोरे सिपाहियों पर पत्थरबाजी कर उन्हे घायल कर मजदूरों के तन, मन के आजादी की मांग करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

4.3.8 'दिल्ली में एक मौत' कहानी का आशय

कमलेश्वर की कहानी 'दिल्ली में एक मौत' आधुनिक सामाजिक संबंधों की विलक्षणता एवं गैर मानवीय स्थिति को रूपायित करती है। नगरीय जीवन शैली एवं दिखावे की प्रवृत्ति को उजागर किया है। नगरों में सामाजिक, मानवीय संबंधों की क्रूरता का चित्रण किया गया है।

'दिल्ली में एक मौत' कहानी जीवन में व्याप्त सभ्यता की कृत्रिमता और संवेदनशून्यता को अधिक तीव्रता के साथ स्पष्ट करती है। शहर की स्वार्थी, संवेदनशून्य और व्यापारी मनोवृत्ति का यह प्रमाण है, पिछले साल ही दीवानचंद ने अपनी लड़की की शादी की थी तो हजारों की भीड़ थी। आज उसके शव के साथ जाने से भी वही लोग कतराते हैं। यदि शमशान भूमि पर सैंकड़ों लोग इकट्ठे हो भी गए हैं, तो उनमें से अधिकतर औपचारिकता के कारण आए हैं, कुछ लोग वहाँ किसी और से मिलने तथा अपना काम करा लेने के लिए आये हैं। स्त्रियाँ ऐसे समय भी अपने सौन्दर्य एवं वस्त्रों का प्रदर्शन करने से नहीं चूकती। मृत्यु जैसे समय में भी मनुष्य मूल्य हीनता का ही परिचय देता है। इसी कथ्य का प्रकाशन लेखक ने यहाँ किया है।

शवयात्रा में सम्मिलित होने के मूल में न शोक संतप्त परिवार के प्रति करुणा है न सहानुभूति। वास्तव में सच्ची संवेदनाओं को लेकर शवयात्रा में सम्मिलित होने वालों की यात्रा नगण्य हो गई है। जीते जी हजारों की भीड़ और उसके मरने के पश्चात् लोगों का शव यात्रा में न जाना, यह अन्तर जीवन और मृत्यु का अन्तर है। शहर की स्वार्थी, संवेदन शून्य और व्यापारी मनोवृत्ति का यह प्रमाण है। जीवन मूल्यों का ऐसा विघटन हुआ है कि कृत्रिमता, फैशन और तड़क – भड़क की इस संस्कृति में शोक भी एक फैशन बन गया हैं। श्मशान घाट पर लोग दिवंगत आत्मा के लिए प्रार्थना करने के स्थान पर भविष्य की योजनाएँ बनाते हैं। अतुल भिवानी अपना कागज निकाल कर वासवानी को दिखाता है। स्त्रियाँ अपने मेकअप तथा रात की पार्टी की बातें करती हैं। दूसरों के दुःख को अपना समझने वाली हमारी मानसिकता इतनी पतनशील हो गई हैं कि आज हमारे पास किसी के शोक में सम्मिलित होने का भी समय नहीं है।

इस कहानी में महानगरीय मनोवृत्ति को अभिव्यक्ति किया है। सेठ की मृत्यु की खबर से लेकर उसके अन्तिम संस्कार तक लोगों की विभिन्न प्रतिक्रियाओं, हलचलों और मनोवृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण लेखक ने किया है। बौद्धिकता के कारण यान्त्रिकता का प्रवेश जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। शहरों का सम्पन्न वर्ग इस यान्त्रिकता के प्रदर्शन का सबसे अधिक शिकार है। शहरी जीवन की कठोर यथार्थता का चित्रण, फैशन,

शोक की अभिव्यक्ति, मध्यवर्गीय व्यक्तियों, स्त्रियों आदि सभी पर कठोर व्यंग्य का प्रहार प्रस्तुत कहानी में किया गया है।

४.३.९ 'मांस का दरिया' कहानी का आशय

'मांस का दरिया' कहानी में मनुष्य अपने आखिरी क्षण तक संघर्षमय स्थिति में भी जिजीविषा को बढ़ाने का भरसक प्रयत्न करता है। वेश्या व्यवसाय करने वाली औरतों का जीवन ढलती उम्र में नरकमय बन जाता है, इसका चित्रण लेखक ने बहुत ही मार्मिक ढ़ंगसे किया है। इस कहानी का विषय वेश्या व्यवसाय करने वाली जुगनू नामक एक औरत के जीवन का लेखा-जोखा है, जो यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। वेश्याओं की दयनीय जिंदगी का चित्रण करना लेखक का मूल उद्देश्य रहा है। जुगनू के अनेकों के साथ संबंध स्थापित हो जाते हैं; लेकिन एक मदनलाल नामक व्यक्ति अंत तक उसे याद आता है। जुगनू का संघर्ष सभी वेश्यावर्ग का संघर्ष है। वेश्याओं की बीमारी, आर्थिक अभाव, उपचार आदि का वृत्तांत इस कहानी में सूक्ष्मता के साथ चित्रित हुआ है।

इस कहानी में निम्न वर्ग की वेश्या जुगनू का जीवन और उसका जीने का संघर्ष, उसकी दुर्दशा का व्यापक चित्रण किया गया है। इब्राहीम नाम का एक ठेकेदार वेश्या बाजार में जाकर चुस्त-दुरुस्त लड़कियों को छाँटता है और उनकी डॉक्टरी जाँच करके शहर के अच्छे हिस्सों में काम पर लगाता है। जिस ठेके से लड़कियाँ ली थीं, उसका हर महीने हिसाब चुकता कर जाता है। जिस वेश्या को डॉक्टरी जाँच में बाहर निकलवा जाता है, उसे अपने मूल ठेके पर धंधा करना पड़ता है। ज्यादा बीमार रहने वाली वेश्या पर रोक भी लगा दी जाती है। शहर के अच्छे हिस्सों में धंधा भी अच्छा चलता है, जिससे आमदनी अच्छी होती है। जुगनू ने एक बार इब्राहीम से कहा था कि उसे भी अच्छी जगह काम पर लगा दें। इब्राहीम ने कहा था, ''शादी तो है नहीं कि किसी की आँख में धूल झोककर गले मढ दूँ, जो आएगा, वह तो बोटी-बोटी देखेगा।'' यह जुगनू के लिए पहली चोट थी। दूसरी चोट उसको तब लगती है, जब शहनाज नाम की वेश्या कहती है कि, ''अरे अल्ला तुझे वह दिन भी दिखाएगा जब ग्राहक तेरी सीढ़ियों पर कदम तक नहीं रखेगा।'' शहनाज की इस बात पर मुहल्ले में बड़ा बावेला मचा; क्योंकि ऐसी गाली तो बुरी से बुरी वेश्या को नहीं दीं जाती, उनकी तमन्ना है कि, ''...सबके ग्राहक जीते-जागते रहें। खुदा मर्दों को रोजी दें... जाँघ में जोर दें।''

एक मिल मजदूर मदनलाल जुगनू के कोठे पर आता है। वह जुगनू का परिचय प्राप्त करना चाहता है। चार-पाँच ग्राहकों का वक्त वह अकेला लेता है। मदनलाल में अन्य ग्राहकों जैसा वहशीपन नहीं है। वह जब दुबारा जुगनू के पास आता है, तब जुगनू की तबीयत खराब थी। उसी वक्त मदनलाल दूसरी वेश्याओं की ओर न जाकर वापस चला जाता है। जुगनू को उसकी यह बात अच्छी लगती है। उस कोठे पर सबसे बड़ी अम्मा है, वह सब की रखवाली करती है। वह किसी के बाल साफ करती है, किसी की साड़ियों पर इस्त्री करती है और अपनी मृत लड़की की याद में रोती रहती है। उसकी लड़की कमला बहुत ही खूबसूरत थी, उसे किसी पैसे वाले ने जहर देकर मार डाला था। अम्मा के यहाँ बिलकीस नाम की एक वेश्या है, जो बहुत ही बिनधास्त है, अपने ग्राहक को बहुत सताती है।

बहुत दिनों के बाद मदनलाल जुगनू के कोठे पर आता है। वह अपना परिचय देता है कि वह एक मिल मजदूर है, मिल मालिकों ने मजदूरों की बिना बताए छँटनी की है, मदनलाल भी हड़ताल पर बैठ गया था, जेल भी गया था। इसी कारण वह बहुत दिनों तक जुगनू के यहाँ नहीं आया था। उन्हीं दिनों सभी वेश्याओं की डॉक्टरी जाँच होती है। जुगनू को तपेदिक हो गया है, जुगनू को बुखार और खाँसी से परेशान होना पड़ा था। अन्य वेश्याएँ जुगनू को वहाँ से जल्दी हटाने की बात करती हैं। अम्मा ने दिए दो सौं रुपए लेकर जुगनू तपेदिक-अस्पताल में भरती हो जाती है। अपने पास का सारा रुपया खत्म हो जाता है। जुगनू जब भी शीशे में अपने को देखती तो घबरा उठती थी, ''अब क्या होगा? कैसे बीतेगी यह पहाड़-सी बीमार जिंदगी। सहारा... कोई और सहारा भी तो नहीं, कोई हुनर भी नहीं...'' सचमुच उसका बदन झुलस-सा गया था। दरोगा को विश्वास नहीं था कि जुगनू अस्पताल में है। उसे लगता है कि वह कहीं और जगह बैठने जाती है। दरोगा अम्मा को पैसों (हफ़्ता) के लिए तंग करता है। जुगनू सेनेटोरियम में सात महीने रही, बीच-बीच में अम्मा से मिलने आती रही थी, अम्मा से सुना था कि कई नई लड़कियाँ लखनऊ-बनारस से आई हैं और उन्होंने धंधा बिगाड़ दिया है। शहनाज की हालत खराब हो गई है और कलावती भूखों मरने की हालत में है। यह सब सुनकर जुगनू और अधिक घबरा जाती है।

सेनेटोरियम में बहुत दिन रुकना नहीं हुआ और जुगनू वापस आ गई। उसके बुरे दिनों में ग्राहकों ने उसकी मदद की थी जिनमें मनसू किरानी ने पच्चीस रुपए, कंवरजीत होटल वाले ने सैंतालीस रुपए, संतराम फिटर ने बीस रुपए और मदनलाल ने तीस रुपए दिए थे। सात महीने की किश्त न मिलने से पुलिसवाले उसे तंग कर रहे थे। कर्जा तो बहुत बढ़ चुका था। वह नए सिरे से फिर बैठने लगी; परंतु आमदनी बहुत कम होती थी। बदन कमजोर हो गया था, नपंसुक लोग बहुत सताते थे। जाँघ के जोड़ पर फोड़ा निकल आया था, उसे चलने में काफी तकलीफ हो जाती थी। आवारा लौंडें औरतों को देखकर गंदे इशारे करते हैं, जो जुगनू जैसी औरतों को बहुत तकलीफ होती है। जुगनू का फोड़ा बहुत दर्द करता है, फिर भी वह एकाध को खुश कर देती है। वह बारजे पर बैठे-बैठे सोचती है कि बेसहारा पहाड़-सी जिंदगी, कैसे कटेगी, या वृद्ध वेश्याओं की तरह बुर्का पहनकर मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठना पड़ेगा; क्योंकि पहचान वालों में ऐसा कोई मर्द नहीं था, जिसके छांव तले जिंदगी कट जाए।

सभी कर्जदार अपने पैसे वसूल करने के लिए उसके पास आते हैं। फोड़े के दर्द करने पर भी मनसू अपनी इच्छा पूरी करके चला जाता है। जुगनू ने दीवार पर निशान लगाए थे कि कर्जदार में से कौन कितनी बार आया था। संतराम फिटर बीस रुपए के बदले में अपना हिसाब चुकता कर गया था। बहुत दिनों के बाद मदनलाल आ जाता है। जुगनू को डर लगता है कि वह रुपयों की बात करेगा। जुगनू का फोड़ा आज उसे बहुत दर्द दे रहा है, जब यह बात वह मदनलाल को कहती है तो वह जबरदस्ती नहीं करता, फिर आने की बात कहकर चला जाता है। जुगनू को यह अच्छा नहीं लगता, वह बाहर आकर देखती है, तो मदनलाल दूसरी कोठी की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। पहले तो जुगनू को तिलमिलाहट हुई, परंतु बाद में शांत हो गई। फोडा और जोर से टीस उठा था, इतने में कँवरजीत आ जाता है। जुगनू उसे फोड़े की बात बताती है, परंतु कँवरजीत उसके साथ जबरदस्ती करता है, शैतान की तरह सवार हो जाता है, वह दर्द से चिल्लाती है,

छटपटाती है, तभी फोड़ा फूट जाता है। उसी वक्त कँवरजीत 'ध्यान रखना, चौथी बारी हुई' कहकर निकल जाता है। जुगनू फत्ते को बुलाकर उसे कहती है कि बिमला के घर एक आदमी गया है, उसे बुलाकर ला। फिर फत्ते को रोक देती है। वह सोचती है ''मैं फिर आऊँगा'' कहकर चला गया है, तो आएगा जरूर। फोड़े से मवाद निकलता रहता है और जुगनू दर्द से तड़पती रह जाती है।

इस प्रकार कमलेश्वर ने वेश्या के दयनीय जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। जुगनू का संघर्ष, क्षयग्रस्तता, वृद्धत्व, भविष्य की चिंता और समाज का इनकी ओर देखने का नजरिया आदिका रेखांकन किया है। यह सिर्फ जुगनू की गाथा न होकर पूरे वेश्यावर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

4.3.10 'बयान' कहानी का आशय

बयान में निरुपाय नारी का चित्रण, न्यायतंत्र की ज्यादती एवं सरकारी अनीति का चित्रण मिलता है। बयान कहानी में एक अडातालीस वर्षीय महिला कटघरे में खड़ी है। उसे अपने फोटोग्राफर पति की आत्महत्या के लिए जिम्मेवार ठहराया जा रहा है। न्यायालय में वह बयान देते समय अपने परिवार की पूरी कहानी (घटना-क्रम) बता रही है। पारिवारिक, व्यावसायिक एवं अन्य संबंधों की जानकारी इसमें चित्रित है। एक सरकारी ईमानदार फोटोग्राफार का परिवार राजनेताओं की तिकड़मबाजी में खत्म होता हैं। पति (फोटोग्राफर) की आत्महत्या के बाद पत्नी न्यायालय में बयान दे रही हैं, जो इस कहानी का कथानक है।

यह मोनोलॉग शैली में लिखी, एकपात्रीय कहानी है। सरकारी पत्रिका में काम करने वाले एक फोटोग्राफर ने आत्महत्या की है। कानून ने उसकी पत्नी को कटघरे में खड़ा किया है, वह बयान दे रही है, जो इस कहानी के शीर्षक का द्योतक है। बयान देते समय वह औरत अपने परिवार से संबंधित पूरा ब्यौरा न्यायालय के सामने रखती है। उसके पति सरकार के ही प्रेस इन्फारमेशन ब्यूरो में काम करते थे, वहाँ उन्होंने पाँच साल तक काम किया। उसके पति नौकरी के शुरूआत के दिनों में बहुत उत्साहित होकर काम करते रहें। पंद्रह अगस्त, शानदार दावतें आने वाले विदेशी मेहमान, लाल किले में स्वागत-समारोह, शाही सवारी, शिलान्यास, लोकार्पण समारोह, 26 जनवरी के दिन लोकनृत्यों की झाँकियों की, नेवी के बैण्ड की, राष्ट्रपति की सवारी और सलामी की तस्वीरें वे खींचते थे। जब वे सरकारी पत्रिका में छह साल तक काम करते रहें, तब तक लहलहाती खेती, बांध, बिजली घर, फैक्टरियों, मिलों, वन महोत्सवों, नई रेल्वे लाईनों, पुल के लोकार्पणों, स्कूलों आदि की तस्वीरें खींचते थे। उन्हें लगता था कि आजादी का यही सुख है, लेकिन वास्तविकता कुछ अलग थी, जो उन्हें धीरे-धीरे मालूम होती गई। उन्हें पता चला कि उनकी तस्वीरों से कुछ हासिल नहीं होने वाला है। वे खुद कहीं भीतर से झूठे पड़ते जा रहें हैं।

इतने में एक घटना घटी, थार के रेगिस्तान को रोकने के लिए की गई विकास योजनाओं की जानकारी देते समय संसद में मंत्री महोदय ने कहा था कि बहुत सारे पेड़ लगाए गए हैं, जंगल बढ़ाने के लिए पुरजोर कोशिश की गई है। परंतु सरकारी फोटोग्राफर ने (पति) जो तस्वीरें ली थीं, उनमें जंगल कहीं नहीं था, रेगिस्तान ही रेगिस्तान था। जो पेड़ लगाए थे, वे सब सुख गए थे। विरोधी दल प्रमुख नेता ने उन्हीं तस्वीरों का हवाला देकर संसद में मंत्री जी के सामने मुसीबत खड़ी कर दी थी। मंत्री जी ने उस महिला के पति

(सरकारी फोटोग्राफर) को नौकरी से बाहर कर दिया। तभी से उस महिला के पति की आँखों से खून बहने लगा था, घर की हालत बहुत खस्ता हो गई थी। एक विज्ञापन कंपनी में पति काम करने लगे थे। दो सौ रुपए मिलते थे, उन्हीं पैसों से एक बच्ची, पत्नी और घर का खर्च बड़ी मुश्किल से चलता था।

पत्नी आगे बयान में कहती है कि उसके पति में किसी प्रकार की बुराइयाँ नहीं थीं। उसे (पत्नी) एक स्कूल में नौकरी करनी पड़ती है। स्कूल के मैनेजर की उम्र करीब साठ के आस-पास थी। उसी समय पत्नी की उम्र बत्तीस की थी। पत्नी बयान देते समय कहती है कि मैनेजर को उनके पति का हररोज सुबह-शाम स्कूल में आना अच्छा नहीं लगता था, इसी वजह से उसके (पत्नी) और मैनेजर के संबंधों को मत जोड़िए। उसकी वजह से उसके पति ने आत्महत्या नहीं की है। पति का एक संपादक दोस्त भी हमेशा घर आता था, उसके साथ भी मेरा संबंध मत जोड़िए। वह बताती है कि उसे लेकर संपादक और मैनेजर में कोई झगड़ा नहीं था। इसलिए पत्नी उसके पति की मौत की जिम्मेदार कैसे हो सकती है? संपादक और उसके पति में खासी दोस्ती हो गई थी। इसलिए संपादक महोदय खाने के लिए घर पर आते थे, परंतु उनकी नजरों में कोई गंदगी नहीं थी। इसलिए पति-पत्नी में तनाव था, ऐसा कहना गलत होगा।

विज्ञापन कंपनी की नौकरी जाने का कारण बयान देते समय वह कहती है, 'एक दिन पति ने छोटी कपड़ों में नंगी तस्वीरें खिंची, संपादक ने दूसरे दिन छापी। अधनंगी तस्वीरें देखकर स्कूल के मैनेजर पत्नी को नौकरी से हटा देते हैं। उसके पति दूसरे दिन ही फाँसी लगाकर आत्महत्या करते हैं। पत्नी कहती है कि उसके पति ने उसके कारण आत्महत्या नहीं की है, क्योंकि उसका पूर्व प्रेमी बिशन, जिससे वह प्रेम करती थी, वह तो बहुत पहले लगभग बाईस साल पूर्व उसके जीवन से चला गया है। इसलिए वह अंत में कहती है कि आप जो भी फैसला सुनाना चाहते हैं, सुनाइए, परंतु उसके कारण या उसके अन्य पुरुषों (बिशन, मैनेजर, संपादक) से संबंधों के कारण उसके पति ने आत्महत्या नहीं की है।

जब पत्नी की नौकरी छूट जाती है, तो वह दूसरी नौकरी ढूँढना शुरू कर देती है। उसकी बच्ची पापा से बहुत प्यार करती थी। पहले तो वह उसके पापा से बहुत डरती थी, परंतु माँ ने बताया कि उसके पापा की तबीयत अच्छी नहीं है, इसीलिए हमेशा आँखों से खून बहता रहता है। पत्नी और बच्ची घर पर नहीं थे, तब पति ने आत्महत्या की है। बच्ची स्कूल से दो बजे आती है, पत्नी चार बजे आती है, तो बच्ची उतावली होकर माँ से कहती है, ''मम्मी, मम्मी ! पापा की तबीयत अच्छी हो गई ! वे आराम से लेटे हैं...'' इस कहानी में पति और पत्नी के आपसी संबंधों, बिशन और पत्नी के प्यार के कुछ प्रसंगों को भी चित्रित किया है, जो कथावस्तु को विकसित करने में सहायक हैं। इस प्रकार कटघरे में खड़ी एक औरत अपना बयान देती है और सिर्फ वही अकेली बोलती है, जो इस कहानी का कथानक है। इस कहानी में दूसरे पात्रों के संवाद अव्यक्त (गुप्त) हैं। पत्नी के उत्तर के माध्यम से पता चलता है कि वकील या न्यायाधीश उन्हें कौनसे प्रश्न पूछते हैं।

4.4 सारांश

कोहरा–

- सेठों के सेठ कहलाने वाले स्विट्जरलैंड देश में मजदूरों के हालात बद से बदत्तर हुए हैं, इसका चित्रण लेखक ने कोहरा कहानी के माध्यम से किया है।
- साथ ही लेखक–रीथ और पियरे की त्रिकोणीय प्रेम कहानी को गूंथने की सफल कोशिश लेखक ने की है।
- स्विट्जरलैंड के युवा बगावत करने पर पुलिस उन्हें पकड़ने के फिराक में है और बागी सेनानियों को पुलिस थाने में हाजिरी लगाने पड़ती है।

राजा निरबंसिया–

- कमलेश्वर का कहानी–लेखन उनके जीवन में आए समय की धुरी पर घूमती सामान्य सच्चाइयों को, अंतर्बाह्य परिवर्तनों को रूपांतरित करता है।
- दांपत्य जीवन के बदलते सामाजिक संदर्भों में पति–पत्नी के बिखरते, टूटते संबंधों को सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है।
- आज का परिवार पुरुष प्रधान और स्त्री प्रधान न होकर अर्थ प्रधान हो गया है।
- पुराने एवं नए समय के द्वद्व को यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
- बेरोजगारी की समस्या से भविष्य और वर्तमान पर प्रश्नचिह्न उपस्थित होता है। परिवार वाले भी सम्मान नहीं देते हैं।
- कर्ज का कोढ़ जगपति को लग जाता है और उसके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है।
- जिस पुरुष से अर्थ और शरीर का सुख मिलता न हो, स्त्री उसे छोड़ देती है। कमलेश्वर ने चंदा के माध्यम से नारी में आए आधुनिक मध्यवर्गीय परिवर्तित मूल्यों को दर्शाया है।
- 'राजा निरबंसिया' कहानी द्वारा भारतीय विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न उठाया है।

चप्पल–

- 'चप्पल' कहानी अत्यंत ही संवेदनशील एवं भावनात्मक कहानी है।
- प्रस्तुत कहानी में कमलेश्वर ने अस्पताल का वातावरण, कर्मचारियों के व्यवहार आदि का वर्णन किया है। एक पिता द्वारा अपने उस पुत्र को सहेजना, जिसका एक पैर काट दिया गया है, इस घटना का बड़ा मार्मिक वर्णन किया है।

- लेखक मनुष्य की पीड़ा को उजागर कर यह बताना चाहता है कि दुनिया में दुखी सभी हैं तथा दुख का स्वरूप अलग-अलग होने के बाद भी दुख का अहसास सब में एक समान ही रहता है।

गर्मियों के दिन–

- कहानी के माध्यम से कमलेश्वर ने कस्बे के लोगों की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है।
- वैद्य जी का जीवन संघर्ष, पैसे की कमी, मरीजों की प्रतीक्षा, पटवारी के रजिस्टर लिखना आदि के कारण पाठकों के मन में करुणा जागृती होती हैं।
- चुंगी दफ्तर का परिवेश यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। साथ ही चुंगी दफ्तर के लेखापालों पर व्यंग्य कसा है।
- इस कहानी में डाक्टरी पेशा पर व्यंग्य कसा है, कस्बे में लोगों का वैद्य जी पर (व्यवसाय) से विश्वास उड़ गया है। डॉक्टर मरीजों को लूट रहे हैं।
- कस्बे में रहने वाले वैद्य की जीवनी का आधार मरीजों को चूर्ण, भस्म के अलावा बीमारी का प्रमाणपत्र देना है, यही लेखक ने चित्रित किया है।
- इस कहानी में सरकारी व्यवस्था पर भी व्यंग्य मिलता है, जैसे शराब की दुकानें खोलना या वैद्य का व्यवसाय प्रमाणपत्र देना आदि।
- कमलेश्वर ने सामान्य व्यक्ति, कस्बे का वैद्य आर्थिक परेशानियों से त्रस्त है, इसका चित्रण बहुत ही यथार्थवादी और कुशलतापूर्वक किया है।
- विरासत में मिली वैद्य (होमिपैथिक) व्यवसाय की सेवा समाप्त होती जा रही है।
- वैद्य नित्यानंद तिवारी की विवशता एवं मजबूरी इस कहानी का प्रमुख विषय है, जो पाठकों को आकर्षित करती है।

खोई हुई दिशाएँ–

- महानगरीय जीवन में बढ़ती हुई अनेक समस्याओं का चित्रण करना कमलेश्वर का प्रमुख उद्देश्य है।
- महानगरीय जीवन की चकाचौंध में मनुष्य एक दूसरे से अजनबी होता जा रहा है।
- शहरी संस्कृति में एकाकीपन, संबंध शून्यता, अकुलाहट, छटपटाहट से व्यक्ति का मन त्रस्त है।
- महानगरीय जीवन में आए बदलाव का परिणाम पारिवारिक रिश्ते-नातों पर भी हुआ है।
- इसी स्पर्धात्मक युग में व्यक्ति की दृष्टि व्यावसायिक हो गई है और प्रेम, अपनापन, मनुष्यता खत्म होती जा रही है।

- शहरीकरण के कारण नगरों में भीड़ बढ़ती गई, लोगों में कृत्रिमता, अवसरवादिता, असुरक्षा, बेगानापन, जड़ता बढ़ती गई।
- शहर का व्यक्ति अपनी निजता, अस्मिता खोजता है; परंतु वह अपने परिवार में नहीं देखाई देती।
- भारत की राजधानी दिल्ली में घटित इस कहानी के नायक चंदर के माध्यम से लेखक ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है।

नीली झील–

- 'नीली झील' में प्राकृतिक संपदा का चित्रण बहुत ही सुंदर, मनोरम एवं यथार्थ के धरातल पर हुआ है।
- 'नीली झील' में प्रकृति प्रेमी व्यक्ति 'नीली झील', जल पक्षी, विदेश से आए हुए पक्षी एवं प्राकृतिक संपदा को बचाना चाहता है, तो दूसरी ओर राक्षसी प्रवृत्ति के लोग भी हैं, जो इस संपदा को नष्ट करने में लगे हुए हैं।
- इस कहानी से पर्यावरण की रक्षा करने का संदेश दिया गया है।
- पारबती के माध्यम से परंपरा को तोड़ने वाली औरत का चित्रण है, जो विधवा विवाह के माध्यम से सार्थक हुआ है।
- पारबती हो या महेसा दोनों का शारिरीक आकर्षण कम होते ही समाजसेवा का व्रत धारण करते दिखते हैं।
- मजदूर और नीली झील पर आए सैलानियों के माध्यम से सामाजिक विषमता दिखाई गई है।
- देहाती लोग आज भी प्राकृतिक संपदा से प्रेम करते हैं, परंतु शहरी लोगों में यह प्रेम नहीं दिखाई देता है।
- निरीह पक्षियों की क्रूर हत्या का विरोध करना कहानी का प्रमुख उद्देश्य है।
- महेसा के माध्यम से पुरुष जिस प्रकार सुंदर स्त्री को जी जान से चाहता है, उतना ही वह प्रकृति से प्रेम कर सकता है, इसका चित्रण किया है।
- महेसा का नीली झील खरीदकर पक्षियों को जीवनदान देना, एक प्रेरणादायक आदर्श है। जो कमलेश्वर इस कहानी के माध्यम से नया संदेश देते हैं।

इंतजार–

- 'इंतजार' कहानी में कमलेश्वर ने सामंतशाही से पीड़ित मजदूरों के बदत्तर हालातों का दर्दनाक चित्रण किया है। हरदिन की मारकाट, गाली गलौज से मजदूरों में खौफ पैदा हुआ है।

- परिणामस्वरूप मजदूरों का परिवार भी प्रभावित है। इस तानाशाही के खिलाफ बारह साल का बच्चा मित्रों की मदद् से गोरे सिपाहियों के नाक में दम कर देता है।
- वह इंसानियत के हक के लिए अपनी जान की बाजी लगा देता है। गोरे सिपाहियों की गोलियों से नायक की मृत्यु पाठक का दिल दहला देती है।

दिल्ली में एक मौत–

- कहानी के मुख्य नायक सेठ दीवानचंद की अंत्येष्टि के माध्यम से नगर के लोगों की संवेदनहीनता, स्वार्थपरकता तथा अमानवीय औपचारिकता को प्रकट करती है।
- कहानी 'दिल्ली की एक मौत' में महानगर की व्यस्त एवं आत्मकेंद्रित जिंदगी का सजीव चित्रण दृष्टिगोचर होता है।
- किसी की मौत में भी शामिल होना है तो एक औपचारिकतावश। किसी के पास शोक-संवेदना प्रगट करने का भी वक्त नहीं।

मांस का दरिया–

- कहानी में प्रमुखतः मध्यवर्गीय वेश्याओं के नारकीय जीवन का चित्रण है।
- जुगनू के माध्यम से कमलेश्वर ने वेश्या वर्ग का जीवन संघर्ष और घूटन का चित्रण किया है।
- मध्यवर्गीय वेश्या जीवन की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।
- बीमारी लगने के बाद वेश्याओं का जीवन नरक के समान बन जाता है और उन्हें भिखारी जैसा जीवन जीना पड़ता है।
- ठेकेदार और पुलिस वर्ग की दलाली का चित्रण मिलता है।
- ग्राहक सिर्फ वेश्याओं के शरीर को देखता है, उसकी नजर सिर्फ 'मांसल' देह पर होती है, उनकी भाव भावनाओं, दिल, मन आदि का कोई महत्त्व नहीं है।
- समाज की निर्ममता एवं स्वार्थी वृत्ति इस कहानी में चित्रित हुई है।
- मदनलाल के माध्यम से लेखक ने कुछ हमदर्दी दिखाने की कोशिश की है, लेकिन वह भी स्थायी रूप में नहीं है।
- इस प्रकार 'मांस का दरिया' कहानी उस नारी की कथा है, जो पेट भरने के लिए वेश्या बन जाती है और बीमारी, वृद्धत्त्व, भविष्य को लेकर चिंतित है। इस वर्ग की ओर भी समाज और सरकार ने ध्यान देने की आवश्यकता है।

बयान–

- कहानी में सरकारी फोटोग्राफर की पत्नी की विवशता का चित्रण है।
- कहानी में जीवन के हर क्षेत्र में खपता हुआ, पीसता हुआ, शोषित, दबा हुआ, विवश, लाचार निरुपाय मध्यवर्ग चित्रित हुआ है।
- न्यायतंत्र में फँसी नारी की व्यथा का चित्रण करना इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य है।
- एक ईमानदार फोटोग्राफर की जीवन की त्रासदी (ट्रैजडी) का चित्रण प्रभावशाली ढंग से चित्रित हुआ है।
- न्यायव्यवस्था का खोखलापन एवं दोषपूर्ण पद्धति का पर्दाफाश किया गया है।
- अपने खानापूर्ति के लिए उस नारी पर अभियोग चलाया जा रहा है, जिसने अपना पति खोया है। पति की मृत्यु का कारण परिवार में ढूँढा जा रहा है। असल में राजनीतिक षड़यंत्र का वह शिकार बनी हुई है।
- सरकारी योजनाओं पर व्यंग्य किया गया है।
- फोटोग्राफर सरकारी व्यवस्था से समझौता करता, तो वह विवश नहीं होता, उसके भीतर का आक्रोश चित्रित किया गया है।
- स्वतंत्रता के बाद आम आदमी का भ्रम निरास बढ़ता गया है।
- न्याय व्यवस्था में स्त्री–चारित्र्य का हनन करना, आम बात हो गई है।
- इस प्रकार एक फोटोग्राफर (आम आदमी) की मौत आर्थिक तंगी, राजनीतिक षड्यंत्र के शिकार के कारण होती है।

4.5 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न

प्रश्न १ (अ) समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'कोहरा' कहानी में दीवार पर लगी व्यंग्य–पोस्टर क्या संकेत देती है।

   अ) स्विस मजदूरों की विफल हड़ताल ब) स्विस मजदूरों की सफल हड़ताल

   क) सेठों के सेठ देश स्विट्जरलैंड ड) इनमें से कोई नहीं

2. 'कोहरा' कहानी का पात्र पियरे .... देश से नाराज है।

   अ) भारत ब) स्विट्जरलैंड क) योगोस्लाविया ड) लूजान

3. 'राजा निरबंसिया' कहानी .... सुनाती है।

अ) माँ ब) दीदी क) दादी ड) नानी

4. 'राजा निरबंसिया' कहानी में लेखक के खयालों का राजा............ है।

अ) जगपती ब) दयाराम क) अरमान ड) चंदा

5. 'चप्पल' कहानी अत्यंत ही .... कहानी है।

अ) भावनात्मक ब) ऐतिहासिक क) राजनैतिक ड) वैज्ञानिक

6. 'चप्पल' कहानी में.................. का कभी भी बंटवारा नहीं किया जा सकता, कहा गया है।

अ) दुख ब) कष्ट क) यातना ड) यह सभी

7. 'गर्मियों के दिन' में .... का परिवेश चित्रित है।

अ) रक्षा दफ्तर ब) सिंचाई दफ्तर क) मंत्रालय ड) चुंगी दफ्तर

8. 'गर्मियों के दिन' में .... शैली है।

अ) वर्णनात्मक ब) आत्मकथनात्मक क) घटनात्मक ड) विश्लेषणात्मक

9. 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में मुख्यतः मनुष्य की .... का चित्रण है।

अ) दिशाहीनता ब) व्यक्तित्त्व क) जीवन ड) कृतित्त्व

10. 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी के अंत में चंदर को अपनी .... भी अजनबी लगती है।

अ) दोस्त ब) पत्नी क) माँ ड) भाई

11. 'नीली झील' कहानी में लेखक का मूल उद्देश्य प्रकृति की अनमोल देन....... की रक्षा करना है।

अ) पक्षियों ब) प्राणियों क) मनुष्य ड) इनमें से कोई नहीं

12. 'नीली झील' कहानी में नायक पक्षियों की धर्मशाला बनाकर .... का सपना साकार करता है।

अ) पत्नी ब) भाई क) पिताजी ड) माँ

13. अत्याचार और अन्याय सहने वालों की उम्र हमेशा .... होती है।

अ) कम ब) ज्यादा क) बराबर ड) इनमें से कोई नहीं

14. स्तोम्पी सीपी की उम्र ...... है।

अ) छह ब) बारह क) बाईस ड) चालीस

15. 'दिल्ली में एक मौत' शीर्षक कहानी में मौत ...... की हुई थी?

अ) सेठ दीवानचंद ब) सरदार क) धर्मा ड) मि. वासवानी

16. 'दिल्ली में एक मौत' कहानी में .... की अभिव्यक्ति हुई है।

अ) महानगरीय मनोवृत्ति ब) आंचलिक मनोवृत्ति क) ग्रामीण मनोवृत्ति ड) इनमें से नहीं

17. 'मांस का दरिया' कहानी .... जीवन की गाथा प्रस्तुत करती है।

अ) वेश्या ब) वृद्ध क) किसान ड) किन्नर

18. 'मांस का दरिया' कहानी में .... की दलाली का चित्रण मिलता है।

अ) ठेकेदार और पुलिस वर्ग ब) सरकार और दलाल

क) बाबू और ग्राहक ड) इनमें से कोई नहीं

19. 'बयान' कहानी में .... बयान दे रही है।

अ) माँ ब) दादी क) पत्नी ड) बहन

20. बयान कहानी का वातावरण .... का है।

अ) आंचलिक ब) ग्रामीण क) पुलिस थाना ड) न्यायालय

प्रश्न 1 (आ) उचित मिलान कीजिए।

प्रश्न 1. कमलेश्वर की कहानियाँ और उन कहानियों के कथ्यों के साथ सही मिलान कीजिए।

	सूची ।	सूची ।।
1.	दिल्ली में एक मौत	अ) मजदूर समस्या
2.	चप्पल	ब) मध्यवर्गीय परिवार की समस्या
3.	इंतजार	क) संवेदनहीनता
4.	बयान	ड) अपघात की पीड़ा

उत्तर

1.1 (अ), 2 (ड), 3 (क), 4 (ब)

2.1 (ब), 2 (अ), 3 (क), 4 (ड)

3.1 (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

4.1 (क), 2 (ड), 3 (अ), 4 (ब)

प्रश्न २. कमलेश्वर की कहानियाँ और उन कहानियों के विषयवस्तु के साथ सही मिलान कीजिए।

	सूची ।	सूची ।।
1.	राजा निरबंसिया	अ) डाक्टरी पेशा पर व्यंग्य
2.	गर्मियों के दिन	ब) पति-पत्नी के बिखरते संबंध
3.	खोई हुई दिशाएं	क) त्रिकोणीय प्रेम कहानी

4.	कोहरा	ड) महानगरीय अजनबीपन

उत्तर

1.1 (अ), 2 (ड), 3 (क), 4 (ब)

2.1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

3.1 (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

4.1 (क), 2 (ड), 3 (अ), 4 (ब)

प्रश्न 3. कमलेश्वर की कहानियां और उन कहानियाँ के कथानक के साथ सही मिलान कीजिए।

	सूची ।	सूची ।।
1.	मांस का दरिया	अ) प्राकृतिक संपदा का चित्रण
2.	नीली झील	ब) वेश्या वर्ग का जीवन संघर्ष
3.	कोहरा	क) क्रांतिकारी बालक की कहानी
4.	चप्पल	ड) भावना प्रधान कहानी

1.1 (अ), 2 (ड), 3 (क), 4 (ब)

2.1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

3.1 (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

4.1 (क), 2 (ड), 3 (अ), 4 (ब)

प्रश्न 4. कमलेश्वर की कहानियों के प्रमुख पात्रों के साथ सही मिलान कीजिए।

1.	दिल्ली में एक मौत	अ) बालक
2.	राजा निरबंसिया	ब) स्तोम्पी सीपी
3.	इंतजार	क) जगपति
4.	चप्पल	ड) सेठ दीवानचंद

1.1 (अ), 2 (ड), 3 (क), 4 (ब)

2.1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

3.1. (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

4.1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)

प्रश्न ५. निम्नलिखित कहानियों के प्रमुख पात्रों के साथ उनकी विशेषताओं के साथ सही मिलान कीजिए।

सूची ।	सूची ।।
1. महेसा	अ) प्रकृति प्रेमी
2. स्तोम्पी सीपी	ब) क्रांतिकारी बालक
3. पियरे	क) ग्रीस का फौजी
4. नित्यानंद तिवारी	ड) वैद्य

1.1 (अ), 2 (ब), 3 (क), 4 (ड)

2.1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

3.1 (क), 2 (ब), 3 (अ), 4 (ड)

4.1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों की सही–गलत पहचान करें।

अ) 'कोहरा' कहानी में भारत और स्विट्जरलैंड देश का वर्णन मिलता है।

ब) 'कोहरा' कहानी में दीवार पर टंगी पोस्टर में सारी भेड़ें सिर झुकाए वापस लौट रही हैं, का चित्र है।

क) रीथ का मानना है कि, शादी वह रोमांस है जिसमें कोई एक पात्र पहले ही अध्याय में मर जाता है।

ड) उपरोक्त सभी वाक्य सही है।

प्रश्न 2 कमलेश्वर की प्रकाशित कहानी संग्रह का चढ़ता क्रम पहचाने।

अ) राजा निरबंसिया, कस्बे का आदमी, खोई हुई दिशाएँ, परिक्रमा

ब) परिक्रमा, मांस का दरिया, जिंदा मुर्दे, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

क) इतने अच्छे दिन, परिक्रमा, कथा प्रस्थान, रावल की रेल

ड) राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, परिक्रमा, कोहरा,

प्रश्न 3 निम्नांकित वाक्यों में से सही वाक्य को पहचाने।

अ) 'दिल्ली में एक मौत' कहानी गाँव–कस्बे की कहानी है।

ब) 'दिल्ली में एक मौत' कहानी के मुख्य नायक सेठ दीवानचंद है।

क) प्रस्तुत कहानी में लोगों की संवेदनाशीलता देखकर लेखक भावुक होते हैं।

ड) प्रस्तुत कहानी में स्वार्थहीन, मानवीय संवेदना के प्रति लोग सजग है।

प्रश्न 4 निम्नांकित कहानियों में से गलत वाक्य को पहचाने।

अ) 'राजा निरबंसिया'- जिस पुरुष से अर्थ और शरीर का सुख मिलता न हो, स्त्री उसे छोड़ देती है।

ब) 'कोहरा'- शादी वह रोमांस है जिसमें कोई एक पात्र पहले ही अध्याय में मर जाता है।

क) 'मांस का दरिया' - ग्राहक की नजर सिर्फ 'मांसल' देह पर होती है, उनकी भाव भावनाओं, दिल, मन आदि का कोई महत्त्व नहीं है।

ड) 'नीली झीली' - न्याय व्यवस्था में स्त्री-चारित्र्य का हनन करना, आम बात हो गई है।

प्रश्न 5 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी के सही तथ्यों को पहचाने।

अ) महानगरीय जीवन की चकाचौंध में मनुष्य अजनबी होता जा रहा है।

ब) शहरी संस्कृति में एकाकीपन संबंधशून्यता, अकुलाहट, छटपटाहट से मन त्रस्त है।

क) स्पर्धात्मक युग में व्यक्ति की दृष्टि व्यावसायिक हो गई है

ड) उपरोक्त सभी सही है।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

ज्वार भाटा - चन्द्रमा एवं सूर्य की आकर्षण शक्तियों के कारण सागरीय जल के ऊपर उठने तथा गिरने को ज्वार भाटा कहते हैं।

मीजान - तुला, योग, संख्याओं आदि का जोड़

गोलगप्पे - घी, तेल में तली गई छोटी फुलकी

जनाना - स्त्रियों का-सा आचरण करने वाला व्यक्ति

हमाम - नहाने का स्थान, स्नानागार

चील - बाज की जाति का प्रसिद्ध मांसाहारी पक्षी

चुंगी दफ्तर - राजस्व, नगरनिगम आदि का कार्यालय

सहालग - शादी विवाह के दिन

हिरमिजी - एक तरह की लाल मिट्‌टी

सईस - नर्स

मुख्तार - वकील से छोटा कानूनी सलाहगार

कनस्टरिया - टीन का पीपा

हौली – मदिरालय

खरल – पत्थर की कुँडी

हाशिया – किनारा, कपड़ों में टाँकी जाने वाली गोट

खसरा – हिसाब, किताब का चिट्ठा

उजरत – मजदूरी, पारिश्रमिक

मुर्री – कपड़ों आदि को मरोड़कर उनमें डाला जाने वाला बल

मेट – मजदूरों का प्रधान

चाहा – एक जलपक्षी जिसका सारा शरीर फूलदार और पीट सुनहरी होती है।

मुर्गाबीयो – मुर्गे की जाति का एक पक्षी

सिवार – शैवाल, एक तरह की घास

सरपपच्छी – सरकंडा

कांद – कीचड़

हाफिज – हिफाजत करने वाला

बतिया-बछरी – छोटा, कच्चा एवं ताजा हरा फल

सगनौती – शकुन विचारने का काम

काई – जमी हुई मैल

गंगाकुररी – क्रौंच नामक पक्षी

घोंघे – शंख के आकार का एक कीड़ा

जर्राह – चीर-फाड़ करने वाला व्यक्ति

गुदाज – मांसल

कुलबे – मछली फँसाने का कांटा

दहलना – डर से काँपना, थर्राना

सतह – तल, वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार

निरीह – उदासीन, विरक्त, बेचारा, मासूम

मुकम्मल – पूरा किया हुआ

अद्वैत – एक होने का भाव

आमदरफ्त – आना–जाना

मुहावरा:

आगाह करना – सचेत करना

अवाक् रह जाना – चकित या हक्का–बक्का हो जाना, मुहँ से शब्द तक न निकलना

कोहराम मचाना – अशांति फैलाना

छुटकारा पाना – राहत की साँस लेना

साँप सूँघ जाना – एकदम चुप हो जाना

मन उचट जाना – ऊब या विरक्ति हो जाना।

4.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 (अ) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर।

1. स्विस मजदूरों की विफल हड़ताल
2. स्विट्जरलैंड
3. माँ
4. जगपति
5. भावनात्मक
6. यह सभी
7. चुंगी दफ्तर
8. आत्मकथनात्मक
9. दिशाहीनता
10. पत्नी
11. पक्षियों
12. पत्नी
13. बराबर
14. बारह
15. सेठ दीवानचंद
16. महानगरीय मनोवृत्ति
17. वेश्या
18. ठेकेदार और पुलिस वर्ग
19. वेश्या
20. न्यायालय

प्रश्न 1 (आ) उचित मिलान।

1. 1 (क), 2 (ड), 3 (अ), 4 (ब)
2. 1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)
3. 1 (ब), 2 (अ), 3 (ड), 4 (क)

4. 1 (ड), 2 (क), 3 (ब), 4 (अ)

5. 1 (अ), 2 (ब), 3 (क), 4 (ड)

प्रश्न 1 (इ) सही–गलत की पहचान।

1. उपरोक्त सभी वाक्य सही है।
2. राजा निरबंसिया, कस्बे का आदमी, खोई हुई दिशाएँ, परिक्रमा
3. दिल्ली में एक मौत कहानी के मुख्य नायक सेठ दीवानचंद है।
4. नीली झील - न्याय व्यवस्था में स्त्री–चारित्र्य का हनन करना, आम बात हो गई है।
5. उपरोक्त सभी सही है।

4.8 स्वाध्याय

अ) समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित दीर्घोत्तरी प्रश्न (उत्तर सीमा 600-800 शब्दों में)

1. कोहरा कहानी की विषय वस्तु को स्पष्ट कीजिए।
2. 'राजा निरबंसिया' कहानी में दोहरे कथा शिल्प का प्रयोग हुआ है- स्पष्ट कीजिए।
3. 'राजा निरबंसिया' कहानी में दांपत्य जीवन में आए बदलाव का चित्रण हुआ है- स्पष्ट कीजिए।
4. 'चप्पल' कहानी की संवेदनशीलता को रेखांकित कीजिए।
5. 'चप्पल' कहानी के शीर्षक की सार्थकता को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
6. 'शहरी संस्कृति में इन्सानियत खत्म होती जा रही है।' 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
7. ''खोई हुई दिशाएँ' कहानी की समीक्षा कीजिए।
8. ''कमलेश्वर के पात्र यथार्थ स्थितियों का प्रस्तुतीकरण करते हैं।'' 'गर्मियों के दिन' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. 'गर्मियों के दिन' कहानी की समीक्षा कीजिए।
10. 'नीली झील' कहानी का उद्देश्य लिखिए।
11. 'नीली झील' कहानी का कथानक लिखिए।
12. 'इंतजार' कहानी का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।
13. 'मांस का दरिया' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

14. ''जुगनू के माध्यम से मध्यवर्गीय वेश्याओं की समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है'' स्पष्ट कीजिए।

15. ''राजनीतिक तिकडमबाजी में आम आदमी की जान चली जाती है-'' 'बयान' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

16. 'बयान' कहानी की समीक्षा कीजिए।

ब) समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित दीर्घोत्तरी प्रश्न (उत्तर सीमा 300-400 शब्दों में)

1. 'कोहरा' कहानी की रीथ पात्र की विशेषता पर प्रकाश डालिए।
2. 'राजा निरबंसिया'कहानी की समीक्षा कीजिए।
3. 'चप्पल' कहानी का उद्देश्य बताइए।
4. 'गर्मियों के दिन' कहानी में वैद्य जी के आर्थिक अभाव का चित्रण हुआ है, स्पष्ट कीजिए।
5. 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी का उद्देश्य लिखिए।
6. 'नीली झील' कहानी में महेसा और पारबती के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं।
7. 'इंतजार' कहानी के मुख्य पात्र स्तोम्पी सीपी को किसका इंतजार है।
8. 'दिल्ली में एक मौत' कहानी की संवेदनहीनता को स्पष्ट कीजिए।
9. 'मांस का दरिया' कहानी में वेश्याओं के नरकीय जीवन पर प्रकाश डालिए।
10. 'बयान' कहानी में न्यायतंत्र में फँसी नारी की व्यथा को बयां कीजिए।

क) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

1. ''स्विट्जरलैंड में पैसों की कोई कमी नहीं है। सेठों के सेठ है। सेठ मुल्कों का पैसा उनकी देश में है। पैसों से पैसा उगाता है उनका देश। लेकिन पैसों से उजाला नहीं होता। अगर ऐसा होता तो सूरज को भी खरीद सकते।''
2. ''किसी ने मुझे मारा नहीं है... किसी आदमी ने नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरे जहर की पहचान करने के लिए मेरा सीना चीरा जाएगा। उसमें जरूर है। मैंने अफीम नहीं, रुपए खाए हैं, उन रुपयों में कर्ज का जहर था, उसी ने मुझे मारा है।''
3. ''ही नोज हिस्ट पास्ट। प्रेजेंट एंड फ्यूचर। हमने इन निसर्ग को सभ्य बनाया, रोजगार दिया और चर्च दिया। इन्हें इनका ईश्वर दिया।''

4.9 क्षेत्रीय कार्य

- 'राजा निरबंसिया' का एक लघुनाटिका में रूपांतरण करके उसका रंगमंचन करने की कोशिश कीजिए।
- गाँव और शहर संस्कृति की तुलना कीजिए।
- दाजीपुर अभयारण्य (तहसील राधानगरी) में जाकर पक्षियों का निरीक्षण कीजिए।
- 'मांस का दरिया' कहानी के आधार पर 'पथनाट्य' बनाकर जनजागृति कीजिए।
- 'जुगनू' जैसी किसी वेश्या का साक्षात्कार लीजिए।
- न्यायालय में जाकर न्याय प्रक्रिया का सूक्ष्म आकलन कीजिए।
- 'बयान' कहानी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. कमलेश्वर, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2004
2. कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2020
3. नरेंद्र मोहन, समकालीन कहानी की पहचान, पराग प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1978
4. रामदरश मिश्र, हिंदी कहानी : एक अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2014
5. राजेंद्र यादव- जहाँ लक्ष्मी कैद है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2018

❑❑❑